Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HINDI PRADEEP 1905

G.K.V.
LIB.

Foundation Chenn
Domain. Gurukul Kangri Colle

078011
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धप्रदीप
27
1905

078011

STOCK VERIFICATION 2024
LIBRARY GK(DU) Haridwar

STOCK VERIFICATION 2024
LIBRARY GK(DU) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरे।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै बिबेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० २७
सं० ३-४

प्रयाग

मार्च। एप्रिल।
सन् १६०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

078011

पुस्तक सं० हि० प्रदीप
आगत सं० ९(९-१२)
तिथि० १५.८.२००९
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HINDI PRADEEP
1905
G.K.V.
Lib
HARDWAR.

जि० २७ सं० ३-४ प्रयाग मार्च, एप्रिल, सन् १९०५ ई०

मनुष्य के जीवन की सार्थकता।

हमारे जीवन की सार्थकता क्या है और कैसे होती है इस पर जुदे २ लोगों के जुदे २ विचार और उद्देश्य हैं अधिकतर इसका उद्देश्य समाज पर निर्भर है अर्थात् हम जिस समाज में जैसे लोगों के बीच रहते हैं उनके साथ जैसा बर्ताव रखते हैं उसी के अनुसार हमारे जीवन की सार्थकता समझी जाती है—यद्यपि कवियों ने मनुष्य जन्म की सार्थकता को अपनी २ उक्ति के अनुसार कुछ और ही ढंग की ढुलका लाये हैं जैसा भारवि ने कहा है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स पुमानर्थवज्जन्मा यस्य नाम्नि पुरस्थिते ।
नान्याङ्गुलि समभ्येति संख्यायामुद्यताङ्गुलिः ॥

पुमान् पुरुष वह है जिसमें पुरुषार्थ का अङ्कुर हो; सार्थक जन्म वही पुरुष है कि जिसके पौरुषेय गुणों की गणना में जो अंगुली उसके नाम पर उठै वही फिर दूसरे के नाम पर नहीं —अर्थात् जो किसी प्रकार के गुण में एकता प्राप्त किये है संसार में उसके बराबरी का दूसरा मनुष्य न हो—इस तरह की बहुतेरी कवियों की कल्पनायें पाई जाती हैं किन्तु यहां इन कल्पनाओं से हमारा प्रयोजन नहीं है जिसे हम जीवन की सार्थकता कहेंगे वह बातही निराली है—समाज के बर्ताव के अनुसार सफल जीवन इसे अलबत्ता कहेंगे जैसा—

यस्य दानजितं मित्रं शत्रवो युधि निर्जिताः ।
अन्नपानजिता दारा सफलं तस्य जीवितम् ॥

जिसने समय २ धन दे मित्रों को अपने काबू में कर लिया; जिसने शत्रुओं को संग्राम में जीता; भांत २ के गहने और कपड़ों से जिसने अपनी स्त्री का सन्तोष किया उसी का जीवन सफल है—बस सफल जीवन की इयत्ता या ओर छोर है तात्पर्य यह कि जिसने स्वार्थ साधन को भरपूर समझा वही यहां सफल जन्मा है—बिलाइत में जब तक अपने देश या जाति के लिये कोई ऐसी बात न कर गुज़रा जिसमें सर्व साधारण का कुछ उपकार है तब तक जीवन की सफलता नहीं कही जा सक्ती क्योंकि इतना तो जानवर भी कर लेते हैं—अपने बच्चों को पालना पोषना वे भी भरपूर जानते हैं; जो उनके शत्रु हैं उनसे लड़ना; जो उनके साथ भलाई करते हैं उन्हें उपकार पहुंचाने का ज्ञान उन्हें भी रहता है बरन कुत्ते और घोड़े आदि कई एक पशुओं में कृतज्ञता और स्वामि भक्ति मनुष्यों से भी अधिक पाई जाती है तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य और जानवर में क्या अन्तर रहा——इससे निश्चय होता है कि जन्म की सफलता का ज्ञान केवल समाज पर निर्भर है जिस काम को या जिस बात को समाज के लोग पसन्द करते हों और भला समझते हों उस ओर हमारी प्रवृत्ति का होना ही जीवन की सफलता है—जैसा इस गुलामी की हालत में पढ़ लिख सौ पचास की नौकरी पाय अपनी ज़िन्दगी दूसरे के आधीन कर देनाही जन्म की सफलता है सच है "सेवाविक्रीतकायानां स्वेच्छाविहरणं कुतः" जिन्होंने दूसरे की सेवा में अपने को दूसरे के हाथ बेच डाला है उनको फिर आज़ादगी कहां ? सैकड़ों बर्ष से गुलामी में रहते पुश्तहा पुश्त बीत गये स्वच्छन्दता या आज़ादगी की कदर हमारे मन से उठी गई—इस हीरे की परख के जौहरी इंगलैंड तथा यूरोप और अमेरिका के देशों में पैदा होने लगे--या अब इस समय जापान को इसकी कदर का ज्ञान होने लगा है हमारे यहां तो न जानिये वह कौन सा ज़माना था जब मनु महाराज लिख गये कि "सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्' सब कुछ जो अपने बश का है सुख है जो दूसरे के आधीन हैं वही' दुःख है सुख दुःख का सर्वोत्तम लक्षण यही निश्चय किया गया है—सो अब इस समय दस बीस की नौकरी भी ऐसी सोने की खेती हो रही है कि हमारे नव युवक इसके लिये तरस रहे हैं बड़े से बड़ा इमतिहान पास कर अर्ज़ी हाथ में लिये बंगले २ मारे फिरते हैं और दुरदुराये जाते हैं—उसमें भी बर्तमान समय के कर्मचारियों की कुछ ऐसी पालिसी हो रही है कि सौ रुपये से ज़ियादह की नौकरी नेटिवों को न दी जाय—सेवा विक्रीत काया इस नौकरी में भी वह समय अब दूर गया जब दो एक जुमले अंगरेज़ी के लिखने और बोल लेने ही मात्र से सैकड़ों रुपये महीने की नौकरी सुलभ थी—सच है।

गतः स कालो यत्रास्ते मुक्तानां जन्म शुक्तिषु ।
उदुम्बरफलेनापि स्पृहयामो ऽधुना वयम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज़ादगी के अनन्य भक्त कोई २ नव युवक स्वच्छन्द जीवन Independant life की धुन बांधे हुये कोई आज़ाद पेशा किया चाहते हैं तो पास पूंजी नहीं कि हौसिले के माफिक कुछ कर दिखावें—कंपनी अथवा पञ्चबन्धगोष्ठी की चाल अपने यहाँ न ठहरी कि उन्हें कहीं से सहारा मिलता—हमारा ऐसा सर्बस्व हरण होता जाता है कि न तो धन रहा न कोई जीविका बच रही कि ये लोग अपना हौसिला पूरा करते—जिनके पास रुपया है वे रुपयों के सूद के घाटे का परता पहले फैला लेंगे तो टेंटा ढीला करैंगे—यों चाहो रुपया रक्खा रह जाय एक पैसा व्याज न आवे पर रुपया कहीं लगाने के समय व्याज का परता ज़रूर फैला लेंगे—जिन वेचारों ने हिम्मत बांध कुछ रुपया कहने सुनने से लगाया भी तो पीछे उन्होंने ऐसा घच्चा खाया कि चित्त हो गये—उन्हे कोई ऐसा दियानतदार आदमी न मिला कि उनका उत्साह बढ़ता और मिल कर हम कोई काम करना नहीं जानते यह कलंक हम से दुर हटता—मा होती तो मौसी को कौन झीखता हम मिलना जानते होते तो बर्तमान दास्यभाव की दशा को क्यों पहुंचते अस्तु—इस जीवन के सफलता के अनेक और दूसरे २ उदाहरण हैं—संसार को मिथ्या मानने वाले अहंब्रह्मास्मि की धुन बांधे हुये स्वभाव वादी जीवन की सफलता इसी में मानते हैं कि हमे यह बोध हो जाय कि हमी ब्रह्म हैं और इस जगत् के सब काम आप से आप होते जाते हैं कोई इसका प्रेरक नहीं है—पाप और पुण्य भला और बुरा दोनो एक से हैं—चित्त में ऐसा पूरा २ भास हो जाय तो बस हम जीवन मुक्त हो गये अब हमे कुछ करना धरना न रहा सब ओर से अकर्मण्य हो बैठे—और आगे बढ़ो तो मन को नाश कर डालो क्योंकि सब उत्साह और आगे को तरक्की करने का मूल कारण मन सो न रहेगा तो बुराई का काम चाहे न भी रुके पर भलाई तो तुम से कभी होही गी नहीं और यह सब भी तभी तक जब तक अपनी ज़रा भी किसी तरह की हानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है बस केवल ज़बानी जमा खर्च मात्र रहे आत्मत्याग के उसूल सो कहीं छू भी न जांय कसौटी के समय चट्ट फिसल कर चारो खाने चित्त गिर पड़ा करो—ऐसाही सेवक भक्त अपने प्रभु की सेवा में लीन होनाही जीवन की सफलता मानता है—स्मरण, कीर्तन, वन्दन, पाद सेवन, सख्य, आत्मनिवेदन आदि नवधा भक्ति के द्वारा जो अपने सेव्य प्रभु में लीन हो गया वास्तव में उसका जीवन सफल है—इस उत्तम कोटि के महात्मा अब इस समय बहुत कम जन्मते हैं अहं ब्रह्मास्मि कहने वाले धूर्त बंचकों से तो यही भले—यद्यपि जिस बात की पुकार हमे है सो तो इस दासोस्मि में भी नहीं पाई जाती फिर भी प्रेम और यह दृश्य जगत् सर्वथा निस्सार नहीं है न सर्व नाशकारी अकर्मण्यता ही का दखल इनमे है इससे ये बहुत अंशों में सर्वथा सराहनीय हैं-चतुर सयाने चलते पुर्ज़े चालाक कहीं पर हों अपनी चालाकी से न चूकने ही को जन्म का साफल्य मानते हैं—किसी कवि ने ऐसों ही का चित्र नीचे के श्लोक में बहुत अच्छा उतारा है—

आदौ भागाः पंच धार्ष्ट्यस्य देयाः द्वौ विद्यायाः द्वौ मृषाभाषणस्य । एकं भागं भण्डिमायाः प्रदेयं पृथ्वी वश्यामेषयोगः करोति ॥

पहला ५ हिस्सा धृष्टता का हो तब दो विद्या का दो झूठ बोलने का और एक हिस्सा भड़ैआ का भी होनाही चाहिये जिन मे ये सब मिला के दस हिस्से हुनर के हैं वे इन सबों के योग से पृथ्वी भर को अपने काबू में ला सक्ते हैं—संसार में इन्ही का नाम चलता पुरज़ा है हम ऐसे गोबर गनेस बोदे लोगों का किया क्या हो सक्ता है जो निरे अपटु दस पांच आदमियों को भी अपनी मूठी में नहीं ला सक्ते-इसी से हम पहले अंक में लिख आये हैं कि हा हम ऐसे हताश क्यों जन्मे ? प्रयोजन यह कि जिसने झूठ सच बोल दूसरों को धोखा दे रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमाना अच्छी तरह सीखा है वही सफल जन्मा है–सभ्य समाज के मुखिया हमारे बाबू लोगों में सफल जीवन का सूत्र साहब बनना है जब तक कहीं पर किसी अंश में भी हम हिन्दुस्तानी हैं इसकी याद बनी रहेगी तब तक उनके सफल जीवन की त्रुटि दूर होने वाली नहीं–इससे वे सब २ स्वांग लाते हैं क्या करैं लाचार हैं अपना चमड़ा गोरा नहीं कर सक्ते–अस्तु ये कई एक नमूने सफल जीवन के दिखलाये इन सबों में सफल जीवन किसी का भी नहीं है वरन सफल जीवन उसी पुरुष श्रेष्ठ का कहा जायगा जिसने अपने देश तथा अपने देश बान्धव के लिये कुछ कर दिखाया है जो आत्म सुख रत न हो खुदगरज़ी से दूर हटा है–इस तरह के उदार भाव का उन्मूलन हुये यहां बहुत दिन हुये नई शिक्षा प्रणाली नये सिरे से हम लोगों में पुनः उसका बीजारोपण सामयिक शासकों के नमूने पर किया चाहती है–कदाचित् कभी को यह बीज उगै फबके और उसमें देशानुराग का अमृत फल फलै और कोई ऐसे सुकृती भाग्यवान् पुरुष देश में पैदा हों जो सुधास्यन्दी उसके पीयूष रस का स्वाद चखने का सौभाग्य प्राप्त करैं पर हम तो अपने हतक जीवन में उसके स्वादु से वंचितही रहेंगे ॥

———:o:———

बुद्धिमानों के अनुभव ।

(१)

हमारा मन ही भले या बुरे कामों का कारण है; मन ही मनुष्य को सुखी या दुखी करता है; मन का उदार भाव ही निर्द्धन अथवा धनी होने की प्रतीत दिलाता है; कुछ लोग ऐसे होते हैं कि उन्हें इच्छा मात्र से सब कुछ मिल सक्ता है तो भी वे समझते हैं कि हमें और चाहिये, और संपत्ति के भण्डार में रह कर भी इच्छा करताही रहता है–इसी के बिरुद्ध कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि उनके पास थोड़ा है तथापि अधिक के लिये याचना नहीं करते उसी थोड़े में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को संपन्न मानते हैं-जिसे बढ़ती कहते हैं वह सम्पत्ति नहीं है तस्मात थोड़े के लिये आशिष प्रार्थना या बरक़त मांगना भूल है-स्पेन्सर

(२)

स्वादिष्ट भोजन का आनन्द जीभ के लिये है भोजन के बहुमूल्य अथवा स्वादु पर नहीं निर्भर है-होरेस

(३)

अच्छा या बुरा वास्तव में कुछ नहीं है जिसे हम भला या बुरा कहते हैं वह उस वस्तु के बारे में हमारा सत् या असत् विचार या कल्पना उसे भली या बुरी वस्तु करती है- शेक्सपियर

(४)

यदि किसी बाहरी कारण से तुम्हें क्लेश पहुंचता हो तो इस बात पर ध्यान दो कि वह वस्तु स्वयं तुम्हें दुःख नहीं दे रही है वरन वह उस वस्तु की ओर तुम्हारी वैसी कल्पना है जो तुम्हें भयभीत करती है यदि तुम चाहो तो उस कल्पना को अपने मन से अलग कर सक्ते हो-

मार्कस आरलियस

(५)

आत्मा द्रष्टा है नेत्रों के द्वारा पदार्थों का ज्ञान होता है परन्तु ठीक २ परख उस वस्तु की मन को होती है-आनन्द घृणा शान्ति चांचल्य सब वहीं से पैदा होते हैं-मन जब प्रसन्न है तब हम जो दृश्य देखते हैं वह हमें नन्दन बन सा प्रतीत होता है-पुनः जब वही मन दुखित रहता है तब जिस ओर नज़र जाती है वहां ही कज्जल का ढेर सा बिखरा हुआ दीख पड़ता है-यदि हम कोई विशेष चिन्ता में निमग्न हों तो हमारे नेत्र के सामने उपस्थित पदार्थ भी मानो नहीं हैं हमारी दृष्टि के साथ ही साथ हमारे मनो विकार भी उपस्थित होते हैं और वे दृश्य पदार्थ उन्ही मनो विकार के अनुसार मालूम होते हैं-क्राब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६)

देश अथवा काल के प्रभाव से अपने मन का दृढ़ निश्चय बदलना ठीक नहीं मन की स्थिरता ही उसका स्थान है मन अपने भीतरही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सक्ता है-मिलटन

(७)

प्रसिद्ध से प्रसिद्ध शूर वीर की वीर श्री में मालिन्य छा जाता है, अपार शास्त्रीय ज्ञान भी बायु समान तरल है, भीमसेन से महाबली का बल तुच्छ है, यदि ये तीनों बातें मन के शासन से रहित हों-

टामस स्काट

(८)

सादी और सरल जीवन वृत्ति और सभ्यता के आचरण मन को शान्ति देने वाले हैं-

(९)

जब मनुष्य के चित्त में किसी तरह की कामना उठती ही नहीं और स्वयं आनन्दमय हो जाता है जिसके चित्तको कड़ी से कड़ी बिपत्ति में भी खेद नहीं पहुंचता न सुख या अपने अभ्युदय में अपने को परम सुखी मानता है जिसके पास से भय प्रीति और क्रोध दूर हट गये हैं वह मनुष्य स्थित धी कहा जाता है-श्रीमद्भगवद्गीता-

(९)

मनुष्य की जीवन यात्रा में जो आघात उसपर पड़ते हैं जो ऊंच नीच दशा उसे झेलनी पड़ती है उसमें यदि मनुष्य का मन ऐसा रहे कि वह उन आघातों को और ऊंच नीच दशाओं के कारण दुःख मनो विकार आदि से पीड़ित न हो शान्त और स्थिर चित्त बना रहे तो यह सब से बड़ा सुख है-गौतम

(१०)

जिस मनुष्य में मन के शान्ति सुख का अभाव है वह किसी अवस्था में रहे दुख पाता रहेगा—जिसका मन चंचल है वह अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहन सहन में परिवर्तन की सदा इच्छा किया करता है परन्तु कहीं और किसी में सुख नहीं पाता—यदि हम सच्चे सुख की कदर जानते हैं तो हमे उसके लिये दूर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह सन्तोष महारत्न हमारे अन्तःकरण के भीतर ही है वे मूर्ख हैं जो सुख की खोज में भटकते फिरते हैं—फ्राटन

(११)

ऐहिक पदार्थों में वह कौन सा पदार्थ है जिसका अधिकार या स्वत्व हमें मिलना ही चाहिये ? उत्तर——आत्म संयम

(१२)

वह मस्तक जिसकी बनावट दुरुस्त है संपद् या बिपद् जिस प्रकार की तकिया उसके नीचे रक्खी जायगी उसी पर वह सुख की नींद सोवैगा ॥

(१३)

मन की शान्त अवस्था सद्गुणों के मधुर परिणामों से सदा उज्वल और प्रकाशमान रहती है—बीटी

(१४)

जल से शरीर पवित्र होता है ; मन सत्य से ; आत्मा धर्म और भक्ति से ; बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है—मनु

(१५)

मनुष्य का वह मन जो औदार्य के पन्था का पथिक है ; जो ईश्वर की ओर स्थिर भाव से प्रवण है, सत्य की धुरी पर घूम रहा है, उसे भूमण्डल ही स्वर्ग लोक है—बेकन (बिकण)

(१६)

आरोग्यता का जो संबन्ध शरीर से है वही संबन्ध ज्ञान का मन से हैं ॥

(१७)

क्रोध, असूया अर्थात् डाह, दुष्टभाव, बदला लेने की इच्छा, बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भ्रष्ट करती है–टिलोटसन

(१८)

मन पखेरू इन्द्रियों के सुखों में तब तक उड़ता फिरता है जब तक ईश्वरीय आध्यात्मिक ज्ञान बाज़ सदृश उसपर आ नहीं टूटता और उसे अपने पंजे में नहीं दबा लेता–कबीर

(१९)

जीवात्मा का परमात्मा के साथ ऐक्य होनाही शान्ति है–टाइलर

(२०)

हमारा चंचल मन सदा विश्राम पाने की खोज में घूमा करता है और आत्मा की प्रसन्नता ध्यानस्थ होने में है परन्तु मन को फिर भी क्रिया की आवश्यकता है॥

(२१)

जो उन्नति हमारे इस मनुष्य के शरीर से संभव है उसके लिये मन और शरीर दोनो को काम करने की आवश्यकता है–जानसन [जन्हुतनु]

(२२)

छोटे लोगों का मन खाली नहीं रहता जो तुम उसमें किसी भली बात का प्रवेश न कर सको तो वह बुराई ही का उपयोग करेगा–वर्क्स

(२३)

अपने फुरसत के समय को आलस्य में न गंवाओ उसे इस प्रकार लगाओ जिस में कुछ न कुछ मीठा फल फले इस लिये कि जो मन किसी काम में लगा है वह ऊपर पृथ्वी सा निष्फल नहीं रहता वह जो अच्छे फल न फले तो घास फूस आप से आप उग आते हैं– Vice quickly spring unless we goodness sow—Rankest weeds in reches gardengrow. हर्डर

(२४)

सब प्रकार की दरिद्रता में मन की दरिद्रता का अधिक सोच होता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२५)

जैसा शरीर को नीरोग रखने को नित्य कसरत की आवश्यकता है उसी तरह यदि मन को नीरोग रक्खा चाहो तो सदा ऊंचे खयालों की ओर उसे रुजू करो—हम उस मनुष्य को नीरोग न कहेंगे जो अपनी भुजाओं को खूब पुष्ट और बलवान् किये है परन्तु पैर उसका लकवा का मारा हुआ है—न तुम उसी को चंगा या तन्दुरुस्त कहोगे कि जिसके पैर चलने के लिये मज़बूत हैं परन्तु हाथों का उपयोग नहीं कर सकता—या नेत्रों से देख सक्ता है पर कान का बहिरा है—साथही इसके यह भी है कि तुम अपने किसी एक अंग को इस तरह अपूर्णता से बढ़ने के लिये अवकाश न दोगे न अपने मन को गिरी दशा में पड़ा रहने दोगे बरन शरीर के अवयवों की तरह उसका भी विविध मानसिक शक्तियों में यथोचित उपयोग करोगे—जान रसकिन

(२६)

संभाषण मन का चित्र है, लेखिनी मन की जिव्हा है, यदि मन अन्धा है तो आंखों की कोई उपयोगिता नहीं—अरबी कहावत

(२७)

हलका मन कोई तुच्छ वस्तु पा कर भी प्रसन्न हो जाता है—आविद

(२८)

जिसको मन बहलाने या प्रसन्न रखने के अनेक साधन हैं वह कारूं के ख़जाने की भी परवाह नहीं करता—हाल

(२९)

यह अनुभव सिद्ध है कि जिस देश में जो लोग मानसिक काम करते हैं वे शारीरिक काम करने वालों पर अपना अधिकार चलाते हैं

(३०)

चरित्र पालन और विद्या ये दो हमारी योग्यता के केन्द्र हैं दो से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से एक के न होने से मनुष्य जीवन के सम्पूर्ण सुख नहीं मिल सक्ते केवल विद्या किसी काम की नहीं जो सद्वृत्त न हुआ॥

(३१)

जिन के मन में सदा शङ्क और सुबहा लगा रहता है उनको शङ्क करने का एक न एक कारण मिली जाता है—सिसिरो

(३२)

ईश्वर की सृष्टि में मनुष्य सब से श्रेष्ठ क्यों है? इसलिये कि उसे बिचार शक्ति दी गई है—अनवार सहेली

(३३)

मस्तिष्क के अति गुप्त स्थान में कोई एक श्रेष्ठ न्यायाधीश रहता है जिसका अधिकार सर्वव्यापी है और जिसे मनुष्य मात्र एक स्वर से विवेक इस नाम से पुकारते हैं-चर्च हिल

गणपति जानकी राम दुबे, बी ए

——:०:——

लोक निन्दा।

संसार समर भूमि में हमारे जीवन के साथ अनेक भय लगे हैं जैसा

भोगेरोगभयं, कुलेच्युतिभयं, वित्तेनृपालाद्भयं, मौनेदैन्यभयं, बलेरिपुभयं, कायेकृतान्ताद्भयं, शास्त्रेवादभयं, गुणेखलभयं, रूपेजरायाभयम्॥

इत्यादि इतने प्रकार के भय के रहते भी लोक निन्दा का एक ऐसा प्रबल भय है जो क्षण भर में मनुष्य को और का और कर देता है—भारत के प्रारंभ में गाण्डीव धनुर्धारी बीर धुरीण अर्जुन जब दोनो ओर के बीर युद्ध के लिये सन्नद्ध खड़े थे और आप स्वयं विजय की प्रतिज्ञा कर चुके थे युद्ध छिड़नेही को था ऐसे नाज़ुक समय में धनुष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रख "अब मैं न लड़ूंगा" यह कह हाथ पर हाथ रख सिर झुका बैठ गये और अपने यावत् पौरुषेय गुण बल, पराक्रम, श्री, धर्म, धैर्य, पाण्डित्य सब पर पानी फेर चुके थे—यदि पूछा जाय क्यों और किस भय से उनकी यह दशा हुई तो यही कहा जायगा कि इसी लोकनिन्दा पिशाची की भय से क्योंकि और किसी प्रकार के भय को तो वह कुछ मालही नहीं समझते थे—उनके कहने का आशय यह था—"जिन पूज्य गुरुवरों के पावन पद रज से मेरे जन्म जन्मान्तर का पाप दूर हो जाता है, जिन सखा सम्बन्धियों के सुभग शरीर स्पर्श करने से मेरा आत्मा तथा मन पवित्र होता था; उन्ही की हत्या से आज मुझे क्या लाभ होगा—हा मेरी अविवेकिता ! मैं घोर शत्रु के समान उन्ही कुलपूज्य महात्माओं के ऊपर आज निष्करुण हो बाण बर्षा करने को उद्यत हूं-हाय ! मुझ सा कौन ऐसा दूसरा नराधम होगा जो इसका परिणाम क्या होगा इसके बिचार की ओर से सर्वथा अन्धा है—मैं अपने स्वजन बान्धवों को मार कर राज्य सुख भोगने की इच्छा करता हूं-जो नरक यातना से भी अधिक भयंकर है—मेरे इस अनुचित व्यवहार को देख लोग मुझे क्या कहेंगे-अस्तु यह प्रगट है कि लोक निन्दा के भय से अर्जुन के इतना विषाद करने पर भी महाभारत का युद्ध बन्द न रहा अवश्य हुआ और अर्जुनही की बीरता से पाण्डवों की जीत हुई तो जानना चाहिये कि वह कौन सी बात थी वा किसका भय पहले के भय से भी अधिक अर्जुन के चित्त में व्यापा जिस्से उन की बीरता और रणोत्साह पुनः जाग उठा उदासीनता कादरता और बिषाद सब जाता रहा—यहां यह विचारना उचित जान पड़ता है कि उनको समझा कर राह पर लानेवाला कौन था और कैसा प्रभाव शाली, कार्य कुशल, अध्यवसायी, राज नीतिज्ञ, तत्ववेत्ता, समर्थ और बाग्मी था—सब कहेंगे कि वह एक असाधारण पुरुष था और उसकी बातों में वह शक्तिथी जैसी चुम्बक में लोहे के खीचने की रहती है-यदि यह गुण उसमें न रहता तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुन सरीखे प्रबीण पुरुष के बिचारों का पलट जाना सर्वथा असंभव था और जब तक उनका यह भ्रम दूर न होता महाभारत का युद्ध संभव न था-अच्छा तो वह कौन सी बात थी इसका उत्तर स्पष्ट है-यह वही भय है जिसे लोकापवाद कहते हैं और वह प्रबीण पुरुष जिसने अर्जुन को फिर कायर से सूरमा कर दिया इसी का भय दिखलाया था-देखिये वह नीति निपुण समझाने वाला क्या कहता है-

अर्जुन जिसे तुम लोकनिन्दा कहते हो और जिसके डर से तुम युद्ध नहीं किया चाहते वह यथार्थ में लोकनिन्दा नहीं है तुम भूलते हो लोकनिन्दा तब होगी जब आप ऐसे प्रख्यात नामा बीर क्षत्री हो निज धर्म संग्राम न करोगे और मुह छिपा नाम डुबोओगे-

> अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति चाव्ययाम् ।
> संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥

यदि तुम न लड़ोगे तो लोक में तुह्मारी महा अपकीर्ति होगी संभावित पुरुष के लिये अपकीर्ति मृत्यु से भी अधिक पीड़ा देती है-जिसके सुनते ही अर्जुन की भुजा फिर युद्ध के लिये फड़क उठी तो स्पष्ट है कि लोकापबाद मनुष्य को क्षण भर में और का और कर देता है ॥

ऊपर के अर्जुन के इस दृष्टान्त से प्रगट है कि लोकनिन्दा दो प्रकार की है इनकी उत्पत्ति अलग २ दो स्थान से होती है जिसमें एक की उत्पत्ति का स्थल अविवेक या मोह है दूसरे का बिचार या चित्त की स्थिरता है-अविवेक वा मोह के कारण जो लोकापबाद होता है वह बहुधा व्यर्थ औ बेबुनियाद सा होता है पर दूसरे प्रकार का अपबाद यथार्थ लोक निन्दा है-पहले अपबाद को व्यर्थ इस लिये कहेंगे कि वह अविवेक या मोह जनित अपवाद है और बहुधा अमूलक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है उसमें सचाई कम पाई जाती है बहुधा तो यह अपवाद ईर्ष्या के कारण लोगों पर किसी समाज या किसी पुरुष विशेष से उठता है— जब हम देखते हैं कि अमुक पुरुष से हमारा कोई स्वार्थ न सधा तब हम उसकी निन्दा ही को बड़ा काम समझ लेते हैं और इस बात का खयाल मन से ढीला कर देते हैं कि यह हमारी निन्दा करना उचित होगा या अनुचित और अन्त में उस बेचारे को क्या फल मिलेगा जिसकी हम निन्दा करते हैं—यथार्थ में लोकापवाद का दुःख उसी को मालूम होता है जिसका अपवाद किया जाता है दूसरा कोई क्या जाने तस्मात् यह अनुचित निन्दा बड़ी हानि कारक और सर्वथा हेय है—इस से यह कोई न समझ ले कि लोकापवाद का नामही उठ जाना चाहिये वास्तव में समाज को उत्शृंखल होने से यह लोकापवाद ही बचाये रहता है-सच पूछो तो यह लोक निन्दा ही शूर को कायर होने से रोकती है; पापी चार्वाक को पुण्य पुंज आस्तिक बनाती है; अधीर चिन्ता ग्रस्त को धीरजवन्त का पद देती है; आलसी निठल्लू को परिश्रमी और पुरुषार्थी कर देती है कहां तक कहैं यही लोकापवाद मनुष्य को कुमार्ग से सुमार्ग में लाता है—चरित्र को पवित्र रखने के लिये तो यह पानी में फिटकिरी की भांत मलहारक है जिसमें ऐसे २ गुण हों वह क्या छोड़ने लायक है कदापि नहीं-समझदार लोग लोकापवाद को बुरा नहीं समझते बरन यह कि लोकापवाद का उत्थान कहां से हुआ है इस पर विशेष ज़ोर देते हैं यदि लोकापवाद किसी पामर मनुष्य कृत या किसी पामर मण्डली से उठाया गया तो उसकी उपेक्षा कर देते हैं जैसा भर्तृ हरि ने कहा भी है—

निन्दन्तु नीति निपुणा यदिवा स्तुवन्तु लक्ष्मीःसमाविशतु लच्छतुवा यथेष्टम् । अद्यै व मे मरणमस्तु युगान्तरेवा न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी स्वार्थ परायण का ऐसा भी कथन है—

सर्वथास्वहितमाचरणीयं किं करिष्यति जनोबहुजल्पः
विद्यते नखलुकोपि उपायः सर्वलोक परितोष करो यः ॥

सब तरह पर जिसमें अपना बनै सो करै दूसरों को बदनाम करना तो लोगों का स्वभाव होता है—ऐसा तो कोई उपाय ही संसार में नहीं है जिससे सब लोग राज़ी रहें ॥

जो कुछ ऊपर कहा गया उससे निश्चय हुआ कि लोकापवाद हेय नहीं है और यथार्थ लोकापवाद वही है जो मूर्ख मण्डली से नहीं बरन विद्वन्मण्डली से प्रचलित भया हो—इससे यह मान लेना कि विद्वन्मण्डली निन्दक है बड़ी भूल है—तो यहां पर यह बतलाना कि विद्वान् तथा सभ्य समाज के लोग कैसे होते हैं उचित हुआ पर लेख पल्लवित होने से अरोचक हो जायगा इससे इस विषय को हम दूसरे अंक के लिये रख छोड़ते हैं—शेष—अनन्त राम पाण्डे—

———o———

पुराने कवि या ग्रन्थकार।

पतञ्जलि।

ये प्राचीन वैयाकरण महा भाष्य के रचयिता हैं। हिन्दुस्तान के पूर्व भाग में गोनर्द नाम प्रदेश पतञ्जलि का निवास स्थान है। उनकी माता का नाम गोणिका था। महा भाष्य के वाक्यों को उठा २ के भाण्डार कर और गोल्डस्टुकरने उनका समय निर्णय करने का प्रयत्न किया है और सिद्ध किया है कि पतञ्जलि यूनानी मिनेन्डर और पाटलिपुत्र के राजा पुष्पमित्र के समकालीन हैं। उन महाशयों के कथनानुसार पतञ्जलि का समय सन् ईस्वी के १४० वर्ष पूर्व से १२० वर्ष पूर्व तक निश्चित होता है। पतञ्जलि ने जो "मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चाः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकल्पिताः" अर्थात् मौर्य्य वंशी राजाओं ने सुवर्ण की कामना से पूजा का व्यवहार चलाया ऐसा वाक्य लिखा है उससे गोल्डस्टुकर साहिब समझते हैं कि वे मौर्य वंशी प्रथम राजा चन्द्र गुप्त से पहिले न रहे होंगे अर्थात् सन् ईस्वी से ३१५ वर्ष पूर्व समय की अपेक्षा प्राचीन नहीं होवेंगे। प्रत्युत संभव है कि उस वंश के अन्तिम राजा के भी पीछे अर्थात् सन् ईस्वी से १८० वर्ष पूर्व में रहे ऐसा जान पड़ता है। क्या इस अनुमान को असंभव कहने का साहस किया जा सकता है ?

पतञ्जलि के और २ वाक्य 'अरुणाद्यवनः साकेतम्' अर्थात् यवन राजा ने अयोध्या पुरी को घेरा और 'अरुणद्यवनो माध्यमिकान्' अर्थात् यवन राजा ने माध्यमिकों को घेरा है। इससे अनुमान होता है कि यूनान वालों ने पतञ्जलि ही के समय में अयोध्या को घेरा होगा। माध्यमिक नागार्जुन के शिष्यों का एक सम्प्रदाय है जो कि शून्य वादी बौद्धों के नाम से विशेष प्रसिद्ध है। अब विचारना चाहिये कि यूनान वालों ने अयोध्या पर कब चढ़ाई की है तो प्राचीन यूनान के इतिहास से विदित होता है कि स्ट्रेबो के वर्णनानुसार राजा मिनेन्डर ने यमुना नदी तक के देशों का विजय किया और मथुरा में इसके नाम के सिक्के भी पाये गये हैं। मिनेन्डर का राज्य काल प्रोफेसर लासेन के मतानुसार सन् ईस्वी से १४४ वर्ष पूर्व है। निदान इन सब बातों से निःसन्देह यह बात प्रतीत होती है कि पतञ्जलि सन् ईस्वी की पिछली दूसरी शताब्दी में वर्तमान थे॥

पतञ्जलि वैयाकरण होने के अतिरिक्त एक अति प्रसिद्ध दार्शनिक भी थे और इनका रचित पातञ्जल योग सूत्र भी प्रसिद्ध है। इनके ग्रन्थ की टीका स्वयं व्यास जी ने की है। लोगों को सन्देह भी हुआ करता है कि व्यास का जीवन कितना अधिक रहा होगा कि पतञ्जलि के पीछे तक वर्तमान रहे हों पर ऋषियों का चिरायु होना कोई असम्भव बात नहीं है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मगुप्त ।

इनका उल्लेख ऊपर धनञ्जय और धनिक के वर्णन में आचुका है। ये महाशय राजा मुञ्ज के सभासदों में से हैं। इस रूपकावलोक में इनका और रुद्र कवि का भी नाम देखने में आता है। इनके रचित ग्रन्थ का नाम नव साहसाङ्क चरित है। मुञ्ज के पीछे राजा सिन्धुराज ने संभवतः सन् ९९५ ई० से १०१० ई० तक राज्य किया और उन्हीं के प्रतिष्ठा तथा कीर्त्ति के लिये सन् १०१० ई० में नव साहसाङ्क चरित बनाया गया। इस कवि का नामान्तर परिमल भी था॥

पाणिनि ।

संस्कृत भाषा जानने वालों में ऐसा कोई भी नहीं होगा जो पाणिनि वा अष्टाध्यायी को न जानता हो। आज कल संस्कृत भाषा के जितने व्याकरण प्रचलित हैं सब के मूल यही प्रसिद्ध पाणिनि जी हैं। पर खेद का विषय है कि इस अत्यन्त प्राचीन सब भाषाओं की मातृ भाषा संस्कृत के नियम पूर्वक व्याकरण बनाने वाले महा पुरुष की जीवनी आदि के विषय में लोग कुछ भी नहीं जानते। निः सन्देह ये महाशय अत्यन्त विद्वान् थे केवल इतना ही कहना पर्याप्त नहीं है बरन ये ऋषि हैं। केवल रामायण, महाभारत और पुराणों को छोड़ और संस्कृत ग्रन्थों में आर्ष प्रयोग अर्थात् पाणिनि रचित व्याकरण द्वारा प्रसिद्ध प्रयोग नहीं मिलता। पाणिनि ऋषि थे केवल इतना ही कहके उन्हें अति प्राचीन जन समझ के उनके समय के सम्बन्ध में विचार न करना बहुत ठीक नहीं जान पड़ता। अतएव आज कल के विद्वज्जनों ने पाणिनि के विषय में जो कुछ विचार किया है उसे भी देखना चाहिये।

प्रोफेसर मैक्समुलर के कथनानुसार पाणिनि कात्यायन वररुचि के समकालीन और सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पूर्व के व्यक्ति जान पड़ते हैं। कात्यायन वररुचि का वर्णन ऊपर हो चुका है और वहीं पर पाणिनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी प्रायः उनका समसामयिक भी कहा है। मैक्समुलर अपने इस अनुमान का प्रमाण सोमदेव भट्ट रचित कथा सरित्सागर को उपस्थित करते हैं। पर कथा सरित्सागर कहां तक ऐतिहासिक विषयों में प्रमाणिक हो सकता है इसमें घोर सन्देह उपस्थित होता है। क्या कश्मीर ही में रचे जाने के कारण कथा सरित्सागर राज तरङ्गिणी के समान प्रमाणिक ग्रन्थ मान लिया जा सकता है? क्या सोमदेव भी कल्हण की नाईं इतिहास लिखने बैठे थे? जहां तक ज्ञात हो सकता है केवल मात्र इतनाही विदित होता है कि कश्मीर के महाराज अनन्त देव की पटरानी सूर्यवती के मनस्तोष के लिये सोमदेव ने कथा सरित्सागर नाम ग्रन्थ रचा। इसका यह तात्पर्य नहीं हो सकता कि मनस्तोष के लिये इतिहास रचा। फिर भी ग्रन्थ ऐसी कहानियों से भरा हुआ है जिनका मूल ऐतिहासिक समझना बड़े भूल की बात होगी इन्ही कात्यायन वररुचि ही के वर्णन प्रकरण में प्रोफेसर मैक्समुलर ने कुछ बातों को ऐतिहासिक सत्य अनुमान किया है पर औरों को नहीं-जान नहीं पड़ता कि ऐसे अनुमानों का नियामक क्या है? मैक्समुलर साहिब का अनुमान यहाँ तक बतलाता है कि पाणिनि के समय तक हिन्दुस्तान के लोगों को लिखने की विद्या का ज्ञान था अर्थात् सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पूर्व तक हिन्दुओं को लिखना पढ़ना नहीं आता था। गोल्डस्टुकर साहिब ने इस अनुमान की भूल दिखलाने के लिये बड़ा परिश्रम किया है तथा पाणिनि के ग्रन्थ के शब्दों द्वारा इसके विरुद्ध मत सिद्ध होने के प्रमाण दिखलाये हैं। वे शब्द नीचे लिखे जाते हैं-

यवनानी-अर्थात् यवनों की लिखावट.

लिपिकर-अर्थात् लिखने वाला.

पाटल, काण्ड, सूत्र, और पत्र-जिन शब्दों से मुख्य कर वृक्ष के अवयव का निर्देश होता है पर असंभव नहीं कि पुस्तक के भी सम्बन्ध में इनका प्रयोग होता रहा हो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ण और कार-ये शब्द अक्षरों के लिये हैं ।

लोप-अक्षर का लुप्त वा दृष्टि से बहिर्गत होना इत्यादि इत्यादि.

इन शब्दों को देखने और उनके ग्रन्थों के विचारने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि पाणिनि के समय में भी भली भाँति लिखने का प्रचार रहा होगा । गोल्डस्टुकर साहिब कहते है कि संभव है कि जिस समय यूनान देश में प्लेटो और एरिस्टाटल सरीखे प्रसिद्ध ग्रन्थ लेखक उन्नति को प्राप्त हुए हों उस समय में हिन्दुस्तान वाले लिखने की ऐसी अत्यन्त उपयोगी विद्या को न जानते रहे हों ? मैं तो अपनी समझ भर इसके उत्तर में कहूंगा कि नहीं और फिर पाणिनि के रचित ग्रन्थ में जो उपरोक्त शब्द आये हैं वे सिद्ध करते हैं कि पाणिनि के समय में लिखना प्रचलित था ॥

निदान पाणिनि के समय निर्णय के विषय में मैक्समुलर साहिब का सिद्धान्त गोल्डस्टुकर साहिब के कथनानुसार अशुद्ध प्रतीत होता है पर आश्चर्य की बात है कि बोथलिङ्क साहिब भी पाणिनि को सन् ३५० वर्ष पूर्व का व्यक्ति समझते हैं उनका कथन है कि कश्मीर के इतिहास राजतरंगिणी में लिखा मिलता है कि अभिमन्यु ने चन्द्र तथा और २ वैयाकरणों को पतञ्जलि विरचित महाभाष्य को कश्मीर में प्रचलित करने का आदेश दिया । अभिमन्यु का समय सन् ईस्वी से १०० वर्ष पूर्व है अतएव पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य रचा गया उसे और ५० वर्ष पिछला अर्थात् सन् ईस्वी से १५० वर्ष पहिले का रचा मान लेने में कोई भी बाधा नहीं है । पतञ्जलि और पाणिनि के बीच में और तीन वैयाकरण अर्थात् परिभाषा के रचयिता कात्यायन, कारिका के रचयिता और स्वयं पाणिनि हैं । यदि प्रत्येक वैयाकरण के लिये ५० वर्ष का समय रख दिया जाय तो कथा सरित्सागर के निर्णयानुसार पाणिनि का समय सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पहिले आ पहुंचता है । बोथलिङ्क साहिब के इस अनुमान को गोल्डस्टुकर साहिब बहुत दुर्बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ के उसकी उपेक्षा करते हैं।

गोल्डस्टुकर साहिब का मत है कि पाणिनि कात्यायन की अपेक्षा प्राचीन व्यक्ति हैं इसकी सिद्धि में वे निम्न लिखित चार युक्तियाँ दिखलाते हैं–

(१) कुछ शब्द पाणिनि के समय में प्रचलित तथा व्याकरणानुसार सिद्ध थे पर कात्यायन के समय में वे अप्रचलित वा अशुद्ध हो गये॥

(२) कात्यायन के समय में कुछ शब्दों के ऐसे अर्थ लगाये जाने लगे जैसे कि पाणिनि के समय में नहीं लगते थे॥

(३) शब्द और उनके अर्थों का जैसा प्रयोग पाणिनि के समय में था वैसा पीछे कात्यायन के समय में न रह गया॥

(४) संस्कृत विद्या ने कात्यायन के समय में एक नवीन अर्थात् पाणिनि के समय से भिन्न रूप धारण किया॥

इन युक्तियों के सिद्ध करने में गोल्डस्टुकर साहिब ने पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के सूत्रों का उदाहरण प्रमाण की नाईं उठाया है उनके देखने से संभव जान पड़ता है कि पाणिनि और कात्यायन दोनो के समय में संस्कृत व्याकरण की एक ही दशा न रही होगी। अतएव उक्त महाशय का यही मत है कि पाणिनि कात्यायन की अपेक्षा प्राचीन हैं॥

गोल्डस्टुकर साहिब आगे कहते हैं कि पाणिनि के ग्रन्थों से नहीं विदित होता कि उनके समय में वेद का आरण्यक भाग प्रचलित था क्योंकि उनके ग्रन्थ में आरण्यक शब्द का अर्थ बन में रहने वाला मनुष्य है पीछे से इस शब्द का अर्थ बन का मार्ग, बनैला हाथी बनैला सियार आदिक भी हो गया। पर अब इस "आरण्यक" शब्द का प्रचलित अर्थ लोग वेद का वह भाग बतलाते हैं जो उपनिषदों के पूर्व रचा गया। ऐसे आरण्यक ऐतरेयारण्यक बृहदारण्यकादि बहुत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। पर पाणिनि ने आरण्यक का यह अर्थ नहीं किया तो इससे क्या संभव है कि पाणिनि को यह अर्थ विदित न रहा हो? और उनके ग्रन्थ में इसका अर्थ का उल्लेख न मिलने पर भी क्या संभव है कि उस समय वेद के वे भाग न रहे हों या पाणिनि उन्हें जानते न रहे हों॥

इसी प्रकार गोल्डस्टुकर साहिब नाना प्रकार के प्रमाणों का उपन्यास करके सिद्ध करना चाहते हैं कि पाणिनि को निम्नलिखित ग्रन्थ विदित नहीं थे अथवा केवल इतनाही सही उनके विदित रहने का पता पाणिनि के ग्रन्थ से नहीं लगता वे ग्रन्थ ये हैं॥

वाजसनेयी संहिता, शतपथ ब्राह्मण, उपनिषद, अथर्ववेद और छओं दर्शन अर्थात् पूर्व और उत्तर मीमांसा (वेदान्त), सांख्य, योग न्याय तथा वैशेषिक॥

पर इनका ऐसा सिद्धान्त कहां तक ठीक हो सकता है इसमें वैसाही सन्देह है जैसा कि पाणिनि के सन् ईसवी से ३५० वर्ष पूर्व मान लेने में पड़ता है। वास्तव में हिन्दू पण्डितों के विश्वास अनुसार व्यास, जैमिन, कपिल गौतम और कणाद आदि की अपेक्षा पाणिनि नवीन ही जंचते हैं। हां पतञ्जलि चाहे उनसे पीछे माने जावें क्योंकि महाभाष्य के रचयिता हैं॥

गोल्डस्टुकर साहिब के मत में प्रतिशाख्य और फिट् शूत्र पाणिनि से प्राचीन हैं। उणादि गण और धातु पाठ की मूलभित्ति उन्ही की रचना है पर उणादि सूत्र पाणिनि की अपेक्षा नवीन हैं। इन सब का पता लगाने से संस्कृत विद्या की उन्नति व प्रचार में पाणिनि कैसे सहायक थे यह तो विदित हो सकता है पर पाणिनि के समय के विषय में सन्देह बनाही रहता है॥

पाणिनि के ग्रन्थ में यास्क का नाम मिलता है। उपसर्ग की परिभाषा निरुक्त में मिलती है पर पाणिनि ने पृथक् उसकी परिभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लिखी अनुमान होता है कि पाणिनि ने निरुक्तवाली प्रचलित परिभाषा को पर्याप्त समझ और लोगों के बीच प्रसिद्ध देख उसे छोड़ दिया हो। यास्क पाणिनि की अपेक्षा प्राचीन हैं॥

पाणिनि बुद्ध की अपेक्षा भी प्राचीन होंगे पर कितने प्राचीन थे यह निर्णय नहीं हो सकता। बुद्ध का जन्म काल प्रायः सन् ईस्वी से ६२३ वर्ष पूर्व अनुमान किया जाता है। अतएव पाणिनि सन् ६२३ ई० से अधिक प्राचीन व्यक्ति होंगे। पर यह नहीं कह सकते कि यह बात कहां तक प्रमाण सिद्ध मानी जा सकती है॥

पाणिनि का निवासस्थान गान्धार देश में शलातुर नामक स्थान था और उनकी माता का नाम दाक्षी था पतञ्जलि लिखते हैं—

"सर्वे सर्वपदा देशा दाक्षी पुत्रस्य पाणिनेः"

श्री युत महाशय रमेशचन्द्र दत्त के अनुमान से पाणिनि का समय सन् ईस्वी से पूर्व ८वीं सदी में होता है और यास्क उन से भी सौ वर्ष पहिले हुये थे। यद्यपि इस बात का कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता है कि पाणिनि का ठीक २ समय वही है जो दत्त महाशय ने निर्देश किया पर बहुत संभव है कि पाणिनि लगभग उसी समय के रहे हों। क्योंकि यदि कात्यायन का समय सन् ईस्वी से ३५० वर्ष पूर्व माना जाय तो असंभव न होगा कि अष्टाध्यायी सरीखे व्याकरण ग्रन्थ के भारत में प्रचार होते विशेष समय अपेक्षित हुआ हो॥

पाणिनि नाम के एक कवि भी सुनने में आते हैं जिनके रचित श्लोक वल्लभ देव द्वारा संगृहीत सुभाषितावली में उल्लिखित देखने में आते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि ये कवि दाक्षीपुत्र वैयाकरण पाणिनि से भिन्न हैं। पीटर्सन साहिब ने अपनी प्रकाशित सुभाषितावलि में उनका उल्लेख किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि रचित श्लोक यथा--

क्षपाः क्षामीकृत्य प्रसभमपहृत्याम्बुसरितां प्रतार्योर्वीं कृत्स्नां तरुगंहनमुच्छोष्य सकलम् । क्व संप्रत्युष्णांशुर्गत इतिसमालोकनपरास्तडिद्दीपालोका दिशिदिशि चरन्तीह जलदाः ॥

ऊपर के श्लोक में ग्रीष्म का अन्त बर्षा का प्रारंभ बहुत अच्छा बर्णन किया गया है ॥

विलोक्य संगमे रागं पश्चिमायाः विवस्वतः ।
कृतं कृष्णं मुखं प्राच्या नहिनार्यो विनेर्ष्या ॥

सरोरुहाक्षीणि निमीलयन्त्या रवौ गते साधुकृतं नलिन्या अक्ष्णां हि दृष्टापि जगत्समग्रं फलं प्रियालोकनमात्रमेव । प्रकाश्य लोकान्भगवान्स्वतेजसा प्रभादरिद्रः सवितापि जायते । अहोचला श्रीर्बलमानदामहोस्पृशन्ति सर्बं हि दशाबिपर्यये ॥

ऐन्द्रं धनुः पाण्डुपयोधरेण शरद्दधानार्द्रनखक्षताभम् । प्रसादयन्ती सकलंकमिन्दुं तापं रवेरभ्यधिकं चकार ॥

ये श्लोक बड़ी उत्तम कविता के हैं इससे प्रगट है कि उनकी कवित्व प्रतिभा भी बड़ीही उत्कृष्ट थी ॥

---o---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्तिसंग्रह।

वर्ण क्रम से

अकरुणत्वमकारणविग्रहः परधने परयोषिति च स्पृहा।
स्वजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम् ॥ १ ॥

निर्दयी पन, बिना कारण लड़ाई, पराई स्त्री पराये धन की इच्छा; अपने लोग तथा बन्धु बान्धवों की बातों को न सहना इतनी बातें दुष्ट मनुष्य में स्वभावही से होती हैं॥

अकर्तव्येष्वसाध्वीव तृष्णा प्रेरयते जनम्।
तमेवसर्वपापेभ्यो लज्जा मातेव रक्षति ॥ २ ॥

जो काम करने योग्य नहीं है उस ओर तृष्णा मनुष्य को असाध्वी स्त्री के समान प्रेरणा करती है और लज्जा माता के समान उस ओर जाने से बचा लेती है॥

अकर्मशीलं च महाशनं च लोकद्विष्टं बहुमायं नृशंसम्।
अदेशकालज्ञमनिष्टवेशमेतान् गृहे नप्रतिवासयेत ॥ ३॥

आलसी, निठल्लू, बहुत खाने वाला, जो सबों से द्वेष रखता हो कपटी कुटिल, कठोर चित्त, देश काल को न समझनेवाला, जो मनहूस भेख से रहता हो, इन सबों को अपने घर में न टिकने दे॥

अकस्मादेव कुप्यन्ति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः।
शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवं यथा ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बिना कारण बिगड़ उठते हैं और बिना हेतु के प्रसन्न हो जाते हैं ; इस तरह के लोगों को भलेमानुस न कहना चाहिये उनका स्वभाव मेघ का सा चंचल होता है जो बायु से प्रेरित हो इकट्ठे हो जाते हैं फिर तुर्त ही छिन्न भिन्न भी हो जाते हैं ॥

अकस्मात् द्वेष्टि यो भक्तमाजन्मपरिसेवितम् ।
नव्यंजते रुचिर्यस्य त्याज्यो नृप इवातुरः ॥ ५ ॥

रोग पीड़ित के समान ऐसा राजा छोड़ देने योग्य है जो जन्म से सेवा करने वाले अपने भक्त खैरखाह से द्वेष रखता है, जिसकी रुचि नहीं प्रगट होती कि किस बात से महाराज प्रसन्न होते हैं—रोगी के पक्ष में भक्त के अर्थ भोजन या भात है रोगी की रुचि भी घट जाती है ॥

अकांचनेऽकिंचननायिकाङ्गके किमारकूटाभरणेन न श्रियः ॥ नैषध

जिस नायिका के अंग में सोने के गहने मयस्सर नहीं हैं तो क्या पीतल के गहनों से उसके अंग की शोभा नहीं हो सकी ॥

अकाण्डपातोपनतं कं न लक्ष्मीर्विमोहयेत् ॥ कथा सरि०

दाने २ को मुहताज जिसके पास कभी कुछ न था वह एक बार बहुत सा धन पा जाय तो कौन ऐसा पुरुष होगा जो अपने को न भूल जाय ॥

अकारणद्वेषि मनोस्ति यस्य वै कथं जनस्तं परितोषयिष्यति

जिसका मन बिना कारण द्वेष युक्त है उसे कोई क्योंकर प्रसन्न कर सक्ता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकामस्य क्रिया काचित् दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्कामस्य चेष्टितम्॥ ६॥ मनु

जो निष्काम हैं उनका किया हुआ कोई काम नहीं देखा जाता–मनुष्य जो कुछ करता है वह सब कामना के पर तंत्र हो॥

अकाण्डपातजातानामार्द्राणां मर्मभेदिनाम्।
गाढशोकप्रहाराणामचिन्तैव महौषधम्॥ ७॥

अकस्मात् उपस्थित ताज़ा और मर्मभेदी शोक का कुछ खयाल न करना ही उसकी बड़ी औषधी है॥

अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात्कस्य भयं न जायते। विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुस्सहः सन्निहितं सदा मुखे॥ ८॥ बाणभट्ट

बिना कारण दारुण बैर प्रगट करनेवाले दुर्जन से किसे भय नहीं होता–भयङ्कर सर्प का सा बिष तुल्य बचन सदा जिसके मुख पर रहता है॥

अकार्यं तथ्यं वा भवति वितथं वा किमपरं प्रतीते लोकेस्मिन् हरति महिमानं जनरवः। तुलोत्तीर्णस्यापि प्रकटनिहताशेषतमसो रवेस्तादृक् तेजो नहि भवति कन्यांगतवतः॥ ९॥

जो काम करने योग्य नहीं है वह सत्य हो वा झूठ उस पर लोगों को प्रतीत हो जाती है तो वह लोकापवाद के रूप में हो उस काम के करनेवाले के गौरव को कम कर देता है–सूर्य तुला राशि के हो मानो तुला पर धर तौल लिये गये हैं तौभी पहले कन्या में गये कन्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गमन कर चुके यह अपवाद जो लगा तो अब संपूर्ण अन्धकार को दूर करते हैं तौ भी उनका वैसा तेज नहीं होता जैसा कन्या के सूर्य होने के पहिले सिंह आदि राशियों पर था ॥

अकाले कृत्यमारब्धं कर्तुर्नार्थाय कल्पते ।
तदेव कालमारब्धं महते ऽर्थाय जायते ॥ १० ॥

कुसमय में जो काम किया जाता है वह करने वाले को कोई फायदे का नहीं होता—वही जो समय से किया जाता है तो बड़ा लाभकारी होता है ॥

अकालमेघवद्वित्तमकस्मादेति याति च ।

कुसमय के मेघ के समान धन आता है और चला भी जाता है—

अकिंचनस्य शान्तस्य दान्तस्य समचेतसः ।
सदासन्तुष्टमनसः सर्वाः सुखमया दिशः ॥ ११ ॥

जो अकिंचन हैं जिनके चित्त में शान्ति है जो इन्द्रियों को दमन किये हैं वे जहां जांयगे वहां ही उन्हें सुख है ॥

अकिञ्चनस्य शुद्धस्य उपपन्नस्य सर्वतः ।
अवेक्षमाणस्त्रींल्लोकान्न तुल्यमिहलक्षये ॥ १२ ॥ भारत

जो निष्किञ्चन हैं बाहर भीतर से शुद्ध हैं जो सब ओर से पूर्ण हैं तीनों लोक को देख डालने पर भी हम उनके समान किसी को नही पाते ॥

अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः ।
हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥१३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय अपयश को दूर करता है अर्थात् जो नम्र हैं उनकी निन्दा कोई नहीं करता--पराक्रम से अनर्थ नही होने पाता तात्पर्य यह कि जो राजा पराक्रम रखता है वह अनर्थ नहीं होने देता-क्षमा क्रोध को हटा देती है आचार कुलक्षण दूर कर देता है ॥

अकीर्तिर्निन्द्यते देवैः कीर्तिर्लोकेषु पूज्यते ।
कीर्त्यर्थं तु समारंभः सर्वेषां सुमहात्मनाम् ॥१४॥

अकीर्ति को देवता लोग निन्दते हैं कीर्ति को सब लोग पूजते हैं बड़े लोगों के बड़े २ काम कीर्ति ही के लोभ से किये जाते हैं ॥

अकीर्तिर्यस्य गीयेत लोके भूतस्य कस्यचित् ।
पतत्येवाधमांल्लोकान्यावच्छब्दः प्रकीर्त्यते ॥ १५ ॥

जिसकी निन्दा संसार में सब लोगों से की जाती है वह तब तक अधम लोक नरक आदि में पड़ा रहता है जब तक उसकी निन्दा सब लोग करते रहते हैं ॥

अकीर्तेःकारणंयोषित् योषिद्वैरस्य कारणम् ।
संसार कारणं योषित् योषितं वर्जयेत्ततः ॥ १६ ॥

स्त्रियां निन्दा का कारण होती हैं, वैर का कारण होती हैं, संसार का कारण भी वही हैं इससे उनका त्यागही उचित है ॥

अकुले पतितो राजा मूर्खपुत्रोहि पण्डितः ।
निर्द्धनस्य धनप्राप्तिस्तृणवन्मन्यते जगत् ॥ १७ ॥

नीच कुल में राजा हो जाना मूर्ख का पुत्र पण्डित और निर्द्धन धन पाय जाय तो वह जगत् को तृण तुल्य मानने लगता है ॥

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकुलानां कुले भावं कुलीनानां कुलक्षयम् ।
संयोगं विप्रयोगं च पश्यन्ति चिरजीविनः ॥१८॥

बड़ी उमर तक जीने वाले इन बातों को बहुधा देखते हैं-जो किसी गिन्ती में न थे पीछे बड़े कुलीन हो गये ; जो कुलीन थे उनके कुल में कोई भी न रह गया ; कितने नये २ लोग आकर मिले और कितनों का बिछोहा हो गया ॥

अकुलीनः कुलीनो वा मर्यादां यो न लंघयेत् ।
धर्मापेक्षी मृदुर्दान्तः सकुलीनशताद्वरः ॥ १६ ॥ व्यासदेव

उच्च कुल का हो चाहो नीच कुल का जो मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता ; धर्म पर दृष्टि रखता है ; स्वभाव का कोमल है और इन्द्रियों को दमन किये है वह सौ कुलीनों से श्रेष्ठ है ॥

अकुलीनोपि शास्त्रज्ञो दैवतैरपि पूज्यते । चाणक्य

नीच कुल में पैदा भी जो शास्त्र जानता है उसे देवता भी पूजते हैं।

अकुलीनोपि मूर्खोपि भूपालं योत्रसेवते ।
अपिसन्मान हीनोपि सर्बत्र परिपूज्यते ॥ २० ॥

नीच कुल में पैदा हो मूर्ख हो पर राजा का मुह लगा हो तो सन्मान हीन हो कर भी सब लोगों से प्रतिष्ठा पाता है ॥

अकृतागसमपि रामो बालिनमन्तर्हि तश्छलेनैव ।
सख्युर्जघान शत्रुं सुहृद्रिपुं भावयेद्रिपुवत् ॥२१॥ गु०क०

यद्यपि बानरों के राजा बाली ने रामचन्द्र जी का कुछ भी अपराध न किया तथापि उसे उन्हों ने अपने मित्र सुग्रीव का अपराधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान बध कर डाला इस लिये मित्र के शत्रु को भी शत्रुवत् जानना चाहिये ॥

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्द्धसु विद्विषाम् ।
कथंकारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति ॥ २२ ॥ माघ

अवज्ञा के साथ शत्रुओं के सिर पर बिना पांव रक्खे बीरता का यश निरावलम्ब हो आकाश और पृथ्वी सब ठौर किस प्रकार फैल सकता है ॥

अकृतप्रेमैव बरं न पुनः संजातविघटितप्रेमा ।
उध्रितनयनो हि यथा ताम्यत्येवं नजातान्धः ॥ २३ ॥

प्रेम का पहिले ही से न होना अच्छा प्रेम बद्ध हो कर फिर दोनों के प्रेम में अन्तर हो जाना उत्तम नहीं-जो पेट से अन्धा पैदा भया है उसे उतना क्लेश नहीं उठाना पड़ता जितना उसे जिसके पहले नेत्र थे पीछे से अन्धा कर दिया गया है ॥

अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम् ।
अयाचित्वा परं कंचित् यत्स्वल्पमपितद्बहु ॥ २४ ॥

दूसरे को बिना सताये खल के घर बिना गये और बिना मांगे थोड़ा भी मिले तो वह बहुत है ॥

अकृत्वा पौरुषं या श्रीः किंतया पि सुभोग्यया ।
जरद्गवोऽपिचाश्नाति दैवादुपगतंतृणम् । २५ ॥ पंचतंत्र

बिना पुरुषार्थ काम में लाये जो धन मिल जाय और उस धन का भोग भी भली तरह किया जाय तो उस धन से क्या-बूढ़ा बैल भी आप से आप आये हुये तृण को खा लेता है-तात्पर्य यह कि धन वही अच्छा जो पुरुषार्थ से संचय किया गया हो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकृत्यं मन्यते कृत्यम्।

उसका क्या कहना जिसने बुरे काम को भला काम समझ लिया है।

अकृत्यं नैव कर्तव्यं प्राणत्यागेऽपि संस्थिते।
नच कृत्यं परित्याज्यं धर्म एष सनातनः ॥२६॥

प्राण रहै या न रहै ऐसा सन्देह उपस्थित होने पर भी जो काम करने योग्य नहीं है उसे कभी न करै और जो करने योग्य हो उसे त्यागै भी नहीं यह सदा का क्रम चला आया है॥

अक्रोधेन जयेत् क्रोधं असाधुं सधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम् ॥२७॥

शान्त रह क्रोध को जीतै; असाधु दुष्ट के साथ साधुता कर उसे अपने बश में लावै; जो कदर्य धन का लोभी है उसे धन दे कर अपने आधीन करै; झूठ को सत्य मे दबा ले अर्थात् तुम कितनाही झूठ बोलो पर हम जो सत्य है उससे मुह न मोड़ैं तो उस झूठे का झूठ नहीं चलता॥

अक्लेशलभ्या हि भवन्त्युत्तमार्था मनीषिणाम्।

बुद्धिमान् को उत्तम से उत्तम पदार्थ बिना क्लेश उठाये ही मिल जाते हैं॥

अक्षमः क्षमतामानी क्रियायां यः प्रववर्तते।
सहि हास्यासपदत्वं च लभते प्राण संशयम् ॥२८॥

असमर्थ हो जो अपने को समर्थ मान किसी काम के करने में प्रवृत्त होता है वह हंसा जाता है और प्राण नाश के संशय में पड़ता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋजुस्तवमञ्जूषा ।

इसमें सन्देह नहीं इन दिनों कलकत्ते के माड़वारी बहुत कुछ तरक्की कर रहे हैं विशुद्धानन्द विद्यालय की उन्नति देख मालूम होता है कि माड़वारी थोड़े दिनों में बहुत आगे बढ़ जांयगे- दैव की सानुकूलता से इसके प्रधान अध्यापक पं० उमापति दत्त शर्मा बहुत सुयोग्य अध्यापक और मेनेजर मिल गये हैं उक्त पण्डित जी प्राणपण से विद्यालय की उन्नति में लगे हैं-उन्हो ने इस मञ्जूषा को यहां के बालकों के धर्मोपदेश के लिये रचा है-इस तरह की एक पुस्तक का होना अति आवश्यक था इन दिनो के नव युवक प्रारम्भही से अंगरेज़ी का अनुशीलन करते २ अगरेज़ीयत के तन्मय हो जाते हैं आशा है इस पुस्तक को भी पढ़ते रहेंगे तो उन्में अगरेज़ीपन इतना अधिक न व्यापेगा-इस पुस्तक में जो श्लोक हैं स्मृति और पुराण से उध्रित किये गये हैं उनका केवल भावार्थ दिया गया है शब्दार्थ अनुवाद रहता तो अच्छा होता मिलने का पता पं० उमापति दत्त शर्मा विशुद्धानन्द विद्यालय नं० १५३ हेरिसन रोड कलकत्ता मूल्य ।=)

स्वीकार ।

पत्र के सहातार्थ काशी निवासी गङ्गा प्रसाद गुप्त का भेजा १५) धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै बिबेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७
सं० ५

प्रयाग

मई
सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७
सं० ५

प्रयाग

मई,
सन् १९०५ ई०

हमारे सब गुण क्यों फीके हो रहे हैं।

"सबै अलोना लोन बिन" हम और और देश वालों के साथ अपनी आर्य जाति का मुकाबिला करते हैं तो इन्हें किसी बात में हेठा नहीं पाते; ऋषि प्रणीत इनका श्रेष्ठ वैदिक धर्म कर्म आचार विचार जगत् भर में सब के ऊपर गाज रहा है; अन्य जातियों में प्रचलित नये २ धर्म अपने मज़हबी उसूलों की छाया साफ २ हमारे उपनिषदों के DOCTRINES शिक्षा और उपदेश की ली है; इसे यूरोप के नामी विद्वान् मोक्ष म्यूलर आदि भी मान गये हैं—यद्यपि चिर काल तक यवनों के सम्पर्क से इनकी कितनी बातें यावनिक हो गई हैं इनकी अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यता और शिष्टता तथा बहुत से रहन सहन बोल चाल रीति रसम और व्यौहार में अरब पारस और तुर्किस्तान के यवनों की दूषित दुर्गन्धि आने लगी है तथापि अब तक जो विशुद्ध आर्यता का अंश उस में बच रहा है वह मोती सा झलकता है-अब इन के शिल्प वाणिज्य दस्तकारी तथा भांत २ के हुनरों को लीजिये तो उस में भी यह किसी से हेठे नहीं हैं यद्यपि समुद्र के अपर पारावलम्बी द्वीपान्तर वासी विदेशियों ने अनेक नई २ कल और यंत्रों के द्वारा कारीगरी की चीज़ों को अरज़ां सुलभ और कम कीमत में मिलने लायक कर दिया है पर जो सफाई और जैसी टिकाऊ देश की बनी चीज़ें होती हैं वैसी यंत्र साध्य विदेशी वस्तु कहां? हां वैसी चमक दमक और चन्दरोज़ा चटकीलापन चाहो उसमें न आ सके-यंत्र साध्य शिल्पों में भी यहां वाले प्रयत्न कर रहे हैं प्रति बर्ष भिन्न २ प्रान्त के नव युवक जापान में इसकी शिक्षा पाने को जा रहे हैं आशा है थोड़े दिनों में यंत्र साध्य शिल्प में भी ये निपुण हो जायंगे-अब इन के बुद्धि तत्व और दिमाग़ी ताक़त की समीक्षा कीजिये तो उसमें भी प्रगट हो जाता है कि बंश परंपरागत इन में उन्ही प्रातःस्मरणीय पुण्यशील ऋषियों का परम पवित्र शुद्ध बीर्य अब तक दौड़ रहा है जो ऋषि बुद्धि तत्व के सर्वस्व थे तब उन्ही के वंशधर ये क्यों न दिमाग़ी क़ूवत में चढ़े बढ़े न रहैं-विज्ञान, दर्शन, कला तथा और २ विद्या अथवा वैज्ञानिक चातुरी का कौन सा हिस्सा बच रहा है जिस में ये विदेशियों के मुक़ाबिले हेठे रह गये लाचारी है कि गवर्नमेंट की ओर से इन को वही सब बातों के सिखाने में वैसा उदार भाव नहीं प्रकाश किया जाता जैसा अपने हम कौम के साथ किया जाता है तौ भी ये यत्न श्रम और अध्यवसाय में अपनी ओर से नहीं चूकते-अब त्रुटि इन में एक ही बात की है कि मुसल्मान बादशाहों का ज़ुल्म सहते २ SPIRIT जोश इन में बिलकुल बाकी न रहा अब ये " कोउ नृप होय हमे का हानी । चेरी छोड़ न होउब रानी "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली कहावत पर पूरा २ अमल कर रहे हैं न जानिये इनका कौन सा पाप का उदय है कि रक्त संचालन करने वाली इन की नाड़ी में गर्मी कहीं बाकी न रही सब तरह पर बुझ से गये हैं जिस के बिना इनकी जितनी बातें सब फीकी हो रही हैं-वर्तमान इन का धर्म कर्म रहन सहन उत्सव तथा रीति रसम कोई ऐसे न बच रहे जिस में से गुलामी की सड़ी बदबू न निकलती हो अधिक तर यह बदबू हमारे पुजाने वाले ब्राह्मणों के तन से निकलती है जिन्हों ने केवल दक्षिणा पुजवाना ब्राह्मणत्व का मतलब या उसूल मान लिया है-हमें बड़ा पश्चात्ताप है कि धर्मशास्त्र और पुराने इतिहासों को देखो और पढ़ो तो यही मालूम होता है कि ब्राह्मणता का निबाहना बड़ी कड़ी बात और लोहे के चने हैं संसार के यावत् सुखों को लात मार पारमार्थिक और आध्यात्मिक उन्नति ब्राह्मणता का मुख्य उद्देश्य है जिसके सामने समग्र पृथ्वी का राज्य भोग भी तुच्छ और नीरस है-पहले के ऋषि जिन में वह ब्राह्मणता थी चक्रवर्ती राजाओं को अपना गुलाम किये थे बड़े २ शूर वीर सूर्य और चन्द्र कुल भूषण उन तपस्वी ऋषियों से नज़र मिलाने की हिम्मत नहीं बांधते थे-यों तो इतिहासों में इन ब्राम्हणों के बड़े २ क़िस्से गाये हुये हैं जिसे इन दिनों की सभ्य समाज निरी दन्त कथा मानैगी किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि संसार की भोग तृष्णा में न फंसा हुआ दमन शील दान प्रतिग्रह से सुयंत्रित चाहो बहुत विद्या न भी पढ़ा हो गायत्री मात्र सार किन्तु सावित्री के जप में सम्यग् निष्णात हो तो ब्राह्मण अपने ब्रह्म तेज से बहुत कुछ कर सक्ता है—हमारे एक मित्र का कथन है कि ब्राह्मणों ही ने इस मुल्क को रौनक दिया था और अब वेही बिगाड़ रहे हैं हमें बहुतही सटीक जंचता है-भोग तृष्णा में फंस पहले ये आप बिगड़े और मूर्ख हो गये पीछे से देश को मूर्ख कर डाला और बिगाड़ा-जब इनकी मूर्खता से इनका मान घटने लगा तब ये अनेक ढोंग रच प्रजा को गुमराह करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे और अपना फाइदा तथा पुजवाना सब के ऊपर रक्खा-प्रजा मूर्ख होने से इन्हों ने जैसा कहा वैसा ही करने लगी जिसका परिणाम यह हुआ कि ऋषियों का चलाया हमारा चोखा शुद्ध वैदिक धर्म जिस में कहीं से स्वार्थ की झलक न थी विलुप्त प्राय हो गया ब्राह्मणों का चलाया प्रचलित हिन्दू धर्म जिस में आदि से अन्त तक स्वार्थ लम्पटता भरी है ऊपर हो आया जिसे देख और २ मत के लोग हंसते हैं और हमें बेवकूफ बनाते हैं-जब तक लोग मूर्ख थे ब्राह्मणों की भरपूर चल गई अब नूतन शिक्षा के प्रभाव से ज्यों २ लोगों के नेत्र खुलते जाते हैं इनके चंगुल से लोग निकलने का प्रयत्न कर रहे हैं पर इन में ऐसी मूर्खता छाई हुई है कि ये कुछ नहीं समझते बूझते पगुराते हुये केवल दक्षिणा मात्र से प्रयोजन रखते हैं-देश पर क्या विपत्ति आई क्यों सब ओर से ऐसी कमज़ोरी छा गई इस का कभी सोच विचार इन के मन में धंसता ही नहीं-कलियुग है युग धर्म के नाम रोते भंग की तरंग में अकर्मण्य निश्चेष्ट बैठे हुये हैं-आश्चर्य क्या हमारा देश फिर कभी को उठै और तरक्की करै किन्तु जब हमारा रूपान्तर हो गया पुराने इजिप्शन ग्रीशन और रोमन्स की भांत हम सर्वथा बिलाय गये तब हमें उस उठने की कौनसी खुशी रही ॥

हमारी भावी भलाई के लिये ब्राह्मणों का चेतना और सुधरना पहिली बात है और वह तभी हो सकेगा जब हमारे दानियों में विवेक आवे और वे सोच समझ दान दें और उन्हीं को या वैसेही काम में अपने धन का नियोग करैं जो उस दक्षिणा के अधिकारी हों या जिस बात से उस दक्षिणा का फाइदा समझा जाय-देश के प्रत्येक भाग में ऋषियों की प्रणाली के ऐसे ब्राह्मण तैयार किये जांय जो तपः स्वध्याय संपत्ति से पूर्ण हों; बाल्य बिबाह की कुप्रथा जड़ से उखाड़ दी जाय; ब्राह्मण भी संसारिक विषय बासना और भोग तृष्णा से बचे रहें हर तरह की विद्या विज्ञान में एकता हो जैसा पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण सब के अग्रगण्य रहे वैसा ही फिर हो जांय–किन्तु हमारे इस शेखचिल्ली के मनसूबों पर लोग हंसेंगे और कहेंगे यह क्या खुराफात बक रहा है ब्राह्मण होने से अपने ही कद्दे की खैर मनाता है–अस्तु खुराफात की बक है तो थोड़ा और भी सुन लीजिये हमारी कमज़ोरी ने हमें यहां तक भीरु कर डाला कि पुराने लोगों के कदम पर कदम रखते कोई नई बात के करने या चलाने में बिल्कुल हिचकते हैं आगे कदम बढ़ाने की हिम्मत नहीं बांधते कितनी कुरीतें इसी से बद्ध भूल हैं हटाये नहीं हटतीं कि वे पुरखों के समय से चली आई हैं अब यह किस्से कहैं कि बीच के ज़माने के हमारे पुरखे मुसल्मानों के अत्याचार से पीड़ित हो सब भांत हीन दीन किसी काम के न रह गये थे; येन केन उन को अपने बाल बच्चों का प्राण बचाना मात्र सूझा; वे उस समय हुये जब देश में सब ओर अन्धकार छाया हुआ था विद्या और सद्विचार का सब ओर से लोप हो गया था—आज मुसल्मानों ने आय कतल आम किया कल पिण्डारियों ने आय लूटा खसोटा स्वास्थ्य और अमाचैन को लोग तरस रहे थे उस समय उन्हों ने जो रीत चलाई वह सब आपद् धर्म की थीं–अब हमें स्वास्थ्य और अमन चैन है तो क्यों न हम अब आगे को कदम बढ़ावें पर भीरुता जो हमारे रग २ में पैठ गई है वह हमें सब ओर से जकड़े है हमें अत्यन्त अपरिवर्तन शील Conservative कर डाला है–जिसने कोई नई बात सोचा और करना चाहा उस पर देश का देश टूट पड़ता है उस बेचारे की कोई फ़ज़ीहत नहीं बचती जो न की जाय–बंगाल में विद्या सागर यहां दयानन्द ऐसे दो एक इसके उदाहरण हो गये हैं बेंकटेश्वर सरीखे तो हमारी भी दुर्गति करने में नहीं चूके पर हम बेहयाई से अपनी बात पर हठ किये हुये हैं–अस्तु व्यर्थ की बक बक तो हो चुकी अब अपने उस लक्ष्य किये हुये विषय के सम्बन्ध में कहते हैं जिसका अंकुर भी कहीं ढूढने से देश में मिलना कठिन हो रहा है और वह भांत २ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक व्यवस्था या राजनैतिक चातुरी है कानग्रेस के प्रतिपक्षी हर तरह पर इस का प्रतिबाद करते हैं और यही चाहते हैं कि यह छोड़ दिया जाय इस से कोई उपकार नहीं है व्यर्थ का इतना रुपया साल में खर्च किया जाता है हम कहते हैं मान लो इस से कोई फाइदा नहीं वरन कर्मचारियों के आंख का कांटा यह अलबत्ता हो रहा है किन्तु साल में एक बार राज नैतिक आन्दोलन कैसी भरी बात है साल भर कर्मचारी लोग हर एक प्रान्त में जो अपने मन की कर गुज़रते हैं उस सब का वहां पत्रा खोला जाता है और प्रतिवाद किया जाता है जिस से कुछ तो ज़िन्दादिली लोगों के मन में आती है यह कुछ हई नहीं इसी ज़िन्दादिली के बिना हमारी सब बात फीकी है स्वामी दयानन्द जी हमें पसन्द आते हैं सो क्यों इसी लिये कि उन्हों ने अपना मत राजनैतिक बुनियाद Political basis पर स्थापित किया है पर बीच में आपस की फूट और खण्डन मण्डन में ऐसा फसे कि राजनैतिक कौशल की गन्धि भी न बच रही प्रत्युत आर्य समाज इस समय बड़ा आपस का विद्रोह फैला रहा है - विलाइत में एक छोटी सी बात पर भी देश का देश टूट पड़ता है यहां बड़े से बड़े कानून जिस में प्रजा का करोड़ों का नुकसान हो जाता है और हमारे आगे बढने की जड़ कटती है चुप चाप पास हो जाते हैं किसी को मालूम तक नहीं होता—इसी से हम कहते हैं इसके बिना हमारा सब फीका है अब होना यही चाहिये कि हमारा धर्म कर्म आचार विचार रीति रसम खेल कूद तेवहार बार सब राजनैतिक बुनियाद पर रक्खे जांय जैसे इस समय प्रचलित हैं उन से हमारी राजनैतिक प्रबीणता की जड़ कटती है और कमज़ोरी बढ़ती है स्वजाति वात्सल्य बन्धु प्रेम देश पर ममता आत्म गौरव अपने स्वत्व की पहचान आदि इस के प्राण रूप हैं कौम में ज़ोर आने के समय ये सब बातें पहले आती हैं जिस देश में पूर्ण रीति पर ये सब बातें आ गईं वही देश स्वर्ग है और उस जाति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग स्वर्गीय जीव हैं जापान में इस समय सब बातें देखी जाती हैं तो जापान स्वर्ग और वहां के रहने वाले स्वर्गीय जीव हैं हिन्दुस्तान जिसे पुराण वाले कर्म भूमि और पवित्र क्षेत्र मानते हैं और लिखते हैं कि देवता लोग भी ललचाते हैं कि इस कर्म भूमि में आय जन्म लें और कर्म के द्वारा मुक्ति के अधिकारी हों किन्तु विचार के देखो तो यह नरक से भी अधम और अपवित्र भूमि है जिन को गुलामी की नारकी यातना भोगना होता है वेही यहां आय जन्म लेते हैं अस्तु इस दुख रोने को कहां लौ पल्लवित करते जांय ॥

—— :o: ——

परोपकार ।

"परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्"

यह तो सब लोग जानते हैं कि परोपकार बड़ाही सत्कार्य है परोपकार से सामान्यतः यही अर्थ समझा जाता है कि दूसरे के लिये भलाई करना दूसरे की हानि न पहुंचाना इस्से बढ कर भलाई और क्या हो सक्ती है—परन्तु हमारी इस अवनति के समय में परोपकार की कल्पना ही नष्ट होती जाती है हमारे देश में उपकार करने की बुद्धि स्वार्थ साधन सर्वथा निगल बैठा जैसे बनै तैसे केवल अपनाही फाइदा अपनाही भला इतना दृढ़ मूल हो गया है कि भाई भाई के मुकाबिले बाप बेटे के मुकाबिले ज़रा अपनी किसी तरह की हानि सहना लोग गवारा नहीं करते फिर भी शहरों में रहने वालों की अपेक्षा ग्रामीणों में परोपकार की बुद्धि बहुत अधिक पाई जाती है—गांव वाले नये आये हुये अभ्यागत की जैसी पहुनाई और सत्कार करते हैं शहर वाले कदाचितही वैसा करते होंगे—ग्रामीणों में यह भूत दया का अंश प्रायः स्वभाव सिद्ध होता है परन्तु वेही दिहात के रहने वाले जब शहर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय बस जाते हैं और शिक्षित हो जाते हैं तब वे अपने को ऊंचे दर्जे वाले और प्रतिष्ठित समझने लगते हैं जिन को नये क्रम की शिक्षा यही सिखाती है कि ये भीख मांगने वाले बहुधा दूसरों को बोझ हैं और उनके भरण पोषण का व्यर्थ का भार हमारी समाज पर है-ऐसे निरूपयोगी निरुद्योगियों को देना देश में सुस्त काहिल और मुफ़्तखोरों की संख्या बढ़ना है-पूस माघ के शीत की असह वेदना से कांपता कोई निरावलम्ब मनुष्य बाबू जी के दरवाज़े पर आवे और अपनी पीड़ित दशा को बयान करे तो बाबू जी अपने जामे के बाहर हो निकल पड़ते हैं और उनके चित्त में भूत दया उत्पन्न होने के पलटे ऐसा कट्टरपन और कठोरता पैदा हो जाती है कि उन्हें उस दीन दुखिया पर उपकार करने की बुद्धि तनिक भी नहीं रहती बड़े अहंकार के साथ उस से कहा जाता है चला जा बक २ मत कर इत्यादि-हा। उस दरिद्री निर्धन के हृदय टुकड़े २ हो गये वह निराश हो अपना सा मुंह ले बाबू जी के द्वार से बिमुख हो चला जाता है बस बाबू जी के हृदय में भूत दया न होने से भलाई न कर सके परोपकार उनके हाथों से न बन पड़ा प्रत्युत उस दीन दुखिया के मन को दुःख पहुंचा दूसरे को पीड़ा पहुंचाना कैसा भारी पातक है—अफसोस शिक्षित बाबू जी इतनी तालीम पर कट्टर कलेजे के बने ही रहे-शिक्षा का फल मानसिक शक्तियों को उन्नति करना है तब बाबू साहब सहानुभूति के ऐसे शत्रु क्यों बन गये? क्या शिक्षित लोगों में दया दाक्षिण्य और उदारता के भाव पैदा करने वाली शक्तियों का सर्वथा अभावही हो गया है? नहीं ऐसा कहने का साहस तो हम नहीं कर सक्ते; सभ्यता की चटनी चाटे हमारे बाबू साहब सुशिक्षित हैं विद्वान् हैं परन्तु जैसी तालीम उन्होंने पाया है वह ऐसीही है जिस में उन्हें अपनेही कदहे की खैर मनाने से फ़ुरसत नहीं मिलती अपना बड़प्पन मूतिष्ठा किसी तरह निभ जाय इस फिकिर में चूरंचूर हैं; दासत्व के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े अधिकार और महा पद में रह जो धन बटोरा है उस पर किसी का अणु मात्र भी किसी तरह का अधिकार बिल्कुल उन्हे पसन्द नहीं है उनके मन में यही धसी है कि जैसा इंगलैंड की तवारीख में हम पढ़ते हैं कि वहां Poor Law भिखारियों के लिये कानून है जिस्से गवर्नमेंट हट्टे कट्टे तन्दुरुस्तों को रास्ते में भीख मांगते हुये फिरने नहीं देती— उनके लिये एक उद्यम शाला है वहां उन्हें काम करना पड़ता है और उस के बदले उन्हें खाने को दिया जाता है। ऐसाही यदि हिन्दुस्तान में भी कर दिया जाता तो बड़ी भलाई होती और इतने मुफ़्तख़ोरे भिखमंगे जो नित्य आय तंग किया करते हैं उनका ठीक बन्दोबस्त हो जाता बाबू जी एक तरह पर अच्छा सोच रहे हैं किन्तु यहां प्रश्न यह उठता है कि उनकी शिक्षा उन्हें भूत दया के पवित्र विचारों से क्यों अलग कर देती है परोपकार की बुद्धि उनकी शिक्षा के साथही क्यों नहीं आती ? इसका कारण यही मालूम होता है कि वह शिक्षा उनके दिमाग़ की कूवत बढ़ाने को मिली है चित में विमल और उज्वल भावों के उदय होने के लिये नहीं । उनका Clear brain परिष्कृत मस्तिष्क उन्हे बादा विवाद काइयांपन सिखलाता है चालांकी और चुस्ती में उनके आगे कोई न निकल जाय न कोई चालाक उन्हे फन्दे में फंसा ले सके इन सब बातों के लिये शिक्षा ने उन्हे तैयार कर दिया है। चित्त की सरलता सिधाई आस्तिक्य तथा श्रद्धा बुद्धि और विश्वास का तो अंकुर भी वहां नहीं जमा तब भूत दया और मनुष्य मात्र से सहानुभूति तो उसी सिधाई और आस्तिक्य बुद्धि तथा विश्वास के अंग हैं क्यों कर वहां स्थान पा सकते हैं। तो निश्चय हुआ अन्तःकरण की वृत्तियों को पवित्र और ऊंची करने वाली शिक्षा उन्हें नहीं मिली इसी से उस दीन भिक्षुक के सवाल पर उनके मस्तिष्क में ऐसा असर पैदा हुआ और हृदय में नहीं। मस्तिष्क पर असर पड़ने से बादा विबाद की सूझी किन्तु भूत दया के निर्मल प्रवाह का स्रोत न खुला। मनुष्य के शिक्षा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता तभी कही जा सकती है जब उसकी बुद्धि और हृदय Head and heart दोनो की एक सी उन्नति हो। इस नवीन शिक्षा में मस्तिष्क की समुन्नति भरपूर होती है किन्तु इतर आभ्यन्तरिक शक्तियां जिन पर श्रद्धा और विश्वास की नेव डाली जा सक्ती है उनका पतनही होता जाता है फलतः भूत दया और पर उपकार हमारी शिक्षित समाज में गुलरी का फूल अथवा आकाश कुसुम सा हो गया हमारी नई समाज का यह दूषित स्वभाव क्योंकर सुधरै उनमे भूत दया कैसे आवे इसका विचार करना हम अपने पढ़ने वालों ही पर छोड़े देते हैं ॥ इत्यलम् ॥

गणपति जानकी राम दुबे बी. ए., ग्वालियर

किसका बस है कि भारत पर बिपत्ति की अरराहट से बचा रहे

बसंत के दिनों में जब झड़ी पर झड़ी अठवारों और पन्द्रहियों एक दम के लिये नहीं थमती पृथिवी जलमग्न हो जगत् एकार्णव सा बोध होने लगता है ऐसे समय लोना खाई हुई पुरानी भीत एक बारगी अरराहट के साथ नीचे आ टूट पड़ती है। वैसाही इस समय दारिद दुरित इस जीर्ण भारत पर जो सब ओर से वृटिश शासन महा पयोधि से प्लावित है न जानिये कौन २ सी बलाय सब ओर से आय अरराहट के साथ टूट रही है। मुद्दतों से प्लेग अपना ज़ोर देखाता ही था लोग अशरण हो बिलबिला रहे हैं और प्लेग के महोदर में जा टूटे पड़ते हैं अकस्मात् काल रात्रि की सहोदर भगिनी सी एक ऐसी रात आई कि अटक से कटक तक ऐसा हिम पात हुआ कि मानो सम्पूर्ण देश एक दूसरा हिमालय सा बन गया किसान जो सांझ को लह लहे खेत देख घर जाय सुख की नींद सोये थे और आगे के लिये मन में न जानिये क्या२ मनसूबा गांठे हुये थे कि इस बर्ष ईश्वर की देन बहुत अच्छी है देन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोत से फारिग हो मन माना ख़र्च करेंगे । कोई सोचते थे बैजनाथ जी का भोज करेंगे; कोई विचारे थे बचऊ दस बर्ष के हो गये हैं इस साल उनका व्याह बड़े भक्काटे से करेंगे; कोई मन में गांठे थे गया कर पितरों से उद्धार पावेंगे; इत्यादि अनेक ख़्वाब देखते रात कटी सबेरे आय उन्हीं हरे खेतों को करखा सा झौंसा हुआ पाय उन बेचारों के चेहरों पर उदासी छा गई बनियों की बन पड़ी एक दिन पहले जो गेहूं १७ सेर बिक रहा था एक बारगी ११ सेर हो गया क्षिति तल पर कोई खेत न बच रहे जिन में बोये हुये बिरवाओं पर पाला ने न असर किया हो इधर कई साल से लोग महंगी और अकाल के दुःख को भूल गये थे दोनो जून पेट भर भोजन कर मज़े से गुलछर्रे उड़ाने लगे थे उन्हें फिर बरसों तक अन्न का कष्ट सहना पड़ेगा । अस्तु हम अपनी स्वाभाविक सहन शीलता पर आरूढ़ रह सब कुछ सहते ही तो जा रहे हैं तब इस भूकम्प की क्या ज़रूरत थी कि जिस्से करोड़ों का नुकसान हो गया और कई हज़ार आदमी ना पैद हो गये । अच्छा सो भी सही ईश्वरीय कोप है इस्से किसका बस हैं । बस इस बस की कुछ न पूछिये ईश्वरीय कोप से तो आप बे बस हैं तो बस वाले किस में हैं । क्या लार्ड करज़न ने जो खुले मैदान कनवोकेशन की स्पीछ में आप को फटकार बतलाई तुम्हें झूंठा और नाशाइस्ता कहा उस में कुछ आप का बस था; ? यूनीवरसिटी बिल पास हो गई तालीम का गला घोटा जा रहा है इसमें तुम्हारा बस है ? तिब्बत की चढ़ाई का ख़र्च हिन्दुस्तान से लिया जाय इसमें आप का क्या बस चला ? मेम्बरान म्युनिसिपल घर बैठे मकानों की हैसीयत जैसा चाहा वैसा आंक हौस टैक्स लगा दिया आप क्या कर सके कुछ बस चलाया चला ? घर बैठे पागुर किया करो बस चलने की बात मत चलाओ । हम हिन्दुओं के ग्रन्थों में लिखा है कि प्रजा पर अनेक आधिब्याधि तभी आती है जब राजा प्रजा दोनो को पाप बुद्धि आ घेरती है पर राजा में कोई पाप है सो किस के मुंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में दांत है कि इतना कहने का साहस कर सके तो निश्चय हुआ यह सब पाप प्रजा का है किन्तु प्रति दिन के इति वृत्त से प्रगट है कि सब भांत के भोग बिलास और खुश खुर्रमी के ज़ोम में सब तरह पर खुश-हाल विलाइत वालों के मुकाबिले धर्म भीरु फूंक २ पांव रखने वाले पेट की फिकिर में चूरचूर ये हिन्दुस्तानी किस करतूत के भरोसे पाप करैंगे । "सर्वंहि महतां महत्" जो बड़े हैं उनकी सबी बात बड़े पन की होती है विलाइत इस समय सब बातों में चढ़ी बढ़ी है तो पाप का काम करने में किसी से हेठी है यह कहना मानो उनकी तौहीन करना है । इस लिये तै हो गया कि पाप या पुण्य का फल तो यह कुछ है नहीं वास्तव में यह ईश्वर की ईश्वरता और सर्वज्ञता का निदर्शन है जो जैसी हालत में रहने लायक हैं उन्हें तैसी ही हालत में न रख सका तो उसकी सर्वज्ञता कैसी ? जो पावदान के पास बैठने वाले हैं उन्हें कोई गद्दी पर ले जा कर बैठा दे तो बैठने वाले से इतना ज़ब्त न हो सकेगा कि उस रुतबे को सम्हाल सके । ये हमेशा के गर्दखोर नस २ में गुलामी की आदतों से भरे हुये इस लायक नहीं समझे जाते कि सुख चैन से अपना दिन काटैं । ईश्वर इन्हें इसी योग्य समझता है कि निरन्तर विविध आधि व्याधि का क्लेश उठाते ही रहें सुख से रहैंगे तो इन को अनेक उन्माद सूझने के अलावा कोई भलाई या बेहतरी मन में न आवेगी इस्से ये इसी के लिये सृजे गये हैं कि बोझ ढोते हुये मालिक की सेवा में लगे रहैं यह प्लेग और भूकम्प सब उसी का अवतरण है ॥

काहिलों की जिन्दगी और उनकी दिन चर्या ।

वाह काहिली में भी कैसा मज़ा है जिस ने एक बार भी इस मज़े को चक्खा फिर तो आदी हो जाता है । मित्र साथी दोस्त अज़ीज़ जो कुछ कहिये सब उस के लिये यही काहिली है । बात तो यों है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हमारी और काहिली की कुछ ऐसी गाढ़ी मैत्री ही मात्र नहीं है बरन हम तो यही समझते हैं कि हम दोनो एक दूसरे के लिये सजे गये हैं । काहिली हमारे लिये और हम काहिली के लिये । काम करते तो भाई जी डरता है हमें तो अपनी तकिया और क़ालीन से बढ़ कर और कुछ अच्छाही नहीं लगता । उन में न जानिये क्या कशिश है कि कितना ही उस्से अलग होने का साहस करें पर उठा ही नहीं जाता । हमे बहुत दिनों से इस बात की चिन्ता है कि किसी वैज्ञानिक को अपने तकिया और क़ालीन दिखलावें कदाचित् उस में कोई ऐसी अद्भुत शक्ति हो कि उस्से वह कुछ लाभ उठा सके । कभी २ तो ऐसा मन में आता है कि इसमें कोई आकर्षण शक्ति पैदा हो गई है जो सूर्य और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से भी अधिक है । न्यूटन इस समय होते तो यह कभी न कहते कि पृथ्वी के ऊपर जितनी वस्तु हैं उन में पृथ्वी से कम आकर्षण शक्ति है । क्योंकि आप ही समझिये यदि हमारे बिस्तर में पृथिवी से अधिक आकर्षण शक्ति न होती तो हम क्यों रातो दिन उसमे चिपटे रहते और जभी उठने का यत्न करते तभी गिर पड़ते। हमारे पास इसके लाखों सुबूत हैं । सब से पहले यह कि जब मन्दिरों में बगुला भक्तों की घड़ियालियों की टन टन; भोर होतेही गंगा स्नान के बहाने बाहर की सैर करने वाली नव युवतियों की पायज़ेब की झन झन, बुड्ढी औरतों का जिन से चला तक नहीं जाता रमुआ की अम्मा और कलुआ की बहन कह २ दूसरों के दरवाजे की कुंढी खट खटाना; मुर्ग़ का बांग देना, कौओं की कांव २ मुल्लाओं का वहशियों की तरह रेंकना; पिसना पीसने वालियों के जांते की घरघराहट; रेलवे स्टेशनों पर बार २ रेल की सीटी से कनपटियों की चैलियों का झरना; और दुनिया के लोगों का अपने २ काम में लगने का हलचल; यह सब होने लगता है उस समय दुर्भाग्य बश यदि कोई शब्द हमारे कान की झिल्लियों से टकराया तो हमे इतना क्रोध आता है कि उस शब्द करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले को जीता न छोड़ें । पर क्या करें अपना कुछ बश नहीं फिर इधर उधर करवटें बदल यही सोचते २ सो जाते हैं कि ईश्वर ने केवल रात बनाया होता और सूर्य की जगह केवल सितारों ही को रचा होता तो हम आनन्द से जीवन काटते और आकल्पान्त सोते ही रहते । इतने में फिर जो किसी ने भोर होने की आवाज़ दी और मुझे चौंका दिया तो यही मन में आता है कि उसे जहन्नुम रसीदा करूं मगर उठना! और कुत्ते की तरह उसके पीछे दौड़ना! उः जाने भी दो हम दूसरी करवट बदल लेंगे । मूंज़ी का मुह पिराने लगेगा तो आपही चुप हो जायगा । लेकिन उः आख़िर को उठना ही पड़ा । भाई पेट भी बड़ी बुरी बला है ईश्वर भी क्याही ठठोल है कि उसको ऐसी ही ऐसी रचना में मज़ा मिलता है चाहो और २ इन्द्रियों के बेग को रोक भी लो पर पेट के वारेन्ट की तामील में ज़रा भी फर्क आया कि अपना बदला पुलिस के थानेदार के समान ऐसा लेता है कि होश फुर्र हो जाते हैं और बुरी दशा होने लगती है ॥

अच्छा भाई चलो इस्से फ़राग़त ही हो लें । तो क्या अब नहाना भी होगा? अरे अहमक़ हुये हो रोज़ २ का नहाना करोड़ों रोगों का घर है । नहाना तो दोही है एक तब जब इस दुनिया में आये दूसरे उस दिन जब यहां से कूच करना है । और यह जंजाल तो ब्राह्मनों का रचा है कि बिना नहाये अन्न न खोटो । भला इन अक़िल के पुतलों से कोई पूछे तो स्नान का भोजन से क्या सम्बन्ध? स्नान में पानी ऊपर से बह जाता है और भोजन में अन्न पेट में जाता है तो सिद्ध हुआ कि भोजन और स्नान में कोई सम्बन्ध नहीं । हां कभी एक या दो अठवारों में जी चाहा और मैल बहुत जम गई तो थोड़ा धो डाला । इस बात में तो हम जैनियों से बिल्कुल सहमत हैं क्योंकि पानी में कीड़े बहुत रहते हैं प्रति दिन नहांय तो जीव हिंसा अधिक होगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पाप भागी होंगे । इसी से अब हम तो भोजन करते हैं आप चहो जो सोचा करो ॥

ओह! अब जा के छुट्टी मिली । इन औरतों के मारे भी नाकों क्या कानों में दम है । यह नहीं कि जो कुछ खिलाना हो हमारे पास भेज दें कि हम आराम से तकिया के सहारे लेटे २ भोजन कर लें । नहीं ! भीतरही उठ के जांय तभी खाने को मिलै । बाह रे अक़ल! हमें आज तक इस बात का संदेह ही रहा कि कदाचित् ईश्वर जब औरतों को सांचे में ढालता है तो दिमाग़ की जगह भूसा भर देता है । हमने कई बार चाहा कि किसी स्त्री की खोपड़ी खोल कर देखैं तो इसमें क्या २ रहता है । परन्तु मूर्ख और हठीली तो ये होती ही हैं कोई इस बात पर राज़ी न हुईं कि अपनी खोपड़ी खुलवावें और विद्या की उन्नति में सहायक हों । इस्से हम भी अज्ञान ही में पड़े रह गये खैर ! औरतें जायं भाड़ में हम तो आराम करने को चले ॥

अबे सुकुरुआ हुक्का तो ला । हुक्का भी कैसी बला मेरे साथ लग रही है । मगर यार मज़ा भी बड़ा ही आता है । ऐब इतना ही है कि सोने में फ़र्क़ पड़ जाता है । एक बार हम हुक्का पीते २ ऊंघने लगे और सो गये । नैचा हाथ से छूट गया और एक लात जो लगा तो चिलम और हुक्का दोनो कला बाज़ियां खा गये । हमारे इस निरादर से कोयलों की देह में भी आग लग गई । और वे क्रोध से लाल हो कर्कशा स्त्रियों की तरह बिखर गये । बस फिर क्या था हमारे बिस्तर वग़ैरह सब स्वाहा हो गये और हमारी भी बारी आई थी कि गर्मी के मारे चौंक पड़े ॥ अच्छा अब दो क़श तो खींच लें फिर देखा जायगा । किसी ने तुलसी दास जी के ढंग पर ठीक कहा है :—

हुक्का पीवो चैन से सोवो वृथा न जन्म गंवावो ।
होइहै वही जो राम रचि राखा । तब क्यों तर्क बढ़ाओ ॥

अच्छा अब तो आराम करैं । ले जा बे हुक्का !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐं क्या ६ बज गये शाम हो गई अच्छा थोड़ा और सो लें फिर तो कहीं दो घंटे बाद आराम करना नसीब होगा । वाह ! सोने में भी क्या मज़ा है :–

"जो मज़ा ख़ाबगाह में पाया । न इल्म, दौलत, विसाल में आया"

मच्छड़ों का तो मेरे यहां घर ही ठहरा, खटमल हमारे हम बिस्तर रहते ही हैं, मकड़ियों ने भी दीवारों और हमारी चारपाई के पावों पर अपनी कारीगरी खूब दिखलाई है, झींगुर हमारे यहां अपनी सोहनी सदा गायाही करते हैं, लेकिन इन में से कोई भी हमारे आराम में ख़लल नहीं डाल सकते । बल्कि सतसंग के कारण मच्छड़ों का गान और झींगुरों के तान ऐसे सोहावने मालूम देते हैं कि यदि किसी दिन ये न हों तो हमें सोच होने लगता है ॥

मैं रहता हूं नाबदान गली में मेरे घर के पास एक बड़ा दैय्यानहर नाला है । म्यूनीसिपलटी की अत्यन्त कृपा से यहां रातो दिन :–

भरे हैं इत्र नालों में अभी का सोत जारी है ।
बिछा है फर्श कीचड़ का अहा ! कैसी तैयारी है ॥

हमारे घर की दीवारों और किवाड़ों पर कीचड़ और जाले खूब लगे होंगे पर मैंने बहुत दिनों से इन्हें देखा नहीं शायद कुछ फर्क पड़ गया हो । कुत्ते और कौवों का हमारे द्वार पर नक्कारखाना बैठा होगा । अगर मुझ से कभी मिलने का आप को शौक़ हो तो इस पते को न भूलियेगा । मुझे इस जगह जहां मैं रहता हूं एक बड़ा भारी फ़ायदा है । आप यह तो जानते ही हैं कि मैं शोहरये आफ़ाक़ हूं और मेरी मुलाक़ात का इश्तियाक़ बहुतों को रहा करता है । मगर इस जगह मेरा पता लगाने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ती । बस इसी से मेरे आराम में ख़लल डालने कोई यहां नहीं आता । अच्छा ! बहुत हुआ आज हमने जितना कष्ट सहा कदाचित् जब से जन्मे न सहा होगा । और यह सब सिर्फ़ आप के ख़ातिर । तो अब चलें सो रहें फिर तो उठनाही है ॥ A. S.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा।
ब्राम्हीव दौर्जनीशंसद्वन्दनीया समेखला:॥ २९॥

त्रिविक्रम

ब्राह्मणों की सभा और दुर्जन समाज दोनो एकसी नमस्कार के योग्य हैं; इसी को इस श्लोक में श्लेष गर्भित शब्दों के द्वारा बड़ी उत्तम कविता में दिखाया है॥

अक्षमो ऽसत्यसन्धश्च परदारी नृशंसकृत्।
पच्यते नरके घोरे दह्यमान: स्वकर्मणा॥ ३०॥

जो बरदाश्त करना नहीं जानता; पर स्त्री गामी है; निठुर काम का करने वाला है; वह अपने निकृष्ट कामों से जलता हुआ घोर नरक में जा गिरता है॥

अक्षरशून्यो ह्यन्धो भवति।

निरक्षर मूर्ख अन्धा है॥

अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टमन्तरैवबिनश्यति।
अबीजकमपिक्षेत्रं केवलं स्थण्डिलं भवेत्॥ ३१॥

बीज जो खेत में नहीं पड़ा बीच ही में नष्ट हो जाता है। खेत भी बिना बीज का स्थण्डिल अर्थात् मैदान हो जाता है जिस में सिवा घास के और कुछ नहीं उगता॥

अक्षोभ्यतैव महतां महत्वस्य विभूषणम्। क-स-सा

क्षोभ का न होना ही बड़ों के बड़प्पन की शोभा है॥

अखिलेषु विहंगेषु हन्त स्वच्छन्दचारिषु।
शुक पंजर बन्धसते मधुराणां गिरां फलम्॥ ३२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितने पखेरू सब बे रोक टोक आकाश में स्वच्छन्द उड़ा करते हैं। ऐ शुक तू जो पिंजरे में बन्द कर रक्खा जाता है सो यह तेरी मीठी बोली का फल है॥

अगाधजलसंचारी नगर्वं याति रोहितः ।
अङ्गुष्ठमात्रतोयेपि शफरी फर्फरायते ॥ ३३ ॥

अगाध जल में तैरने वाला रोहू घमण्ड नहीं करता छोटी मछली अंगुष्ट मात्र जल में फरफराती है। तात्पर्य यह कि बड़े लोग बड़ी बात कर गुज़रने पर भी घमण्ड नहीं करते छोटे लोग थोड़ेही में फूल उठते हैं

अगुणकणो गुणराशिर्द्वयमिह दैवात् खलमुखे पतितम्
प्रसरति तैलमिवैकः सलिले घृतवज्जड़त्वमेत्यन्यः ॥ ३४॥

ऐ गुण का एक कण और गुण का समूह अकस्मात् किसी खल के मुख में जा पड़ा पहला जल में तेल सा फैलता है दूसरा जल में घी सा जा कर जम जाता है॥

अगुणस्य हतं रूपमशीलस्य हतं कुलम् ।
असिद्धेस्तुहता विद्या अभोगस्य हतं धनम् ॥ ३५ ॥

जिस में कोई गुण नहीं उसका रूपवान् होना किसी काम का नहीं शीलवान् न हुआ तो कुल में जन्म ब्यर्थ है। जिस को विद्या सिद्ध न हुई उसकी विद्या ब्यर्थ है धन पाय भोग न किया तो वह धन ब्यर्थ है॥

अगुरोस्तथा नगन्धिः प्रागसित यथाग्निपतितस्य ।

अगर में पहले वैसी सुगन्धि नहीं होती जैसा आग पर रखने से होती है॥

अग्निकुण्डसमानारी घृतकुंभसमः पुमान् ।
संगमेन परस्त्रीणां कस्य नच्यवते मनः ॥ ३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री मानो अग्नि का कुण्ड है और पुरुष घी का घड़ा सा है तब पर स्त्री का संग पाय किस का मन नहीं चलायमान् होता ॥

अग्निदग्धस्य विस्फोटशान्तिः स्यादग्निना ध्रुवम् ।

आग में जला हुआ आगही में सेंकने से ठंढक पाता है ॥

अग्निदाहान्नमे दुःखं न दुःखं लोहताड़ने ।
इदमेवमहद्दुःखं गुञ्जया सहतोलनम् ॥ ३७ ॥

सोना कहता है आग में जो मैं तपाया जाता हूं इसका दुःख मुझे नहीं है हथौड़े से पीटा जाता हूं उसका भी दुःख नहीं है दुःख यही है कि घुमची के साथ मेरी तुलना होती है । सच है अपने से जो हेठा है उसके साथ बराबरी ऐसाही असह है ॥

अग्निं प्राप्य यथा सद्यस्तूलराशिर्विनिश्यति ।
तथा गंगा प्रवाहेण सर्वं पापं प्रणश्यति ॥ ३८ ॥

आग में पड़ जैसा रुई का ढेर जल्द जल जाता है वैसाही गंगा के प्रवाह में सब पाप नष्ट हो जाता है ॥

अग्निरापो स्त्रियो मूर्खाः सर्पा राज कुलानिच ।
नित्यं यत्नेन सेवेत सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ ३९ ॥

अग्नि, जल, स्त्री, मूर्ख, सर्प, राजकुल इन छहो का सयत्न सेवन करे ये छहो जल्द प्राण हरने वाले हैं ॥

अग्निर्गुरुर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राम्हणो गुरुः ।
कुलस्त्रीणां गुरुर्भर्ता सर्वत्राभ्यागतो गुरुः ॥ ४० ॥ भारत

द्विजाति ब्राम्हण क्षत्री वैश्य तीनो का गुरु अर्थात् पूज्य अग्नि है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों वर्ण का पूज्य ब्राह्मण है कुल बधुओं का पूज्य भर्ता है अभ्यागत सब का पूज्य है ॥

अग्निर्देवो द्विजातीनां मुनीनां हृदि दैवतम् ।
प्रतिमा स्वल्पबुद्धीनां सर्वत्र समदर्शनः ॥ ४१ ॥

द्विजातियों के देवता अग्नि हैं मुनियों के हृदय में देवता हैं अल्प बुद्धि को प्रतिमा में देवता हैं समदर्शी को सब ठौर देवता हैं ॥

अग्निस्तेजो महल्लोके गूढस्तिष्ठति दारुषु ।
नचोपयुङ्क्ते तद्दारुयावन्नोद्दीप्यते परैः ॥
स एव खलु दारुभ्यो यदा निर्मथ्य दीप्यते ।
तद्दारु च वनं चान्यन्निर्दहत्याशु तेजसा ।
एवमेव कुले जाताः पावकोपमतेजसः ।
क्षमावन्तो निराकाराः काष्ठे ऽग्निरिव शेरते ॥४२॥

अग्नि प्रकाश युक्त महल्लोक में है काष्ठ में छिपी हुई रहती है। काष्ठ तब तक नहीं काम में लाया जाता जब तक लकड़ी जलाई नहीं गई। वही लकड़ी रगड़ खाय जब जल उठती है तब संपूर्ण बन को जला देती है। ऐसाही कुलीन अग्नि सम तेज वाले क्षमावान् ऊपर से अपने को छिपाये हुए काष्ट में अग्नि के समान रहते हैं ॥

अग्निहोत्रफला वेदाः शीलवृत्तफलं श्रुतम् ।
रतिपुत्रफला दारा दत्तभुक्तफलं धनम् ॥ ४३ ॥

वेद पढ़ने का फल अग्निहोत्र करना है; विद्या उपार्जन का फल शील पालन और चरित्र का पवित्र होना है; दार परिग्रह का फल रति और पुत्र है; धन का फल उसका भोग करना और दूसरे को देना है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम् ।
प्रज्ञापौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः ॥ ४४ ॥

नास्तिकों के आचार्य बृहस्पति कहते हैं कि अग्निहोत्र तीनो वेद देह में भस्म का पोतना त्रिदण्डी होना ये सब ऐसे लोग जो बुद्धि और पुरुषार्थ रहित हैं अपने लिये जीविका कर रक्खा है ॥

अग्नौ दग्धं जले मग्नं हृतं तस्करपार्थिवैः ।
तत्सर्वं दानमित्याहुर्यदि क्लैव्यं न भाषते ॥ ४५ ॥

आग में जल गया, जल में डूब गया, चोर चुरा ले गया, राजा ने छीन लिया, ये सब दान हैं यदि नामर्दी न आई हो तो ॥

अग्नौ प्रास्तं प्रधूयेत यथा तूलं द्विजोत्तम ।
तथा गंगावगाढ़स्य सर्वं पापं प्रधूयते ॥ ४६ ॥

आग में रुई पड़ने से जैसा वह जल जाती है वैसाही गंगा में नहाने से सब पाप भस्म हो जाता है ॥

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठति ।
आदित्याज्जायते वृष्टि वृष्टे रन्नं ततः प्रजाः ॥४७॥ मनु

आग में जो आहुति पड़ती है वह सूर्य को पहुंचती है सूर्य से वृष्टि होती है वृष्टि से अन्न तब प्रजा ॥

अग्न्याधानेन यज्ञे न काषायेण जटाजिनैः ।
लोकान् विश्वासयित्वैव ततो लुंपेद्यथा वृकः ॥४८॥

अग्निहोत्र से यज्ञ से गेरुआ बस्त्र पहन जटा रखाय मृग चर्म ओढ़ ब्रह्मचारी बन लोगों में अपना बिश्वास पैदा कर तब उन्हें वैसाही ठगै जैसा बीघ बकरियों को ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रे गीतं सरस कवयः पार्श्वतो दाक्षिणात्याः ।
पृष्ठे लीलावलयरणितं चामरग्राहिणीनाम् ॥
यद्यस्त्येवं कुरु भवरसास्वादने लंपटत्वं ।
नो चेच्चेतः प्रविश सहसा निर्विकल्पे समाधौ ॥ ४६ ॥

सामने गान होता हो इधर उधर दोनो ओर कवि जन खड़े हुए बिरुदावली पढ़ते हों पीछे पहुंची और चूड़ियों की खनक के साथ चमर डुलाती हुई युवती स्त्रियां हों यदि ऐसा है तो इस संसार के बिषयास्वाद में लंपटता भी अच्छी नहीं तो हे चित्त तेरा निर्विकल्पक समाधि में प्रवेश करना ही भला है ॥

अग्रे लघिमा पश्चान्महतापि पिधीयते नहि महिम्ना ।
बामन इति त्रिविक्रममभिदधति दशावतार विदः ॥ ५० ॥
गोबर्द्धन

पहले जिसकी हलकाई हो गई तो पीछे कितना ही बड़े बन जाओ पर हल्का होने की बदनामी दूर नहीं होती विष्णु पहले बामन हो पीछे त्रिविक्रम बने और अपनी ऊंचाई से तीनों लोक में व्याप्त हो गये तौ भी बामन ही कहलाते रहे ॥

अघं स केवलं भुंक्ते यः पचत्यात्मकारणम् ।
यज्ञशिष्टाशनं ह्येतत् सतामन्नं विधीयते ॥ ५१ ॥

जो अपने लिये रसोई पकाता है वह केवल पाप भोजन करता है सज्जन लोग उस अन्न को खाते हैं जो यज्ञ अर्थात् देवता पितर को अर्पण करने से बचता है ॥

अघुटितघटितानि घटयति सुघटितघटितानि जर्जरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरुते। विधिरेव तानि घटयति यानि नरो नैव चिन्तयते ॥ ५२ ॥

जिस बात के होने की संभावना नहीं सो हो जाती है जो अवश्य होनहार है सो नहीं होता बिधाता उसी बात को लाय उपस्थित कर देता है जिसे मनुष्य ने कभी सोचा नहीं था ॥

अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किन्नामपौरुषम् ।

जो अपने गोद में सिर धरे सोता है उसके मार डालने में क्या पुरुषार्थ है ॥

अङ्काधिरोपितमृगश्चन्द्रमा मृगलांछनः ।
केशरी निष्ठुरक्षिप्तो मृगयूथो मृगाधिपः ॥ ५३ ॥ माघ

मृग को अपने गोद में लिये हुये है तो चन्द्रमा मृग लांछन कलङ्कित कहा जाता है सिंह मृगों को निठुराई से मार डालता है सो मृगाधिप कहलाता है। सच है "सूधे का मुह कूकर चाटै" (कतहुं सुधाई ते बड़ दोषू)

अङ्कं केपि शशङ्किरे जलनिधेः पङ्कं परे मेनिरे। सारंगं कतिचिच्च संजगदिरे भूमेश्च बिंबं परे । इन्दौ यद्दलितेन्द्रनीलशकलश्यामं दरीदृश्यते । तन्मन्ये रविभीतमन्धतमसं कुक्षिस्थमालक्ष्यते ॥ ५४ ॥

चन्द्रविम्व में कालिमा की कवि उत्प्रेक्षा करता है। कोई इस कालिमा को कलङ्क की शङ्का करते हैं; कोई मानते हैं कि समुद्र से चन्द्रमा निकला है सो उसी का कीच इस में लगा है; कोई कहते हैं यह कलंक के रूप में मृग है; कोई कहते हैं यह पृथ्वी की छाया है; इन्दु में जो यह दलित इन्द्रनीलमणि का टुकड़ा सी कालिमा देख पड़ती है सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम तो यही मानते हैं कि सूर्य की किरणों से भयभीत अन्धकार वहां पुंजीभूत हो जा छिपा है ॥

अङ्गणवेदिर्बसुधा कुल्या जलधिः स्थली च पातालम् ।
वल्मीकश्च सुमेरुः कृतप्रयत्नस्य धीरस्य ॥ ५५ ॥

धैर्य धारण कर यत्न में लगे हुये को समस्त पृथ्वी के दूर देश इतने निकट हैं जैसा अपने घर का अंगना; समुद्र एक छोटी सी नदी या नहर है; सुमेरु जो अति ऊंचा माना गया है मिट्टी का एक छोटासा ढेर है॥

अङ्गप्रत्यङ्गजः पुत्रो हृदयाच्चाभिजायते ।
तस्मात्प्रियतरः पुत्रो प्रिया एवतु बान्धवाः ॥ ५६ ॥

एक २ अंग से और हृदय से पुत्र पैदा भया है इस्से बन्धु जन सबी प्यारे होते हैं पर पुत्र सब से अधिक प्रिय है ॥

अंगं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम् । वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि नमुंचत्याशा पिण्डम् ॥ ५७ ॥ मोहमुद्गर

अंग गल गये, बाल पक गये, दांत गिर गये, बूढ़े हो लाठी टेक चलने लगे तौ भी आशा से पिण्ड न छूटा "तृष्णैकातरुणायते" ॥

अंगं चन्दनपाण्डु पल्लवमृदुस्ताम्बूलताम्राधरो धारा यन्त्र जलाभिषेककलुषे धौताञ्जने लोचने। अन्तः पुष्पसुगन्धिरार्द्रकवरी सर्वांगलग्नाम्बरं रामाणां रमणीयतां विदधति ग्रीष्मापरह्लागमे ॥ ५८ ॥

चन्दन के पोतने से पिंडोर के रंग का अंग; नये पत्ते सा कोमल पान की ललाई से लाल रंग का होठ; धारायंत्र फौहारे के जल में नहाने से धौतां जन नेत्र; फूलों की महक से सुगन्धि युक्त भीजे हुये चोटी के बाल; सर्वांग में चिपटे महीन कपड़े; सब मिल के गरमी के दिनों में स्त्रियों के अंग की इस अद्भुत शोभा बढ़ाते हैं। थोड़े में ग्रीष्म का अच्छा बर्णन किया गया है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हत जाकी रही कछुक दिन इत उत डोलत ।
हिंदी सुनतहि नाम रह्यो कोउ मुख नहिं बोलत ॥
दीपक सम सोइ करि प्रकाश हिय तिमिर नसावत ।
प्रकटत सुसमाचार पाठकन मोद बढ़ावत ॥
दीखतही जा के सुजन अति आनन्द हिय लावहीं ।
पढ़त सरल भाषा सुखद धन धन भट्ट सराहहीं ॥

माधव प्रसाद शुक्ल

गौरी पाठशाला के लिये एक अध्यापिका चाहिये जो त्रैराशिक तक गणित और तुलसी कृत रामायण अच्छी तरह पढ़ा सकती हो वेतन योग्यता नुसार १०) से १५) तक ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै बिवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { जून
सं० ६ } { सन् १६०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ सं० ६ | प्रयाग | जून, सन् १९०५ ई०

कर्णामृत तथा कर्ण कटु।

कितने शब्द या वाक्य ऐसे होते हैं जो कर्ण कुहर के द्वारा मन में पहुंच एक अद्भुत आनन्द उपजाते हैं उदासीन और विरक्त के चित्त में भी असर पैदा कर देते हैं-जो कान में पहुंचते ही उदासीन की सब उदासी को सूर्य के उदय में घने अन्धकार की भांत न जानिये किस खोह में जा छिपा देता है-विरक्त और त्यागी सब वैराग्य और त्याग भूल विषय वासना के लासे में फंस पखेरु सा फिर इस बड़े पिंजड़े संसार में आ पड़ता है जहां से यह पहले तीव्र वैराग्य पंख के उग आने पर उड़ भागा था-इसी के विरुद्ध कितने ऐसे अरुन्तुद मर्मस्पृक् कर्कश कठोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द होते हैं जो कर्ण पुट को बेध हृदय कपाट को सहसा उदघाटन करते मन में बेकली पैदा कर देते हैं-शान्त शील मुनि की भी शान्ति में बट्टा लगाते हैं-आग में बारूद पड़ने की भांत क्रोध को एकबारगी भड़का देते हैं नहूसत पैदा करते हुये होनहार कोई बड़े अमंगल के सूचक हैं-कर्णामृत जैसा छोटे बालकों की तोतरी बोल; प्रेमपात्र का प्रेमालाप; जिसके आगे कोकिलाओं का कुहूनाद भी फीका मालूम होता है और भी वर्षा के प्रारम्भ में चातक की पीहो पीहो भोर होते ही पंचम स्वर की लय में वृक्षों पर चिड़ियों की चहचहाहट-सेवक के काम से निहाल और प्रसन्न स्वामी का सेवक की सराहना-पति परदेश गया है साध्वी पतिव्रता तन छीन मन मलीन बड़े लोगों की लाज से अपने मन के भावों को छिपाती किसी तरह दिन काट रही है अकस्मात् एक दिन डाकिये ने आय एक पत्री दिया जिसमें प्राणनाथ के दोही एक दिन में आने का शुभ समाचार दिया है कर्ण रसायन उन अक्षरों को सुन पति के बियोग में ग्रीष्म के सूर्य के खरतर ताप से तपी लता सी एकबारगी लहलही हो उठी। कान के बहरे आंख के अन्धे टूटी खाट पर करवट भरते बुढ़ऊ ज़िन्दगी के दिन ठेल रहे हैं किसी ने आके कहा लाला तुम्हारे पर पोता हुआ है अमीरस सा यह शब्द सुनते ही बुढ़ऊ उठ बैठे मंगन हो मन उनका मोर सा नाचने लगा-योगियों की कठिन तपस्या समान दिन रात मेहनत कर इमतिहान दे आये हैं पर एक परचा ज़रा सा बिगड़ गया है हरदम जी खटके में रहता है-किसी दोस्त ने आके कहा हम देख आये हैं पास हुओं की लिस्ट में तुम्हारा नाम सब के सिरे पर है सुनते ही इसके मन की कुम्हलानी कली खिल उठी-हज़ारों आदमी की भीर ठटाठट्ठ जमा है लम्बे चौड़े हाल में कहीं तिल भर की जगह खाली नहीं है सब लोग इसी इन्तिज़ारी में हैं कि वक्तावागीश कब अपनी मेघ गंभीर या गिरा में मधुर कोमल समुज्वल शब्दों से मोती की लरी सा पिरोहेंगे लोगों की उत्कण्ठा जान वक्ता वागीश ने अपना व्याख्यान आरंभ किया चारों ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थियर्स की मधुर ध्वनि से हाल गुंज उठा सुनने वालों के मन में आनन्द की ऊर्मि उठने लगी जैसा पूर्ण चन्द्र का उदय देख समुद्र सब ओर से लहराने लगता है-वक्ता के एक २ अक्षर में शब्द चातुरी तथा अर्थ चातुरी का उद्गार जान सब लोग मोहित होगये॥

अब कर्ण कटु को लीजिये-राज कर्मचारियों में सब से प्रधान महाराज एडवर्ड सप्तम के साक्षात् प्रतिनिधि स्वरूप लार्ड करज़न ने हम लोगों को झूठा अशिष्ट दुराचारी आदि न जानिये क्या २ कहा हिन्दुस्तान के रहने वालों में कौन ऐसा होगा जो श्रीमान् के इन कर्ण कटु शब्दों को सुन दुःखी न हुआ और जिसका दिल टुकड़े २ न हुआ हो-किन्तु राज भक्ति प्रजा में ऐसी दृढ़ मूल है कि लोगों ने सब सह लिया कदाचित् श्रीमान् किसी दूसरे देश में होते तो जल्दी ऐसे कुवाक्यों के प्रयोग करने का साहस न कर सक्ते-दो कर्कशा स्त्रियां लड़ रही हैं दांत किर्रते गाली देते दोनों आपस में ऐसा कोसती हैं जिसे सुन कलेजा फटा जाता है यही जी चाहता है कि दोनों का सिर मुड़वाय मुंह में कारिख पोत अंडमन टापू की पाहुन उन्हे करा दें या चुड़ैलों के स्कूल में तालीम के लिये उन्हे भरती करा दें-बड़े से कुनबे का एक मात्र पोषक सपूत कुल की पताका किसी काम से कहीं दूर देश गया है अचानक तार आया बाबू को प्लेग हो गया कर्ण कटु यह सुनते ही घर के लोग घबड़ा गये हाहाकार मच गया किसी के तन में होश न रहा-दस सभ्य मनुष्य बैठे हैं किसी गुरुतर विषय पर कथोपकथन करते हुये अपना मन रमा रहे हैं अकस्मात् हंसों में कौआ सा कोई कुन्देनातराश अक़िल का क़ोता पर दौलत पास होने से पण्डितं मन्ये वहां पहुंच गया और ऐसे २ अरुन्तुद कर्ण कटु शब्द अपनी बोल चाल में कह डाला कि लोग उद्विग्न हो गये रसाभास होगया सब लोग खिन्न चित्त हो उठ खड़े हुये इत्यादि बहुत से और उदाहरण सोचने से मिल सकते हैं-पुराने इतिहासों को पढ़ने से प्रगट है कि यह कर्ण कटु अनेक सर्वनाशकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनाओं का कारण हुआ है "अन्धे के अन्धे होते हैं" द्रोपदी का दुर्योधन के प्रति यही कर्ण कटु महाभारत की जड़ हुआ । लक्ष्मण ने जब रामचन्द्र के पास सूने बन में जानकी को अकेली छोड़ जाने से इनकार किया तब जानकी ने कैसे २ अरुन्तुद वाक्य कहे अन्त में उसका कैसा कुत्सित परिणाम हुआ कि रावण जानकी को शून्य बन में अकेला पाय हर लेगया इत्यादि और भी अनेक उदाहरण इसके मिल सकते हैं ॥

रुपया पैदा होने के तीन तरीके ।

देश में धन बढ़ने के तीन जुदे२ तरीके हैं मेहनत चाकरी और खेती--इन तीनों में सब से पहिला और उत्तम क्रम धन बढ़ाने का श्रम या मेहनत है--यद्यपि मनु ने तो इसे श्रेष्ठ नहीं माना इसलिये कि हाथ पांव का व्यवसाय करने वाले मेहनतियों का मस्तिष्क से बहुत कम सम्बन्ध रहता है तब दिमाग को काम में लाने वाले पढ़े लिखों की अपेक्षा श्रम जीवियों को नीचा माना है-पर वह कुछ और ही समय था जब मनु महाराज के मस्तिष्क में यह बात धंसी हुई थी-उस समय लोग केवल नौकरी के लिये नहीं पढ़ते थे किन्तु पढ़े लिखे अब के समान बंगले २ ठोकर न खाय देश का शासन करते थे प्रजा में बुद्धि और बिद्या के विस्तार करने के द्वार होते थे-सर्व साधारण को इस लोक में सुख और आराम पहुंचना तो उनको छोटी सी बात थी बरन परलोक का अनन्त अविनाशी सुख और मोक्ष पद तक के मिल जाने की चिन्ता में व्यस्त रहते थे-शुद्धाशुद्ध के प्रकरण में "कारुहस्तगतं शिल्पम्" लिखने से प्रगट है कि मनु जी को कारीगरों की कदर भरपूर थी अस्तु ओहो पर अब आज दिन तो देश में धन बढ़ने का एक मात्र बड़ा ज़रिया यही दस्तकारी है-यूरोप ऐसे खण्ड में जहां के देश पर्वत स्थलियों से पूर्ण हैं खेती बहुत कम हो सक्ती है वहां इस तरह प्रति दिन धन बढ़ता ही जाता है और लोग उन देशों के सब तरह पर खुश हाल हैं पेट की चिन्ता को हलकी और छोटी सी बात समझ ऐसे बड़े २ कामों में लगे हैं जो मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति वाहय है जिसे देख कोई ईश्वरीय महिमा प्रगट होती है-हमारे यहां इस तरह के काम करने वाले देवता समझ पूजे जाते विश्व-कर्मा देवताओं और मय दैत्यों की कोटि में रक्खे ही गये हैं—नल नील भगीरथ और सगर के साठ हज़ार लड़कों में कैसी इनजीयरिङ्ग की विद्या थी इसे पुराण वालों ने सेतु बन्धन और गंगावतरण के प्रकरण में अनेक क़िस्से गढ़ खूब ही तोपा है—इल्लोरा और इलिफैंटा की खोह तथा दक्षिण में मदूरा और दूसरे अनेक देव मन्दिर हमारे पुराने शिल्प की साक्षी दै रहे हैं-मुसल्मानों के समय में भी आगरे का ताज महल सिकन्दरे के रौज़े की बनावट तथा दिल्ली के कुतुब मीनार आदि भी क्या कम हैं-अब के समय में ऐसी इमारत बनै तो कम से कम ५० तो दो हज़ार की तनखाह वाले अंगरेज़ इनजीनियर नौकर रक्खे जांय और ईट चूना पत्थर के बहाने उस इमारत के तैयार होने के कुल तख़मीने का आधा रुपया बिलाइत ढो जाय-मेहनत की तरक्की से देश में धन बढ़ाना तो दूर रहा श्रमोपजीवियों की कैसी दुर्गति हो रही है कि पुरानी कारीगरियों के उठ जाने से वे लोग दाने२ को तरसते हैं अपने यहां के पुश्त हा पुश्त के पेशों को छोड़ दूसरा२ काम ढूड़ रहे हैं-मेहनत जो वाणिज्य और तिजारत की जननी थी उसकी दुर्गति देख वाणिज्य भय भीत हो यहां से भाग खड़ा हुआ और डरा कि जब हमारी मा की ऐसी दुर्गति हुई तब हम कहां बच सक्ते हैं "त्रस्तश्चाम्बुनिधिं विलंघ्य सहसा नाद्यापि विश्राम्यति" सात समुद्र के पार हो अब तक भागताही जाता है—

धन बढ़ने का प्रथम और सब से बड़ा द्वार मेहनत थी उसका किस्सा हमने अपने पाठकों को कह सुनाया अब चाकरी की सूझी किसी तरह पेट तो पलना ही चाहिये अभिमान भंग भूमि दुरन्त पूरा इस उदर दरी के पाटने को सब २ सहना पड़ता है सब २ करना पड़ता है सालों और महीनों दिन २भर पढ़ और रात२भर जाग सकल विद्या पारङ्गत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो अन्त को वही चाकरी सूझी चाकरी में भी टटके से टटका माल सार पदार्थ गौराङ्ग रहा प्रभुओं का भोग उच्छिष्ट और दिन रात की पिसौनी प्रसाद की भांत इनके लिये बचीं-यूरोपियन तथा उन्ही के भाई यूरेशियन सौ डेढ़ सौ कभी को दो सौ से शुरू करते हैं पेनशन के दिनों तक में पांच सौ आठ सौ हज़ार तक पहुंच जाते हैं लायक़ से लायक हिन्दुस्तानी बीस पचीस तीस हद्द चालीस से आरंभ कर पेनशन पाने तक में डेढ़ सौ दो सौ अढ़ाई सौ के आगे नहीं जाते सौ में कोई एक दो निकलेंगे जिन्हें पांच सौ छ सौ का आधा पेनशन में मिला है-धन पास होता तो विद्या पढ़ सान पर चढ़ी अकिल को किसी मेहनत की तरक्क़ी में लगाते या दूर २ देशों में पहुंच तिजारत करते देश में धन की पूंजी बढ़ाते पर जो हुई नहीं उसके लिये पछताने से क्या लाभ-अब बची खेती सो उसमें धरती का बहुत बड़ा हिस्सा अफीम और नील की खेती में निकल गया जो बचा वह निरा दैवाधीन कभी अतिवृष्टि ने ले डाला कभी अनावृष्टि अथवा पाला या ओला समेट ले गया तब देश में धन कित वह्नीले बढ़े-"षष्ठांशवृत्त्या इव रक्षितायाः" का समय अब न रहा कुल पैदावार का आधे से अधिक दिन पोत में निकल जाता है जो बचा वह विदेशों में एक्सपोर्ट हो चला गया उसके बदले जितना बिलाइत का माल यहां इम्पोर्ट होता है उतना नकद रुपया नहीं तब देश में धन की पूंजी कैसे बढ़ सक्ती है—जैसा यहां की धरती उपजाऊ रही और कई करोड़ का धन थोड़े परिश्रम में प्रतिवर्ष उगल देती है वैसा ही यदि मेहनत या देश की कारीगरी तरक्क़ी पर रहती तो यहां का धन देश में न समाता-जब दोनों खेती और कारीगरी बराबर से अपनी पूरी उन्नति पर रहे उस समय इतनी राज बिराजी और लूट मार पर भी धन यहां का कम नहीं हुआ था-घर २ आनन्द बधाई बजती थी लोग सुख चैन से अपना दिन काटते थे-इस समय ब्रिटिश शासन के स्वास्थ्य में भी अनेक आधि व्याधि पीड़ित दरिद्रता और मंहगी का कष्ट उठाते पेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी हम तरस रहे हैं तब देश में धन का बढ़ना कैसा—रुपया पैदा होने के तीन तरीकों में एक भी समूचा न बच रहा तब क्या किया जाय लाचारी है देश में धन के बढ़न की तो आशा ही नहीं की जा सकी घटने की संभावना सब भांत है तथास्तु ॥

घड़ी की कुघड़ी।

(एक विरक्त और बाबू भेड़ियाधसान के बीच बातों की झड़ी)

भेड़िया धसान-गुरुदेव नमो नारायण—

विरक्त—नारायण-भगत जी अच्छे हो! आज बहुत दिनों में मिले क्या कहीं गये थे?

भे०-महाराज घरही में तो था क्या करूं दूकान के काम से फुरसत नहीं मिलती आज एकादसी है इससे दूकान बन्द है जी चाहा कि कुछ थोड़ी देर चल फिर आऊं-मेरे अहो भाग्य जो अनायास आप के दर्शन हो गये—

वि०-[स्वगत] दूकान का काम तो भले ही करता होगा-(प्रगट) बा—भेड़ियाधसान आज तो तुम अपनी स्त्री का हार पहन के आये हो—

भे०-(गलें में हाथ फेर) नहीं तो—

वि० तो यह क्या लटक रहा है—

भे०-महाराज आप इतना भी नहीं जानते यह घड़ी का चेन है और घड़ी पाकेट में है (मन में, आज कल के बाबा निरे घोंघा नाथ ही होते हैं—

बि०-अच्छा तो भगत बतला इस समय क्या बजा है?

भे०—घड़ी जेब से निकाल कान में लगा दो बार बार हाथ से ठोक भी आश्चर्य से!! घड़ी तो बन्द हो गई—

वि०-कब से बन्द है?

भे०-महाराज अभी बन्द हो गई है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि-भगत जी छैः महीने हुये होंगे हम तुम दोनों कंपनी बाग़ में बैठे थे कि अचानक नक़ली राम भी आ गया उसने भी ऐसा ही घड़ी कान से लगाई और हाथ से ठोंकी तब तुमने पूछा फ्रेण्ड! टैम क्या है? उपरान्त तुमने भी वही क़वायद कर कह दिया कि मेरी भी घड़ी बिगड़ गई है। इसी घड़ी को हमने ऐसा ही बिगड़ी तुम्हारे बाप की जेब में भी पड़ी देखी थी। हम समझते हैं पोते परपोतों तक यह घड़ी ऐसाही बिगड़ी जेब में पड़ी सड़ा करेगी सुधरैगी नहीं—तुम कहते हो यह अभी बिगड़ी है पर हम तो इसे कई पुश्त से ऐसाही बिगड़ी देखते हैं कदाचित् इस क़वायद को भी तुमने अपने बाप ही से सीखी है॥

भे-महाराज घड़ी साज़ घड़ी सुधराई दो रु० मांगता है थोड़े दिन चल फिर बन्द हो जाती है इससे दो रु० ख़र्च करना फ़िज़ूल है। ड्रेस की नुमाइश बन्द घड़ी सेभी हो जाती है। यदि किसी ने टाइम पूछा तो क़वायद हमको आती ही है लाज रह जाती है फिर दो रुपया का जूता क्यों खांय॥

वि—अरे मूर्ख अभी तक तूने यह भी न जाना कि घड़ी ड्रेस की नुमाइश के लिये नही बनी बरन समय का सदुपयोग करने के लिये बनी है। उस पुरुषार्थी की ओर दृष्टि करो जिसने दिनऔर रातके २४ घंटे नियत किये हैं एक घंटे को ६० मिन्टों में बाटा है। इस पर भी उसको शान्ति नहीं हुई एक मिनिट की खाल खींच सेकेण्ड भी नष्ट करना उसे नहीं भाया तब मिनिट के भी ६० टुकड़े कर डाला वही हमारे लिये घण्टो के घण्टे व्यर्थ बीतते हैं बकवाद मुफ्त की खुराफात में औकात नष्ट हो रही है। तुम सरीखे श्रीमान् हम लोगों में कितने बिद्यमान् हैं जिनके घरों में हज़ार बारह सौ की कई एक वाच; पाख़ानों में भी टाइमपीस खटखटाया करतीं है कमरे पीछे एक २ क्लाक लटकी रहती है रिपेयरर दिन में दो एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबों की चाभी फेर आता होगा और इस मेहनत का महीने में सौ पचास लेही मरता होगा। पर हुज़ूर की दिनचर्या देखिये तो उमर की उमर निरर्थक गायब हो गई स्याही गई सफेदी आई पर कभी घड़ी की खट २ ने आप की नींद न जगाई यह खयाल कभी मन में न आया कि हाय ! इस अमूल्य जीवन के बर्ष महीने दिन घन्टे व्यर्थ क्यों गये क्यों आये ? और क्या कर गये ? इन फर्स्ट क्लास के अमीरों को सच २ वख्त की क़दर नहीं मालूम, दल्लालों ने आघेरा और पट्टी पढ़ाने लगे हुज़ूर ऐसी घड़ी आज तक नहीं आई खास बिलाइत का कारीगर आप को कदरदान जान नोटिस सीधा हुज़ूर के नाम से भेजा है। इसलिये उम्मेद है दो चार घड़ियों के ख़रीदने का हुक्म होगा इन घड़ियों से आप के महल और कोठी की शोभा दोचन्द भड़क उठैंगी अस्तु जैसी देवी वैसी उनकी पूजा जैसे ये फर्स्ट क्लास के अमीर वैसीही उनकी घड़ी बाज़ी-हमे खेद उन सेकेण्ड क्लास की घड़ी बाज़ों पर होता है जो घड़ी जेब में लटकाये चक्कर देना जानते हैं फर्राटे के आर्टिकिल घसीट मारते हैं पर उनकी निज की लीला देखी जाय तो इनकी चलती घड़ी भी कुघड़ी हो रही है-केवल दफ़्तर जाने मात्र के लिये सुघड़ी है या कोई अजनबी भेट को आवै तो उसे यह जताने को कि हमारी घड़ी आ लगी है अब ज़ियादह बात करना नहीं मांगते। नौकर को देखो तो कुघड़ी—घर के बच्चों को देखो तो कुघड़ी-स्त्री को देखो जिसे देखो सबी कुघड़ी के पाबन्द पाओगे। जब सभ्यता की दुम मरोड़ने वालों की ऐसी निवड़ी तब सर्व साधारण की तो बात ही क्या ? पढ़े अनपढ़े नौकर बनिये बक्काल सबी घड़ी लटकाए फिरते हैं। भारत में ३३ करोड़ मनुष्य हैं उनमें से कम से कम एक करोड़ मनुष्यों के पास तो अवश्य ही घड़ी होगी कितनों के पास दो चार छै भी हैं। समझो देश में दो करोड़ घड़ियां हुईं जिस्का हिसाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों लगा हम अपने चाण्ड मन को इस तरह समझाते हैं। मान लो ५० लाख मनुष्यों के पास३) वाली घड़ी है जिस्का दाम डेढ़ करोड़ हुआ १० लाख के पास १०) वाली घड़ी है जिस्की क़ीमत एक करोड़ हुई। २० लाख के पास १५) की घड़ी है जिस्का मूल्य ३ करोड़ हुआ २५ लाख जेन्टिलमेनों के पास २५) वाली घड़ी है जिस्की न्यौछावर कुछ कम चार करोड़ हुई सब मिल १० करोड़ के लगभग होता है। यह रावण की चिता कब से जल रही है और कब तक जलैगी इस धुआं धार का हिसाब हमारी गिनती के बाहर है हां इतना भविष्य कह सक्ते हैं कि आतश परस्तों की आग सी यह अब बुझने वाली नहीं वरन दिन प्रतिदिन अधिक २ दहकती जायगी। कुछ दिन उपरान्त इतने रुपयों की घड़ियों से यदि डेढ़ पाव बाजरी पकाने को तवा बनाओ तो उस काम की ये बिगड़ी घड़ियां नहीं रहतीं ॥

भे०—महाराज तो क्या घड़ी नहीं रखनी चाहिये ॥

वि०—अवश्य रखनी चाहिये पर किनको जो पुरुषार्थी हैं घड़ी की की कदर जानते हैं एक मिनट खो देना जिनको प्राण पीड़ा है जिनके दिन भर के काम घड़ी की सुई से बंधे हैं क्या मजाल जो उसमें ज़रा भी फर्क पड़े। झूठ मानते हो तो रेल में जाकर देखो समय से एक मिनट भी चूक हो तो बादशाह भी हाथ मलता रह जाय—तारवर्की में जाय देखो तो समय की आराधना—कल के कारख़ानों में देखो तो वही समय की भक्ति—कहां तक कहें जिस पुरुषार्थी विद्वान को देखो उसही ही को समय की उपासना में लिप्त पाओगे जिस भक्ति भाव से मुग्ध हो लक्ष्मी हाथ बांधे आठ पहर अपना नृत्य दिखाती हैं ऐसे लोग रुपयों की थैलियों को ठोकर से लुढ़काते हैं। लक्ष्मी कहती है मेरे प्रिय बाहन इसे भरपूर समझे रहो पुरुषार्थियों की और समय के पूर्ण भक्तों की मैं दासी हूं उनका चरण छोड़ मैं कहां जा सक्ती हूं। घड़ी ऐसोंही के लिये बनी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कि उनके लिये जिनका न सोने का समय है न जागने का उठना बैठना चलना फिरना खाना पीना कोई भी काम जिनका समय से सम्बन्ध नहीं रखता। इस मूर्खता जनित दरिद्रता की मार से जब तुम इच्छा करते हो कि लक्ष्मी तुम्हारा घर छोड़ कहीं न जाय और इस आशा से दिवाली के दिनों में घर पुतवाते हो फल फूल मिठाई पक्वान आदि समर्पण कर बड़ी भक्ति से लक्ष्मी को पूजते हो तब तुम्हारी यह बालक्रीड़ा और मूढ़ भक्ति को देख लक्ष्मी कहती हैं कि अरे कर्म चाण्डालों तुम्हारा तो मैं मुख न देखोगी मेरे मुख्य सहायक समय से तो तुम शत्रुता कर रहे हो तब मैं कैसे तुम्हारा मुख देख सकी हूं। रुपये की पूजा मात्र से मैं कभी प्रसन्न न हूंगी जिस रुपये को तुम पूजते हो वह समय के सद् व्यय का फल है। फूटे तुम्हारे करम जो बाल क्रीड़ा से भाग्य जगाना चाहते हो। भाग्योदय चाहते हो तो समय के भक्तों से जा मिलो पुरुषार्थ करो आपस के बैर भाव से मुख मोड़ कंपनियां स्थापित करो देश देशान्तरों में जा बड़े २ बाणिज्य करो तो मैं तुम से भी प्रसन्न हो कभी तुम्हें न छोड़ूं। सुना बाबू भेड़ियाधसान जी आया कुछ मन में समय की बे परवाही इस विनाश का भी कभी अन्त करोगे कि ऐसे ही सत्यानाश होते रहोगे॥

स्वामी विश्वेश्वरानन्द।

॥ बीज जो बोया जाय निष्फल नहीं होता ॥

कुछ दिन हुये यहां के स्कूल तथा कालेजों के कुछ विद्यार्थियों ने सनातन धर्म जिज्ञासा के लिये इस नगर में एक सभा स्थापित की थी महीने में दो बार सब लोग एकत्रित होते थे और पण्डित जैगोविन्द को सभापति कर उन से धर्म का तत्व सुनते थे बहुत दिनों तक नियम से इस सभा का अधिवेशन होता रहा बीच में प्लेग के उपद्रव से सभा छिन्न भिन्न हो गई किन्तु पारसाल चौबे द्वारिका प्रसाद शर्मा के प्रयत्न से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो इस सभा के सेक्रेटरी हैं इसका अधिवेशन तीन दिन तक बहुत उत्तम हुआ और पण्डितदीन दयालु के सरस हृदयग्राही वक्तृता से दूसरा से दूसरा बार्षिक अधिवेशन बड़ी धूम धाम के साथ किया गया ५ दिन तक यह समारोह बड़ी उत्तम रीति पर किया गया बरावांधिपति ठाकुर महाबीर प्रसाद नारायण सिंह तथा राज्य वैद्य पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा के प्रयत्न से पण्डाल रचना भी बहुत अद्भुत की गई। पण्डित राम मिश्र शास्त्री जी सभापति थे। पण्डित दीन दयालु शर्मा पण्डित माधो प्रसाद मिश्र तथा अन्यान्य महोदय गण दूर २ से बहुत से डेलिगेट होकर आये थे। यहां के लोगों को ५ दिन बड़े उत्सव के बीते इधर पण्डित दीन दयालु भिन्न २ संप्रदायों के अनुकूल कर्म के प्रतिपादन को ब्याख्यान से श्रोताओं को हर्षित करते थे उधर स्वामी राम तीर्थ भेद बुद्धि को हटाते असली वेदान्त को काम में लाने के लिये कर्म के निराकरण से लोगों को सोत्साहित करते थे पण्डाल के भीतर मानो दो बीर क़िले में बैठे हुये दांव पेच खेल रहे थे। सनातन धर्म क्या है इसके उसूल क्या हैं इसका बहुत अच्छा प्रतिपादन इन ५ दिन के व्याख्यानों में किया गया। सनातन धर्म के पुनरुज्जीवन से फायदा उठाने वाले ब्राह्मण जो सनातन धर्मावलम्बियों से पुजवाते हैं यदि अब भी चेतें और आत्म त्याग के उसूल पर लालच और लोभ को कम कर अपने पूर्वज ऋषियों का खोया हुआ धन स्वाध्याय और तपस्या पर आरूढ़ हो जांय तो अवश्यमेव इन व्याख्यानों की सफलता कही जा सक्ती है? साथ ही स्वामी राम तीर्थ का यह कहना कि अब कलियुग का अन्त आ लगा है सच माना जा सक्ता है। नहीं तो हम यही कहैंगे जैसे और बहुत से खेल तमाशे थियेटर आदि हुआ करते हैं वैसाही ५ दिन का यह भी एक मेला था। अन्त में इसका धन्यबाद राघवेन्द्र के सम्पादक चौबे द्वारिका प्रसाद को है जो इसकी बुनियाद डालने वाले हैं और बरावांधिपति को है जिनका बहुत सा धन इस सत्कार्य के अनुष्ठान में लगाया गया है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन ग्रन्थकार।

प्रती हारेन्दुराज।

भट्ट वामनाचार्य झलकीकर ने जो काव्य प्रकाश पर बाल बोधिनी नामक टीका लिखा हैं उसकी प्रस्तावना में उक्त महाशय ने संक्षेप से अलङ्कार शास्त्र के इतिहास बर्णन करने की चेष्टा की है! जहां पर आलङ्कारिक पंडितों की सूची लिखी है वहां पर प्रतीहारेन्दुराज का नाम दिया है! इनके गुरू का नाम मुकुलथा। प्रतीहारेन्दुराज ने लघुवृत्ति बनाई है उसे वामना चार्य ने देखा है। उस में दण्डी, बामन आदि के नाम मिलते हैं और अमरू शतक के कई एक श्लोक उठाये गये हैं। ग्रन्थ समाप्त में प्रती हारेन्दुराज यों लिखते हैं॥

"महा श्री प्रतीहारेन्दुराज विरचितायामुद्भटालङ्कार सार संग्रह लघुवृत्तौ षष्टोऽध्यायः। मीमांसासार मेघात्पद जलधि विधोस्तर्कमाणिक्य क्रोशात् साहित्य श्री मुरारे र्बुधकुसुममधोः सौरिपादाब्जभृङ्गात्। श्रुत्वा सौजन्य सिन्धोः द्विजवर मुकुलात्कीर्त्ति वल्ल्यालवालोत्काव्यालंकार सारे लघु विवृतिमधात्कौङ्कणः श्रीन्दुराजः" ॥

ये महाशय कश्मीर देश के निवासी थे।

यद्यपि भट्ट वामना चार्य ने प्रतीहारेन्दुराज का कुछ समय स्पष्ट निर्दिष्ट नहीं किया है तौ भी उनकी सूची में बामन (सन् ७७९ ई०—८१३ ई०) के अनन्तर मुकुल और प्रतीहारेन्दुराज का नाम मिलता है। जिससे कि स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये सन् ८१३ ई० के पीछे हुए होंगे। उसी सूची में प्रतीहारेन्दुराजके अनन्तर आनन्द वर्धन (सन् ८५५ ई० ८८४ ई०) का नाम मिलता है जिससे असंभव नहीं जान पड़ता कि प्रति हारेन्दुराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् ८५५ ई० से पूर्व समय में रहे होंगे। यदि इनका समय सन् ८१३ ई० से ८५५ ई० के बीच माना जाय तो कदाचित लोगों को उसमें कुछ भी आपत्ति न होगी।

प्रतीहारेन्दुराज ने एक श्लोक जो अपने रचित ग्रन्थ में लिखा है वह काव्य प्रकाश के नवम उल्लास में देखने में आता है। वह श्लोक यथा—

स्वयं च पल्लवालाम्र भास्वत्कर विराजिता।
प्रभात सन्ध्येस्वाय फल लुब्धेहितप्रदा॥

जिससे अनुमित होता है कि मम्मट भट्ट (सम् ११०८ ई०] के समय तक प्रतीहारेन्दुराज का ग्रन्थ कश्मीर में प्रचलित हो गया था॥

काव्य प्रकाश के दशम उल्लास में 'आदाय वारि परितः सरितां मुखेभ्यः' इत्यादि श्लोक उठाया गया है उसके रचयिता का नाम भट्टेन्दुराज है। नहीं जान पड़ता कि वे यही प्रतिहारेन्दुराज हैं वा कोई और। इन्दु भट्ट नाम किसी कवि के श्लोक वल्लभ देव के सुभाषितावलि में भी मिलते हैं।

प्रभाकर भट्ट।

प्रचीन मीमांसकों में से केवल दो के नाम बहुत सुनने में आते हैं एक प्रभाकर और दूसरे कुमारिल इनमें से कुमारिल (सन् ६५०–७७० ई०) का उल्लेख तो पहिले हो चुका है और उनके ग्रन्थ का नाम तन्त्र वार्तिक है सो भी जानते हैं। पर प्रभाकर का कुछ विशेष वर्णन वा उनके रचित ग्रन्थों का नाम विदित नहीं हो सका। पर प्राचीन ग्रन्थों में जैसे सर्व दर्शन संग्रह आदि में उन्हें 'प्रभाकर गुरुणां' लिखा है। जिससे विदित होता है कि इनकी विद्वत्ता का लोगों के बीच कितना आदर था इन्हें प्रायः कुमारिल के समसामयिक वा उनसे कुछ पूर्व व्यक्ति मान सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवरसेन ।

बाण ने हर्ष चरित के आरम्भ में लिखा है—

कीर्त्तिः प्रवर सेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥

जिससे लक्षित होता है कि सेतु बन्ध नामक एक प्राकृत काव्य के द्वारा प्रवरसेन की कीर्ति संसार में फैली । लोगों का अनुमान हैं कि सेतुबन्ध काव्य के रचयिता कालिदास ही हैं पर यदि ऐसा होता तो बाण कवि कालिदास का उल्लेख प्रवर सेन के साथ न कर के पृथक् क्यों करते । पीटर्सन साहिब कहते हैं कि प्रवरसेन कश्मीर के राजा और कालिदास के अभिभावक प्रभु रहे होंगे और जैसे रत्नावली धावक विरचित होके भी श्री हर्ष के नाम से प्रचलित है वैसे सेतुबन्ध कालिदास का होके भी प्रवर सेन के नाम से प्रसिद्ध किया गया होगा संभव है कि बाण को यह बात विदित न रही हो अतएव उनने दोनों का पृथक् उल्लेख किया हो । पीटर्सन साहिब के अनुमान से प्रवरसेन का समय सन् ४३२ ई० है ॥

प्राज्ञ भट्ट ।

कल्हण कृत राजतरङ्गिणी का दूसरा भाग जोनराज और तीसरा भाग उनके शिष्य श्रीवर पण्डित ने रचा था । श्रीवर पण्डित के अनन्तर चौथी राजतरङ्गिणी इन्हीं प्राज्ञ भट्ट की विरचित है । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने निज काश्मीर कुसुम में इनका नाम प्राज्य भट्ट लिखा है और इन्हें अकबर शाह (सन् १५५६ ई० सन् १६०५ ई०) का समकालीन बताया है । प्राज्ञ भट्ट अपने रचित ग्रन्थ में लिखते ॥

गंगा भगवती तीर्थ स्नान धन्य स्व भूषितः ।
कविः श्री प्राज्ञभट्टाख्यः समग्र गुण भूषितः ॥
राजाबलि पताकां स्वां राज्ये फतिह भूपतेः ।
एकोननवतिं यावत् व्यक्तीचक्रे ततः परम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू हरिमोहन प्रामाणिक के मत से ये पण्डित शाके १४८२ अर्थात् १५६० ई० में वर्तमान थे। निदान इनका समय ख्रीष्टीय १६वीं शताब्दी का पिछला भाग समझना चाहिये ॥

बाण भट्ट ।

ये अत्यन्त प्रसिद्ध गद्य काव्य के लिखने वाले सन् ईस्वी की सातवीं शताब्दी के पूर्व भाग में हुए हैं। इनके रचित ग्रन्थों के नाम शताब्दी के पूर्व भाग हुए हैं। इनके रचित ग्रन्थों के नाम कादाम्बरी, हर्षचरित और चण्डी शतक हैं। हर्ष चरित के प्रारम्भ में बाण ने अपने पूर्व के प्रसिद्ध कवियों का जो उल्लेख किया है उससे उनके समय का पता भली भांति लग सकता है। उन उल्लिखित कवियों के बिषय में जो श्लोक लिखे हैं उनका भावार्थ नीचे के दोहों से स्पष्ट होवेगा ॥

वासव दत्ता ग्रन्थ लखि घटयो कविन को मान ।
कर्ण समीप मनो पहुंच पाण्डव बल परिमान ॥
विमल हार सम वाक्य धरि क्रमते अक्षर साज ।
गद्य भट्ट हरिचन्द को है कविता सिर ताज ॥
कियो सात बाहन सुभग काव्य अमर की भांति ।
शुद्ध सुभाषित रत्न की मनहुं बटोरी पांति ॥
प्रवरसेन यश जगमगत शशिअंजोर अनुहार ।
कपि बल सम जो सेतु चढ़ि उतरी सागर पार ॥
सूत्र धार आरम्भ कियो प्रस्तावना समेतु ।
देव वृन्द इव भास कीं फहराने जस केतु ॥
कालिदास मुखतें कढ़ी कविता मधुर सुभाय ।
जनो पुहुप कीं मंजरी जनमन लेत लुभाय ॥
पारवती परितोष कृत काम जगावत हार ।
वृहत कथा शिव चरित सम अद्भुत किय विस्तार ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आढ्य राज के चरित सब पैठे हृदय मंझार।
खिचत जीभ तलते मनहुं रुचिर काव्य की धार॥

जिससे स्पष्ट है कि सुबन्धु, हरिचन्द, सात बाहन [वा शालि बाहन] प्रवरसेन, भास; कालिदास, गुणाढ्य और आढ्य राज ये कवि बाण के पूर्व प्रसिद्ध हो चुके थे। पता लगाने से जान पड़ता है कि ये सब कवि छठीं शताब्दी से पूर्व के हैं अतएव बाण छठीं शताब्दी में वा उससे भी पिछले हैं। मयूर भट्ट बाण कवि के समकालीन हैं। मयूर और बाण के सम्बध में दो कथानक सुनने में आते हैं। यथा–

[१] मयूर भट्ट बाण कवि के श्वसुर थे। लोग कहते हैं कि ये उज्जैन के वृद्ध भोजराज की सभा में उपस्थित थे।

[२] वैक्रमीय संवत १०७८ अर्थात् सन् १०२२ ई० में श्री भोजराज की सभा के रत्न मयूर नाम कवि धारा नगरी में रहते थे। कादम्बरी नाम गद्य ग्रन्थ के रचयिता उनके बहनोई और बड़े मित्र थे।

किसी दिन मयूर कवि रात के पिछले पहर जाग उठे और कई एक श्लोक बना डाले उन्हें बहुत रसीले और मनोहर समझ मारे उत्सुकता के अपने मित्र बाण कवि को सुनाने के लिये उनके गृह द्वार पर पहुंचे। बाण कवि ठीक उसी समय अपनी प्यारी पत्नी मयूर कवि की बहिन को जो मान कर बैठी थी प्रसन्न करते हुए यह श्लोक रच कर सुना रहे थे॥

गतप्राया रात्रिः शशिमुखि शशी शीर्यत इव
प्रदीपोऽयं निद्रावशमुपगतो घूर्णत इव।
प्रणामान्तोमान स्तदपि न जहासि क्रुध महो

इतना तीन चरण सुना कर जब लो वे चतुर्थ चरण के शब्द सोच रहे थे तब से मयूर कवि वहां आ पहुंचे और स्वयम् चतुर्थ चरण की पूर्ति करते हुए यों बोले कुच प्रत्यासत्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनते ही बाण कवि प्रसन्नता से भर बाहर निकल आये और मयूर से भेंट की। बाण की स्त्री ने अपनी क्रीड़ा में ऐसा रंग भंग देख भाई को शाप दिया कि कोढ़ी हो जा। मयूर कोढ़ी होगये और सूर्य शतक बनाने पर उस रोग से छुटकारा पाया॥

कथानक की सत्यता के विषय में चाहे सन्देह किया जावे पर इतना अवश्य मानना पड़ेगा कि मयूर और बाण समकालीन हैं। सूर्य शतक रच के मयूर ने अपना कोढ़ दूर किया ऐसा काव्य प्रकाश में भी लिखा मिलता है।

लोग बताते हैं कि बाण कवि का बनाया एक ग्रन्थ पार्वती परिणय नाम का है जिसकी कथा कुमार संभव से बहुत मिलती है। हर्ष चरित देखने से बाण कवि के विषय में बहुत सी बातें विदित होती हैं। उनके पिता का नाम चित्र भानु और माता का नाम राज्य देवी था। ये वात्स्यायन बंश में उत्पन्न मगध देश के ब्राह्मण थे! बाण के बचपन ही में उनकी माता का देहान्त हुआ और जब वे १४ वर्ष के हुए तो उनके पिता भी स्वर्ग सिधारे। बाण कन्नौज के राजा हर्षबर्द्धन (सन् ६८० ई०) के आश्रित रहे और उन्हीं के वर्णन में हर्ष चरित नाम ग्रन्थ लिखा गया है। यद्यपि हूनूयसैंग के वर्णन अनुसार कन्नौज का राजा हर्ष वर्द्धन बौद्ध मत का पक्षपाती जान पड़ता है पर उसके आश्रित रहने पर भी बाण कवि बौद्ध न थे ऐसा कादम्बरी आदि ग्रन्थों के देखने से विदित होता है॥

आध्यात्मिक जीवन।

११ मई से १३ मई तक स्वामी राम तीर्थ ने प्रयाग कायस्थ पाठशाला में ३ व्याख्यान दिये जिसमें से पहिले दिन के व्याख्यान का सारांश नीचे देते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी जी ने स्कूल बोर्ड पर निम्न लिखित एक सूरत तथा अनुक्रमणिका बनाया जो इस प्रकार थीं ॥

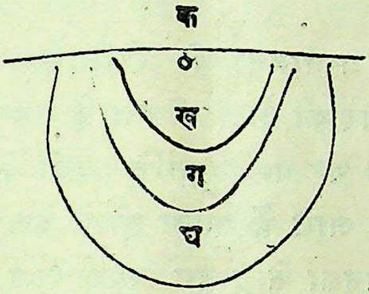

क० लट्टू	पत्थर	पेट पालू
ख०बैल	घासपात	गृहस्थ
ग० व्यापारिक बायु	पशु	सम्प्रदायी
घ० चन्द्रमा	मनुष्य	देशहितैषी
अ० सूर्य्य	ईश्वर	ज्ञानी

"इससे पहिले कि राम आध्यात्मिक जीवन पर व्याख्यान आरम्भ करै लोगों को यह जानना आवश्यक है कि सामान्य जीवन किसे कहते हैं जहां जीवन होता है वहां गति वा चेष्टा आवश्य होती है और जहां गति वा चेष्टा होती है वहां जीवन अवश्य होता हैं । बिना जीव के संसार की किसी वस्तु में किसी प्रकार की गति वा चेष्टा वा परिवर्तन नहीं हो सकता । पत्थर का टुकड़ा बढ़ते २ चट्टान हो जाता है । जो आज छोटा पौधा है वह बढ़ कर बड़ा भारी वृक्ष हो छाया देने लगता है । यह उत्थान इन वस्तुओं में केवल जीव होने के कारण से है । जब किसी वस्तु से जीव निकल जाता है तो उसमें से दुर्गन्धि आने लगती हैं । जब तक कि नदी की प्रबल धारा बहती चली जा रही है अर्थात् जब तक कि उसमें गति है तब तक उसका स्वच्छ और निर्मल जल सब मनुष्यों को सुख देता है । परन्तु ज्योंही उसकी गति रुकी उसमें से दुर्गन्धि निकलने लगती है और फिर जल पीने के योग्य नहीं रहता । इसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में जीव तभी तक रहता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक उसमें गति रहती है। गति ही मानो जीव का स्वरूप है। यह बात पत्थर, सागपात, पशु, मनुष्य और ईश्वर तक के भी विषय में ठीक घटती है॥

अब तुलना राम प्रस्तावना की रीति से कह के आप लोगों के चित्त को पहले आकार की ओर खींचता है। इस आकार में आप लोग यह देखियेगा कि ख० ग० घ० इत्यादि वृत्तों के केन्द्र स्पर्श रेखा से जितनी ही दूर होते जाते हैं उतना ही वे वृत्त बढ़ते जाते हैं। यहां तक कि वह वृत्त जिसका केन्द्र इस स्पर्श रेखा से असीम दुरी पर है स्वयं स्पर्श रेखा हो जाता है। इसी कारण से सीधी रेखा की यह परिभाषा कही जाती है कि सीधी रेखा वह वृत्त है जिसका केन्द्र अनन्त दूरी पर हो॥

पहले आकार के यह गुण बतला कर अब राम यह कहता है कि जितने वृत्त खींचे हैं जुदा २ मनुष्यों के गति के वृत्त हैं। जितने प्रकार की वस्तु संसार में पाई जाती है प्रायः सबों की गति का नमूना भांति २ के मनुष्यों में पाया जाता है। प्रथम आकार में जो बिन्दु क है वह अनुक्रमणिका (Table) में पेट पालू की गति का नमूना है।

इस कारण से कि वह मनुष्य जो पेट पालू है मनुष्य जाति में सब से नीच है उसकी तुलना सृष्टि के सब से छोटे पदार्थ पत्थर से करते हैं। यह मनुष्य उस विन्दु के समान जिस से उसकी तुलना की गई है अपने ही स्वार्थ में रत रहता है। उस मनुष्य को सिवा अपने स्वार्थ के और किसी से कुछ मतलब नहीं—अपने ही शरीर के साढ़े तीन हाथ के टापू को वह सारा संसार माने हुये है और उसी की चिन्ता में मग्न रहता है। रोम का राजा नीरो ऐसा ही मनुष्य था जिसके हृदय की गति मनुष्य रूप में होते हुये भी पत्थर के सदृश थी। उसको एक बार आग लगने का तमाशा देखने की इच्छा हुई—बस अपने चक्षु इन्द्रिय को तृप्त करने के लिये समस्त नगर में आग लगाने की आज्ञा दे दी और जब आग लग गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तम्बूरा ले पहाड़ की चोटी पर बैठ आनन्दित होने लगा-रोम का एक दूसरा सम्राट् भी ऐसा ही था। उसकी जिह्वा इन्द्रिय ऐसी प्रबल थी कि रात दिन उसकी यही इच्छा बनी रहती कि नये स्वाद चक्खें। इसलिये उसके यहां रातो दिन डेग चढ़ा रहता था और भांति २ के भोज्य पदार्थ बना करते थे। जब उसका पेट खाते २ खूब भर जाता तब वह ऐसी दवायें खाता जिससे पेट में का गया सब पदार्थ मुह के द्वारा निकल जाता और फिर वह और भांति-२ के भोजन खाने के लिये बैठ जाता। इस प्रकार के मनुष्यों की गति लट्टू के गति की भांति है जो अपने ही में चक्कर लगाया करता है॥

इस प्रकार के मनुष्यों से बढ़ कर गृहस्थ की श्रेणी है जो कि प्रथम आकार के वृत्त ख से तुलना रखती है। वृत्त ख बिन्दु क से बहुत बड़ा है। इसी प्रकार गृहस्थ पेट पालू मनुष्य से कहीं बढ़ कर है-वह केवल अपने ही स्वार्थ की चिन्ता में नहीं रहता किन्तु कुल कुटुम्बियों के पोषण का भार लिये हुए है-धन्य है ऐसा मनुष्य जिसने अपनी आत्मा तथा कुटुम्बियों की आत्मा को एक समझा, जो ख वृत्त के उत्तान पार्श्व (Concave side) के समान अपनी आत्मा में और थौड़े मनुष्यों की आत्मा को समेटे है। परन्तु उसमें एक दोष है। उसी वृत्त के न्युब्ज पार्श्व (Convex side) के समान इसकी पीठ कूर्मवत् उन मनुष्यों की ओर से जो उसके कुटुम्ब में नहीं है मुड़ी है। डांकू दूसरों को दुख पहुंचाता है और अन्य परिवारों के माल को लूट कर अपने परिवार की रक्षा करता है-ज़मीदार भूख से मरते हुये किसान से पाई २ तक निचोड़ लेता है, किसान के स्त्री के कान की बाली को बिकवा लेता है और अपनी स्त्री को पहनाता है। धनी निर्धन मनुष्यों के बालकों को दुःख और सन्ताप में पड़े देखता है परन्तु यदि स्वयं उसका बालक आनन्द की निद्रा में सो रहा है उसको कुछ चिन्ता नहीं होती-ऐसा गृहस्थ अवश्य दोषी है उसकी तुलना घास पात से की जाः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है। उसकी गति कोल्हू के बैल के समान है जो एक ही छोटे से घेरे में चक्कर दिया करता है और घण्टों के परिश्रम के बाद वह यही देखता है कि हम वहीं खड़े हैं जहां से चले थे॥

इन दोनों प्रकार के मनुष्यों से बढ़ कर वह मनुष्य है जो अनुक्रमणिका (Table) में सम्प्रदायिक (Sectarian) कहा गया है सम्प्रदायिक का आत्मज्ञान पेट पालू और गृहस्थ से बहुत ऊंचा है वह न केवल अपनी आत्मा और न अपने कुटुम्ब के लिये परिश्रम करता है वरन सारे अपने सम्प्रदाय को अपना भाई समझ उनके हित के लिये उद्योग करता है-ऐसे मनुष्य की तुलना प्रकृति की श्रेणी में पशु से की जा सकती है और उसके जीवन की गति व्यापारिक वायु (Trade winds) के समान है जो पृथ्वी के जिस भाग में चलती है सुखदायक होती है। पहले आकार में ऐसा मनुष्य वृत्त ग के समान है जो अपने भीतर वृत्त ख से कहीं अधिक स्थान घेरे है परन्तु दोष ऐसे मनुष्यों में भी है-जैसे वृत्त ग की पीठ और वृत्तों से मुड़ी है वैसे ही ऐसे मनुष्य की भी सहानुभूति उन मनुष्यों के साथ नहीं है जो इसके सम्प्रदाय के नहीं है या जो इसके सम्प्रदाय के बाहर हैं-आर्य समाजी और सनातनधर्मावलम्बी एक दूसरे द्वेष से रखते हैं। रामानुजी सम्प्रदाय के मनुष्य शंकर के सम्प्रदाय से बैर मानते हैं। हिन्दू मुसलमान को और मुसलमान हिन्दू को अपना शत्रु समझता है। इस कारण से यद्यपि सम्प्रदाय वाले ने गृहस्थ वालों पर बहुत कुछ उन्नति की है फिर भी से उनकी सहानुभूति एक चक्कर में बन्द है और वे अवश्य दोषी ठहराये जायंगे-

इन सबों से बढ़कर दर्जा सच्चे देश हितैषी का है। उसके जीवन की गति की तुलना पहले आकार में वृत्त च से की जा सकती है। यह वृत्त सब छोटे वृत्तों को अपने घेरे में समेटे है और इनके अतिरिक्त और बहुत सी जगह अपने घेरे में रखता है। देश हितैषी अपने आत्मा और एक देश के देश की आत्मा के एक्य को जान जाता है। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखों के तीव्र ज्योति के सामने जाति, पांति और रंग की भिन्नता सब दूर हो जाती है। वह देश के प्रत्येक जन के साथ वैसाही स्नेह रखता है जैसा अपनी आत्मा या अपनी भाई के साथ अपने जन्मभूमि माता से जितने जीव उत्पन्न हुए हैं उन सबों के लिये अपने को अर्पण किये रहता है। जापान में गुरू शिष्य से पूछता है "तुमने अपने जीवन को कहां से पाया है" वह कहता है "पिता से" "पिता क्या खाके पला" "अन्न, जल इत्यादि से" गुरू पूछता है "अन्न जल कहां से आये" शिष्य उत्तर देता है "जापान की भूमि से" तब गुरू कहता है "तुम्हारा जीवन जापान की भूमि से है और जापान को अधिकार है कि जब चाहे वह तुम्हारा शरीर लेले"—यही तत्व सच्चे देश हितैषिता का है। देश हितैषी को प्रकृति की श्रेणी में मनुष्य कहा है—उसके जीवनकी गति चन्द्रमा के समान है। चन्द्र ही के समान वह मनुष्यों के चित्त के और देश के अन्धकार को अपने सहानुभूति और देश हितैषिता की ठण्ढी किरणों से एकदम दूर हटा देता है।

परन्तु देश हितैषी को भी प्रकृति की सीढ़ी पर और अधिक चढ़ना है। यह कह चुके हैं कि गति अथवा उन्नति जीवन का मूल है—ज्यों ही सृष्टि के किसी पदार्थ की उन्नति बन्द हो जाती है रुके हुये जल के समान मैला हो जाता है और उसमें से दुर्गन्धि निकलने लगती है। जब एक छोटा पदार्थ जैसे मूसा मर कर सड़ता है उसमें से थोड़ी ही दुर्गन्धि निकलती है परन्तु जब सृष्टि का कोई भारी पदार्थ जैसे हाथी मर कर सड़ता है तो उसमें से कहीं अधिक दुर्गन्धि निकलती है और आस पास के स्थानों में फैल कर रोग उत्पन्न करती है। इसी प्रकार यदि पेट पालू या गृहस्थ उन्नति नहीं करता तो उससे थोड़ी ही हानि होती है परन्तु यदि एक देशहितैषी नष्ट हो जाय और उन्नति करना छोड़ दे तो उससे पृथ्वी भर को बहुत बड़ी हानि पहुंचती है—एक देश से दूसरा देश लड़ जाता है और लाखों मनुष्यों के लोहू की नदियां बह निकलती हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश हितैषिता की सीढ़ी बिना चढ़े हुए मनुष्य को सच्चा आत्मज्ञान कभी नहीं प्राप्त हो सकता परन्तु यदि इस दर्जे पर आकर मनुष्य रुक जाय और आगे उन्नति न करै तो वह भी दोष भागी होगा सच्चे ज्ञानी की श्रेणी इससे कहीं ऊपर है। सच्चा ज्ञान वही है जब अपनी आत्मा न केवल देश की आत्मा होजाय वरन सृष्टि भर की अर्थात् सृष्टि भर में एक ही आत्मा देख पड़े और यही वेदान्त का सार है-आत्मत्याग कोई वस्तु नहीं है क्योंकि आत्मा त्यागी नहीं जा सकती। मनुष्य का सच्चा कर्त्तव्य यही है कि अपनी तथा संसार की आत्मा के ऐक्य को पहचाने उस ज्ञानी को जिसको ऐसा ज्ञान हो गया ईश्वर कह सकते हैं और उसके जीवन के गति की तुलना सूर्य से दी जा सकती है जो सारे सृष्टि को प्रकाशित कर रहा है। वृत्त का केन्द्र स्पर्श रेखा से हटते २ अनन्त दूरी पर हो गया और वृत्त और सीधी रेखा में कोई भिन्नता न रह गई ॥

A. S.

पंडित वैठे छात्र बटोर
तिलक लगाये "नम्बर फोर" (No 4)
विद्यार्थी सब सत्तर आठ
बोली बोलैं एकहि ठाठ;
चुप्प चाप सब सीधे खड़े
एक एक अक्षर सब कोई पढ़े
छब्बिस गोरे छब्बिस काले
करहिं काम छब्बीस निराले
चपत पड़े तब जीभ निकालहिं
जो कुछ पढ़े सो तुरत बतावहिं

यह एक पहेली है जो महाशय इसको हल कर २० जून तक भेजेंगे उन्हें उपहार में एक मनोरञ्जक उपन्यास भेंट दिया जायगा ॥

वृ-मो-कूल प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेशमी वस्त्र ।

रेशमी (कोसा के बने) हुए उत्तम वस्त्र थान, अंगा, शोला, साड़ी दुपट्टा, बचकानी आदि मेरे द्वारा भेजे जाते हैं। दाम के हेतु सूचीपत्र मंगा देखें। मिलने का पता,–

ताराचंद दूबे, बिलासपुर (सी०पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { जुलाई
सं० ७ } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।≈)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ सं० ७ | प्रयाग | जुलाई १९०५ ई०

पुरातन तथा आधुनिक सभ्यता में अन्तर ।

पुरानी सभ्यता का उद्देश्य Simple living and high thinking साधारण जीवन और उच्च विचार था—हमारे पुराने लोग शून्य एकान्त स्थान में जन समाज से बड़ी दूर किसी पर्वत स्थली या पवित्र नदी के तट पर स्वच्छ जल वायु में नीवार साग पात या कन्द मूल फल खा कर रहते थे वेश कीमत दस्तर खान उन के लिये नहीं सजाया जाता था पर विचार उनके कैसे ऊंचे होते थे कि संसार की कोई ऐसी बात न बच रही जिसपर उन्हों ने खयाल नहीं दौड़ाया और जिसको अपने मस्तिष्क में नहीं रख लिया—इस समय की सभ्यता का जो चलन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके साथ मुकाबिला करने से वे लोग रूड जंगली और असभ्य कहे जा सक्ते हैं-तब के लोगों को शान्ति बहुत प्रिय थी जो जितना ही मन को बश में किये हुए दमनशील और शान्त रहता था वह उतनाही अधिक सभ्य समझा जाता था-इस समय शान्त शील बोदा समझा जाता है मन को बश में करना कैसा बल्कि मन को चलायमान और इन्द्रियों को अतिशय लालन की कितनी तदबीर और सामग्री चल पड़ी हैं-फ्रान्स में दिन में ३ बार लेडियों के फेशन बदले जाते हैं फेशन जो इस समय अन्तिम सीमा को पहुंच रहा है यह सब सभ्यता ही का प्रसाद है। सिवाय इसके लोभ ईर्ष्या ममता इत्यादि दोष जो इन्द्रियों को दमन न करने से पैदा होते हैं सब इस समय की शोभा और गुण हो रहे हैं। सारांश यह कि उस समय की सभ्यता का लक्ष्य केवल बाहिरी उन्नति पर इतना न था वरन भीतर की उन्नति पर जिसे आध्यात्मिक उन्नति कहते हैं-हमारी आध्यात्मिक उन्नति में बिना बाधा पड़े Matterial वाह्य भौतिक उन्नति उस समय स्वीकृत थी-इस समय "मेटीरियल" भौतिक उन्नति पर ज़ोर दिया जाता है जिसका परिणाम देखने में आ रहा है कि हम आध्यात्मिक विषय में दिन २ गिरते जाते हैं। हमारी आधुनिक सभ्यता बिल्कुल रुपये पर निर्भर है रुपया पास न होतो आप सकल गुण बरिष्ट शिष्ट समाज के सिर मौर होकर भी श्रद्धास्पद नहीं हो सक्ते। सर्व साधारण को जब यह निश्चय हो गया कि केवल रुपया सब इज़्ज़त और प्रतिष्ठा का द्वार है तब जैसे बने रुपया इकट्ठा करने में चूक न हो हमारी आध्यात्मिक शक्ति का ह्रास हो बला से रुपया मिलने में त्रुटि न हो-तब के लोगों में ऐसा न था आभ्यन्तरिक शक्तियों को विमल रख रुपया मिलता हो तो वह लाभ उन्हे ग्राह्य था। दूसरा कारण इसका यह भी कहा जा सक्ता है कि तब देश सब ओर से रंजा पुजा या धन की कमी न थी अब इस समय मुल्क में ग़रीबी बढ़ जाने से लोगों को रुपया कमाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Struggle यत्न विशेष करना पड़ता है। यूरोप और अमरिका के आढ्य तम देशों में इस आधुनिक सभ्यता की पोल नहीं खुलने पाती इसलिये कि वहां Struggle कोशिश इतनी अधिक नहीं है। यहां सब भांत अभाव और क्षीणता है तो इस वर्त्तमान सभ्यता की भरपूर पोल खुल रही है खून लगाय शहीदों में मिलने की कितनी ही चेष्टा लोग कर रहे हैं पर देश में सच्ची सभ्यता का लोप ऐसा पातक हम लोगों पर सवार है कि हमें सभ्यता की श्रेणी से अलग कर रहा है। यहां पर एक बात और हमारे मन में आती है कि सभ्यता का देश के जल वायु के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है प्राकृतिक नियमानुसार जो बात या जो बर्ताव जल वायु के अनुकूल पड़ता है वही वहां की सभ्यता समझी जाती है जैसा हमारा देश कृषि प्रधान है तो जो कुछ यहां की खेती के अनुकूल या पृथ्वी की उपज का बढ़ाने वाला है उसकी वृद्धि या उसका पोषण इस देश की सभ्यता का एक अंग है जैसा गोरक्षा या गोपालन यहां की सभ्यता का श्रेष्ठ अंग है। सामयिक सभ्यता में गो धन की क्षीणता महापातक सा देश भर को आक्रमण किये है हमारे पूर्वज प्रकृति को छेड़ना नहीं पसन्द करते थे वरन प्रकृति में विकृति भाव बिना लाये सहज में जो काम हो जाता था उसी पर चित्त देते थे। आधुनिक सभ्यता विदेश से यहां आई है वह हमारी किसी बात के अनुकून नहीं है किन्तु इससे प्रतिदिन हमारी क्षीणता होती जायगी। भोग विलास आधुनिक सयभ्ता का प्रधान अंग है दरिद्र का विलासी होना वैसा ही जैसा "उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति"—अपने से अधिक वाले का अनुकरण करते कौन नहीं दरिद्र हो जाता—तस्मात् अन्त को यही सिद्ध होता है कि साधारण जीवज और ऊंचा बिचार पुष्ट सभ्यता है—जिन दिन देखे वे कुसुम गई सो बीत बहार—अब अलि रही गुलाब की अपत कटीली डाल—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्व मंगल ।

दक्षिण देश में कृष्णा वेणा नदी के तीर किसी स्थान में ये रहते थे। पिता ने लड़कपन में इन्हें बहुत दुलार में रक्खा था इस कारण इनने विद्याभ्यास में कुछ यत्न न किया। होते २ कृष्णा वेणा नदी के दूसरे पार रहने वाली किसी वेश्या पर आसक्त हुए यहां तक कि एक बार पिता के श्राद्ध के दिन काम काज में फंस के जब वेश्या से न मिल सके तो रात्रि में पानी बरसते समय नदी पार करने का साहस किया किसी लोथ के सहारे नदी पार पहुंचे और दीवार पर से लटकते हुए किसी सर्प को रस्सी समझ उसे थांभ कोठे पर चढ़ कर अपनी प्यारी से मिले। उनका ऐसा साहस देख वेश्या ने उन्हें बहुत झिड़का और कहा कि तुम हम से जितना प्रेम रखते हो उतना कहीं भगवान् से रखते तो बड़ा कल्याण होता। निदान यह झिड़की ने बिल्व मङ्गल के चित्त में खटक पैदा कर दिया झट उठ खड़े हुए और वहां से चल दिये। किसी ब्राह्मण के कहने से ये सोमगिरि के पास जा पहुंचे और सोमगिरि ने उन्हें नीचे के लिखे दो श्लोक सुनाये॥

कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते ।
भस्मीभूतस्तु तस्याशु महापातक कोटयः ॥
दरिद्रो वा रूजार्त्तो वा ग्रहार्त्तोवापि यो नरः ।
श्री कृष्णेति जपन्नाम सुखीभवति निश्चितम् ॥

उपरान्त कृष्णा के तीर पर ले जाके इन्हें मन्त्र दिया निदान विरक्त बिल्व मङ्गल मथुरा को चले लोग कहते हैं कि मार्ग में उनने अपनी दोनों आंखों को भी फोड़ डाला कि संसार के पदार्थों से विशेष प्रीति न रहे। ये महाशय पीछे से अच्छे कवि हुए हैं और श्री कृष्ण कर्णामृत नाम ग्रन्थ रचा। लोग कहते हैं कि श्री कृष्ण स्वयं प्रकट होकर उनके इस काव्य को सुनते और प्रसन्न होते थे। इन्होंने अपना तखल्लुस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीला शुक अर्थात् राधिका जी को अपनी सीटी बोल से लुभाने या उनका जी बहलाने वाले राधिका जी के हाथ के सुग्गा अपने को कहते थे कृष्ण कर्णामृत के एक २ श्लोक भक्ति रस से पूर्ण और बड़ी चमत्कार कविता के हैं=

बिल्व मङ्गल पहिले अद्वैत वादी थे पर पीछे से रामानुज के सम्प्रदाय में मिलके विशिष्टाद्वैत बादी हो गये। इनके रचित श्लोक को महा प्रभु श्री कृष्ण चैतन्य बड़े प्रेम से गाया करते थे। अतएव बिल्व-मङ्गल का समय रामानुज और कृष्ण चैतन्य इन दोनों के बीच का माना जा सकता है। रामानुज स्वामी का समय ख्रीष्टीय १२ वीं शताब्दी का पिछला और १२ वीं शताब्दी का पूर्व भाग है। श्री कृष्ण चैतन्य का जन्म सन् १३८५ ई० में हुआ। इससे संभव है कि बिल्व मङ्गल तेरहवीं वा चौदहवीं शताब्दी ख्रीष्टीय वा उसके तनिक पूर्व रहे हों।

बल्लालसेन।

बंगाल के सेन बंशी राजाओं की नामावली में इनका नाम देखने में आता है। बाबू रमेश चन्द्र दत्त के कथनानुसार बल्लालसेन के राज्य सिंहासन पर बैठने का समय सन् १०६६ ई० है इनके पिता का नाम बिष्वक् सेन वा सुख सेन जान पड़ता है। बंगाल के प्रसिद्ध राजा लक्ष्मण सेन इन्हीं के पुत्र थे ऐसा अनुमान होता है। बंगालियों के निर्देशानुसार इनके रचित ग्रन्थ का नाम दान सागर है। इस ग्रन्थ के रचे जाने की मिती 'शशिनव दशमिते शकाब्दे' लिखा है! बंगाली लोग इसका अर्थ शाके १०१९ कहते हैं पर वास्तव में यह १०९१ शाके होता है। यदि १०१९ शाके में दान सागर रचा गया हो तो सन् १०९७ ई० उसका समय रामेशचन्द्र के निर्णय से मेल खाता है। अन्यथा १०९१ शाके मानने से बल्लाल सेन का उस समय में होना असंभव अनुमित होता है। भोज प्रबन्ध नाम ग्रन्थ इन्हीं बल्लाल सेन का बनाया है ऐसा लोग बहुधा बतलाते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं-सुधाकर दूबे ने निज रचित गणक तरङ्गिणी में बल्लाल सेन को मिथिला या तिरहुत प्रान्त का राजा और लक्ष्मण सेन का पुत्र लिखा है और कहते हैं कि उसने १०९० शाके में अद्भुत सागर नाम ग्रन्थ बनाया। क्या आश्चर्य बंगाल और तिरहुत के राजा और अद्भुत सागर वा दानसागर के रचयिता एक ही बल्लाल सेन होंगे? पर लक्ष्मण सेन उनका पुत्र था वा पिता किसी प्रकार निर्णय नहीं होता। यदि भिन्न २ जन हों तो संभव है दान सागर वा अद्भुत सागर एक ही ग्रन्थ हो क्योंकि दोनों के रचे जाने का समय १०९० वा १०९१ शाके मिलता है। सो दान सागर के रचियिता मिथिला के राजा बल्लाल सेन हों और बंगाल के राजा बल्लाल सेन कोई और हों तो असंभव नहीं है। अबुल फ़ज़ल ने भी बंगाल के सेन बंशी राजाओं की नामावली में सुख सेन का पुत्र बेलाल सेन और उसका पुत्र लखमन सेन लिखा है।

कहते हैं कि जब बल्लाल सेन ने किसी एक नीच कुल संभवा कन्या से प्रेम किया तो उनके पुत्र लक्ष्मण सेन ने पद्यों द्वारा उन्हे उलाहना दिया बल्लाल सेन ने उसका उत्तर जिन श्लोकों में दिया वे नीचे लिखे जाते हैं॥

तापो नापगतस्तृषा न च कृशा धौता न धूली तनोर्न स्वच्छन्दमकारिकन्दकवलः का नाम केली कथा। दूरोत्क्षिप्तकरेण हन्त करिणास्पृष्टा नवा पद्मिनी प्रारब्धोमधुपैरकारण महो झांकार कोलाहलः॥ सुधांशो र्जातेयं कथमपि कलंकस्यकणिका विधातुर्दोषोयं नच गुणनिधेस्तस्य किमपि। सकिं नात्रेः पुत्रो न किमु हर चूड़ार्चनमणि र्न वाहन्ति ध्वान्तं जगदुपरि किं वा न बसति॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर के दोनों श्लोकों से बल्लाल सेन की कविता शक्ति भली भांति झलकती है।

ब्रह्म गुप्त।

महमहोपाध्याय पं० सुधाकर दुबे जी ने गणक तरङ्गिणी में इनके विषय में लिखा है कि ये महाशय बिष्णु गुप्त के पुत्र थे शाके ५२० अर्थात सन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुए। व्याघ्र मुख नाम राजा के समय में अपनी तीस वर्ष की बय में इनने ६२८ ई० में 'ब्राह्म स्फुटित' नाम ग्रन्थ रचा। और सन् ६६५ ई० में खण्डन खाद्य नाम करण भी रचा। बहुतों की राय है कि ये विष्णु गुप्त के पोते थे और रीवां के राजा व्याघ्र भट के आश्रित थे।

ब्रह्म गुप्त प्रसिद्ध ज्योतिषी थे इन ने आर्य भट्ट के मत का खण्डन भी किया है।

नई रोशनी का जौहर।

आज नई रोशनी का एक ऐसा जौहर हमारे हाथ लगा है कि जिस्के देखने से हमारी आंखें खुल गईं और यह निश्चय कर लिया कि अब तो नई रोशनी वालों का कदम चूंबैंगे बरन उनकी सात परिक्रमा कर चरणामृत लेंगे और आगे से उनकी शान के खिलाफ कलम को कष्ट न देंगे। प्रिय पाठक यह जौहर ऐसा नहीं है कि हम आप लोगों को उसे बिना दिखलाये या अपने से अधिक उसका आनन्द आप को बिना पहुंचाये चुप रह सकें। उस जौहर के आनन्द को हम आप के सामने ज्यों का त्यों रक्खे देते हैं आप उसे अपना ही जान जितना चाहें उस्के सुख का अनुभव करें और अपने दोस्तों को भी उसका हिस्से दार बनावें। परन्तु यह जौहर जैसा कदाचित् आपने अनुमान किया होगा न हीरा है न लाल न नीलम है न पुखराज यह तो धनाढ्य के नौ जवान नई रोशनी के मारे हुए पुत्र की (डयरी) रोज़नामचे या दिनचर्या के फटे हुये ६ पन्ने हैं। यह मुझे एक कूड़े के ढेर के पास पड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिले मैंने उन्हें लालच बश नोट समझ उठा लिया परन्तु बाहरे किस्मत नोट नहीं तो नोट कर लेने योग्य बस्तु निकली। जिस्के अवलोकन से हम तथा आप वह लाभ उठा सकेंगे कि एक हज़ार का नोट के मिलने से भी न उठा सक्ते। पहले तो ऐसे पाये हुये नोट को हम आप से बतलाते ही क्यों चुपचाप अपने जेब में रख लेते और बतलाते भी तो आप पुलिस के हाथ भर के सोटे के भय से कब हिस्सा लेने को मुस्तैद होते। अस्तु ईश्वर की कृपा से ऐसी वस्तु हाथ लगी कि हम और आप सब उसमें अपनी श्रद्धा और रुचि के अनुसार लाखों रुपये के बक़्त की बचत कर अन गिनत रुपये पैदा करने योग्य हो जांयगे।

डयरी के उन छहो पन्नों की नकल हम ज्यों की त्यों आप के सामने रक्खे देते हैं॥

पहला पन्ना।

रविवार ६ मार्च १९०४।

सुबह ९ बजे सो के उठे ११ बजे नहाये। आज शाम को एक बक्स पियर्स सोप और एक जोड़ा जनेऊ खरीदना है। जनेऊ आज बिल्कुल टूट गया गही देकर भी पहनने लायक न रहा। न इसमें अब ताली ही बंध सक्ती है। दोपहर को ३ घंटे सोये शाम को चौक गये ३) तंबोली को ५ दिन के हिसाब के दिये। बी मुन्ना जानने कलुआ के हाथ ४ बीड़े पान के भेजे और यह कहलाया कि "कल दरजी के यहां से अगर कुर्तियां लेकर दोपहर को न आओगे तो ज़िन्दगी भर मेरी डयोढ़ी पर कदम रखने की हिम्मत न करना"॥

रिमार्क-खैर आज बी साहबा कुछ नाराज़ हैं कल भोरही यह काम कर तब नहाऊंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा पन्ना ।

सोमवार ७ मार्च १९०४ ।

आज सुबह सब के पहले उठे लाला जी के सिरहाने से उनकी तालियों का गुच्छा चुराकर उनके बक्स से २५) उड़ा लिये वी साहबा की कुर्तियां मंगाईं मगर दरजी ने अभी तक नहीं बनाईं नौकर के वापिस आने पर मैं खुद हंटर ले कर गया दर्जी से कहा सुनी हुई उस बदमाश ने दो आदमियों को उसका दिया जिन्हों ने हंटर मुझ से छीन लिया और न जानिये कितने जड़े—

(Very confedencial remark) दर्जी की मार का तो कुछ रंज नहीं मगर कुर्तियां न मिलीं आज दो पहर को उन्हें क्या मुंह दिखावेंगे—

बी मुन्ना जान के यहां कहला भेजा मुझे आज कई दस्त और कै आ गये इस वजह से शायद न आ सकूंगा कुर्तियां आप की तैयार हैं तबियत ठहरने पर हाज़िर करूंगा

तीसरा पन्ना ।

मंगलवार ८ मार्च १९०४ ।

दो बिलों का पेम्यंट आज ज़रूर करना है पर रुपया पास नहीं खैर घर गया Wife [वइफ] को बुला कर १०५) मांगा इनकार करने पर मुझ से रहा न गया उस की खूब ही मरम्मत की, और एक हाथ का ठोंस सोने का कड़ा उतार लिया। वइफ का चिल्लाना सुन मा दौड़ आईं मैं गुस्से में आ उन्हें पीछे को ढकेला पर वह सीढ़ियों पर गिरीं खूब चोट आई उन्हें वैसा ही छोड़ अपने कमरे में आया शराब वाले की बिल अदा की दूसरे को Next संडे को आने बोला—

आज सिर्फ दोही बोतल ह्विसकी मंगाई नशा कम रहा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा पन्ना ।

बुधबार ९ मार्च १९०४ ।

धोबी का हिसाब

१ कोट सिल्क-धोलाई आना ४-वापिस तह ठीक नहीं है-

१ कोट हालेन्ड=ब्राउन धोलाई आना ४-

२ वेस्ट कोट-धोलाई २ आना-

६ शर्ट-धोलाई ६ आना-वापिस-कफ और कालर की तह ठीक नहीं

२ पैंट-धोलाई २ आना-वापिस-तह ठीक नहीं-

२ कालर धोलाई २ आना-

२ नकटाई धोलाई आना-४

२ बी साहबा की साड़ी धोलाई १-रुपया-

रिमार्क--कुल टोटल धोबी के धोलाई का हिसाब सिर्फ १ हफ्ता का ३) याने १२) महीना-

---

पन्ना ५ ।

वृहस्पतिबार १० मार्च १९०४ ।

७ बजे से ९ बजे तक जूतों में ब्रांको लगा जूता साफ करते रहे-कल दोनों नौकरों को हंटर से खूब पीटा और तनख़ाह ज़ब्त कर निकाल दिया-

आज १ बोतल ब्रांडी हज़म हो गई-

लैडलाएंड को कलकत्ता को इन चीज़ों का आर्डर भेजा-

सिलकेन शर्टस १ दर्जन-

रेशमी रुमाल २ दर्जन-

धारीदार मोज़े २ दरजन-

कालर ६ नेकटाई ६ तीन जोड़े जूते इङ्गलिश मेड-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिमार्क हम उनकी बे अक्ली को कहां तक पछतांय न जानिये उन्हें क्या शामत सवार है जिन्हों ने देशी कपड़े पहिनने का प्रण कर छोड़ा है हमें तो देश के बने भद्दे मोटे कपड़े देख घिन होती है-

---

छटा पन्ना ।

शुक्रबार ११ मार्च १९०४ ।

आज ५००) इस शर्त पर क़र्ज़ लिया कि जब बाप मरेंगे तब १०००) देंगे उन्हीं रुपयों से आज रामनौमी का जलसा हुआ-शहर की खूबसूरत और नौ जवान तवायफें आईं-उनकी दावत बड़ी धूम धाम के साथ की गई मैं ने भी बी साहबा के साथ उनके दस्तर खान का शरीक हुआ वल्कि पिता जी इसी वजह से घर से निकल गये-रिमार्क बुड्ढा बहाने बाज़ी करता है पीछे पछताय आप ही घर आ जायगा-

प्रिय पाठक-इन पन्नों के अवलोकन से मालूम हुआ होगा कि ये कितने बहु मूल्य हैं-बड़े दाम के जवाहर भी इन पर न्यौछावर हैं-यदि आप अपनी बुद्धि की नुकीली सलाई से इनमें छेद कर सोने के तार में गूथ इन्हें पहन लें तो क्या ही अच्छा हो—

ब्र-मो-कूल

काशी मे सोशल कानफैरेन्स ।

हम कई बार इसका प्रतिबाद कर चुके हैं कि कानग्रेस के पण्डाल में सोशल कानफेरेन्स ऐसे नष्ट समाज का जलसा सर्वथा अनुचित है इसे हम अपनी आर्यता का मूलोच्छेदी कुठार कहें तो सब भांत सुसंगत है। पारसाल बाम्बे में गइकवाड़ की वक्तृता से हमारा यह निश्चय और भी दृढ़ होगया कि यह हमारे हिन्दू धर्म वर्ण विवेक आदि को जड़ पेड़ से उखाड़ दिया चाहता है। हम लोग हिन्दू धर्म में संशोधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं किन्तु ऐसा संशोधन नहीं कि हमारा रूपान्तर हो जाय हम सर्वथा अंगरेज़ या यवन बन बैठें हिन्दुस्रानी की कहीं गन्धि भी न बाकी रहे । काशी ऐसे तीर्थ स्थान में जहां हिन्दू धर्म का अटल साम्राज्य है और कुल हिन्दुस्तान में पंजाब से लै बंगाल तक धर्म सम्बन्धी विषय की कोई पेचीली गांठ के सुरझाने को काशी का हवाला दिया जाता है वहां सोशल कानफेरेन्स ऐसे धर्म को दूषित करने वाले समाज का अधिवेशन नितान्त अनुचित है—काशी के लोग इसका प्रतिबाद ही न करैं वरन इसके न होने में अपनी प्रसन्नता प्रगट करैं और कानफेरेन्स के मन्तव्यों का अनुमोदन करैं तो इस्से बढ़ कर हिन्दू धर्म का घाटा और क्या होगा । इस कानफेरेन्स के मुखिया वे ही हैं जो हमारी समाज से निकासे हुए हैं जिन्हों ने अपनी नाक कटा डाला है तो वे अब चाहते हैं कि किसी के नाक रही न जाय ऐसों के कथन का समाज पर क्या असर पड़ सक्ता है । संशोधन का भार उठाने वाले को बहुत सुचेत और बड़े विमल चरित्र का होना चाहिये जिस्में सब लोग उसके चलन का अनुकरण करैं तथा उसकी, नियत की हुई प्रणाली या लीक पर चलैं । कानफेरेन्स के दल में जो लोग हैं उन्में हम एक को भी ऐसा नहीं पाते जिसने देश या समाज के लिये ज़रा भी अपनी हानि गंवारा किया हो--नितान्त स्वच्छन्द समाज की कैद से मुक्त हो जाना ही उनके मत में तरक्की है इस तरक्की से हमारा तथा हमारे देश का क्या उपकार है । कान्ग्रेस में सबों का धन लगता है तब इस पंडाल में कानफेरेन्स क्यों किया जाता है हम लोगों के धन से कानग्रेस किया जाय पण्डाल रचना हो और हमारी ही जड़ उखाड़ी जाय क्या अच्छा न्याय है । हम अन्त की घड़ी तक चिल्लाते जांयगे मानना न मानना कानग्रेस के मुखियाओं के हाथ में है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आंख खुली तो क्या देखा ।

कल सांझ को दो चार यार दोस्तों की राय ठहरी कि आज भंग छुटै-फिर क्या देर सिल बट्टा मौजूद हो गया कहने भर की देर थी बात की बात में बूटी के सब मसाले मुहैया हो गये। एक ब्राह्मण देवता लगे घोटने यारों ने भी गप्पें मारना शुरू कर दिया । थोड़ी देर में एक २ कुल्हड़ सबों के हाथ में नज़र आने लगा इधर हम भी दो तीन कुल्हड़ उड़ा गये और हवाई घोड़े पर उड़ने लगे। जब ज़रा सरूर आने लगा तो सोचा चलैं अब सो रहैं घर पहुंचे ब्यालू में देर थी कौन ठहरता है चट खाट की शरण ली । थोड़ी देर तक तो सांप बीछू दिखाई देते रहे उपरान्त देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है और बहुत लोग नाक की सीध एक ओर को जा रहे हैं । हमारे मन में भी यही समाई कि चल कर देखैं वहां क्या है । थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि कोइ परम सुन्दरी अठखेली चाल से चलती छम २ करती इधर से उधर को ठुमक रही है । वहां के सब मनुष्यों की यही लालसा है कि वह हम से बोले या हमारे पास आ जाय । वह सोने की चिड़िया जिधर घूमती है उधर ही लोग उसे हाथों हाथ लिया चाहते हैं पर वह भी एक बिचित्र स्त्री है किसी के पास ठहरना तो जानती ही नहीं। अभी यहां तो दामिनी सी दमकती फिर कहीं और ठौर यह नहीं मालूम होता था कि वह कहीं स्थिर होकर रहैगी-मैं भी बड़े असमंजस में पड़ा कि अब क्या करूं किन्तु जब यह पूर्ण रीति से निश्चय हो गया कि यह कहीं ठहरेगी नहीं तो मन में आया कि मैं भी चल कर लोगों का तमाशा देखूं। आगे बढ़ा जो मण्डली हम को पहले मिली उसी में जा मिल बजे--देखा तो उन मनुष्यों के अंग अंग में सिवाय धोती और अंगोछा के और कुछ न था। वहां हमारे एक मित्र भी थे उन से पूछा कि ये लोग कौन हैं और क्या कर रहे हैं। उन्हों ने कहा ये ब्राह्मण लोग हैं और जो सुन्दरी आप ने देखा है उसी के फेर में ये लोग यहां इकट्ठे हैं-इनके पुरखों ने तो कभी इस स्त्री के ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चितया भी नहीं बरन सदा उस्की अवज्ञा करते रहे किन्तु समय के फेर फेर से विद्या और वृत्त से हीन हो अब सब यही चाहते हैं कि हम किसी तरह उसे फंसा लें। ये लोग जो इधर खड़े हैं ये पुजेरी या पंडे तथा पाधा और पुरोहित हैं उसी चंचला के फेर में ये भी व्यग्र हैं। ये यजमानों को फासना खूब जानते हैं जन्म पत्र के ग्रह कैसे ही कड़े हों सब मिला देंगे जिस बात की जैसी व्यवस्था लेनी हो लै लीजिये—तात्पर्य यह कि इन्हें विश्वास करा दीजिये कि तुम्हें उस सुन्दरी का दर्शन मिलैगा जो चाहिये सो करा लीजिये। आओ मित्र आगे चलैं। आगे बढ़े बहुत से सुफेद पोश नज़र आने लगे किसी के हाथ में खारुये से मिढ़ी बही थी किसी के हाथ में बोतल। इन्में दो चार महाशय आपस में झगड़ रहे थे हम जब वहां पहुंचे तो देखा कि ये लोग बही वालों को पकड़े खड़े हैं उन्हें गालिया दे रहे हैं और कहते हैं देखिये आप ने बही के पन्ने फाड़ डाले क्या इतनी रकम सब डकार जाओगे। इसी बीच दो चार बोतल वाले दौड़ आये और कहने लगे बस २ झगड़ा मत करो इधर आओ हम सब झगड़ा तै किये देते हैं बस फिर क्या बोतल का काग खटा खट खुलने लगा। इन्ही से थोड़ी दूर बगल में कुछ हुस्न परस्त खूबसूरत लोग खड़े थे एक ओर रईस जादों का मजमा था एक ओर दल्लालों का। इन्में कई एक बूढ़े आपस में कुछ बात चीत कर रहे थे मन में आई इनका भी तमाशा देखैं बस चल पड़े और वहां पहुंचे तो यह सुना॥

पहिला बूढ़ा—कहो भाई आज कल क्या रंग ढंग हैं

दूसरा—भाई साहब क्या कहैं हम अपने बबुआ जी से बहुत ही दुखी हैं न मालूम उनके मन में क्या भाई है न तो मा की कुछ सुनते हैं न हमारा कुछ बश चलता है और हमें तो बुड्ढा बेवकूफ मानते हैं बात २ में यह कह देना कि आप हमारे कामों में मत दखल दीजिये आप इसे नहीं समझते तो कोई बात ही नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां भाई ज़माने की खूबी है एक हो तो कहैं किस के २ लिये रोवें -यहां तो मार पीट किसी तरह से दिन भर दौड़ धूप कर कुछ पैदा किया और घर पहुंचे तो कुछ न कुछ उनकी लीला सुनते ही बनता है कहिये आप के बबुआ जी का इन दिनों क्या शग़ल रहता है।

दूसरा—हम उनका रोज़ नामचा बतलाये देते हैं उसी से समझ लीजिये-सबेरे जब सूर्य निकलने का समय आया तो नौकर चदरे के भीतर हुक्के की सटक उनके मुह में लगा देता है थोड़ी देर तक गुड़ २ करते रहे बाद गरमी से परेशान पाखाने गये पाखाना हुआ ही नहीं अरे साहब कहिये वह रात भर की गरमी जाय कहां—आये खाट पर पड़ गये नौकर से कहा वास्केट के जेब से पैसा लै जा निम्बू ला। नौकर गया नीबू लाया चीनी डाल कर शरबत बना पिया तो कुछ तरी पहुंची रात की गरमी कुछ कम हुई तो इतने में दो चार दोस्त आगये झट कपड़ा पहिना और घर के बाहर हुये। किसी दोस्त के यहां जाके मज़ें में पड़ गये ११ बजा १२ बजा तब आप घर को तशरीफ लाये दरवाज़े ही से कुड़बुड़ाते नौकरों को डांटते रसोई में पहुंचे खांय क्या नशे की गरमी में तो परेशान खटाई अचार वगैरह कुछ चाटा एक आध फुलका कुछ भात खा उठ खड़े हुये। कमरे में पहुंचे दो एक चिलम उड़ी कपड़ा पहिना धूप का भी कुछ ख्याल नहीं चल खड़े हुये। फिर कहीं जा पड़ रहे जब सात बजा तो घर आये ब्यालू किया और चंपत हुए अब क्या ग्यारह बजे १२, बजे रात को घर के दरवाज़े पर लात मार रहे हैं खोलो २ ठड़े तो रहा जाता नहीं धड़ा धड़ क़वाड़ा पीटना शुरू किया। आखिर को क्या करें खाट से उठ के आये किवाड़ा खोला बबुआ जी घुनघुनाते अंदर दाखिल हुये कमरे में पहुंचे ज्यों ही खाट पर लेटे तो तन बदन की खबर नहीं बस यही करीना है—रुपया मंगा भेजा न मिले तो मुनीमों के सिर बीती डांट डपट हुई कहां तक कहैं साहब बड़ा फ़जीता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिला—हां साहब क्या कीजियेगा हम लोग भी तो जवानी देख चुके हैं पर आज कल के लौडों का अजब हाल है हमारे सपूत भी तो ऐसे ही हैं एक दिन हमने पूछा क्यों भाई यह कैसा हाल है? ये सब हरकत बुरी हैं क्यों बाप दादों के नाम को बदनाम करते हो। छोड़ दो बस बिगड़ गये कहने लगे आप तो चाहते हैं कि हम मर जांय। डाक्टर ने साबित कर दिया है कि जो लोग ऐसा करेंगे उन्हें प्लेग नहीं होगा आप कुछ जानते भी हैं बस मैं चुप हो रहा कहिये क्या करता ॥

हम बूढ़ों को योंही छोड़ के आगे बढ़े अब आगे पगिया और मिरज़ई वाले नज़र आये पूरे सखी भाव में देख पड़े। कमर में करधनी हाथ में अनन्त गले में गोप सक्कड़ी पहिने इधर उधर फिरते हैं। किन्तु इनमें एक भी आदमी बात करता हुआ न दिखाई दिया सब अपने २ कामों में लगे रहते हैं कोई किसी को नहीं पूछता – रुपया ही इन लोगों का सब कुछ है पर भाई बड़े काम काजी और रुजगारी हैं। सिवाय धनोपार्जन के और कुछ जानते ही नहीं—इतना लक्ष्मी के पीछे हैरान कि घर की लक्ष्मी को भूल जाते हैं। रुपये के पीछे सब कुछ सहते हैं आज रुपया बढ़ गया कल सुबह दुकान का टाट उलटा पड़ा है भाई क्या हुआ? काम बिगड़ गया और चार दिन बाद फिर बैठ गये ॥

इन लोगों का तमाशा देख रहे थे कि कान में कुछ गाने की आवाज़ आई बस उधर ही चल पड़े कुछ दूर जब आगे बढ़े तो एक बाग़ के दरवाज़े पर पहुंचे अब शब्द अच्छी तरह सुनाई देने लगे बाग के भीतर जाके देखा कि थोड़े से नवयुवक कोट वास्कट पहिने नकटाई गले में डाले बीच सहन में बैठे गा रहे हैं और काग फट २ खुल रहा है यह देख के मैं एक वृक्ष की आड़ में खड़ा हो गया तो सुना कि यह गान हो रहा था ॥

शराब पीओ मज़ें उड़ाओ दिलबर बगल बिठाओ ।
नाच रङ्ग में उम्र बिताओ क्या नाहक पछताओ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक के ऊपर एक गिरे पड़ते हैं एक साहब बोले कि भाई तुम्हारे घर में तुम्हारा हाल कैसे खुलगया। कल आपके Father बड़े बिगड़ रहे थे इसी से तो हम रोज़ सौंफ चबा लेते हैं कि मुंह से कुछ बदबू न आवे। अमें हटाओ यह क्या रंग में भंग कर रहे हो हुआ होगा कुछ बकने दो। क्या पहिले के ऋषि मुनि नहीं पीते थे आज तो साहब क्लास में कहते थे कि हिन्दुओं के मुनिओं ने भी सुरापान किया था इन सब झगड़ों को लेके क्या करना है जो जिस को भावे वह करे। इस में कोई दोष नहीं है खाने पीने में कहां दोष लिखा है जब तक ये पुराने लोग रहेंगें India का Regeneration नहीं हो सक्ता जब तक Conservatism छोड़ के Liberals नहीं होगे कुछ नहीं होगा। भला साहब आप ही कहिये जो जन्म पत्र शादियों में मिलाये जाते हैं इस से क्या हासिल है? इस में कोई शक नहीं कि पुराने ज़माने के लोग पल्ले दर्जे के बेवकूफ़ थे नहीं तो साहब इसके क्या माने कि हम दूसरों के साथ न खांय General Brotherhood भला फिर कैसे होगा। Theosophy अब India में introduce हो गई है अब बहुत जल्द Regeneration होगा ये बूढ़े मुंह मुंहासे बैठे ही रहेंगे। हम लोग तो Reformer हैं पुरानी बेहूदगी को हटा के New western light लावेंगे हम लोग progress तो कर ही रहें हैं देखिये कितने Conferences होने लगे सभी जात में Conference यहां तक कि Congress के साथ काशी में भी Conference होगी, इतनी Progress कुछ कम है। इतना सुन के आगे बढ़े तो बड़ा भारी Pandal देखाई देने लगा वहां बहुत से लोग एकत्रित थे लेकचर हो रहा है और बड़ी तालियां बज रही हैं देखा कि कुछ दूर पर आपस में दो आदमी बात कर रहे हैं

एक-क्यों भाई आज बोलोगे?

दूसरा-हांहां क्यों नहीं?

एक-किस पर बोलोगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दू. Widow marriage बिधिवा विवाह पर-

पं-क्यों भाई यदि तुम ठीक समझते हो तो क्यों नहीं अपनी लड़की की दूसरी शादी कर देते ॥

दू-अरे भाई बोलने के लिये हैं कि करने के लिये बोलते हैं नाम करते हैं रुपया कमाते हैं-अमल में लावें तो आप ही आज हमें जाति बाहर कर दें।

करो Reform देहु बहु लेकचर बातैं बहुत बनाओ; करो वही जो निज स्वारथ हो औरन को सिखलाओ।

अरे भाई हम लोग तो कहने वाले होते हैं अमल में तो दूसरे लोग लाते हैं यह होही रहाथा कि झन २ की आवाज़ कान में आई आंख खुली तो देखा कि सूर्य्य देवता तमतमा रहे हैं बिछौना भी नहीं है निम्नरहरी खाट पर पड़े हैं ॥

R. A

हमारा सब गड़बड़ है ।

भाग्य हीन सुख मय जीवन कैसा होता है जानते ही नहीं हमरी जितनी बात कोई ऐसी नहीं जो अस्तव्यस्त तथा गड़बड़ न हो प्लेग अकाल भूकंप तो था ही ग्रीष्म के सूर्य का खरतर ताप ऐसी पीड़ा दे रहा है कि लूके लगने से लोग यमलोक की यात्रा के लिये प्रस्तुत हो रहे हैं इस जून मास में न जानिये कितने मनुष्य इसी बहाने सिधार गये कितने पड़े २ कलहर रहे हैं-"सेवा विक्रीत काया नां स्वेच्छा विहरणं कुतः-"दूसरे की सेवा में जिन्हों ने अपने शरीर को बेचडाला उन्हें फिर स्वेच्छा विहार कहां"-इसका कुछ ख़याल न कर नौकरी को सुखमय जीवन जान उस ओर झुके तो वहां भी हमारा हिन्दुस्तानी होना आड़े आया-हम चाहो जैसी लियाकत का बोझ लादे हों किन्तु गौर वर्ण न होने से हमारी सब लियाकत फीकी। ऊंचा अधिकार गौराङ्गों के लिये "रिज़र्वेड"; पिसौनी के काम में कृष्णकाय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार वर्ण की प्रथा जैसी अब तक चली आई उसी लीक पर चले जाने और सुखमय जीवन मानते थे सो वहां भी सब गड़बड़ होगया. कलवार और कुनबी तक ब्राह्मण क्षत्री बनने के यत्न में हैं ब्राह्मण सो कर्म से शूद्र होते जाते हैं। ऐसा ही चार आश्रम की प्रथा भी अस्तव्यस्त हो गई ब्रह्मचर्य का तो लोप ही हो गया बानप्रस्थ आश्रम हिमालय की कन्दरा में जा छिपा। कलि राज की कृपा से चार के अब दो ही आश्रम बच रहे गृहस्थ और सन्यास बाल्य विवाह की कुप्रथा हमें १८ वर्ष के वय तक पहुंचते पूरा गृहस्थ बना देती है नोन तेल लकड़ी की फिकिर में चूर चूर बीस बाईस वर्ष तक में कई एक कच्चे बच्चे हो गये दाने २ को मुहताज गुन ढंग कुछ सीखा नहीं क्या आप खांय क्या उन्हें खिलावें। इन्ही गृहस्थों में कितने ऐसे निकलते हैं जो निरे आवारा खाने को न मिला चुटिया कटाय गेरूआ रंगाय सन्यासी हो गये। यह सब गड़बड़ी ब्रह्मचर्य न पालन करने और विवाह की कुप्रथा का परिणाम है। ऐसा ही धर्म में गड़बड़ी। एक ओर सनातन धर्म दूसरी ओर ब्रह्म समाज आर्य समाज राधास्वामी नेचरिये आज़ाद आदि प्रति वर्ष जो अपना धर्म बदला चाहें तो बचपन से बुढ़ापे तक आठ दस धर्म में आकर भी हिन्दू के हिन्दू बने रह सक्ते हैं। एक ही कुनबे में कई एक भिन्न २ धर्मावलम्बी देखने में आते हैं। बाप जप होम वेद पाठ करता हुआ त्रिकाल सन्ध्या साधता है उनके चिरंजीव हैटबूट जमाय नेकटाई कसे पवित्र होटल का टोटल चुकाने में अपना जीवन सफल समझते हैं। इसी गड़बड़ी में हमारी मातृ भाषा फज़ीहत में पड़ी है। जिन्हें कई जन्म मौलवी साहब की सनहकी धोते बीता वे काहे को मानेगें कि हिन्दी हमारी मातृ भाषा है श्लोक या तुलसीदास के दोहे सुनते कान फटते हैं शेर या ग़ज़ल बाज़ी में ज़िन्दगी का लुत्फ़ टपका पड़ता है। इत्यादि इस हताश भारत की कोई बात इस समय ऐसी नहीं है जो गड़बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से खाली है इसकी पुरानी और अब की नई सभ्यता पर खयाल दौड़ाने से रोमांच होता है । वाचक वृन्द हमने तो इसके सम्बन्ध में जो विचारा या कह सुनाया अब आप लोग

ज़रा गौर करो इस हालत पर तब कैसी थी अब कैसी है ॥

गो-द-तिवारी-

हिन्दी में नये ग्रन्थ बनने का पारितोषिक ।

"श्रम या उद्यम तथा कला सम्बन्धी Industry and arts शिक्षा का प्रचार भारत में किस प्रकार हो सक्ता है" इस विषय पर जो महाशय ३१ दिसम्बर १९०५ तक हिन्दी में लेख भेजेंगे उनमें जिसका लेख सर्वोत्तम होगा उसे काशी नागरी प्रचारणी सभा ५० परतोषिक देगी । लेख १५० पेज फुलिस्केप से कम न हो और प्रतिपृष्ठ में कम से कम ३० पंक्ति हों ॥

मंत्री नागरी प्रचारिणी सभा-काशी ॥

ज़िलह छत्तीस गढ़ में बालपुर पोस्ट आफिस चन्द्रपुर निवासी पाण्डेय लोचन प्रसाद ने पत्र के सहायार्थ १) भेजा है जिसे हम धन्यबाद पुरस्सर स्वीकार करते हैं और यह पत्र भेजा है उसे भी प्रकाशित किये देते हैं-"भाइयो आप जानते हो बून्द बून्द घड़ा भरता है विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं । देखिये विचारिप कि बूढ़े भट्ट कितने दिनो से अनेक कष्ट झेल इस पत्र को चला रहे हैं समय से पत्र न निकलने का कलङ्क भी अब न रहा तो अब आओ हम सब ग्राहक गण वित्त अनुसार इनकी सहायता का उत्साह बढ़ाय प्रदीप को चिरस्थायी करें । प्रदीप मे अपना स्नेह (तैल) छोड़ने की भांति अपनी शक्ति अनुसार १) इसी लिये अर्पण किया है कि हमारे साथी इसके पढ़ने वालों को एक उदाहरण हो और वे भी हमारा अनुकरण करें"-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गुलीभिरिव केशसंचयं संनिगृह्य तिमिरं मरीचिभिः
कुड्मलीकृतसरोजलोचनं चुम्बतीव रजनीमुखं शशिः ॥५९॥

कालिदास

इस श्लोक का भाव अति गम्भीर है अनुवाद में कवि की चातुरी का पूरा आशय नहीं आसक्ता यह संस्कृत के साहित्य का बहुत उत्तम-उदाहरण है ॥

किरिन अंगुलियों से अन्धकार केश संचय को बटोरता हुआ मुंदी हुई कुई जिस्में नेत्र के स्थान में हैं ऐसे निशा नायिका के मुख को चन्द्रमा मानो चूम रहा है । चन्द्रोदय के वर्णन में उर्दू शायरों को ऐसा अनूठा ख़याल नहीं सूझा ॥

अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तंमेरुलंघने ।
व्यग्रचित्तेन यज्जप्तंतत्सर्वंनिष्फलं भवेत् ॥ ६० ॥

अंगुरियों से जो जप किया गया टीला नांघते जो जपा गया चित्त की घबड़ाहट में जो जपा सो सब निष्फल है ॥

अंगुल्या कः कपाटं प्रहरति कुटिलो माधवः किं वसन्तो नो चक्री किं कुलालो नहि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः । नाहं घोराहिमर्दी किमुत खगपतिर्नोहरिः किं कपीश इत्थं राधावचोभिः प्रहतिनवदनः पातुवश्च-क्रपाणिः ॥ ६१ ॥

कौन कुटिल केवाड़ खट खटा रहा हैं? हम माधव हैं । तो क्या तुम बसन्त हो? नहीं हम चक्री हैं । तो क्या कुलाल हो? नहीं धरणी धर हैं । धरणी धर तो शेष नाग हैं क्या तुम सर्प हो? नहीं हम कालिय ऐसे विषैले सर्पों के मर्दन करने वाले हैं । तब क्या पक्षिराट गरुड़ हो?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हम हरि हैं। हरि तो बानर को कहते हैं इस भांत राधा के बचन से प्रसन्न मुख कथोपकथन करते चक्रपाणि विष्णु तुम्हारी रक्षा करें॥

अंगुष्ठोदक मात्रेण भेको मकमकायते ॥

मेढक अंगुष्ट मात्र जल में रह कर भी टर २ करता है। तात्पर्य यह कि छोटे लोग थोड़ी ही सी संपत्ति पाय घमण्ड में फूल उठते हैं।

अचिन्तितानि दुःखानि यथैवायान्ति देहिनाम्।
सुखान्यपि तथा मन्ये दैवमेवात्र कारणम् ॥ ६२ ॥

पहले से कुछ नहीं सोचते थे अकस्मात् दुःख आ पड़ता है वैसा ही सुख भी तो मालूम होता है कि दैव (भाग्य) ही सुखदुःख का कारण है।

अचिन्त्यं शीलगुप्तानां चरितं कुलयोषिताम्। क-स-सा

शील से सुरक्षित कुलवन्तियों के चरित्र को कौन जान सक्ता है।

अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः। क-स-सा

सुकृत वृक्ष में जल्दी ऐसा फल फलता है जिसका कभी खयाल भी नहीं होता।

अचिन्त्यो वत दैवेनाप्यापातः सुख दुःखयोः। क-स-सा

सुख या दुःख कब आ पड़ता सो दैव भी नहीं जान सक्ते।

अचिराधिष्ठितराज्यः शत्रु प्रकृतिष्वरूढमूलत्वात्।
नवसंरोहणशिथिलस्तरुरिव सुकरः समुद्धर्तुम् ॥ ६३ ॥

शत्रु जिस देश को अपने अधिकार में लाये थोड़े दिन हुये हैं प्रजा में उसकी ओर प्रेम अभी वैसा बद्ध मूल नहीं हुआ उसे उखाड़ डालना वैसा ही सहज है जैसा नया पौधा जो एक जगह से उखाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे ठौर लगाया जाता है तब वह शिथिल रहता है मिट्टी को उसकी जड़ नहीं पकड़ती इस दशा में उसको जड़ से निर्मूल कर देना सहज है ।

अचेष्टमपि चासीनं श्रीः कंचिदुपतिष्ठति ।
कश्चित् कर्माणि कुर्वन् हि नाप्राप्यमधिगच्छति ॥ ६४॥

बिना किसी तरह की चेष्टा किये भी किसी को धन आप से आप मिल जाता है । कोई बड़ा श्रम करे तौ भी जो वस्तु उस के पास नहीं है वह उनसे नहीं मिलती ।

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानिच ।
स्वंकालं नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम् । ६५॥

जैसा समय पर आप से आप फूल फल पेड़ में आ जाते हैं वैसा ही पहले का किया कर्म भी फल रूप में आ उपस्थित होता है ।

अच्छाच्छचन्दनरसार्द्रकरा मृगाक्ष्यो धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च। मन्दोमरुत्सुमनसः शुचिहर्म्यपृष्ठं ग्रीष्मे मदं च मदनं च विवर्द्धयन्ति ॥ ६६ ।

स्वच्छ चन्दन रस हाथों में पोते हुए मृग नयनी स्त्रियां; फौहारे; तरह २ के फूल; चान्दनी सब ओर छिटकी हो; फूलों की मीठी महक से सनी वायु मन्द २ बहती हो; साफ और सुथरे महलदुमहले ये सब गरमी के महीनो में कामदेव को बढ़ाते हैं ।

अच्छिन्नं नयनाम्बु बन्धुषु कृतं तापः सखीष्वाहितो । न्यस्तं दैन्य मशेषतः परिजने चिन्तागुरुभ्योर्पिता । अद्यः श्वः किल निर्वृतिं ब्रजति सा श्वासैः परं खिद्यते विस्रब्धो भव विप्रयोगजनितं दुःखंविभक्तं तया ॥ अमरूशतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी खण्डिता नायिका वियोगिनी का सन्देसा नायक से कहता है। मरण के उपरान्त रोने के कारण निरन्तर आंसू की धारा का बहाना उसने अपने बन्धुओं का सौंप दिया; संताप सखियों को सौंपा; दीनता का भाव दासदासियों को; शोक और चिन्ता घर के बड़े लोगों को अर्पण किया, आज या कल तक में वह परम निर्वृत्ति पाय अर्थात् मर कर सब दुःख से छूट जायगी केवल अन्त समय की स्वांस ले रही है अर्थात् जाकन्दनी का दुःख उठा रही है। विश्वास रक्खो तुम्हारे वियोग का दुःख उसने पूरी तरह पर बांट रक्खा है। श्लोक बड़ा उत्तम है। अनुवाद में कवि का भाव जैसा चाहिये नहीं आ सक्ता।

अजन्मा पुरुषस्तावद्गतासुस्तृणमेव वा ।
यावन्नेषुभिरादत्ते विलुप्तमरिभिर्यशः ॥ ६८ ॥ माघ

जिसके वीरता का यश शत्रु ने पराभव दै लोप कर दिया है वह जब तक बाण वृष्टि के द्वारा बदला चुकाने की भांति उससे लौटा न न लिया जाय तब तक वह पुरुष मानो नहीं जन्मा जन्मा भी तो गत प्राण सा है या तृण तुल्य है।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीतइव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥ ६९ ॥

मैं कभी बूढ़ा न हूंगा न मरूंगा यह सोच विद्या और धन का संचय करै। मौत बालों को पकड़े पटका चाहती है यह समझ धर्म करै॥

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः ।
सकृद्दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदे पदे ॥ ७० ॥

नहीं होता हो के मर जाता है जिया ते मूर्ख रहा इन तीनों में पहले वाले दो भले इसलिये कि वे एक ही बार दुःख देते में पर मूर्ख तो पग पग में दुःखदायी होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ सं० ८	प्रयाग	अगस्त सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ सं० ८ — प्रयाग — अगस्त, सन् १९०५ ई०

सम्पादकीय टिप्पणी ।

गण्डस्योपरि पिण्डम् बृटिश इण्डिया के इतिहास में लार्ड कर्ज़न का समय कभी न भूलेगा। भारत के भविष्य सन्तान को सदा याद रखने लायक़ होगा। शासन की कड़ाई में महोदय लार्ड लिटन का शासन अब तक नहीं भूला पर लार्ड कर्ज़न ने लिटन के शासन को भुला दिया। जिनकी शासन की प्रणाली किसी अंश में देश को उपकार पहुंचाने वाली नहीं हुई अस्तु वर्ष दो वर्ष के लिये हमारा इनका सरोकार रह गया था। भलाई या बुराई जो कुछ हुई थी प्रजा ने उन सबों को झेल झाल पार किया था। लोग आशा कर रहे थे कि जून के उपरान्त इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन के स्थानापन्न जो कोई हों कदाचित् भाग्य बशात् कुछ अच्छे निकलैं सो सब आशा दूर हुई। लार्ड कर्ज़न और लार्ड किचनर दोनों में आपस का विरोध और भारत सेक्रेटरी मि० ब्राडरिक का किचनर की तरफ हो जाना देश के लिये अत्यन्त हानिकारक हुआ। अब किचनर मन माना फौज का खर्च हिन्दुस्तान पर लादते जायेंगे इसी से हम ने (गण्डस्योपरि पिण्डम्) कहा-जैसा किसी के बलौड़ी फूल आई हो उसमें फोड़ा निकल आवे। अच्छा तो भारत का दुर्दिन जो २ करेगा सो लाचार सब सहना ही पड़ेगा॥

लगन की भरमार—एक ओर प्लेग समेटता रहे दूसरी ओर लगन की भरमार प्रजा को काल के मुख में झोंकती जाय। अफसोस बुद्धि के दरिद्र कभी इस बात को नहीं सोचते कि इस भयानक प्लेग के उपद्रव में हम लोग काल के मुख में बैठे हुए हैं दो चार वर्ष जब तक इस महामारी का ज़ोर है ब्याह करना बन्द किये रहें। हम कई वर्ष से इस बात को देख रहे हैं कि न जानिये कितनी कोमल बालिकाएं ६ महीने भी सोहागिन न रह रंडापे का दुःख सहने को प्रस्तुत हो गईं। बहुधा लोग कहते हैं कि क्या लड़कियों का बिवाह न करें। उनको बैठा रक्खेंगे और रजो धर्म हो गया तो धर्म ही चला जायगा। पहले तो यह कि ऐसी छोटी २ बातों से धर्म भागता है तो हम ऐसे भगोड़े धर्म को कब तक पकड़ते रहेंगे। वाह रे पुराने खूसटों की अकिल। दूसरे यह कि इस में क्या कोई धर्म की हानि नहीं है कि कुलीन कन्याएं बेचारी या तो जन्म भर बालरण्डा का दुःख झेलैं या चुन २ कर गुप्त व्यभिचार दूषित हो कर कुल बधू से जारिणी बनें॥

ब्राडरिक साहेब की एक नई सूझ—यह तो हमारे पाठक जानते ही होंगे कि आज कल हिन्दुस्तान के विलायत में सेक्रेटरी जिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को (Secretary of States for India) कहते हैं मि० ब्राडरिक हैं। यों कहना चाहिये कि हिन्दुस्तान की चोटी इस समय आप ही के हाथ है और लार्ड कर्ज़न तो एक उन के चेलों में हैं। यद्यपि प्रायः गुरू गुड़ ही रह जाते हैं और चेला चीनी हो जाते हैं। जैसे कि किसी का बाप रोज़ एक कबर पर जाकर बैठता था। उस के मरने के बाद लड़के ने कब्र ही खोदना शुरू कर दिया। किसी ने पूछा क्यों भाई यह क्या करते हो? उस ने जवाब दिया कि लड़के और चेले का यही धर्म है कि जो पिता और गुरू करें उस से दो अंगुल अवश्य बढ़ कर करना चाहिये। बस यही गुरू चेले का रिश्ता ब्राडरिक और कर्ज़न में समझना चाहिये। परन्तु इस बार तो ब्राडरिक साहेब ने इस बात का पूरा सबूत दे दिया कि अभी दो एक गुर हमने ऐसे रख छोड़े हैं जो चेले को नहीं सिखाये। जैसे एक मसल मशहूर है कि एक बार एक चेले ने गुरू से लड़ने का दावा बांधा। गुरू डेढ़ सौ दांव जानता था उस में से उसने १४९ चेले को सिखला दिया था परन्तु एक बाकी रख छोड़ा था। जब गुरू चेले की कुस्ती अखाड़े में हुई तो उस ने उसी एक दांव से चेले को पछाड़ा। मि० ब्राडरिक ने तो एक नहीं वरन कई एक दांव ऐसे बचा रक्खे हैं जिन से अपने चेले को जीत सकते हैं! अब कि बार किचनर कर्ज़न के झगड़े में कर्ज़न साहब को इस बात का पूरा प्रमाण मिल गया कि अभी बूढ़े गुरू में बहुत कुछ मसाला बाकी है। दूसरी बात जिसमें ब्राडरिक साहेब ने अपनी गुरवई का नमूना दिखलाया वह अफीम के मुहकमे के सम्बन्ध का यह हुकुम है कि आगे से इस मुहकमे में फी सदी दस से अधिक नेटिव न रक्खें जांय। वाह गुरू क्यों न हो चेले ने तो यही कहा था कि सरकार हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ों में कुछ भेद नहीं करती किन्तु हिन्दुस्तानियों को बड़े २ ओहदों पर हुकूमत करने की लियाकत ही नहीं है। गुरू ने यह गुर निकाला कि बहाना क्यों किया जाय साफ ही न कह दो कि ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्टोरिया महाराणी ने जिस समय हिन्दुस्तान का भार अपने ऊपर लिया था उस समय प्रोक्लेमेशन में जो हिन्दुस्तान के हर एक बड़े २ शहरों में सुनाया गया था साफ़ २ अक्षरों में यह कहा था कि हमारे नज़रों में हमारी सब प्रजा बराबर है और हमारे राज्य में ऊंची पदवी देने में रंग और जाति का कोई भेद नहीं रहेगा । परन्तु हमिलटन साहेब ने और उन के जानशीन मि० ब्राडरिक ने तथा उन के चेलों ने तो उस पुराने कागज़ में एकबारगी दियासलाई ही लगा दिया ॥

कुलीनता कौमीयत का कलंक ।

हमारे में कौमीयत न आने के लिये ऊंचे कुल का जन्म भी बड़ा विघ्न है। किसी दुराचरण के समय कुलीनता का खयाल रहे तो मनुष्य बहुत से पाप अधर्म और हेयकर्मों से अपने को बचा सक्ता है। किन्तु हमारी बिगड़ी समाज में कुछ ऐसी चाल चल पड़ी है कि कुलीन को किसी निषिद्ध काम के करने में कुलीनता बहुत अच्छा आड़ मिल जाता है। हाड़ की उत्तमता का घमण्ड कभी को हमे घिनौने से घिनौना काम कर डालने का भरपूर साहस दिलाता है । दधीचि ऋषि के हाड़ का बज्र बनाय इन्द्र ने समस्त दैत्य समूह का दलन किया था इन कुलीनों के हाड़ का जो कोई औज़ार या शस्त्र बनाया जाय तो हम समझते हैं बड़े काम का हो । सम भाव आपस का एका और सहानुभूति का मूलोच्छेदी कुठार यह कुलाभिमान ही हुआ । जितने तरह के अभिमान हैं उन्में कुल का अभिमान हमें बड़ा छूछा मालूम होता है। अस्तु गुण की गरिमा हो या अधिक धन पास हो तो उसे कुल का अभिमान भी सोहता है। कितने मुफलिश कल्लांच फाके मस्त जब अपने हाड़ के उत्तमता की शेखी में ऐंठे जाते हैं तो देखते ही बनता है । जिसे "आर्योडाक्र" या "आर्योडाग्मा" कौलीन्य कहेंगे सो हमारी उन्नति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी बाधा डाल रहा है और हमें स्वच्छन्द नहीं होने देता । एक २ कदम पर ऐसी भारी २ कैद इसके साथ लग रही हैं जिस्से समाज जर्जरित और छिन्न भिन्न हो रही है । कुलीनता महानदी की कूलङ्कषा स्त्रियों के होते कुल का अभिमान नितान्त ओछापन है । क्षेमेन्द्र ने बहुत अच्छा कहा है ॥

कुलाभिमानः कस्तेषां जघन्यस्थान जन्मनाम् ।
कुलकूलंकषा येषां जनन्यो निम्नगा स्त्रियः" ॥

सच है कुल की रक्षा सर्वथा स्त्रियों के आधीन है इस लिये स्त्रियों का चरित्रवती होना कुलीनता की पहिली सीढ़ी है । एक हमारे मित्र का यह सिद्धान्त हमें बहुत पसन्द आया कि जिस घराने में लड़की दे उस की बहुत कुछ जांच करने की इतनी ज़रूरत नहीं है जितनी उसकी जिस घर की लड़की हमारे यहां आवे क्योंकि हमारे भविष्य सन्तान का भला या बुरा होना इसी पर निर्भर है । "कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदानध्ययनेन च" । इत्यादि कई बात कुल की परख में कुविबवाह को मनु ने सब के पहले ठहराया है जिस्का यही मतलब हो सक्ता है कि शुद्ध रजवीर्य की औलाद विपत्ति की कसौटी में कसने पर कभी नहीं डगमगायगी । बाल्य विवाह से यह भी बड़ी हानि है कि "अष्टवर्षा भवेद्गौरी"... "आर्थीडाग्मा" के नियमानुसार केवल हाड़ मात्र देख लड़का या लड़की के लिये लोग भरे मुह गिरते हैं जैसा मुरगी खकार पर टूटै । जिस्का परिणाम देखने में आता है कि दाम्पत्य सुख हम लोगों में दुर्लभ सा हो रहा है । जब दाम्पत्य सुख न रहा तब जो औलाद होगी सो भी वही जैसा कहावत है "मा पिलंगनी बाप पिलंग तिन के लड़के रंग बरंग" । हम गर्द खोर हो गये रोज़ २ गिरते ही जाते हैं विदेशियों के मुकाबिले बद्धांजलि हो अपनी गुलामी स्वीकार करने को बड़ी प्रतिष्ठा समझते हैं किन्तु अपने देश बान्धव और बराबर के भाई के साथ जब कोई सरोकार आ पड़ेगा तब हाड़ की उत्तमता में ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐठेंगे कि उस बेचारे की छाया तक बरकावेंगे। भूल से उसकी छाया पड़ जाय तो प्रायश्चित करने पर भी उन के हाड़ की वह चमक फिर नहीं आने वाली। कुलीनता का सच्चा घमंड रखने वाले विदेशियों के मुकाबिले प्राण पण के साथ अपनी हेठी न सहेंगे और अपने छोटे से छोटे किसी देशी भाई को निज अंग मान उसके सेवक बनने में अपना सौभाग्य समझेंगें। बिनय अथवा शालीनता या अनौद्धत्य से मनुष्य आप से आप उचाई पर चढ़ जाता है गुरू नान्हिक देव का कथन है। नान्हिक नान्हा हू रहै जैसी नन्हीं दूब। और घास जल जांयगी दूब खूब की खूब। कनौजियों में बाला के शुक्ल का किस्सा कौन नहीं जानता केवल दीनता ही से बाला के शुक्लों का घराना षट् कुल में दाखिल कर लिया गया Self respect आत्म गौरवरक्षा निमित्त सत्कुलाभिमान अवश्यमेव प्रशंसनीय है इस लिये कि इस तरह का अभिमान हमे नीचा काम कर से रोकता है जो अब इस समय किसी विरले सत्पुरुष में पाया जाता है ऐसे लोग वास्तव में कुलीन की पदवी के अधिकारी हैं और कुलीनों में परिगणनीय हैं। ऐसों को कुलाभिमान भी सोहता है कुल की लाज या कुल की मर्याद भी ऐसे ही सत्पुत्र के निवाहे निभती है। जिस जाति या देश में अधिकांश ऐसे लोग होते हैं वहां कौमीयत आप से आप आ जाती है। कौमीयत की गरम जोशी जिन्में या जहां पर है वहां अकुलीन भी बड़े ऊंचे कुल वाले हैं। वहां यह कभी न कहा जायगा कि कुलीनता कौमीयत का कलंक है। और यह तभी सम्भव है जब हाड़ से कुलीनता निकल जायगी। "धनेनकुलम्" धन से कुलीमता पर जैसा आज दिन ज़ोर दिया जाता है ऐसा शायद पहले न था जिन विदेशियों के संपर्क से हमारे में यह बात आ समाई कि धन होने से आदमी कुलीन हो जाता है वहां ऐसा नहीं है। वहां काम से कुलीन होने वाले जितने अधिक हैं उतने धन से कुलीन बनने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं ! दूसरे यूरोप वाले कुछ ऐसे चलते पुरज़े व्यवसाय और उद्यमशील हैं कि वहां काम से कुलीन बनने वालों के पास धन की कमी रही नहीं जाती। कुलीनता बुद्धि और सौन्दर्य ये तीन वस्तु अपने साथ लिये २ लक्ष्मी जी डोलती फिरती हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यूरोप ही के देशों में पाया जाता है। भारत में इसके विपरीत है पहले तो भारत की भूमि और यहां के जल वायु से लक्ष्मी देवी को ईर्षा और घिन है कदाचित् किसी महा मोहनतंत्रोक्त किसी आकर्षण मंत्र के जपने से अपनी जेठी बहन दरिद्रता पर छोह दिखाने को लक्ष्मी आईं भी तो यूरोप के विपरीत यहां कुमति कुढंग झूठा कुलाभिमान और अन्त को नाश अपने साथ लिये आती हैं। पाठक मैं ने कुलीनता के गुण दोष सब कह सुनाये अब आप तै करलें कैसी कुलीनता कौमीयत का कलंक है॥

— —

कवित्व संग्रह।

मैं ने अपने पुराने संग्रह में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के निज कर कमल का लिखा यह लेख पाया है। यह उन के स्फुट काव्य का संग्रह है मैं समझता हूं यह अब तक कहीं नहीं छपा इस लिये इसे प्रकाशित कर देना उचित मानता हूं॥

लै मन फेरिवो सीखे नहीं बलि नेह निबाह कियो नहि आवत॥
हेरि कै फेरि मुखै हरिचंद जू देखन हूं को हमें तरसावत॥
प्रीति पपीहन को घन सांवरे पानिय रूप कबौं न पियावत॥
जानो न नेक पिया परकी बलिहारी तऊ हौ सुजान कहावत॥१॥

तूतो मेरी प्रान प्यारी नैन में निवास करे तूही जो करैगी मान कौन को मनाइ हैं॥ तूही तो जीवन प्रान तोहि देखि जीव राखैं तूही जो रहैगी रूसि हम कहां जाइ हैं॥ कियो मान राधे महारानी आजु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीतम सों ऐसी जो खबर कहुं सौति सुन पाइ हैं ॥ हरीचंद देखि तौजो सुनत ही दौरि दौरि निज निज द्वार बैठि बधाई बजवाई हैं ॥२॥

प्यारे जू तिहारी प्यारी अति ही गरब भरी हठ की हठीली ताहि आपु ही मनाइए ॥ नेक हूं न मानै सब भांति हौं मनाइ हारी आपु हि चलि ताहि बात बहराइए ॥ रिस भरि बैठि रही नेक हूं न बोलै ऐसी ताहि तुम प्यारे लाल काहे को रिसाइए ॥ हरीचंद जामें मानै करिए उपाय सोई जैसे बने तैसे ताहि पग पर लैआइए ॥३॥

तजि कै सब काम को तेरी गलीन में रोज ही रोज लौ फेरो करै ॥
तुव बाटि विलोकत ही हरिचंद जू बैठि के सांझ सबेरो करै ॥
पै सही नहि जात भई बहुतै सो कहां कहं लौ जिय छोटो करै ॥
पिय प्यारे तिहारे लिये कबलौं अब दूतिन को मुख हेरो करै ॥४॥
लै बदनामी कलंकिन होइ चवाइन को कबलौं सुख चाहिए ॥
सास जिठानिन की इनकी उनकी कबलौं सहि के जिय दाहिये ॥
ताहू पै एती रुखाई पिया हरिचंद की हाय न क्यौं हूं सराहिये ॥
का करिए मरिए केहि भांतिन नेह को नातो कहां लौं निबाहिये ॥५॥
सांची जू झूठ कहा कहैं मोहन गोकुल की कब लौं सुधि चाहिये ॥
नासि अनेक अघादिक राख्यौ ब्रजै गिरि लैकर बेअग्र पै नाहिये ॥
त्यौं हरिचंद जू आजु लौ वेदन गोपी गनेस ब्रजेस कहाहिये ॥
प्रीति गवार की थोड़ी अली बुरी नेह को नातो कहां लौ निबाहिये ॥६॥
को करि है सरि रावरी मोहन नाम दया निधि आपु ही चाहिये ॥
धारा खुले पद ग्राह ग्रसे द्रुपदी तन लागहि ताहि उबारिये ॥
त्यौं अंध की हरि चंद जू को लखि डूबत बांह गही का सराहिये ॥
वाह जू वाह कहा कहिए बलि नेह को नातो कहां लौं निबाहिये ॥७॥

लोक वेद लाज करि कीजे न रुखाई एती द्रविये पियारे नेकु दया उपजाइकै ॥ विरह बिपत्ति दुख सहि नहिं जाय कहि जाय न कछुक रहौं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौं मन बिलखाइकै॥ हरीचंद अब तो सहा री नहि जाय हाय भुजन बढ़ाय वेग मेरी ओर आइकै॥ बिरुद निबाहि लीजे मरत जिवाइ लीजै हाहा प्रान प्यारे धाइ लीजै गर लाइकै॥ ८॥

सदा चार चवाइन के डरसे नहि नैनहूं साम्हे नचायो करै॥
हरिचंदजू वा बदनामिन के डर तेरी गलीन न आयो करै॥
निरलज्ज भई हम तोपै डरै तुमरो न चवाव चलायो करै॥
अपनी कुल कानिहूं सो बढ़ि कै तुम्हरी कुल कानि बचायो करै॥ ९॥

कोऊ कलंकिनि भाखत है कहि कामिनी हूं कोऊ नाम धरैगो॥
त्रासत हैं घर के सिगरे अब बाहरीहूं तो चवाब करैगो॥
दूतिन की इनकी उनकी हरिचंद सबै सहते ही सरैगो॥
तेरेई हेत सुन्यौ न कहा कहा औरहू का सुनिवो न परैगो॥ १०॥

मन लागत जाको जबै जिहिसों करि सोऊ दया निबहावत है॥
यह रीति अनोखि तिहारी नई अपुनो जहां दूनो दुखावत है॥
हरिचंद जू बान न राखत आपुनो दासहु ह्वै दुख पावत है॥
तुम्हरो जन होइ कै भोगै दुखै तुम्हें लाजहु हाइ न आवत है॥ ११॥

प्रेरित।

एडिटर महाशय,

कल सायंकाल के समय मैं एक प्रतिष्ठित पुस्तकालय [Library] में बैठा था जहां कम से कम ३० या ४० पत्र हिन्दी, उर्दू, और अंग्रेज़ी के टेबुल पर रक्खे थे और बहुत से महाशय कोई चश्मा लगाये, कोई अपनी टोपी छाते के हैण्डिल पर अटका के कोने में रक्खे; कोई अचकन कुरता बनियाइन के बटन खोले बदहवास हाथ में कापी लिये पंखे का काम ले रहे थे; कोई एक गीला अंगोछा कंधे पर धरे; कोई अपने सिर में चान्द के बाल मुड़ाये अनेक प्रकार से अपने २ आराम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ अख़बारों की सैर कर रहे थे। मैं भी एक कोने में जाकर एक तीन पाये के कुर्सी पर जिस पर बुनावट टूटने के कारण एक तखता रक्खा था जा कर बैठ गया। दैव योग से बड़े २ News papers के नीचे दवा हुआ आपका 'प्रदीप' मेरे सामने टिमटिमाता दिखाई पड़ा; मै ने उठा लिया और इधर उधर पन्ने पलटने लगा; इतने ही में तीन महाशय जो मेरी बांई ओर बैठे हुए थे मुझ पर ठट्ठा मार कर हंसने लगे। एक उन में से जिन का पाल के पके आम का सा रंग, सूर्य मुखी के वृत्त का सा लम्बा दुबला अंग; हजामत बढ़ी हुई; आंखें गड्ढे में घुसी हुई; सिर के बाल उड़े हुए, शकल पर कुछ अजब वहशत बरस रही थी, मेरी ओर मुसकराए और आप ही आप बोले "बन्दर क्या जाने अद्रक का सवाद" यह सुन कर दूसरे साहब जिनका पेट कुरसी से डेढ़ फुट नीचे तक लटक रहा था, सब अंग से पसीना सोते फोड़ कर यहां तक बह रहा था कि कुरता बिलकुल तर हो पीठ पेट और बाहों से चिपटा हुआ था, बोले "अभी ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आया है" यह सुन कर मैं बड़े आश्चर्य में हुआ कि ये कौन लोग हैं जो मुझ से अपरिचित हो कर भी दिल्लगी करते हैं। मैं इसी सोच विचार में उलझा हुआ था कि उन में से तीसरे महाशय जिन के मुंह से पान की पीक बह रही थी मेरी ओर निहार कर बोले "क्यों जी तुमने यह अखबार [हिन्दीप्रदीप] क्यों उठाया! मैं घबड़ाया कि शायद यह यहां के कोई प्रधान कर्मचारी होंगे, तब मैंने धीरे से पूछा कि क्या इस पत्र को पढ़ने की आज्ञा नहीं है। तब वे तीनों हंसे और बोले कि "अजी यह अखबार बड़ा ही निकम्मा है न इस में कोई दवा की नोटिस, न इसमें Wanted का खाना, न घड़ियों की तसवीरें, न नये २ तैलों की तारीफें; फिर इस में हो ही क्या सकता है, गीता ईता के चुराए हुए दस पांच कवित्त या शैरें होंगी, उन में क्या रक्खा है। इसी ख्याल से हम लोग आप की भोंड़ी पसन्द पर हंस रहे थे और फ़िकरे बाज़ी कर रहे थे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी ठीक है अब मैं समझा, बहुत अच्छा, आप जिस काग़ज़ को कहिये मैं वही पढूंगा। तब वे कुछ सन्तुष्ट से हुए और मेरे हाथ में कई अखबार देके उतना ही पढ़ने को कहा जितने में दवाइयों की झूठी २ नोटिसैं और तारीफैं लिखी थीं। बाज़े अखबार तो ऐसे हाथ में आये कि जिन में सिवाय दवाओं की तारीफ़ के और एक बात तक पढ़ने योग्य न मिली अब मुझे यह बात मालूम करने की इच्छा हुई कि ये लोग क्यों इन दवाओं का हाल पढ़ने में ऐसे उत्सुक हैं। मैंने तब बड़ी बिनती के साथ उन से पूछा कि आप दवाओं ही के नोटिस क्यों पढ़ावते हो! आज कल रूस जापान की लड़ाई की खबरें देखने लायक होती हैं देखिये जापान ने कैसी उन्नति......मैं इतना ही कहने पाया कि उन्हों ने मुझे चुप करा दिया और कहा इस व्यर्थ की टांय टांय में क्या रक्खा है। मैंने उन में से जिनकी उपमा सूर्य मुखी के पेड़ से की है पूछा कि आप जब तक मुझ से अपना मतलब न बतायेंगे मैं कुछ न पढूंगा। तब वह बोले हमारा हाल सुनने को तुम्हें बहुत वक़्त चाहिये। मैंने कहा आज शनिवार की रात्रि है आज से अधिक सुबीता हमें कब मिलेगा। तब वह बोले कि आप जानते हैं कि 'अंधा चाहे आखें' मेरी तबियत कुछ दिनों से वीमार रहती है दवा इलाज डाक्टरी, यूनानी. मिसरानी सब कर हारा किसी से कुछ फायदा न हुआ बलकि 'मरज़ बढ़ता गया ज्यों २ दवा की'। मैं ने पूछा आखिर बताइये आप को क्या शिकायत रहती है। वह बोले अच्छा जब आप नहीं मानते हैं तो मेरा हाल सुनिये मैं तरतीब वार कहता हूं॥

पहिले मुझे कुछ दिन तक कब्ज़ की शिकायत थी उसके बाद खांसी आने लगी। मगर मैं ने उस की कुछ परवाह न की। सोहवत थी मेरी खराब पिया करता था खूब शराब, उसी की ज़्यादती से गठिया का आरज़ा हो गया, दवाएं गर्म खाई उस से जिस्म में घाव पड़ गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिन बाद सब बदन की चमड़ी उखड़ने लगी। लोगों ने कहा छीजन है। ज़बान में छाले पड़ गये, चेहरे पर भाईं सी छा गई, खैर दवा करता रहा और कुछ फायदा भी नज़र आने लगा था कि इसी दरमियान में टाईफोड बुखार (Typhoid fever) बड़े ज़ोर से आने लगा डाक्टर साहेब ने पेट में कसाफत समझ दस्त की दवा दी। (Costitution) मेरा बहुत खराब था बस डायरिया (Diarrhoea) का (attack) हो गया जिस से मैं और भी कमज़ोर होगया। कमज़ोरी पाकर तापतिल्ली ऐसी बढ़ी कि तमाम पेट उसी से घिर गया, एक फकीर ने एक जड़ी बताई जिससे कुछ फुरसत हुई थी कि थाईसिस के आसार शुरू होगये उसके वास्ते सैकड़ों अखबार देखे मगर किसी में दवा का नोटिस न पाकर समझ लिया कि मरने के दिन करीब आगये लेकिन कुछ मर्ज़ और इस जिस्म में पैदा होने वाले थे इस वजह से एक नुसखा बड़ा मुजर्रब मिल गया जिस से करीब एक हफ्ते तबियत अच्छी रही। मगर अफसोस बद नसीबी ने अच्छा न रहने दिया; यकायक दमा पैदा हो गया और आंखों में धुन्ध सा छा गया। बरसात पाकर नासूर भी हरा हो गया। अब मेरा जी बहुत दुखी रहने लगा और मैं ने झुंझला कर परहेज़ करना छोड़ दिया। आम खूब खाने लगा और उसने ऐसी गरमी की कि पैरों में फिरकियां निकल आई और एक फोड़ा पीठ में निकल आया इधर बवासीर भी खून देने लगी और उसी के पास एक ज़ख्म और होगया जिस से मुझे बहुत फिक्र हुआ। बैद्य ने उसे भगन्दर बताया और कहा कि इसका इलाज ही नहीं। यह सुन मुझे मिर्गी आ गई और यह जी में आया कि यहां से हवा बदलने को पहाड़ पर चले जांय लेकिन रतौंधी के डर के मारे मकान से अकेला नहीं जा सकता था। दूसरे पारसाल पहाड़ को जाते हुए रास्ते में लू लग गई थी और वहां जाकर भी पहाड़ी पानी मुआफिक न आया इसी से अपान वायु भी बिगड़ गई और पहाड़ी चढ़ाई के कारण सांस भी फूलने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी से पहाड़ी देश का जाना छोड़ दिया। अब जब से प्रयाग जी आये तब से कुछ हाईड्रोसील के आसार मालूम होते हैं। उनका यह आत्म वृत्तान्त सुन मेरा जी ऊब गया। तब मैं ने कहा कि वाह रे बहादुर हिन्दी भाषा के वर्ण माला का कोई ही अभागा अक्षर बचा होगा जिस के नाम की बीमारी इन में न होगी। इन्हें आदमी कहें या अस्पताल। तब मैं ने उन से कहा कि महाशय कई रोग अभी बाकी हैं। यह सुन वे कुछ मुसकराए और बोले कि आप दिल्लगी मत कीजिये, बल्कि कोई ऐसी तरकीब निकालिये जिस में तबियत अच्छी हो और कुछ रुपया भी पैदा करें क्योंकि घर में चूहे तक फाका करते हैं। मैं ने उन से यही कहा कि आप 'हिन्दीप्रदीप' के एडिटर महाशय की शरण लीजिये वे आप का अति उत्तम जीवन चरित्र लिख कर लाहौर, कलकत्ता आगरा, इत्यादि शहरों के Medical Callege को Standard करा के आप को लाभ पहुंचा सकेंगे॥

बृ-मो कूल-

पढ़ने वालों के समझ की परख।

एक समय की बात है कि एक बुढ़िया के घर दो भाई मेहमान आकर रहे वे बड़े बलवान् थे। दोनों कुछ न कुछ सदा काम किया ही करते थे और समय को कभी व्यर्थ न गवांते। बुढ़िया मेहनत कर उन दोनों के खाने पीने के लिये सामान इकट्ठा कर लाती थी। और इन लोगों को भी सदा यही शिक्षा दिया करती थी कि बेटा व्यर्थ समय न गवाना चाहिये कुछ न कुछ काम में लगे रहना उचित है। इसी नसी-हत पर ये दोनों कुछ न कुछ सदा करते ही थे और यदि कुछ काम न मिला तो आपस ही में लड़ाई करते थे जिस में यह कोई न कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि खाली बैठे हैं। एक दिन की बात है कि उन्हें कुछ काम न मिला तब छोटा बड़े से बोला "भाई! खाली मवाश कुछ किया कर बतलावो आज क्या करें"। बड़ा बोला "आज तो कोई ऐसी बात भी नहीं सूझती कि जिसके लिये हमी तुम लड़ैं। बड़ी देर तक दोनों भाई इसी सोच में रहे कि क्या किया जाय आखिर छोटा बोल उठा भाई! हम ने एक तरकीब निकाली है कि हम तुम दोनों चल कर इस बुढ़िया के दो टुकड़े करैं और एक २ टुकड़ा लाद कर गङ्गा में प्रवाह कर आवैं। बस आज भर के लिये इतना काम काफ़ी है"। बड़ा भाई भी इस बात पर सहमत हुआ और दोनों मिल बुढ़िया के पास गये और बोले "माता आज हमें कुछ काम करने को नहीं है और खाली बैठना बड़ा पाप है इस से आज हम तुम्हें दो टुकड़े करैंगे और एक २ टुकड़ा लेकर बहा आवेंगे"। बुढ़िया डर गई और कहने लगी "तुम्हें मेहमान रखने का क्या यही फल है? और क्या काम करना इसी को कहते हैं?" परन्तु उन दोनों ने एक न सुना बुढ़िया चिल्लाती रह गई और उन्हों ने उसे काट डाला॥

A. S.

बंबई की बीसवीं कानग्रेस की रिपोर्ट।

बंबई की बीसवीं कानग्रेस की रिपोर्ट हमारे पास आई है। इस ३०० पृष्ठ की छपी पुस्तक में बम्बई के कानग्रेस का कुल हाल और जो स्पीचें उसमें दी गईं उनका उल्लेख है। ऐसा कौन कायर होगा जो भारत भूमि में जन्म लै देशोपकार का कुछ भी हौसिला रखता हुआ इस रिपोर्ट को पढ़ देश की दीन दशा पर खेद न करे। परन्तु इस खेद के साथ ही साथ इस बात का भी दृढ़ विश्वास हो जाता है कि ऐसी गिरी दशा में भी इस प्राचीन भूमि के ऐसे बीर पुत्र जीवित हैं जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन मन धन से और लाखों कष्ट सह कर भी अपनी मातृ भूमि की सेवा में प्रस्तुत हैं। बहुत लोग ऐसे हैं जो स्वयं तो कुछ काम नहीं करते किन्तु जब दूसरों को काम करते देखते हैं तो ज़ीट उड़ाते हैं। इसी खिलकत के कुछ विदेशी और कुछ हां हुजूर करने वाले स्वदेशी भाइयों ने भी कानग्रेस को निरा तमाशा मान रक्खा है। उनका कथन है कि कानग्रेस में जो खर्च होता है सब व्यर्थ है। इस आक्षेप का पूरा जवाब सर फ़ीरोज़ शाह मेहता ने अपनी गंभीर और वावदूक वक्तृता में जिसके एक २ शब्दों में देशानुराग की चोट और जोश टपक रहा है अच्छी तरह प्रति पक्षियों का मुंह सदा के लिये बन्द कर दिया है। फ़ीरोज़ शाह के कहने के अनुसार विपक्षियों का यह आक्षेप कि कानग्रेस के तमाशे में व्यर्थ रुपया खर्च होता है ऐसा ही पोच है जैसा सर्कारी कर्मचारियों का यह कहना कि खेतिहर हमारे देश के इस कारण निर्द्धन हो जाते हैं कि अपना धन शादियों के जलूश में उड़ा देते हैं। किन्तु बात असिल में यह है कि ऐसे अवसरों में खेतिहरों का अपव्यय केवल इतना ही कहा जा सक्ता है कि वे दो चार चान्दी के गहने बनवा लेते हैं; दो चार पसेरी गुड़ खर्च कर डालते हैं और हुडुक और डफले बजाय दो एक दिन भड़ २ मचाते रहते हैं। यही हाल कानग्रेस का है पंडाल संगमरमर का कोई महल नहीं तैयार किया जाता जिसमें लाखों रुपये फूक दिये जांय कानग्रेस का पंडाल लम्बे २ बांस और कनातों का बना रहता है; सजावट उसकी केवल इतनी ही रहती है कि रंगीन कपड़ों के टुकड़े इधर उधर लटका दिये जाते हैं। डेलिगेट भी इस तरह ठहराये जाते हैं मानो फौज के खेमों में टिके हों। कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि डेलिगेटों के आने जाने में हज़ारों रुपये विलट जाते हैं किन्तु प्रतिपक्षियों का यह कथन भी सयुक्तिक नहीं है। कानग्रेस में शरीक होने वाले वहां न भी आते तो बड़े दिनकी तातील का सुख उठाने और जीं बहलाने को कहीं न कहीं अवश्य जाते। मान लिया जाय कि उनके सब रुपये कानग्रेस ही के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्च हुए तो इतना क्या यदि इस्से बहुत अधिक ऐसे भले काम के लिये खर्च हो जो कानग्रेस कर रहा है तो वह भी थोड़ा होगा। देश के उद्धार के लिये रुपया क्या प्राण तक दे डालने में हम लोगों को प्रस्तुत रहना चाहिये। खेद है कि इस प्रकार का जोश इस देश के लोगों में नहीं हैं। जिन्में है उनका नम्बर अभी बहुत थोड़ा है। सच तो यों है कि देश का उद्धार तभी होगा जब देश के सच्चे भक्त अपनी जान हाथ में रख देश के उद्धार और भलाई के लिये उठ खड़े होंगे॥

कानग्रेस के लाभ गिनाने का अवसर यहां नहीं है। ऐसा ही कोई देश का द्रोही होगा जो इस्के लाभ को मुक्त कण्ठ स्वीकार न करे। सड़क के किनारे वृक्ष की एक टेहनी में लगे गुलाब को देख ग्रामीण उसे एक साधारण फूल समझेगा परन्तु उस्की कदर समझने वाले के चित्त में उसे देख न जानिये क्या २ भाव उठते हैं। यही हाल इस कानग्रेस का भी है। इसमें सन्देह नहीं लोगों को यह दृढ़ निश्चय होगया है कि इस्के द्वारा हिन्दुस्तान का सुधार अवश्य हो सक्ता है, एक दिन ऐसा आवेगा कि देश का देश उत्तेजित हो अपने उद्धार में उठ खड़ा होगा। ५ महीने बाद इस्का इक्कीसवां अधिवेशन बनारस में होने वाला है। आशा है इस प्रान्त के लोग यह रिपोर्ट पढ़ ऐसा ही यत्न करैंगे जिस्में इस शुभ काम में पूरी सफलता प्राप्त हो। यद्यपि प्रत्यक्ष में गवर्नमेंट के कर्मचारियों पर इसका कुछ भी असर नहीं पड़ते देखा जाता तौ भी इस्के पक्षपातियों को हिम्मत न हारना चाहिये किन्तु यह विचार कर कि कोई बड़ी इमारत एक ही दिन में नहीं बन कर तैयार हो जाती उस्के तैयार करने का उद्योग हम करते रहैं तो एक दिन अवश्य कृतकार्य होंगे। पोलिटिकल बातों के समझने का यह वह द्वार है जिस्से नव युवकों की नस २ में ऐसा जोश पैदा हो कि वे भारत का उद्धार कर ही के छोड़ैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दर सभा महा काव्य ।

(तीन चुटकिन मां)

पहिल चुटकी ।

एक बात अद्भुत हम कहहीं । यारो सुनियो कान लगाय ॥
इतने दिन वहिका भे बीते । अता पता कोउ सकै न पाय ॥१॥
कलियुग द्वापर त्रेता सतयुग । इन सब से पहिले की बात ।
भये न ईश पयम्बर देवा । और रही नहि जात अरु पांत ॥२॥
लाख २ जोजन कै बसती । बने बहुत बड़वार मकान ।
बड़े २ ऊंचे तरु जामे । टीले बिकट पहाड़ महान ॥३॥
यही पेड़ टीलन कै चोटी । बसत रहे बन्दर बलवान ।
नाम देस कै गढ़ बन्दर औ । मलूसा राजा कै नाम ॥ ४ ॥
सारा देस उजाड़ पड़ा रह । दीखत कहू न कहूं निसान ।
ऊंची चोटी थलन मांहि बस । बनी इमारत आलीसान ॥ ५ ॥
इनहि घरन के बीच बीच महं । लम्बे लम्बे बांस दिखांय ।
वाही ऊपर हवा खान को । घूमन सिगरे बन्दर जांय ॥ ६॥
घर में टेबुल मेज सजे हैं । उन पै चुने अनेक गिलास ।
तामें टूटे फूट बहुत हैं । और धरी बोतल हैं पास ॥ ७ ॥
भांत भांत सज धज के कमरे । तितिर बितिर पै सबै समान ।
यहि ते एक निमिख में जानो । यहां बसैं बन्दर बलवान ॥ ८ ॥
चिलमन परदे रंग ढंग के । खिंचे द्वार द्वार के बीच ।
फटे छिये पै बहुत ठौर वे । देत गवाही आदत नीच ॥ ९ ॥
यक मैदान म भारी तखता । वापै चुंनी रकाबी थास ।
कुर्सिन पै बहु बानर बैठे । कलछिन लै लै खावैं मास ॥१०॥
यह कौतुक अचरज हम देखा । पूछा एक बानर से जाय ।
बोला बानर सुनो विदेसी । यह सब केवल मांसै खांय ॥११॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घासौ पत्ती खाय लेत हैं। कबहूं लोहू करैं अहार।
वानर मिलै वहू का खावैं। खान पान को नहीं विचार।
यह बातैं कोउ बिरला समझै। यहं की लीला अपरम्पार॥ १२॥

दूसर चुटकी।

हियां की बातैं हियनै रह गईं। अब आगे कै सुनो हवाल।
गढ़ बन्दर के देस बीच मां। पड़ा रहा एक खेत बिसाल॥१३॥
सौ जोजन लम्बा अरु चौड़ा। अरबन बानर जांय समाय।
तामे बानर भये इकट्ठा। जौन बचे वे आवें धाय॥ १४॥
जब सगरा मैदनवां भरिगा। पूंछै टोपी लगीं दिखाय।
सब के सब कुरसिन से उछले। हांथ पांव से ताल बजाय॥ १५॥
इतने में मल्लूसा आये। बंदरी और मुसाहब साथ।
बंदरी बड़ी चमक चटकीली। थामे मल्लूसा को हांथ॥ १६॥
ओढ़े गउन लगाये टोपी। हीरे जड़े पांत के पांत।
मटकत आवत भाव दिखावत। आखिर मेहरारू की जात॥ १७॥
मल्लूसा झट कुर्सी चढ़िगे। धरी एक ऊंचे मस्तूल।
रानी भी दुम झाड़ बगल भई। तब बोले बातें निरमूल॥ १८॥

तीसर चुटकी।

"सुनो मुसाहब सबै सभ्यगन। अरु राजे फौजी कपतान।
न्याय धर्म उद्यम कौंसिल के। शस्त्र बिदेस कार मेंबरान॥१९॥
हम राजा इस गढ़ बन्दर के। कैसर किङ्ग ज़ार सुलतान।
हमरै हुकम हियन पर चालै। जानो हमे ईस रहिमान॥२०॥
आज बरस दिन फेर मिले हम। तुम्हे सुनावें निज करतूत।
कठपुतरी सम प्रजा नचावें। फैलावें स्वारथ के दूत॥ २१॥
यह तुम सब तो जानत हइहौ। आपन एकै यही उसूल।
जौन भांत से रुपया आवे। वही धर्म न्याय को मूल॥ २२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येहू बात बिदित संसारै। एक जात रहती यहि ठौर।
जिन के दुम उम तनिकौ नाहीं। हमरा लाल रंग उन और ॥२३॥
येही ते दुइ न्याय धर्म दुइ। दुइरी सगरी बात हमार।
मुह कुछ धरे पेट कुछ धारैं। दगा झूठ को करैं अहार।
येहू से जो काम न निकलै। तो फिर कैद मार फिटकार॥२४॥
पांच बड्डु बड्डु भागन मां। देस भार की भई तकसीम।
पहिले न्याय—बनाया अचरज। पी अफीम सब नीम हकीम ॥२५॥
गणना करौं कहा यह कलकी। रुपया असकै खींचे पास।
धनी दीन पण्डित अरु मूरख। सबही फंस गये याके फांस ॥२६॥
तेहि पर वेदुम के जे बानर। उन का अस कै जकड़ा जाय।
तनिकौ हांथ पांव फटकारें। हन कै थप्पड़ दिया लगाय ॥२७॥
यह तो बन्दर न्याय बखाना। एक और कुञ्जी है हांथ।
न्याय वाय सब ही के ऊपर। सबहि घुमावे अपने साथ ॥२८॥
ओंकर नाम गुपुत राखैंगे। वह तो भीतर मन की बात।
ऊपर हमरी खुली कचहरी। रुपया देत न्याय लै जात॥ २९ ॥
दूसर धर्म बड़ा—फन्दा यह। जो जो हम से करैं विरोध।
जहां ग्लास एक हम से लेवैं। आवै तुरतहि उन कहं बोध॥३०॥
सबहि लड़ाई छूट जात है। लेकचर देन जांय सब भूल।
झूठी दुमहु लगाय लेत हैं। औरहु बातैं करैं फजूल ॥ ३१ ॥
जूठहु खाय नहीं सकुचावें। पूजहिं खर जो हमरा देव।
खरही खर चिल्लात फिरत हैं। लेव स्वर्ग मुफ्तै लै लेव ॥ ३२ ॥
बिना कसाले का बिहिस्त है। ऐसन अवसर फिर नहिं आय।
हमरो खर जो चढ़ा अकासा। सब कोउ पूंछ थाम चढ़ि जाय॥३३॥
जो नहि माने बात हमारी। ऊ बस सीधा नरकहि धाय।
चार पांव से चलन न पइहै। दुइयै से घिसलावत जाय ॥ ३४ ॥
कुआं न कूदन को तरु मिलि है। और न मिलिहै बंदरी संग।
कपड़ौ चीथे का नहि मिलि हैं। नहीं घास मास कै रंग ॥ ३५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरन बाद इन सुख कहं चाहौ। हमरी बात करौ विस्वास।
पढ़नौ लिखनौ पूजन छांड़ौ। हमरे खर की धारौ आस ॥३६॥
यही भांत हम धरम चलावा। दूसर के सिखवन के काज।
[illegible] स्त्री अरु मान लोभ दे। फांसा जेहि नहिं सकता भाज।
आपन देव एक रुपया पै। जासे बाढ़ै हमरा साज ॥ ३७ ॥
तीसर उद्यम भाग गिनाऊं। एकर केवल मनसा येह।
जितना धन अन पैदा होवै। सब छोड़ आवै हमरे गेह ॥३८॥
जितने बेदुम के हैं बानर। उन का हरी हरी दिखलाय।
चूनी भूसी उन्हें फेंक दें। बढ़िया माल लैंय गठियाय ॥३९॥
यही भाग उद्यम का ऐसा। जेहि मा रचैं किताबी जाल"।
और देस के बानर जेहि से। नहिं जाने हमरा अहवाल ॥४०॥
ऊपर से यह परगट करहीं। सगरी परजा बड़ी अमीर।
लीन लंगोटी छीन दीन कै। हम जानहिं वे फिरैं फकीर ॥४१॥
मरैं भूख से जाड़े से वा। हम से यहि से कुछ नहिं काम।
हम का खाली मिलै रुपैया। हम घर बैठ करैं आराम ॥ ४२ ॥
चौथा बड़ा डिपार्टमेंट है। करैं विदेसन को व्यवहार।
रीछ स्यार सूकर बसते जहं। हम सन जिनके हैं सरदार ॥४३॥
कबहु आंख दाँत दिखलावैं। लैं डराय बस काम निकाल।
कबहु नम्र होय सीख सुनावैं। रचैं बात कै जाल कराल ॥४४॥
ऐसे वैसे तो डर जावैं। वा फंस जावैं हमरे जाल।
जो मैं तनकु अकड़ने वाले। तिन के लिये अनेकन चाल ॥४५॥
जासूसी में निपुण सिपाही। तब लूटैं साधन को कार।
दगा झूठ विष मद मेहरारू। और छिपी तीखी तलवार ॥४६॥
एते सरंजाम हैं पूरे। पै येहू जो खाली जांय।
पंचवा भाग करै तब हलचल। नये शस्त्र तबही दिखलांय ॥४७॥
सब से बड़ी शस्त्र की कौंसिल। यहै राज्य की हमरे मूल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिके बिगड़े सबै चातुरी । एदै छन में जावै भूल ॥ ४८ ॥
याही ते जे लड़ने वाले । उन कै हम बहु करते मान ।
सब से घूस रुपैया लावैं । इनही को बस देते दान ॥ ४९ ॥
बड़े वीर हमरे यह सैनिक । पहिले दुम से करैं प्रहार ।
दुम जो कटै भाज फिर जावैं । गढ़ में घुस करवैं ललकार ॥५०॥
पत्थर की तलवार बनी है । मट्टी की गोली बारूद ।
जहां चलै यह सैन्य हमारी । और लगावै पैंकी कूद ॥ ५१ ॥
बिरवन पेड़न तुरतहि नासैं । धूम मचावैं लूटैं माल ।
सीधे जीवन मारैं काटैं । हमहूं सुन २ होंय निहाल॥ ५२ ॥
अब हम लेकचर खतम करत हैं । बैठैं अपनी कुर्सी जाय ।
तबही ताली ऐसी बाजी । कानौ की चमड़ी उड़िजाय ॥५३॥
फिर एक मोटा बानर बोला । धन्यबाद हम देंय पुकार ।
मल्लूसा को जिन की परजा । जो धन राखैं औरन मार ।
जेहि में हम कहं पालैं पोखैं । और बढ़ै हम कुल परिवार ॥५४॥
इतना कह वह बानर बैठा । सभा उठी भागी चहुं ओर ।
मैं हूं आल्हा गावत भाग्यों । जे जे सुनिन कीन्ह संग मोर॥५५॥

प्रयाग २४ जुलाई १९०५ A. S.

भ्रातृ शिक्षा ।

आवहु यहां सुनहु मन दैके । शिक्षा हमरी हे प्रिय भ्रात ॥
प्रातः उठि सुठि निर्मल जल से । धोवहु अपने मुख अरु गात ॥१॥
पीछे बैठि ध्यान तुम करहू । जग पालक घालक करतार ॥
जाकी कृपा पंगु गिरि नांचे । अन्ध जात है राह अपार ॥२॥
बिना कृपा उसकी हे भाई । छोटहु काम होत है नांहि ॥
कृपा समुन्दर हाथी नांचै । बंध चीटी कै पैरन मांहि ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहि कारण है मेरे प्यारो । सुमिर रात दिन उसका नाम ॥
कार्य सबहिं में उसका डर रखि । करहु भरोसा केवल राम ॥४॥
पीछे करहु नमन माता पितु । जो हैं तन के सिरजन हार ॥
एहो भाई उनकी आसिस । संकट से करती निस्तार ॥५॥
आज्ञा उनकी कभी न टारो । कीधों उलट जांय संसार ॥
देखहु दशरथ पितु अज्ञा से । पुत्र राम सहे दुःख अपार ॥६॥
तब तुम जावहु चटशाला को । श्री गुरु चरण नवावहु माथ ॥
हेल मेल से विद्या पढ़ कर । आवहु सब मिलि एकहि साथ ॥७॥
कभी नहीं आपस में लरिये । जो लड़ता सो बुरा कहात ॥
प्रेम परस्पर राखो ऐसे । जैसे राम लखन से भ्रात ॥८॥
स्नान ध्यान करि श्री शिव पूजहु । औ रामायण के कर पाठ ॥
जाके पाठ मात्र से भाई । श्री हनुमत देते दुख काट ॥९॥
मीठी बोल सदा ही बोलो । कडुई बोलिन में बड़ हान ॥
कोयल सब की मान पात्र है । कौआ नहि कोइ करता मान ॥१०॥
जब घर नोन साग को नहि है । तदपि न मांगहु हाथ पसार ॥
मांगब अति हलकाई भाई । मांगत वामन भय करतार ॥११॥
पर धन के लेने की इच्छा । करहु नहीं तुम मेरे भाय ॥
पर धन ढेला माटी सम है । तासों कछू न काम सराय ॥१२॥
यदि तुम चाहत हौ धन भाई । आलस त्यागहु दुष्ट समान ॥
आलस महा शत्रु मानुष का । पाय न नर आलसि धन धाम ॥१३॥
करहु परिश्रम आलस त्याग । मन बांछित फल लागै हांथ ॥
जग नहि मित्र परिश्रम के सम । वाहि सदा राखो निज साथ ॥१४॥
नहीं क्रोध सम रिपु जग दूसर । पीछे क्रोधी पावत ताप ॥
क्रोधी पुरुष क्रोध के मारे । होके पागल करता पाप ॥१५॥
पालन ब्रह्मचर्य का करहू । बिन जिसके सबही नसजाय ॥
मन को जीत इन्द्रियन जीतहु । मन जीते सब ही बन जाय ॥१६॥
काम क्रोध अरु स्वाद लोभ अति । निद्रा सेवा छाड़ो भाय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचो अयगुण दूर करैं जे । वेही सांचे छात्र कहांय ॥१७॥
दुःख किसी को कभी न देवहु । दया मया रख सब के साथ ॥
निज २ देह सबहि को प्यारी । हत्या जीव न कर निज हाथ ॥१८॥
दुष्टन की संगति जिन करहू । वे हैं विष के कुम्भ समान ॥
दूध भरा जाके मुखहै पर । अन्तर हालाहलहि महान ॥१९॥
सत्य बचन तुम प्रण करि भाखहु । झूठ कबहु जिन बोलहु भ्रात ॥
नहीं सत्य सम पुन्य जगत में । और असत सम पाप लखात । २०॥
त्यागहु लोभ महा दुख दायी ! लोभी जन पावत नहि शान्ति ॥
धन पाने की तृष्णा उसको । देती महादुःख अरु भ्रान्ति ॥२१॥
उसके घर तुम कभी न जाओ । जो नहि करता आदर मान ॥
होने दो राजा को राजा । भाई दुखदायी अपमान ।२२।
जिसके घर नहि भूजीं भांग । परप्रेम पूर्ण वह करता मान ॥
तुम को वहां अवस है जाना । उसकी सूखी रोटी खान ॥२३॥
करो भलाई सब की भाई । धर मन में जग परउपकार ॥
जननी पुत्रवती है जिसका ! करता बेटा पर उपकार ॥२४॥
धन यौवन का गरब न करना । है यह नर तन अतिहि असार ॥
काल नित्य नाचत है सिर पर । यातें करहु धर्म आचार ॥२५॥
सब जग छाया अहै दोष गुण । कोई उन से वंचित नाहि ॥
दोष त्याग गुनही कंह गहहू । गिने जाहु सत्पुरुषन माहि ॥२६॥
बड़ी भलाई लघुताई मंह । नहीं बड़ाई चाहहु तात ॥
देखो दुतिया लघु चन्दा को । सारा जगत नवावत माथ ॥२७॥

लोचन प्रसाद पाण्डेय रायगढ़—

नई २ खबरें ।

हिन्दुस्तान से रेल की एक नई लाइन खुलने वाली है जो सीधे स्वर्ग को जायगी जिसमें केवल वे ही लोग जाने पावेंगे जो अपनी ज़िन्दगी में कई मज़हब बदल चुके हों !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल की खाड़ी के पश्चिमीय भाग में एक नबी पैदा हुये हैं जो कई तरह की नबूअत कर गये हैं। पहिली-नबूअत यह कि विधवा विवाह का प्रचार हो और बाल्य विवाह किसी तरह न रोका जाय। दूसरी नबूअत यह कि कुल विरहमन अपनी बछिया पुजौनी विद्या को छोड़ बैठें और रातो दिन बइबिल या कुरान रटते रहैं। तीसरी नबूअत यह कि गोरे या काले रंग का भेद न मान हिन्दू मात्र कोट बूट धारियों की खुशामद में लगे रहैं। जो कोई इसके अनुसार चलेगा उसको हज़रत शैतान की ओर से गन्दी से गन्दी जगह की म्युनिसिपिलिटी की मेंम्बरी मिल जायगी और खिलाफ़ चलने वाले को या तो सहारा जंगल की हवा खिलाई जायगी नहीं तो पागल कुत्ते से वह कटाया जायगा।

लन्दन नगर में दस हज़ार फीट दायरा का एक बेलून बड़े बारीक कागज़ का मिस्टर फूलस्केप ने तैयार किया है इसमें दो लाख पचपन हज़ार साढ़े बाइस लड़कों के बैठने की जगह है-यह बेलून लंडन से उड़ कर सीधा हिन्दुस्तान को आवेगा और लड़के कलकत्ते में उतरतेही पार्सल में बन्द कर जुदे २ स्टेशनों में डिसप्याच कर दिये जांयगे-जिन्में ज़ियादहतर पुलीस के सुपरिंटेंडेन्ट होंगे-कुछ इण्डियन एज्युकेशनल सरविस में भेज दिये जांयगे और जो बच जांयगे उन के लिये सरकार एक नया कमिशन बैठाय उन को जगह देने की तरकीब सोंचैगी-

उजड़नगर परगनह बसन्तपुर ज़िला अहमकाबाद।

समय धुन्धला है यहां के सेठ सोढ़रदास की बन्ध्या स्त्री से एक कन्या जन्मी जिस्की गुड़िया के ब्याह में सेठ ने बड़ा उत्सव मनाया-इस महोत्सव में देश देशान्तर के घोंघा पण्डित बुलाये गये जो चार दिन तक तीतर बटेर सा खूब लड़े- पश्चात सेठ साहब ने उन पण्डितों को एक २ पसेरी सुंघनी और एक २ डलिया भांग दे खूब सत्कार किया-एक संबाद दाता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहाय्य ।

पं० जगन्नाथ राजवैद्य ने हमारे पत्र के लेख पर प्रसन्न हो ५) हमें इस के सहायार्थ दिये हैं जिसे हम धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हैं- हमे विशेष हर्ष इस बात का है कि उक्त पण्डित जी ने हमारे क्षुद्र लेख का इतना आदर किया- हमारी निर्जीव समाज में थोड़े लोग भी पण्डित जी के समान रसज्ञ होते तो हमे हतोत्साह होने का कभी अवसरही न मिलता—

रेशमी वस्त्र ।

रेशमी (कोसा के) बने हुए उत्तम वस्त्र थान, अंगा, शोला, साड़ी, दुपट्टा, अचकानी आदि मेरे द्वारा भेजे जाते हैं । दाम के हेतु सूचीपत्र मंगा देखें । मिलने का पता,-

ताराचंद दुबे, बिलासपुर (सी०पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ सं० ९ } **प्रयाग** { सितम्बर सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —o*o— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:oo:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ सं० ६ | प्रयाग | सितम्बर, सन् १९०५ ई०

दुर्लभः कार्य कर्ता ।

यूरोप के सभ्य देश और हिन्दुस्तान से इस एक बात में बड़ा अन्तर है कि यहां ऐसा कार्य कर्ता दुर्लभ है जो सब लोगों का विश्वास पात्र हो । यहां सौ आदमियों में एक भी ऐसा न मिलेगा और देशों में सौ में ५० ऐसे निकल आवेंगे जिन पर अनेक मनुष्यों का वरन कुल कमेटी या ऐसोशियेशन का दृढ़ विश्वास हो और लोगों को निश्चय हो कि ऐसे मनुष्य से कभी धोखा न होगा । यह इसी का परिणाम है कि अमरिका और यूरोप के सुसंपन्न देशों में न जानिये कितनी ऐसी जमात हैं जिनमे लाखों और करोड़ों का काम केवल एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी के विश्वास और इन्तिज़ाम से चल रहा है । एक आदमी से दस आदमी की ताक़त बहुत अधिक होती है जिस बोझ को १० मनुष्य मिलउठावेंगे वह बहुत ही हल्का हो जायगा । न केवल १० आदमी की ताक़त ही एक रहैगी बरन १० मन और १० मस्तिष्क जिस्में भिड़ जायंगे उस्का सम्हलना और दिन प्रति दिन उस्से तरक्की का होना कौन सी बड़ी बात है । हमारे यहां १० मन एक होना जानते ही नहीं यही कारण है कि यहां "पणबन्ध" कम्पनी का काम नहीं चलता Self interest खुदगरज़ी का यहां तक ज़ोर है कि एक आदमी चाहो कैसा ही दुरूह और कठिन से कठिन काम हो उस्का कुल बोझ अपने ऊपर उठाय उस काम का पूरा अंजाम कर डालेगा । दस आदमियों का एक होना दूर रहे आपस में एक दूसरे की स्पर्द्धा न होती तौभी बड़ा काम होता धनियों में एक दूसरे की स्पर्द्धा देश का बड़ा सत्यानाश कर रही है । अफ़सोस जहां के इतिहासों में समुद्र मथन तथा चण्डी पाठ में समस्त देवताओं की शक्ति का एक हो जाना आदि कितने ऐसे रूपक गढ़े गये हैं वहां अब दो दिल के एक होने के लिये भी हम लालायित हो रहे हैं हमारे बिगड़ जाने की पराकाष्ठा है । नहीं तो इस दीन दशा पर भी धन की कमती नहीं न बुद्धि या व्यवसाय में हम अन्य देशियों से किसी बात में हेठे हैं पर आपस की सहानुभूति और मिल कर के कुछ काम करना नहीं जानते इस्से सब बिगड़ा है और यह सब इसी लिये है कि यहां ईमानदार काम करने वालों का अभाव है जिनका पैदा हो जाना तभी सुलभ होगा जब आत्म त्याग Self Sacrifice की विशुद्ध बुद्धि हमारे में आवे ॥

त्राहि !! त्राहि !! शिव !!!

हाय ! आज यह देश विकल हो दुख से पीड़ित ।
टेरत है हे नाथ-त्रिलोचन ! आन दयाचित ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डूबे हम सब हाय ! महा दुख सागर माहीं ।
त्राहि त्राहि, शिव ! त्राहि तोहि बिन दूसर नाही ॥२॥
हे शिव काशीनाथ ! हरो दुख हम दीनन के ।
सुख संपति नित बढ़े, सुबिद्या बुध भारत के ॥३॥
नावत हैं हम माथ, अहो गौरी पति तुम को ।
दुख से देहु उबार, बचाओ इस भारत को ॥५॥

१

रूप विराट ललाट सुसुन्दर तापर भाल त्रिपुंड बिराजै ।
गौर शरीर लसै उपवीत रमाय वभूत मनोहर छाजै ।
कंठ सुशोभित नील अहा ! अरु तापर सर्प अनेकन भ्राजैं ।
शीश मनोहर श्याम जटा पर गंग मनोहर ही छबि साजै ।

२

हाथ लसै तिरसूल, बजै डमरू उमके सुनि पातक भागे ।
डाकिन शाकिन, भूत पिशाचन बीर अनेकन नाचत आगे ।
लोचन काल महा बिकराल निहारत ही दुख दारिद भागे ।
पादुका शब्द त्रिलोचन के सुनि लोचन भारत मोद में पागे ।

३

आर्त अहा हमरी बिनती सुन संकर देव महा बरदानी ।
निश्चय ईश कृपालु महान अहैं करुणा कर नाथ भवानी ।
आकुल भारत की बिनती सुनि रंच बिलम्ब अहो ! नहि आनी ।
शंभु ! उबारु दयालु उमापति !! टेरत भारत आरत बानी ।

४

प्लेग नसै कुमती जरि के दुख दारिद भी जरि के हट जावे ।
भाग अकाल पताल चले सुख संपति भारत में चहुं धावे ।
नाथ ! अनाथ सनाथ करो, कर जोरि के भारत माथ नवावे ।
है "तिर लोचन "लोचन" को "जनि लोचन ओट करो" शिर नावे ।

पाण्डेय लोचन प्रसाद
बालपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचित्र चित्र ।

रात को सोते २ अकस्मात् एक घड़घड़ाहट का शब्द सुन नींद उचट गई देखा तो काले रंग के बादल इधर उधर दौड़ रहे हैं—उन्हीं बादलों में दुर्जनों की संपत्ति सी कभी २ दामिनी दमकती हुई इस पार से उस पार को दौड़ जाती है और बादल इतने ज़ोर से घड़ २ करते हैं मानो दशो दिशा के दिग्गज एक साथ स्थान से खुल के अपने २ चिग्घार की बानगी दे रहे हैं। इतना तो सब है किन्तु पानी का कहीं नाम भी नहीं। यह सब दृश्य देख हम को अपने देश की दीन दशा पर ध्यान गया जहां के लोग इस सावन का सूखा जान सन्नहटे में आ रहे हैं इतने में फिर गडगडाहट हुई मानो हिन्दुस्तान की सब प्रजा जल जल एक स्वर से चिल्ला रही है। ऐसे ही ऐसे विचार सागर की लहरों में बूड़ता उतराता मुझे अपने सामयिक प्रभु बर की शासन प्रणाली पर ध्यान गया मन में आई कि इस समय के ये मेघ गण कदाचित् लार्ड कर्ज़न महोदय का अनुकरण तो नहीं कर रहे हैं। जैसा ये बादल आकाश के ऊंचे शिखर पर हैं वैसाही लार्ड कर्ज़न महोदय भी भारत श्री के अत्यन्त ऊंचे शिखर पर विराज मान सर्वमान्य हो रहे हैं। इन बादलों का घड़घड़ाना और श्रीमान् का मेघ गंभीर गिरा की स्पीचों में गरजना भी एक सा है और उन दोनों का फल भी समान है। पहले पहल जब श्रीमान् यहां पधारे थे तो प्रजागण को ऐसा आश्वासन दिया कि जितने पढ़े लिखे लोग थे सब यही निश्चय कर चुके थे कि अब हमारा बहुत कुछ हित होगा। जैसा मेघ की गरज सुन मोर ऊंचे स्वर से नाद करना और नाचना आरम्भ कर देते हैं ऐसा ही यहां की आर्त प्रजा का मन मयूर प्रफुल्लित हो कूदने लगा था किन्तु बहुधा बादल जो गरजते हैं बरसते नहीं वही फल लार्ड कर्ज़न की वक्तृता का भी देखने में आया उनकी स्पीचों को पढ़ कितनी खुशी हुई थी किन्तु परिणाम क्या हुआ सो छिपा नहीं है। जैसा बादल की घड़घड़ाहट सुन लोग त्राहि २ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त्य मुनि को पुकारते हैं वैसाही कानबोकेशन की स्पीच सुन सेक्रे-टरी अफ स्टेट की शरण लेना पड़ा। जैसा पपीहा मेघ का नाद सुन प्रसन्न होता है किन्तु जल न गिरने से मन मार कर बैठ जाता है वही दशा हम लोगों की हुई स्पीचों को सुन प्रमोद तो बहुत हुआ पर कुछ अपना हित और भला न होते देख सब लोग ठंढे पड़ गये।

वर्षा के मुख्य कारण सूर्य देव हैं यहां भारत के शासन कर्त्ता कर्म-चारियों में मुख्य और सर्वोपरि हमारे "वाइस राय" बड़े लाट हैं। सूर्य देव अपनी किरणों से पृथ्वी का जल खींचते हैं पीछे उसी को बरसते हैं हमारे शासन कर्ता भी टैक्सों के द्वारा रुपया खींचते हैं किन्तु वह रुपया विविध द्वार से विलाइत जाय फिर नहीं लौटता और लौटा भी तो पाला की भांत लोहा लक्कड़ के रूप में। पाला जैसा गिर कर खेती को नष्ट कर देता है वैसाही विलाइत की बनी चीज़ें देशी कारीगरी का विघात किये देती हैं। वर्षाऋतु का जैसा क्रम है कि आषाढ़ लगते ही बड़े बिकराल बादल उठते हैं पर बरसते नहीं फिर सावन भादों में घटाटोप अंधियारी खूब छाई रहेगी बादलों की घड़घड़ाहट बहुत पर बरसात बरायनाम। कुवांर में कभी वर्षा कभी घाम। यही क्रम प्रभु वर लार्ड कर्ज़न महोदय का देखने में आया। आरम्भ में यहां की पृथ्वी पर पांव रखते ही श्रीमान् ने धड़ाके की स्पीचें देना शुरू कर दिया भरपूर पांव जम जाने पर सावन की घटा के समान और अधिक लम्बी स्पीचें पढ़ने में आईं जो उस समय हम लोगों के लिये बड़ी हितकारी जंची किन्तु उन बक्तृताओं से जो हमारा हित हुआ सो किसी से छिपा नहीं है। बर्षा कभी निष्प्रयोजन नहीं होती खेतिहरों को नये बिरवाओं की बाढ़ देख बड़ी आशा बंधती है किन्तु पीछे अति वृष्टि आदि के कारण कभी को रुपये में केवल चार आने पैदावार होती है। यहां बिलकुल खाली। जो आशा हमे दी गई उसमें एक भी फलोन्मुख न हुई। पानी बरसते ही सब ठौर हरियाली छा जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल फूल के इतने वृक्ष उग आते हैं कि कदाचित् इतने किसी ऋतु में नहीं उगते। दिल्ली दरवार में लार्ड कर्ज़न नव वारिद के सन्नद्ध होते ही भारत में छोटे बड़े समस्त सामन्त एक छोर से दूसरे छोर तक के उन के स्वागत के लिये घटा से उमड़ आये दश पांच दिन के लिये दिल्ली प्रान्त में मानो हरियाली सी छा गई किन्तु परिणाम टांय २ फिस-राजा महाराजाओं का लाखों बिलट गया पर अन्त को फल कुछ न मिला। लिटन महोदय ने खिताब और सलामियोंही से लोगों का मनोरंजन कर दिया था इस दरवार में सो भी न हुआ। इस नव वारिद की वर्षा को हम इस श्लोक के अनुसार कहेंगे जैसा।

त्वयि वर्षति भो मेघ सर्वे पल्लविता द्रुमाः।
अस्माकमर्कवृक्षाणां पूर्व पत्रेपि संशयः॥

कई प्रकार के अधिकार जो पहले प्राप्त थे सोभी अब न रहे। जज़िया आदि दुःसह कर जो मुसल्मान बादशाह हम से लेते थे वह वृष्टि के उस जल के समान था जो अबखरों के आकार मे ऊपर को खिंच वर्षा के जल के समान फिर बरस कर यहां की पृथ्वी को उर्वरा करता था किन्तु कर जो हमारे ब्रिटिश शासक हम से लेते हैं वह उस पानी के समान है जो पर्वत और चट्टानों पर अथवा वरूली धरती पर बरसता है जिस से कोई फल नहीं निकलता। हम लोगों को ऐसा मान होता है कि हमारे सामयिक शासनकर्ता और सूखे मेघों की विचार शैली और कार्य प्रणाली कुछ एक सी हैं किन्तु फिर भी जैसा बर्षा के अन्त में धनुष का उदय आकाश में देख लोगों के मन में कुछ औरही खयाल उठने लगते हैं वैसेही बड़े लाट महोदय की स्पीचों से हमे अत्यन्त निरुत्साहित न होना चाहिये। ईसा की धर्म पुस्तक बइबिल में लिखा है कि सृष्टि पैदा होने के थोड़े दिन उपरान्त जब मनुष्यों में पाप और अन्याय बढ़ गया उस समय इतनी बाढ़ Delage आई कि सिवा नूह की किश्ती के और कोई पदार्थ न बच रहा। थोड़े ही दिन बाद एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुष आकाश में निकला जिससे इसाई धर्म के अनुसार ईश्वर ने प्रतिज्ञा किया कि अब बाढ़ कभी न आवैगी इसी से धनुष उन के मत में शान्ति का चिन्ह समझा जाता है। यह कहां तक सच है हम नहीं जानते पर इतना तो अवश्य कहेंगे कि जब धनुष निकला है तो बादलों की तड़क भड़क कदाचित् अब न रहे। R. A.

प्राचीन ग्रन्थकार।

भट्टोद्भट।

राज तरङ्गिणी के चौथे तरङ्ग में 'भट्टोऽभूदुद्भटस्तस्य भूमिभर्तुः सभापतिः' ऐसा लिखा मिलता है जिस से जान पड़ता है कि ये महाशय कश्मीर के राजा जयापीड़ के सभासद थे। महाराज जयापीड़ का राज्यकाल सन् ७७९ ई० से ले के ८१२ ईस्वी तक था। अतः भट्ट उद्भट का समय इन्हीं कश्मीर के राजा जयापीड़ के समयानुसार ख्रीष्टीय आठवीं शताब्दी का आरम्भ मान लिया जा सक्ता है। इनके रचित ग्रन्थ का नाम अलङ्कार सार संग्रह है जिसकी टीका प्रतीहारेन्दुराज ने रची। इनका रचित कुमार सम्भव नाम कोई काव्य भी होगा जिस में का श्लोक नीचे लिखा जाता है।

या शैशिरी श्रीस्तपसा मासेनैकेन विश्रुता।
तपसा तां सुदीर्घेणादूर्णवद्धधतीमधः॥

जिसमें एक स्थान में तपस शब्द का अर्थ माघ मास और दूसरे में शरीर को क्लेश देने हारी तपस्या है। उक्त श्लोक से इन की कवित्व शक्ति झलक जाती है। इन के सम सामयिक कुट्टिनी मत के रचयिता दामोदर गुप्त और वामन आदिक हैं। ये महाशय कश्मीरी थे। व्याकरण अलङ्कार और काव्य में ये निपुण जान पड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य प्रकाश के टीका कारों ने कहीं २ पर इन्हें उद्भट कहीं पर उद्भट भट्ट और किसी २ स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है । अलङ्कार सार संग्रह और कुमार संभव काव्य को छोड़ इनके बनाये और कोई ग्रन्थ हैं वा नहीं इस का कुछ पक्का पता नहीं मिलता है पर पाण्डित्य और सभा चातुरी की निपुणता इनकी छिपी नहीं है ।

भट्टोत्पल ।

ये महाशय एक प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं जिस ने वराह मिहिर के लगभग सबी ग्रन्थों की टीका लिखी है वराह कृत पञ्च-सिद्धान्तिका की टीका इनकी रचित नहीं मिलती संभव है कदाचित् उस्की टीका न भी बनाया हो । प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है पर निज ग्रन्थ में ये अपने को केवल उत्पल लिखते हैं । वृहज्जातक की टीका में इनने अपना समय शाके ८८८ अर्थात् सन् ९६६ ईस्वी लिखा अतएव इनको ख्रीष्टीय १० वीं शताब्दी का मान लेना पड़ेगा

भट्ट कल्लट ।

ये महाशय भी कश्मीरी पण्डित हैं । इन के गुरु का नाम वसु-गुप्त है । वसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है और स्पन्द कारिका पर स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्ट कल्लट की लिखी हुई है । ये कश्मीर के राजा अवन्तिवर्मा के समकालीन हैं । अवन्तिवर्मा का समय राज तरंङ्गिणी के निर्देशानुसार सन् ८५५ ई० से ८८४ ई० तक विदित होता है । निदान भट्ट कल्लट ख्रीष्टीय नवीं सदी के पिछले भाग में वर्त्तमान माने जा सकतें हैं । इनके पुत्र का नाम मुकुल था जो प्रसिद्ध आलंकारिक थे । इन का मत शैव था । कुछ लोगों ने इनका समय सन ८५० ई० से ले के सन् ८७८ ई० तक अनुमान किया है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार और समय के परिवर्तन का परिणाम।

अनित्य और परिवर्त्तन शील इस संसार और समय दोनों का कुछ ऐसा अभिन्न सम्बन्ध है कि बड़े २ बुद्धिमान् मनीषी और दार्श-निकों ने भी इन दोनों की टटोल में बहुत कुछ दिमाग लड़ाया पर दोनों की अनन्त शक्ति का पार न पा सके। इन दोनों की कुछ अद्भुत लीला देखने में आती है जिनकी लोकोत्तर करतूत का एक दो नहीं सैकड़ों और हज़ारों उदाहरण ऐसे पाये जाते हैं जिन पर खयाल दौड़ाने से आदमी की अकिल हैरत में आ जाती है। वह मनुष्य जो आज मखमल के गद्दों से सुशोभित पयः फेन निभा सैया पर सोता है वही कल काठ की चिता पर अपने आत्मीय वर्ग बन्धु वान्धवों से सुलाया जाता है। जिन्हों ने कभी पृथ्वी पर पांव न रक्खा होगा वेही इन दोनों की परिवर्त्तन शीलता के चक्कर में पड़ ऊंचे नीचे पहाड़ और बनस्थली को नांघते डाकते पग २ में कण्टकाबिद्ध हो थोड़ा चले और थक कर फिर बैठ जाते हैं। पांच सौ और हज़ार जिनके एक दिन के दस्तर-खान का खर्च था उन्हें तीन दिन की तिवासी सूखी रोटी भी दुर्लभ हो जाती है इत्यादि। संसार और समय इन दोनों के परिवर्त्तन का इस्से बढ़ कर दूसरा उदाहरण और क्या हो सक्ता है कि जपान जो ३६ वर्ष पहले यूरोप के देशों में एशिया का एक असभ्य देश समझा जाता था जिस्की सभ्यता का कहीं नाम मात्र को भी प्रकाश न था वही अब रूस ऐसे पराक्रमी से भयंकर संग्राम कर रहा है और ऋद्ध राज रूस को नीचा दिखला रहा है। तो निश्चय हुआ कि इन दोनों की परिवर्तन शीलता में क्या नहीं संभव है। महा कवि भवभूति ने भी इसी बात को पुष्ट किया है "कालोह्ययं निरवधि विर्पुलाच पृथ्वी" संसार और समय दोनों ऐसे परिवर्तन शील हैं तो क्या संभव नहीं कि कभी भारत भूमि के भी भाग जगैं और इसके वे दिन फिर लौट आवें। यद्यपि कहावत है "गया रोज़ फिर हाथ आता नहीं"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि यह प्रसिद्ध है कि सदा सब के दिन एक से नहीं बीतते जैसा "चक्रनेमिक्रमेण" सुखके बाद दुःख दुःखके बाद सुख का सिलसिला लगा रहता है वैसे ही मनुष्य जाति को कभी दूसरों पर साम्राज्य और कभी दूसरों की चाकरी करनी पड़ती है। यदि भिन्न २ समय तथा जाति के इतिहास ठीक हैं और संसार के नियमों में कुछ अन्तर नहीं पड़ गया तो फिर भी भारत सन्तान कभी एक दिन चेतैंगे और चाकरी छोड़ बराबरी का दावा करैंगे। यदि भारत के भाग्य में ऐसे परिवर्तन की आशा की जा सक्ती है तो प्रश्न यह उठता है कि किस बिधि ऐसे सोने के दिन आ सक्ते हैं॥

आज हमें यह हौसिला चर्राया है कि अपने पढ़ने वालों को इसका उत्तर अपनी क्षुद्र बुद्धि अनुसार दें। इस में सन्देह नहीं भारत का भाग्य इस समय ऐसा फूटा है और ऐसे २ रोग उसे ग्रसे हुये हैं कि जिस्से वह विद्या विमुख साहस तथा उद्यम हीन और बल पराक्रम क्षीण हो चारो ओर से दैवी तथा मानुषी विपत्तियों की आंधी से घिरा हुआ अपने को पाता है और पिंजड़े में बन्द पखेरू सा फड़फड़ा रहा है कि किस भांत इस तमः पुंज आंधी के पार हो फिर सूर्य की किरनों की झलक हम पर पड़े। यदि जाति भय छोड़ बन्धु बान्धवों का स्नेह तोड़ जरमनी जपान आदि देशों में जाय कुछ Industry शिल्प या विज्ञान सम्बन्धी कोई बात सीख आते हैं तो Foreign competition विदेशियों की प्रतिस्पर्द्धा के कारण सफलता प्राप्त करना अति कठिन होता है। यदि चाहैं कि इङ्गलैंड जाकर C.S. पास कर आवें तो रंग गोरा न होने से किसी विरले ही का भाग्योदय होता है। जो चाहैं कि जन्म भूमि से सम्बन्ध तोड़ किसी दूसरी भूमि को जाके अपनावें तो कलोनियल गवर्नमेंट स्वीकार न करेगी तथा उस देशके नियम अनुसार दुःखही उठाना पड़ेगा। इन सब बातों का विचार करने से निश्चय होता है कि देश तथा जाति की उन्नति अपनी ही जाति तथा देश में रहने से हो सक्ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरिका जो इस समय संसारमें सब प्रताप शालिनी शक्तियों में प्रधान समझा जाता है जब तक इगलैण्ड पर भरोसा किये था अपनी तरक्की न कर सका किन्तु जिस दिन उसके बीर पुत्रोंने निश्चय कर लिया कि अपने देश की उन्नति अपने ही किये होगी उसी दिन से उस की तरक्की के तारे चमकने लगे। तात्पर्य यह कि जब तक हिन्दुस्तान के लोग अपनी तरक्की के लिये विदेशियों का मुह जोहते रहेंगे तब तक कुछ न कर सकेंगे। जो हमें अपने देश का सच्चा प्रेम है तो अपनी मातृ भूमि के कल्याण के लिये दृढ़ चित हो खड़े हो जांय और दूसरों का आसरा परखना छोड़ दें। यहांके बड़ेसे बड़े धनी संपत्ति वाले क्षुद्रसे क्षुद्र विदेशी को जो हम से इतनी दूर सात समुद्र के पार वसते हैं अपना पूज्य न मानते होते उन से इतना न दबते होते और आपस में सहमत होते तो कभी सभव था कि गवर्नमेंट इन की सम्मति या राय की कदर न करती। माननीय महाराज सप्तम एडवर्ड जिन्हें हम अपना राजा माने बैठे है वे भी पार्लियामेंट महासभा के विचार के आधीन हैं वरन वास्तव में महाराज को कोई अधिकार नहीं है नाम मात्र के लिये राजा थाप दिये गये हैं। तो पार्लियामेंट को हम अपना राजा कहें सो भी नहीं कह सक्ते क्योंकि उस के दो दल हैं एक लिबरल दूसरा कनसरवेटिव दोनों बहुधा एक दूसरे की बात काटा करते हैं और जिस दल की वोट अधिक आई उसी के हाथ में राज की डोरी थमा दीजाती है उन्में भी एक कौंसिल रहती है भारत का भाग्य एक प्रकार इसी कौंसिल के हाथ में रहता है जिसे इंडिया कौंसिल कहते हैं। जैसा और सब कौंसिल और सभाओं का क्रम होता है कि नाम तो सभा का किन्तु काम सब सेक्रेटरी करता है वैसाही यहां भी है। इन सेक्रेटरी महोदय को सेक्रेटरी अफ स्टेट फार इंडिया कहते हैं। ये जो चाहैं सो कर सक्ते हैं और भारत से हज़ारों कोस पर बैठे रहते हैं। इन का काम भारत में वाइसराय साहब जैसा चाहते हैं वैसा करते हैं। आज करह वइसराय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद पर लार्डकर्ज़न महोदय हैं जिन्होंने यह प्रत्यक्ष कर दिखा दिया कि ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर। आप की इच्छा हुई बंगाल प्रान्त के दो टुकड़े कर डालें। यह उनकी इच्छा जब बंगाल के निवासियोंको प्रकट हुई तो उन लोगों ने बड़ा आन्दोलन मचाया किन्तु लार्ड कर्ज़न महोदय ने कहा कि बंगाली जाति मात्र अपनी भलाई नहीं समझने यदि कोई समझता है तो गवर्नमेंट के कर्मचारी इस्से बंगालके दो टुकड़े करने की आज्ञा सेक्रटरी अफ़ स्टेट से मंगा लिया और संभव है बहुत जल्द इसे कर डालते लाचारी कि अब उनको इस्तीफा देना पड़ा। बंगाली मात्र इस्पर बड़ा आन्दोलन मचा रहे हैं बड़े २ राजा महाराजा ज़िमीदार इस विचार के विरुद्ध अपनी संमति बड़ी २ सभाओं के द्वारा प्रकाश कर रहे हैं किन्तु नक्कार खाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है। भाइयो नेक विचारो तो यदि ऐसा नाशकारी प्रस्ताव इंगलैंड में प्रइम मिनिष्टर या किसी दूसरे ने किया होता तो क्या फल होता। इंगलैंड की तो बात ही निराली है गये बीते अयरलैंड या किसी दूसरी ब्रिटिशकालोनी में ऐसा प्रस्ताव किया जाता तो संभव नहीं था कि वहां की प्रजा इसे मान लेती और बिना प्रजा के सहमत हुये ऐसा प्रस्ताव कभी न प्रवर्तित किया जाता किन्तु हिन्दुस्तान की बात ही दूसरी है जैसा हांथी के दांत दिखाने के और खाने के और होते हैं यहां वालों से कहा कुछ जाता है और किया कुछ और ही। ब्रिटिश जाति की न्याय परता और सच्चाई पर ध्यान देने से आशा होती कि जल्द यह अन्याय उठा दिया जाय किन्तु जब तक हम लोग स्वयं इसका यत्न न करेंगे तब तक ऐसा कभी होना नहीं है। इसी से हम कहते हैं कि हे देश के सच्चे प्रेमियो अपनी मातृ भूमि के उद्धार के लिये दृढ चित्त हो खड़े हो जाओ विदेशियों का मुह ताकना छोड़ दो। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम गवर्नमेंट के प्रतिपक्षी हो जांय किन्तु अपने कामों के देखने भालने में बुद्धि के खरच करने की कादरता को छोड़ दें यदि आवश्यक हो तो अपने हक्क के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासिल करने में सर्कार से भी लड़ें किन्तु याद रहे यह लड़ाई बुद्धि से लड़ी जाती है। इस बुद्धि की लड़ाई में विद्या की अधिक आवश्यकता है तो हम सबों को उचित है कि सब के पहिले अपना ध्यान और समय विद्या के बढ़ाने और बुद्धि के सुधारने में देवैं तो निश्चय है जैसा हम ऊपर कह आये हैं कि समय परिवर्त्तन शील है जिस समय ने हमें उन्नति के शिखर से उतार इस गिरी दशा में गेर दिया वही समय परिवर्तित हो फिर हमें पहिली दशा में पहुंचा सक्ता है।

M. S.

मलिका ज़मानी।

पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी लिखित।

मलिका ज़मानी लखनऊ के बादशाह नसीरूद्दीन हैदर की बेगम थी। उस्का चरित अति ही विलक्षण है। यह एक कुरमी की लड़की थी जो पहिले रोटियों को भी मुहताज थी पर पीछे उस्की किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि वह बादशाह की बेगम हो गई। इस्से यह भी स्पष्ट है कि यहां के बादशाह और वज़ीर वगैरह जात पांत की कुछ परवाह न करते थे रूप पर मोहित हो वे जिस्को चाहते थे अपने महलों में रख लेते थे कुल के ऊंच नीच होने का उन्हें तनिक भी खयाल न था। खैराबाद के पास किसी गांवमें एक कुरमी रहता था जो बहुत गरीब था उसने अपने पड़ोसी फतेहमुराद नामक एक मुसल्मान से ६० रुपये उधार लिये कुछ दिन बाद वह मरगया अपनी विधवा स्त्री और दुलारी नाम की एक लड़की छोड़ गया। दुलारी की उमर उस समय ५ वर्ष की थी। फतेहमुराद ने उन दोनों को पकड़ अपने घर में बन्द कर दिया और कहा कि जब तक मेरे रुपये न मिलैंगे मैं न छोडूंगा। जब रुपये का कोई प्रबन्ध न हो सका तब दुलारी की मा दुलारी को ज़मानत के तौर पर फतेहमुराद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के यहां रखने पर राज़ी हुई। इसपर फतेहमुराद ने दुलारी की मा को छोड़ दिया। दुलारी बहुत होनहार लड़की थी इससे फतेहमुराद की बहिन करीमुन्निसा ने उसे गोद ले लिया और अपनी निज की लड़की की भांत उसे पाला पोखा। फतेहमुराद ने दो शादियां की थी उसकी दूसरी स्त्री पुनर्भू थी जिस को पहिले पति से एक लड़का था नाम उसका रुस्तम था और वह भी फतेहमुराद के यहां रहता था। जब दुलारी जवान हुई तो उससे और रुस्तम से मैत्री हो गई यह देख करीमुन्निसा ने उन दोनों की शादी करदी। कुछ दिन बाद फतेहमुराद मर गया तब फतेहमुराद की पहिले स्त्री ने उसकी दूसरी स्त्री को निकाल दिया साथ ही रुस्तम और दुलारी को भी निकाल दिया। फतेहमुराद से उस दूसरी स्त्री के भी दो लड़के थे फतेहअली और वारिसअली उन को भी फतेहमुराद की पहली स्त्री ने घर से निकाल दिया। ये सब लोग लखनऊ के पास रुस्तम नगर आये वहां फतेह मुराद की चाची रहती थी वह खूब पढ़ी लिखी थी और नौवाब मुहब्बत खां के यहां उसकी लड़कियों को कुरान पढ़ाती थी उसी के घर में ये लोग जा टिके। फतेहमुराद की चाची ने देखा कि दुलारी का प्रेम अपने पति रुस्तम पर कम है उसके चाल चलन पर उसे सन्देह हुआ इस लिये उस ने दुलारी को नौवाब के यहां आने से रोक दिया पर उसके और रुस्तम के खाने कपड़े का सब प्रबन्ध कर दिया। रुस्तम कुछ दिन बाद अब्बास कुलीवेग नामक एक सवार के घोड़े की साईसी करने पर नौकर हो गया दुलारी के पहले एक लड़का हुआ फिर एक लड़की। रुस्तम नगर में उससे एक लुहार और एक फीलवान से दोस्ती हो गई थी इस लिये यह नहीं कहा जा सक्ता कि दुलारी का लड़का महम्मद अली और लड़की जीनतुन्निसा की सूरत शकल रुस्तम से अधिक मिलती थी या उस फीलवान से या उस लुहार से। हां एक बात निःसन्देह थी कि दुलारी का चाल चलन अच्छा न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी समय शाहज़ादा नसीरुद्दीन हैदर के मुन्नाजान नामक एक लड़का हुआ उसके लिये एक धाय की ज़रूरत हुई। इस कामके लिये कुछ शाही आदमी फतेहमुराद के चाची के पास आये और उस से कहा कि वह किसी अच्छी धाय का पता बतलावै। फतेहमुराद की चाची की बड़ी इज़्ज़त थी। वह एक विदुषी स्त्री थी। उस ने उन लोगों से दुलारी की सिफ़ारिश की! दुलारी को लड़की हुये उस समय डेढ़ वर्ष हुए थे। धाय की जगह के लिये और भी कई एक स्त्रियां शाही महल भेजी गईं। पर दुलारी का रूप रंग बादशाह बेगम को बहुत पसन्द आया। हकीमों ने उस के दूध की परीक्षा की और उसे बहुत अच्छा बतलाया। अतएव दुलारी मुन्नाजान को दूध पिलाने पर नौकर होगई।

उस समय तक मुन्नाजान के पिता नसीरुद्दीन हैदर को लखनऊ का सिंहासन नहीं मिला था। उनका पिता जीवित था एक दिन नसीरुद्दीन हैदर ने दुलारी को देखा। देखते ही वह उसके कटाक्ष जाल में फंस गया। दुलारी बहुत सादी पोशाक में रहती थी और लोग उसे विशेष रूपवती भी न समझते थे। पर नसीरुद्दीन हैदर उसे देखते ही मोहित होगये। यह देखकर बादशाह और बेगम को आश्चर्य हुआ। नसीरुद्दीन हैदर की बेकली यहां तक बढ़ी कि जब तक उसने पिता से दुलारी के साथ शादी करने की आज्ञा न ले ली तब तक उस ने खाना पीना प्रायः छोड़ ही दिया। १८२६ ईसवी में दुलारी नसीरुद्दीन हैदर की बेगम बनी और थोड़े ही दिनों में उस ने नसीरुद्दीन हैदर को अपने वश में कर लिया। अब उसने चाहा कि कुछ ऐसे आदमियों को अपने पास रक्खें जिन पर वह विश्वास कर सके इस लिये उस ने फतेहमुराद की चाची, उस की बेटी जमालुन्निसा, और उस के बेटे कासिम वेग को महलों में बुलाकर अच्छी अच्छी जगहें दिलाईं। फतेहमुराद की दूसरी स्त्री के दो बेटे फतेह अली और वारिस अली को भी उस ने बुलाया और बादशाह को सुझाया कि ये लोग बहुत बड़े खान्दान के हैं। वि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्ति के कारण ये छोटे २ काम करने को विवश हुए हैं। बादशाह ने इस बात को सच मान लिया और उन दोनों को फौरन ही नौवाव बना दिया। उन को बड़े २ अधिकार दिये गये और एक दिन में वे फकीर से अमीर हो गये। फतेहमुराद की बहन करामुन्निसा को भी दुलारी ने अपने पास बुला लिया। पर जब दुलारी का पहला पति बेचारा रुस्तम कोई अच्छी जगह पाने की कोशिश करने लगा तब वह पकड़ कर कैद कर लिया गया। जब तक नसीरुद्दीन हैदर की मृत्यु नहीं हुई तब तक वह कैद रहा।

२८ आक्तोबर १८२७ को गाज़िउद्दीन हैदर की मृत्यु हुई और नसीरुद्दीन को लखनऊ की बादशाहत या विज़ारत का आसन मिला। फिर क्या था, फिर तो दुलारी ने और भी अपनी प्रभुता बढ़ाई। उस ने अपने बेटे महम्मद अली की शादी नसीरुद्दीन के चचा रुक्नुद्दौला की बेटी के साथ करदी और अपनी बेटी जीनतुन्निसा की शादी उस ने शाही घराने के एक प्रसिद्ध पुरुष मुमताजुद्दौला से कर दी। इन शादियों में कोई ३० लाख रुपये खर्च हुए तब से दुलारी नसीरुद्दीन की सब से बड़ी बेगम हुई। उस का नाम हुआ "मलिका ज़मानी" उस के लिये ६ लाख रुपये साल की मालगुज़ारी का एक तअल्लुका अलग कर दिया गया। कुरमी की लड़की दुलरिया को इतने में भी सन्तोष नहीं हुआ। उस ने बादशाह से कहा कि तुम मेरे बेटे महम्मद अली को अपना बेटा और सब से बड़ा मान लो। और गवर्नमेंट को भी इस की इत्तिला कर दो जिस में तुम्हारे बाद इसी को तख्त मिले। महम्मद अली किस का बेटा था इस का ज़िक्र ऊपर हो चुका है इस हुकुम को सर आंखों से माना और कई मौकों पर रेज़िडेण्ट साहब को विश्वास दिलाया कि महम्मद अली मेरा ही औरस पुत्र है यदि ऐसा न होता तो रुक्नुद्दौला उसे अपनी बेटी क्यों देते और मैं उस की शादी क्यों करता। रेज़िडेण्ट ने कहा लोगों का ख़याल है कि आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूलते हैं। मुन्नाजान आप ही का पुत्र है और वही सब से बड़ा है। इस लिये वही गद्दी का मालिक है। यह सुन कर नसीरुद्दीन हैदर ने फरमाया कि मुन्नाजान के पैदा होने के दो वर्ष पहलेही से मैंने मुन्नाजान की मा, बादशाह बेगम से मिलना छोड़ दिया था। कुछ दिन बाद नसीरुद्दीन ने अपने हाथ से एक पत्र गवर्नर जनरल को लिखा कि मुन्नाजान मेरा बेटा नहीं। मेरा बेटा महम्मद अली है। वही तख्त का वारिस है। इतनाही नहीं किन्तु १८२७ ईसवी में जब गवर्नर जेनरल लखनऊ आये तब पेशवाई के लिये महम्मद अली ही कानपुर भेजा गया।

जब नसीरुद्दीन हैदर की मृत्यु हुई तब तख्त के लिये बड़ा फसाद हुआ। पादशाह बेगम ने अपने बेटे मुन्नाजान को तख्त पर बैठाया पर नसीरुद्दीन की बात पर विश्वास कर के अंगरेज़ों ने महम्मद अली का पक्ष लिया। बहुत खून खराबा होने के बाद मुन्नाजान और उस की मा चुनार में कैद किये गये और महम्मद अली को गद्दी मिली। एक तुच्छ कुरमी की दुःशीला लड़की दुलारी की सब इच्छाएं पूरी हो गईं। बरन खुद बादशाह की सब से बड़ी बेगम हो गई। अपने बेटे को उस ने बादशाह बना दिया और अपने कुटुम्बियों को अच्छे अच्छे ओहदों पर पहुंचा दिया। दुलारी के चरित्र से यह भी सिद्ध हुआ कि लखनऊ के बादशाह कितने स्त्रैण थे। बेगमों के दबाव में पड़ वे क्या २ कर डालते थे और सन्य का वे कहां तक प्यार करते थे। स्त्री के कहने से अपने बेटे को दूसरे का बताना और दूसरे के बेटे को अपना कहना स्त्रीजित हो जाने की पराकाष्ठा है। हिन्दुस्तान में इस तरह के जोरू के गुलाम न जानिये कितने पड़े हैं बरन घर २ ऐसे दो एक पाये जाते हैं।

व्यापारान्तरमुत्सृज्य वीक्षमाणो वधूमुखम्।
यो गृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं सब कारणों से लखनऊ की इतनी बड़ी रियासत खाक में मिल गई और उन को उदाहरण में रख कितने और घराने उन्हीं के समान नष्ट हो गये। इसमें सन्देह नहीं मुसल्मान शासनकर्ताओं का बड़ा असर हमारी हिन्दू जाति पर पड़ा मुसल्मानों के यावत् दुर्गुण इनमें आ गये। अपनी पहले की ज़र्रारी तर्रारी सब भूल भोग बिलासी हो गये और मुसल्मानों की सी ज़ाहिरदारी सीख किसी काम ही के न रहे।

संपादकीय ऊहा पोह।

लार्ड कर्ज़न महोदय ने अपने काम से इस्तीफा दे दिया। सुनते हैं इन की जगह लार्डमिन्टो बड़े लाट होंगे। कर्ज़न साहब ने जो इस्तीफा दिया उसका भीतरी कारण जो कुछ हो पर हम लोगों की मोटी अकिल में आता है कि इस इस्तीफे का कारण लार्ड किचनर से इन का विरोध है। यदि ऐसा है तो यह आपस की फूट ब्रिटिश शासन के लिये हानिकारक है। हिन्दुस्तान के सत्यानाश का मूल कारण यह आपस की फूट ही तो हुई है अब वही फूट ने बिलाइत में भी पग पसारना आरम्भ किया सच है।"काजल की कोठरी में कैसेहू सयाना जाय एक दाग काजर का लागिहै पर लागिहै" यहांके जलवायु ने पहले हिन्दुओं ही को लूला लंगड़ा कर डाला उपरान्त मुसल्मानों को अपना साथी बनाया अब ब्रिटिश जाति पर उसने दांत लगाया है ईश्वरही कुशल करे॥

पहेली।

(१) अपना पूछत हूं मैं नाम। सो कहिये हे मीत सुजान॥
कहता हूं मैं अपना हाल। हैं सीता का मैं रखवार॥
(२) दुनिया में मैं चलती हूं। अन्न उदर में भरती हूं॥
पै कछु नाहीं जानौ स्वाद। लट्ठा गड़ा हमारे माथ॥

R A.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि पञ्चक ।

संस्कृत के सुप्रसिद्ध ५ कवि कालिदास, भवभूति, बाण, दण्डी, और सुबन्धु इन पांचो कवियों का जीवन चरित्र और उनके काव्यों पर समालोचना CRITICISM बड़े अच्छे ढंग पर इस में की गई है-पुस्तक यह मराठी से अनुवाद की गई है-भाषा इसकी अत्यन्त क्लिष्ट न होकर कुछ सहज सर्व साधारण के समझने योग्य होती तो क्याही अच्छा होता। जयपुर निवासी हिन्दी के एक मात्र हितैषी और प्रेमी मिस्टर जैन वैद्य ने यह पुस्तक हमे समर्पण किया जिसका उन्हे अनेक धन्यवाद है मूल्य ।॥) है-

---

THE THREE DIFFERENT ASPECT OF KRISHN.

कृष्ण भगवान के ३ जुदे २ आकार में ग्रहण ।

पूर्ण पुरषोत्तम सच्चिदानन्द परमात्मा भगवान् कृष्णचन्द्र के यद्यपि अनेक नाम रूप गिनाये गये हैं "अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे" किन्तु ३ मुख्य आकार उन के इस समय ग्रहण किये जाते हैं महाविलासी, महानीतिज्ञ, और महा योगीश्वर। कृष्ण भगवान् की अद्भुत महिमा का पार न पाने वाले अपनी बुद्धि की गुरुता के घमण्ड में फूले हुये चट्ट कह बैठते हैं यह क्यों कर संभव है कि सम्पूर्ण वेदान्त फिलासोफी और यावत् उपनिषदों का सार भूत गीता के ज्ञान का उपदेशक जो माना जाय उसके बालकपन और जवानी के चरित्र इतने कलुषित मलिन और घिनौने हों। अचरज होता है कि उसे हम "चौरजार शिखामणि" कहते ज़रा भी न शर्मांय वल्कि उस्की योगीश्वरता का महत्व इसे मानै।

सच है—पहिले इसके कि हम आगे बढ़ैं और इस विषय पर कुछ कहने की हिम्मत करैं इतना सूचित कर देना अति आवश्यक होगा कि इस्का भेद यदि हम खोल सक्के और अगम अपार उस्के लीला ताण्डव की उलझी गांठ को सुरझा लेते तो वह अगम्य अगोचर सर्वातीत क्यों कहलाता। उस्के चरित्र में इसी तरह की न जानिये कितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेढ़ी मेढ़ी बातों ही से तो उसकी ईश्वरता और सर्व शक्तिमत्ता सिद्ध होती है। गीता में श्री मुख वाक्य है "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्"। जो मुझ को जिस भावना से समझता है मै उसको उसी भावना के आकार में ही उसको ग्रहण करता हूं। हमारे यहां इस बात की बड़ी फिकिर की गई है कि प्रजा नास्तिक न होने पावे जो जिस झुकावट की ओर जैसी चित्तवृत्ति का होता था उसके लिये वैसीही कल्पना कर दी जाती थी जिसमें उसके विश्वास और श्रद्धा में कहीं पर से हेटा-पन न आने पावे। पूर्ण ज्ञानी निर्दोष चरित्र वाले तो संसार में बहुत थोड़े हैं तो क्या उन्ही थोड़ों की सद्गति और मुक्ति होगी बाकी और सब लोग नरक की आग में पड़े झुलसा करेंगे? कभी हो नहीं सक्ता कि एक मनुष्य जो सर्वथा अकुटिल भाव सरल चित्त और ईश्वर में निष्ठा रखने वाला है पर वेदान्त के ज्ञान से वहिर्मूर्ख है वह सद्गति न पावे। कृष्ण भगवान् की बाल पौगण्ड कैशोर तथा तारुण्य लीला का स्मरण मनन ध्यान और अभिनय इसलिये है कि ऐसी जन बिना रूखे वेदान्त के उसे पा जांय। इन भक्तों की कोटि में तो ऐसे भी हो गये हैं जिन्हों ने मुक्ति को ठोकरों मार अलग किया और अपने प्रभु के प्रेम और अनुराग में सदा मग्न रहे। शृङ्गार और प्रेम के तो महा प्रभु कृष्ण भगवान् रूप थे। वे ऐसी २ लीलायें न कर गये होते तो शृङ्गार वात्सल्य और प्रेम इन सबों को सहारा कहां मिलता। हमारे प्राचीनों का खयाल कि प्रजा नास्तिक न होने पावे बहुत ही प्रशंशनीय था। इस समय अंग-रेज़ी शिक्षा बिना किसी धर्म के सहारे फैलाई गई उसका क्या परिणाम हुआ कि सुपठितों की संख्या इस समय देश में करोड़ों की होगी पर उस से क्या भलाई हो रही है। इसलिये कि उनमें ईश्वर का भय या उसकी दया आदि भाव तो हई नहीं तब क्यों वे कोई ऐसे काम में लगें जिसका फल कुछ अदृष्ट है। कृष्ण भगवान् की विलासिकता के सम्बन्ध में अभी बहुत कहना है पर स्थानाभाव से आगे के लिये छोड़ रखते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचिन्तितानि दुःखानि यथैवायान्ति देहिनाम् ।
सुखान्यपि तथा मन्ये दैव मत्रातिरिच्यते ॥ ५९ ॥

हितोपदेश—

जिसका पहिले कभी कुछ खयाल न था ऐसा दुःख अकस्मात् आ पड़ता है वैसा ही सुख भी अकस्मात् आ जाता है तो निश्चय हुआ कि सुख दुख में दैव ही कारण है—

अचिराधिष्ठित राज्यः शत्रुः प्रकृतिष्वरूढमूलत्वात् ।
नव संरोहणशिथिलस्तरुरिवसुकरः समुद्धर्तुम् ॥६०॥

शत्रु जो थोड़े दिनों से देश को अपने अधिकार में लाया है और प्रजा के बीच उसका इन्तिज़ाम या हेल मेल दृढ़ मूल नहीं हुआ उसका उखाड़ देना वैसा ही सहज है जैसा नये पौधे को उखाड़ डालना सहज है जो एक स्थान से उखाड़ दूसरे स्थान में लगाया गया है तब कुछ समय तक उसकी जड़ ढीली रहती है—

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च ।
स्वं कालं नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुरष्कृतम् ॥६१॥

म–भा—

बिना किसी की प्रेरणा के जैसा फूल या फल वृक्ष में ऋतु आने पर लग जाते हैं वैसा ही पहिले किये हुए कर्म के फल भी आप से आप उपस्थित होते हैं—

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥ ६२ ॥

हितोपदेश—

न कभी बूढ़ा हूंगा न मरूंगा यह समझ विद्या और धन संचय करै । मृत्यु बालों को पकड़े है पटका चाहती है ऐसा सोच धर्म करै—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः ।
सकृद्दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदे पदे ॥ ६३ ॥

नहीं हुआ होके मर गया और मूर्ख इन तीनों में पहिले दो अच्छे इसलिये कि वे दोनों एक बार दुख देते हैं पर मूर्ख पग पग में दुखदायी है—

अजाधूलिरिवत्रस्तैमार्जनीरेणुवज्जनैः ।
दीपखट्वोत्थछायेव त्यज्यते निर्द्धनो जनः ॥ ६४ ॥

जैसा बकरियों के पांव की धूलि को बढ़नी के बटोरने की खाक को; दीप और खटिया की छाया को; मनहूस समझ लोग बरकाते हैं वैसा ही धनहीन को भी—

अजानता भवेत्कश्चिदपराधः कृतो यदि ।
क्षन्तव्यमेव तस्याहुः सुपरीक्ष्यपरीक्षया ॥ ६५ ॥

जिस किसी से कोई अपराध बिना जाने बन पड़ा हो तो भली भांति परीक्षा के उपरान्त उसका वह कुसूर माफ करने लायक है—

अजानतोहठात्कुर्वन्प्राज्ञमानी विनश्यति ।

क-स-सा-

जो अपने को बुद्धिमान् समझ हठ में आय कोई काम कर डालता है उसका विनाश होता है—

अजानन्दाहार्तिं पतति शलभो दीप दहने
समीनो ऽप्यज्ञानाद्बडिशयुतमश्नाति पिशितम् ।
विजानन्तोप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान्न
मुञ्चामः कामानहह गहनो मोहमहिमा ॥ ६६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप शिखा में फतींगा (शलभ) बिना जाने अज्ञान से आ गिरता है और मर जाता है; मछली भी अज्ञान से कटिया में लगी हुई मांस के लोभ से जा फंस जाती है और मारी जाती है; हम लोग जो अपने को ज्ञानवान् मानते हैं जान बूझ कर भी संसार के इस जटिल विपुल जाल में फंसे हुये हैं और उससे अपना छुटकारा नहीं चाहते अचरज होता है कि इस गझिन मोह जाल की कैसी अद्भुत महिमा है ॥

अजायुद्धमृषिश्राद्धं प्रभाते मेघडम्बरे ।
दम्पत्योः कलहे चैव बह्वारंभे लघु क्रिया ॥ ६७ ॥

बकरियों की लड़ाई, बालू का पिण्ड दान, सबेरे का मेंघाडम्बर, स्त्री पुरुष की कलह, इन सबों का आरंभ बड़े धूम धाम का होता है पर अन्त में टांय टांय फिस ॥

अजारजः खररजस्तथा संमार्जनीरजः ।
दीपमञ्चकयोच्छाया शक्रस्यापि श्रियंहरेत् ॥

बकरी के झुण्ड की रज गदहे के पांव की धूर बढ़नी के बटोरने की रज दीपक के प्रकाश में खटिया की छाया इन्द्र की भी लक्ष्मी हर लेता है तब मनुष्य का क्या कहना है ।

अजाश्वयोर्मुखं मेध्यं गावो मेध्यास्तु पृष्ठतः ।
ब्राह्मणाः पादतो मेध्याः स्त्रियो मेध्याश्च सर्वतः ॥६८॥

बकरी और घोड़े का मुख पवित्र है गऊ का पृष्ठ भाग पवित्र है ब्राह्मणों का पांव पवित्र है स्त्रियां सब ठौर पवित्र हैं ।

अजितो मनसि विधेयस्ततोनयः स्याज्जयश्च सखे।
आज्ञायितत्व मिहचेद्भवतो दितमेव बुद्धिसौभाग्यम् ६९

यह एक कूट है वैयाकरणियों के लिये बहुत अच्छा चुहल है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्णं तपसः क्रोधो ज्ञानाजीर्णमहंकृतिः ।
परनिन्दा क्रियाजीर्णमन्नाजीर्णं विसूचिका ॥ ७० ॥

तपस्या का अजीर्ण क्रोध है ज्ञान का अजीर्ण अहंकार है काम का अजीरन चारो ओर निन्दा होना है अन्न का अजीरन विसूचिका (हैज़ा) है।

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषापहम् ॥७१॥

अजीर्ण में जल एक दवा है अन्न के पच जाने पर बल को बढ़ाता है भोजन के बीच वार २ जल पान अमृत का गुण पैदा करता है भोजन के अन्त में जल पान विष को नाश करता है।

अजीर्णे पथ्यमप्यन्नं व्याधये मरणाय वा ।

अजीरन में पथ्य भोजन भी रोग पैदा कारता है या रोग का कारण है।

अजीर्णे भोजनं विषम् ।

अजीरन में भोजन विष है।

अज्ञं कृतघ्नमकृतव्रतदान यज्ञं
सत्संगशीलनविहीनमतीव दीनम् ।
त्वन्नामकाममनसं त्वदनन्यवृत्तिं
चेन्मां जहासि रघुनायक हा हतोस्मि॥७२॥

गुमानी कवि ।

मूर्ख और किये उपकार को भूल जाने वाला हूं न कभी कोई व्रत किया, न दान दिया, न यज्ञ किया, न सत्संग का सुख कभी उठाया, अति दीन हूं, केवल आप का नाम जपने की कामना मन में रहती है तुझे छोड़ दूसरे किसी को जानता भी नहीं इस दशा में हे रघुनाथ यदि आप मुझे छोड़ते हैं तो हाय मैं सब ओर से गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७
सं० १०

प्रयाग

अक्टूबर
सन् १६०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७
सं० १०

प्रयाग

अक्तूबर,
सन् १९०५ ई०

BOY COTTING AGITATION

विदेशी वस्तुओं के त्यागने का आन्दोलन।

चाहो कोई कितना ही लार्ड कर्ज़न साहब की निन्दा करे पर हम तो उन्हे हिन्दुस्तान का बड़ा उपकारी कहेंगे। कर्ज़न साहब जो इतना न खुल पड़ते और पल्ले दरजे की आज़ादी काम मे लाय बंगाल को दो टुकड़े मे विभाग करने की scheme युक्ति न सोचते तो काहे को वंग देशियों में इतना आन्दोलन मचता। अस्तु शत्रु मुख मित्र होना इसी को कहेंगे कर्ज़न साहब हमारी बुराई चाहते भी बड़ी भलाई कर गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यह बहुत अच्छी है वंगालियों में यदि यही जोश कायम रहा तो विलाइत की बनी चीज़ों का बर्ताव हम लोगों में बहुत कम हो जायगा और हिन्दुस्तान के इतिहास में इस घटना के कारण कर्ज़न महोदय का नाम चिरस्थायी रहेगा। हमारे पण्डित लोग अपनी पोथियों में विदेशी वस्तुओं का बर्तना पाप लिख देते और कथक्कड़ व्यास कथाओं में स्त्रियों को यह सुनाया करते तो बड़ा उपकार होता। सहस्र बार के आन्दोलन में भी उतना फल न फलेगा जितना सरल चित्त वाली हमारी ललना जन के चित्त में यह बैठ जाने से कि विलायत की बनी चीज़ों को वर्तने में बड़ा पाप होता है। तात्पर्य यह कि देशी चीज़ों का वर्तना धर्म का एक अंग मान लिया जाय और सीधी सादी स्त्रियों को सुझा दिया जाय कि विलाइत के बने कपड़े पहिनोगी तो नरक में जाओगी जो जितना ही विदेशी वस्तु कम काम में लावेगी उस्के लिये उतनाही स्वर्ग में जाना सुलभ होगा ऐसा होने से देशी वस्तुओं का चलन सहज में हो सक्ता है सच पूछो तो देश में दरिद्र फैलने का विदेशी वस्तु का वर्ताव मुख्य कारण है देश के धन में मानो घुन सा लग गया है। एक अन्न मात्र जो पेट मे जाता है देश का है नहीं तो उठते बैठते चलते फिरते सोते जागते कहां तक कहैं स्वांस लेने तक में विदेशी वस्तुओं के विना एक क्षण भी नहीं चलता। लाचारी है कि यहां की मिट्टी ढोकर विलाइत नहीं ले जा सक्के न विलाइत का जल वायु यहां का सा कर सक्के हैं नहीं तो अन्न भी हमें विलाइत ही की उपज का खाने को मिलता। घर में चाहो गऊ बंधी हो पर हमारे नये सभ्यों की चाय स्विस मिल्क और वीट शुगर की चीनीं से ही तैयार की जाती है। परदे के भीतर जहां सूर्य और चन्द्रमा की भी सामर्थ्य नहीं कि अपना प्रकाश पहुंचा सकें। वहां भी विलाइत का शिल्प अपना प्रकाश फैलाये हुये है और फेशन की छिलावट का प्रभाव प्रगट हो रहा है। परम पवित्र स्थान देवमन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा धर्म कर्म एक भी न बच रहे जहां केवल स्वदेशी वस्तु का बर्ताव हो वरन विलाइत के महा म्लेच्छों के स्पर्श से दूषित वस्तुओं से वह स्थान दगीला न किया गया हो। विदेशी वस्तु के परतंत्र हो जाने की परा काष्ठा है कि ब्राह्मण लोगों का यज्ञोपवीत जो पवित्रता का ओर छोर है वह भी अब विलाइती सूत का बनाया जाता है हिन्दू के हाथ का काता सूत अब कहीं मयस्सर नहीं हैं पद्धतियों में जिसका बनाना केवल ब्राह्मणी के हाथ के काते सूत का लिखा है।

तैमूर नादिर चंगेज़ महमूद गज़नवी आदि हमला करने वाले समय २ देश को आक्रमण कर इस कदर नहीं लूटा था जैसा विलाइत की बनी चीज़ों से हमारा धन लुटा जाता है। ये नादिर आदि लुटेरे आये एक बार लूट पाट चले गये दो चार वर्ष उन के लूट का असर रहा थोड़े ही दिन बाद देश फिर अपनी पहिले की सी संपन्न दशा में आ गया। फेशन परस्ती के जाल में फंस हम सबों को विलाइत की नफ़ासत और चटकीला पन ने ऐसा मोहित कर रक्खा है कि हमारा क्या और क्यों सत्यानाश हो गया कभी एक बार भी हम लोगों ने न सोचा अंग विभाग की शुभ घड़ी न आती तो काहे को कभी चेतते।

"दो चग्घड़ों की बात चीत"।

किछ्छू चौबे–(लंबी २ मूछों पर ताव देकर) मुन्शी ! जी जैदाऊ जी की यमुना मइया सदा जै रक्खैं, कहो आज उदास कैसे बैठे हो?

मुंशी कमला प्रसाद–कुछ नहीं आओ चौबे जी, कहो आज कहां चले, आज तो बड़े खुश दिखाई पड़ते हो कहीं न्योंते में जाते हो क्या?

कि०–हम तो तुम्हारेई घर नेवते जेमने की आशा में आये हैं। हमने आज घाट पर यह ख़बर उड़ती भई सुनी कि थोड़े दिन बीते तुम्हारी नानी मरगई। सो या बात कूं ठीक करवेके तांई आये हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो तुम्हारी चेष्टा और मूछ मुड़ी देख कें निश्चय होगयो कि वो बात ठीक है।

क०—नहीं नहीं यह बात बिलकुल ग़लत है। हमारे दुश्मनों ने यह खबर उड़ाई होगी। इधर कई दिन से कुछ तबियत ढीली थी मकान से हवा खाने तक के वास्ते नहीं निकला। इसी सबब से चेहरा कुछ उतरा हुआ है। और कुछ नहीं।

कि०-(मुसकरा कर) क्यों उस्ताद, "गुरून से गुरुआई" हम से अब क्यों छिपाते हो, तुम जानते होगे कि हमें कछु ख़बर नहीं मिली, तुम तो हमारे जिजमान सूं हमारी बड़ी बड़ी बुराई कीनी और उलटी सीधी समझाय के अपनी बात बनानी चाही। पर याद रक्खो "जो काऊ के तांई कूआ खोदे है वाके लिये खांई पहले बनजाय है" क्यों है पते की कि नांय।

क०—(शरमा कर) चोबे जी! आज बूटी ज्यादः छनगई हो तो कुछ देर आराम कर लो जब जी सावधान हो जाय तब बातें करना।

कि०-हमारो जी तो श्री दाऊ जी की कृपा सूं हमेसा सावधान रहे है पर तुम्हे जो छै सात वर्ष से अक्कल को अजीर्ण ह्वै रह्यो है सो याको कछू यत्न करौ नाय तो अब जान जायवे को डर है।

क०—यह आप क्या बक रहे हैं; उजड्डई से आप बाज़ नहीं आते।

कि०-बाज तुम और तुम्हारे घर के, हम तौ आदमी हैं. सीधे से बोलनो होय तो बोलो हम तुम से कछु कम नाय हैं, जैसी इज़्ज़त तुम्हारी वैसी हमारी, धन दौलत तुम ने अपनी लुगाई की बदोलत पायो, हमारो बाप छोड़ गयो। तुम्हारी और हमारी दोनों की जीविका एकई घर सूं चले हैं, फिर तुम जबानी जमा खर्च से झूठी सांची कह के अपने मालिक कूं खुश करते हौ, हम अपनी जान हथेरी पर धरे जहां वाको पसीना गिरे वहां अपनो खून गिरायवे कूं तइ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यार हैं तुम कहो कछु और करो कछु, हम मर्द की जबान एक समझे हैं तुम अपनी ऐंठ में आय जिसकूं जो चाहें सो भला बुरा कह डालते हौ, सच्चे से सच्चे आदमियों कूं अपनी अकल के घमंड में झूठो दगाबाज़ फरेबी साबित कर डालो हो और अपने ऐब कूं नेक भी नांय देखो हो; हमें उन विचारेन पे दया आवे है तुम अपनी कलम दवात के ज़ोर में चूर हौ हम अपनी कूंडी सोटा पै पूरे बीर हैं। हां एक बात में हम तुम सूं जरूर कम हैं तुमारी लुगाई की बड़ाई देस देसान्तर में फैली है हमें लुगाइन सूं ऐसी घिन है कि व्याह तांई नाय कियो।

कि०-चौबे जी आज आप बड़ी बुजुर्गाना बातें करते हैं आप का हौसिला बहुत बढ़ा दिखाई पड़ता है, आज तक आप ने कभी मेरे साथ इस तरीके की बात चीत नहीं की थी, आप की बातों से तो कुछ और ही ज़ाहिर होता है।

कि०-सुनो मुन्सी। जब से तुम कूं हमारे भोले भाले जिजमान ने अपने इलाके को मुख़्त्यार कियो तब सूं तुम ने सिवाय खर्चा बढ़ायवे के कौन सो अच्छो काम कियो? तुमारे इन्तज़ाम सूं जमींदारन ने टाट उलट कर सब छोड़ छांड़ दियो। खेती करने वाले भूखे मरने लगे पटवारी अपनो अलग सिर पटके डारे हैं पर तुम जब कैफियत लिखवे बैठे हो तो झूठ मूठ यही लिखते हो कि हमारे गांव की प्रजा बड़े आनन्द सूं हैं और जो काऊ ने गलती निकासी तो वाय काऊ हेर फेर सूं जहन्नुम मिलवाय दियो। सब छोटे बड़े तुमारे मारे दुःखी हैं। फिर दुधार गाय की द्वै लातऊ सही जाय हैं सो तुम ने सबन कूं इतनो फजीहत कियो उनसूं मनमानतो रुपया भी लियो और ताऊ पर भी उनको पीठ पीछे गाली दिया। जो कभी वे बेचारे अपने रिस्तेदार या कुटुम्बी की शिफ़ारस करवे गये तो उन्हे फाटक बाहर सूं फटकार बताई और अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरादरी के लोगन कूं दीवान, मुसद्दी, भंडारी, मुंशी, बनाय, दियो। धन्य हो? लोगन को जैसे तुमने सुख दियो और आत्मा ठंडी कीनी वैसीई दाऊ बाबा तुमारी करैं।

क०--खैर लोगों के साथ हमने जैसा किया उस से आप को क्या ग़रज़ ज़मीदार वग़ैरः भूखे मरे इसमें हमारा क्या नुकसान या मालिक को क्या घाटा, इसकी हम कुछ परवाह नहीं करते भलाई बुराई जो हमारी तक़दीर में थी मिली। बहुत सी तदबीरें जो हमने लोगों की बेहतरी के लिये की उलटी पड़ीं या उनसे लोगों को नुकसान हुआ तो हम क्या करैं उन्हीं की बद नसीबी। एक बड़ा जलसा कर डाला या यों कहिये कि वग़ैर दूलह के बरात निकाली जिसमें लाखों रुपये की आतश बाज़ी फूंक दी अपने इलाक़े के एक कोने से दूसरे कोने तक के सब बड़े आदमियों को बुलाया और बड़ी धूम धाम की तो इस में हमारा या हमारे मालिक का नुकसान ही क्या हुआ। बेवकूफ बने वही जो करज़ा कर के तमाशे में शामिल हुये। आप खूब जानिये कि इसमें भी मैंने बहुत बड़ी चाल खेली थी और जो जो मैं जानना चाहता था जान गया। ऐसी बातें आप की ऐसी मोटी अक़ल के आदमियों की समझ में इसकी वारीकियां नहीं आसकतीं। और मैं इन सब बातों का ज़िक्र करना भी उसूल के खिलाफ़ समझताहूं। खैर जाने दो। मगर यह बतलाओ कि तुम अपनेही हो कर क्यों विगड़ गये।

कि०--याही पै कि तुमने अपनी अक्कल के जोम में आके मेरी वातन को और की तौर झूठो सांचो मतलब समझ लियो और वाय अपनेई तक नांय मालिक तांईं भेज दियो। पर याद राखो हम भी तुमारे गुरु। चौवे जी - ठहरे। हमने भी एक दांव आजई के लियें वचाय राखो हो जासूं तुमें चारो खाने चित्त पछाड़ दियो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क०--हां में ख़ूब जानता हूं कि आपने वाला वाला कारवाई मेरे खिलाफ़ खास मालिक से की थी। मगर आप खूब समझिये कि मैंने आप की बातों से वही मतलब निकाला जो आप की मंशा थी अब आप किसी के बहकाये में आगये हो यह दूसरी बात है। खैर जब मेरी बात का कुछ ख़्याल नहीं हुआ तो मैं भी ऐसी नोकरी में दो लात मार कर अपने वतन को चल देता हूं मैंने जो मालिक के वास्ते भलाइयां की वह उनका जी जानता होगा। मगर मेरी बात का कुछ ख़्याल न हुआ इस से मुझे ऐसा रंज है जैसा कि उस शख्श को होता है जिसके सब घर के प्लेग के सुपुर्द हो जायें। मेरा दिल हरदम घबड़ाया करता है खाना पीना सोना नाचना गाना यहां तक कि बीबी से बोलना तक हराम मालूम होता है। क्या करूं अब मैं सोचता हूं कि मैंने नाहक ऐसी भारी नौकरी ज़रा सी बात पर छोड़ दी। हाय! मैं तो इस इलाक़े का सोलह आने मालिक था। सच है "खुद कर्दरा चे "इलाज"।

कि०-(हंस कर) "सदा न काहू की रही सदा न बाज़ी थंब," मुन्सी जी! "अब पछताये का होयगो जब चिड़िया चुग गई खेत" हमने झूठीं साची काररवाई कछू नांय कीनी मालिक तो तुम सूं या बात पै खफा भयो कि एक तो तुमने वाके गाम के कई. हिस्सा कर डारे जा सूं विशेष फायदा नाय दीखे है दूसरे तुमने हमारी बात का खयाल न कियो। हमकूं जो न्योतो देदेते तो सब बात ठीक होय जाती। तुम जानो नाय के "अग्रे अग्रे विप्राणाम्"।

क०—अजी क्या कहैं अब तो जो होना था सो हो चुका आप हमारे ज़ख्मो को हरा न कीजिये हमने जो कुछ किया बुरा किया। अब हम पर मेहरबानी कर आप अपने डेरे पर तशरीफ़ लेजांयें हमारे सर में दर्द होने लगा बुखार सा आया चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि० बढ़ती होय; दिन दूनो रात चोगुनो होय ले अब हम जाते हैं।

फ०--बहुत अच्छा ! आखिरी सलाम.

— कूल —

नाम में नई कल्पना।

गाज़ीदीन, मसुरियादीन, गंगादीन, दुर्गादीन, सीतलादीन, मातादीन, भगवानदीन आदि दीन वाले नामों की हीन दशा पर हमें भी एक नई कल्पना सूझती है अकिल अजीरन दीन। नाम कैसे होने चाहिये सो पहिले कहीं पर हम लिख चुके हैं आज इस विषय को प्रसंग प्राप्त देख पिष्ट पेषण की भांत फिर इस पर कुछ कहा चाहते हैं। नाम करण भी देश या जाति के तरक्की की कसौटी है जिस जाति में तरक्की रहती है उस जाति में नाम भी उतनाही शिष्ट संप्रदाय के रक्खे जाते हैं। हम लोग जैसा और बातों में पीछे हटे हैं वैसाही नाम धराने में भी। नाम के सुनते ही किसी घराने या जाति के बुद्धि वैभव की पूरी परख हो जाती है। वंग देशी भारत के और २ प्रान्त वालों की अपेक्षा कहां तक आगे बढ़े हैं और कितना अधिक बुद्धि का विस्तार इनमे है यह उन के करण रसायन कोमल पदावली संपुटित नामों ही से सूचित होता है। वही हम लोग कहां तक बुद्धि विस्तार में दरिद्र हो रहे हैं यह हम लोगों के छुन्ना मुन्ना कल्लू गुदड़ू चियरू आदि नामों से प्रगट है वरन इसी बुद्धि की दरिद्रता ने हम लोगों में एक खयाल पैदा कर रक्खा है कि घिनौना नाम रखने से बालक चिरजीवी होता है। इसी बुनियाद पर ननकू, मनकू, नरकू, घसिटू; मुनमुन, चुलबुल, फटल्लू, सटल्लू, भोपत, भोंदू, सोंदू, तिनकौड़ी, दमड़ी; छदमी आदि अनर्गल करणकटु घिनौने नाम रख दिये जाते हैं। किससे कहैं अकिल का अजीरन और समझदारी का जौहर तो है। इसी जौहर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम ही की क्या हमारी न जानिये कितनी बातों को अपनी मूठी में कर रक्खा है। जैसा स्त्रियां पढ़ाने लिखाने से फूलती फलती नहीं। मकान तंग और वायु संचार वंचित हो तो उसमें रहने वाले सदा आसूदा और प्रसन्न रह फूलते फलते हैं। ऐसी ही समझ ने प्लेग को देश में टिक जाने के लिये सहायता दी है। गन्दे और तंग मकान में कबूतरों की ढाबली की भांति सिकुड़ सिकुड़ाय के रहेंगे पीले आम से ज़र्द पड़ गये बला से फूलते फलते तो जांयगे। किस से कहैं इन गर्दखोरों के फूलने फलने से क्या फाइदा। माड़वारी और दिल्ली आगरा के खत्रियों के नाम में बहुधा मल लगा रहता है जिनके नाम में मल है तो उनके काम में कहां तक मल न होगा। संपूर्ण अभिधानावली बड़ी २ लुग़त और डिक्शनरियों को छान डालो गहूमल मिट्ठूमल कहीं न पाओगे। कोई २ जिन्में तरहदारी की बू आगई है अपने लड़कों का नाम क़ाफ़ियाबन्दी के साथ रखते हैं जैसा छुन्नू मुन्नू साधो माधो सोहन मोहन रतन जतन सद्दू मद्दू सोंधू भोंधू और लड़कियों का रम्मो सम्मो छुन्नो मुन्नो दुल्लो मुल्लो इत्यादि। पुराने ढर्रे को छोड़ कोई बात निकालना हम ने सीखा ही नहीं तब नाम करण में नया ढर्रा कहां से लावें। चरनदास रामदास गनेस दास आदि बहुधा एकही नाम के एक मुहल्ले में बीसों पाये जाते हैं। न जानिये क्यों हमको इन नामों पर ओकलाई आती है। उसमें भी कुछ फर्क़ नहीं नीच जाति तेली भुंजवा जो नाम रक्खेंगे वही ऊंच जाति वाले ब्राह्मण क्षत्री भी। पुरुषों के नाम में महादेव नारायण राम और स्त्रियों में गंगा यमुना पार्वती लछमी तुलसा छोटे से छोटे शहर में एक २ नाम के हज़ारों पाये जाते हैं। वही बंग देशियों में स्त्रियों के नाम कैसे सरस और मनोज्ञ रक्खे जाते हैं जैसा कामिनी, निस्तारिणी विश्वविमोहनी, कादम्बिनी, मृड़ालिनी, सरोजनी, कुमुदनी, नलिनी क्षीरोदवासिनी, सुकेशी उर्वशी शशिमुखी स्वर्णमयी इत्यादि—हम लोगों में जुग्गो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पग्गो, भग्गो, बतस्सो इत्यादि। फिर गृहिस्थिन कुलवन्ती और वेश्याओं के नाम में कोई अन्तर नहीं रहता बनारस में जानकी सरस्वती लक्ष्मी कमला आदि नाम वेश्याओं के हैं। मुसल्मानों को हम अपने से हेठा समझते हैं पर नाम धराने वे हम से कितना अच्छे हैं। फातिमा आहिशा जैनब मरियम आदि देवियों के नाम वेश्याओं के न पाओगे। बंग देशियों की भांत चन्द्रभागा, विलासिनी, कामिनी, मोहनी उन्मादिनी, स्वर्णलता, मालती, कामधुरा, वसन्तसेना, पिकबैनी, मेनका, तिलोत्तमा आदि रक्खे जांय तो कौन सी हानि पर गृहस्थ और भले मानुषों को जब इसका ख़याल नहीं तो वेश्याओं को क्यों हो। कितने मुखन्नस नाम न जानिये किस उसूल पर रक्खे जाते हैं न नर न मादा जैसा राधाकृष्ण, सीताराम, गौरीशंकर इत्यादि। इस तरह के नाम वालों को क्या समझें स्त्री या पुरुष दोनों एक साथ हो नहीं सक्के। कितने अपने नाम से आधे हिन्दू हैं आधे मुसल्मान जैसा राम गुलाम रामबक़स कुंवरबहादुर कितने जन्मे तो हिन्दू के घर पर नाम से मुसलमान ही रहे। जैसा राय बहादुर अमीर बहादुर नवाब बहादुर बख़्त बहादुर हमारे कायस्थ महाशयों में इस तरह के यवन सम्पर्क दूषित नाम बहुत मिलते हैं। भक्ति की भावना ने भी हम लोगों के नामों की ख़ूबही ख़ाक उड़ाई अपने इष्ट देव के नाम के अन्त में दीन या दास का पद लगा दिया जाता है न जानिये किस जून कैसी सरस्वती मुख से निकल पड़ती है कहते२ अन्त में दीन और दास हो ही तो गये। काम में दास तो नाम में क्यों न हों। महेन्द्र, उपेन्द्र, सुरेन्द्र, व्रजेन्द्र, नरेन्द्र, आदि प्रभुता शाली नाम क्यों रखाये जांय दासत्व तो नस २ में समाना है। मनु ने दासान्त नाम शूद्र और हीन जाति के लिये कहा है चारुदत्त, विष्णु मित्र, भूरिश्रवा, यज्ञदत्त, सुमति, सत्यसेन, कामपाल, नाम तो अब सपने के ख़याल हो गये अब तो, "धोबी के घर धरमदास हैं बाम्हन पूत मदारी"। हमारी पुरानी भली बात सबी लुप्त हो गई तब नाम ही की क्या। बहुधा ये दास और दीन नाम वाले नाक फुलाय २ कहीं नख से सिख तक भर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस्में हिन्दुस्तानी होने की बासना भी न पाई जाय इंगलीसाइज़्ड हो सभ्यता के सिर मौर बनते हैं पर उनके नाम से प्रगट हो जाता है कि जिस कुल को उन्हों ने अपने जन्म ग्रहण से कदर्य कर डाला उस घराने में सभ्यता का कहां तक प्रकाश था सच है "मूर्खपुत्रस्तु पण्डितः तृणवन्मन्यते जगत्" इत्यादि नाम के सम्बन्ध में बड़े से बड़ा आल्हा गाने पर भी न चुकेगा ।

कविता

भवभूति और कालिदास ।

"श्री राघवेन्द्र" की १२ वीं संख्या में "कवि मुकुटमणि-कालिदास" शीर्षक एक लेख छपा है । उसको देख कर मन को कई जगह चक्कर लगाना पड़ा ! उसमें भवभूति, दण्डी और कालिदास की कवित्व शक्ति का एक२ नमूना देकर दण्डी को महाकवि का आसन प्रदान किया गया है और लेख का विषय है । कवि मुकुटमणि-कालिदास, इस से लेख का उद्देश्य कहां तक सिद्ध हुआ है मेरी मोटी समझ में नहीं आया । यह यदि सिद्ध न हुआ तो न सही पर यह बात तो स्वतः सिद्ध हो रही है कि ये तीनों कवि समकालीन अर्थात् एक ही समय में हुए हैं। जो हो, मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि दण्डी में कवि प्रतिभा कुछ नहीं थी । दण्डी अपने ढंग के एक अच्छे कवि होगये हैं । "दण्डिनः पदलालित्यं" जग प्रसिद्ध है । भवभूति भी कुछ कम आदरणीय नहीं हैं इनके विषय में किसी ने कहा है ।

"सुकवि द्वितयं मन्ये निखिलेऽपि महीतले ।
भवभूति शुकश्चाथं बाल्मीकिस्तु तृतीयकः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुणा रस का रूप खड़ा करने में यही एक समर्थ थे। फिर, कालिदास के विषय में कहते हैं।

"पुरा कवीनां गणना प्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासाः। अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनानामिका सार्थवती बभूव" ॥

अब कहिये, किस को छोटा कहैं और किस को बड़ा तात्पर्य यह कि सभी अपने २ ढंग में श्रेष्ठ हैं। हां प्रसंगानुरोध से यदि हम किसी को उत्कृष्टतर कह दें तो वह दूसरी बात है नहीं तो जो कवि हैं उनकी मौलिक विशेषता एक ही स्रोत से आवहमान होती है। नैसर्गिक प्रतिभा की कारीगरी और भाव वैचित्र्य के अंकन करने मे सब एक समान हैं। प्राचुर्य Luxury के पीछे आतिशय्य वा अत्युक्ति का झड़ बांधना बिशद कल्पना का कारण नहीं कहा जायगा। सम्भव हो सक्ता है कि जो कालिदास की साकूत रस और प्रसाद गुणवाली कविता का रसिक है उसे मिसरी की डली के समान भारवि की गूढ़ कविता न भावै। इसी प्रकार जो दण्डी की ललित पदावली और अनुपम कविता चातुरी पर मोहित है उसे भवभूति की सरस्वती में क्षोभ पैदा करने वाली वा फीकी बात कोई दृष्टिगोचर हो तो आश्चर्य नहीं है? रुचि विभिन्नता से जो कविता सब के कंठ देश में बिराजने के योग्य है वह घृणित हो अलग फेंक दी जा सक्ती और जो सर्वथा फेंकने के लायक है वह सर्वोपरि कह कर सब से समादरणीय हो सक्ती है। परन्तु जो कविता रुचि विभिन्नता को अतिक्रमण कर उच्च देश में भ्रमण करती है वही सब पर अपना प्रभाव डाल सक्ती है और वही लोकोत्तर कविता कही जाती है। हम कह सक्ते हैं कि ऐसी अलौकिकता सब के काव्य में हैं पर किसी में थोड़ी और किसी में अधिक। जिस काव्य में इसका परिमाण अल्प है वह न सदोष हो सक्ता है और न वह अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसनीय बन सक्ता है जिस में इसका बाहुल्य है। यह न्यूनाधिक्य कवि की रुचि पर निर्भर करता है। यद्यपि इतना लिखना अप्रासङ्गिक होने से उचित नहीं था पर किसी विशेष कारण से हमको अपनी अल्प मति का भी परिचय देना पड़ा। पाठक जन क्षमा करेंगे। अब प्रकृतमनुसरामः।

यथार्थ में इन कवियों के सम्बन्ध में अनेक आख्यायिकाएं सुनने में आती है परन्तु इनको सुन कर कवियों की प्रतिभा वा योग्यता का एकदम निश्चय कर लेना अन्याय है। श्रीराघवेन्द्र के लेखक ने जिस श्लोक के लिये सरस्वती के मुख से "कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः" कहलवाया है उसी त्रोटक श्लोक को छतीसगढ़ मित्र वर्ष ३ अंक ९-१० के "दण्डी" शीर्षक लेख में भवभूति का कहा हुआ लिखा गया है। इसके लिखने वाले ने यह बात 'कवि चरित्र" से लिखी है और कहा है "दन्त कथाओं में प्रायः ऐसी ही बे जोड़ बातें पाई जाती हैं"। प्रायः देखा जाता है कि जब किसी पुरुष की प्रतिपत्ति लोक में प्रसिद्ध होने लगती है तब भूतपूर्व पुरुष के सत्कीर्ति सूचक कथानक जो उस समय प्रचलित रहते हैं बदल कर नवीन प्रख्यातनामा के अनुकूल हो जाते हैं अर्थात् जो कथा आज एक पुरुष की प्रशंसा कर रही है वही कल दूसरे की करने लग जाती है यही कारण है कि एक पुरुष के सम्बन्ध में अनेक आख्यायिकाएं सुनने में आती हैं। जहां तक देखा गया है यही सिद्ध होता है कि किम्बदन्ती किसी एक आधार पर स्थिर नहीं रहती। ऐसी दशा में उक्त प्रशंसित कवियों की इन आख्यायिकाओं से कोई बात निश्चय नहीं कर सक्ते। प्रथम तो कालिदास ही ३ बतलाते हैं फिर जो कालिदास सरस्वती का अवतार कहा जाता है वही कालिदास उक्त श्लोक जो राघवेन्द्र में दण्डी का महत्वबर्द्धक कहा गया है, का हो तो क्या आश्चर्य है? आख्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यिकाएं बिलकुल झूठी भी नहीं हैं क्योंकि बिना फूल के खिले सुगंध नहीं आती, परन्तु इन से पुरातत्व का ज्ञान लाभ करना भ्रमात्मक नहीं तो संशयाविष्ट ज़रूर होगा। इस लिये उचित है कि इस अभिप्राय से जो आख्यायिकाएं लिखी जांय वे भली भांति प्रमाणित और प्रत्यक्ष कर ली जांय नहीं तो सिवाय मनोबिनोद के और कुछ लाभ न होगा। "राघवेन्द्र" के उपस्थित लेख से हमको विशेषतः मनोविनोद ही का उद्देश्य सिद्ध होता दीखता है इसको पढ़ कर हमको भी एक कथा स्मरण हो आई है जो महाकवि भवभूति और कवि मुकुट मणि कालिदास के विषय में है। पाठकों के मनोरंजनार्थ हम उसे नीचे लिखते हैं। यह नहीं कह सक्ते कि ३ में यह कौन से कालिदास हैं:—

पाठक जानते हैं प्रतिद्वन्दी का भय सब के पीछे लगा है। एक समय भवभूति और कालिदास में इस बात का विवाद उपस्थित हुआ कि "उन दोनों में श्रेष्ठ कौन है?" वे एक दूसरे को अपने से हीन बतलाते थे। अन्त में खूब रगड़ झगड़ के पीछे यह स्थिर किया गया कि चलो अमुक स्थान के सरस्वती सदन में सरस्वती के द्वारा इसका निबटेरा करावें। इस बात पर दोनों सहमत हुए और तुरन्त वहां चले जहां जाना था। जब ग्राम से कुछ दूर झाड़ी में पहुंचे तो दिन ढल गया। आगे चलकर उन्हों ने उस सुनसान जंगल में किसी के रोने की आवाज़ सुनी। यह आवाज़ उसी ओर से आ रही थी जिस ओर वे जा रहे थे। जब उस के निकट पहुंचे तो देखते हैं कि उस जगह जहां से उनका रास्ता दो हिस्सों में बंटता था एक स्त्री मुख नीचे किये रो रही है। उसे दुखी देख दोनों अचरज में आये कि ऐसी सुन्दरी का यहां आना क्यों कर हुआ। दोनों वहां एकदम ठिठक गये। भवभूति से रहा न गया पूछा, "सुभ्रू तू यहां कैसे आई तू कौन है और क्यों अरण्य रोदन कर रही है?" स्त्री ने कुछ उत्तर न दिया। एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों को देख कर फिर मुंह नीचा कर लिया कालिदास ने फिर पूछा और साथ आग्रह के कहा कि "यदि तू अपने दुःख का हेतु न कहेगी तो हम लोग आगे न बढ़ेंगे"। स्त्री ने धीरे से कहा "भाइयो! तुमको इस पंचायत से क्या मतलब! वृथा मेरे साथ अपना समय क्यों खोते हो मार्ग पड़ा है जहां जाते हो जाओ" कवियों ने न माना और उत्तर के लिये हठ किया। तब स्त्री बोली "तुम्हारे इस हठ से मालूम होता है अवश्य कुछ लाभ होगा इसलिये कहती हूं सुनो मैं अमुक नगर की रहने वाली अमुक की पतोहू हूं। मेरी सास मुझको चंडी कहकर पुकारती है। कल सांझ को मैं सास के संग उद्यान में घूम रही थी सास ने "मल्लिका मुकुले चण्डि भाति गुंजन् मधुव्रतः"* यह श्लोकार्ध पढ़ा और मेरी ओर फिर कर कहा कि शेष की पूर्त्ति कर। सुनते ही मैं एकदम बोल उठी "प्रयाणे पंचवाणस्य शंखमापूरयन्निव"* यह सुन वह क्रोध में आगई और मुझे अनेक दुर्वचन कहे किन्तु मैंने अपने कथित को नहीं बदला। इस से वह क्रोध से लाल हो मुझे खूब पीटा और घर से निकाल दिया! हे भाइयो! कहो इसमें मेरा क्या दोष था।

भवभूति-क्यों नहीं? तेरा इसमें महा दोष है। अच्छा हुआ, तू ने मारखाने का काम किया था।

स्त्री— कैसे

भवभूति-अरे तू कविता में प्रवीण होकर इतना भी विचार न कर सकी कि शंख किधर से बजाया जाता है। उपमान की ओर तू ने ज़रा भी

*मोंगरे की कली के ऊपर गूंजता हुआ भौंरा इस तरह शोभायमान है मानो वह पंचबाण कन्दर्प के गमन अवसर में शंख ध्वनि कर रहा हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्य न किया। जब मल्लिका के ऊपर भौंरा बैठा हुआ गूंज रहा है है तब शंख का बजाया जाना मुंह की ओर से कहां हुआ? वह तो उलटा नीचे की ओर से हुआ जो सर्वथा असंगत है बेशक तेरी सास पण्डिता है और तू—

कालिदास-(भवभूति से) नहीं, नहीं इसकी सास बिलकुल मूर्खा है। इस बेचारी का इसमें कुछ दोष नहीं है यह बड़ी चतुर कवि प्रतिभावाली और निर्दोष है। कवि होना सहज है पर किसी कवि के भाव का जानना कठिन है।

भवभूति-अच्छा कहो, क्योंकर यह निर्दोष है।

कालिदस-सुनो,

मल्लिका मुकुले चण्डि भाति गुंजन्मधुव्रतः।
प्रयाणे पंचबाणस्य शंखमापूरयन्निव ॥

इसका अर्थ हुआ कि मुकुलित मल्लिका के ऊपर मधु (पुष्प रस-मदिरा) से छके हुए भौरे की गुनगुनाहट ऐसी शोभा दे रही है मानो कामदेव का गमन समय जान वह शंख ध्वनि कर रहा है। जैसे शराबी उलटा सीधा नहीं जान सक्ता है जैसे पाया वैसा ही करने लगता है उसी प्रकार मधुमत्त भ्रमर को यह ज्ञान नहीं है कि उलटा कौन और सीधा कौन। उसको वही सीधा हो रहा है जिधर को तुम उलटा समझते हो।

यह सुन भवभूति चुप हो गया तब वह स्त्री हंस कर बोली भव-भूति! क्यों चुप होगये। कहो, तुम से कालिदास श्रेष्ठ हैं या नहीं। पहिचाना मैं कौन हूं। भवभूति ने उसे पहिचान लिया कालिदास की श्रेष्ठता स्वीकार की और कालिदास सहित सरस्वती का अभिवादन किया। सरस्वती अन्तर्ध्यान होगई और दोनों सरस्वती की इस परीक्षाकी रीति को स्मरण कर २ आनन्द और पुलकित होते हुए अपने २ घर लौटे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आख्यायिका से मनोरंजन के अतिरिक्त यह शिक्षा प्राप्त होती है कि काव्य वा कविता करना बहुत सुगम है परन्तु उसका समझना उस से भी कठिन है । इसलिये हे नव कवियो! काव्य प्रेमियो पहिले आप कवियों के भावों के समझने का यत्न करें अर्थात् जो २ कवि हो गये हैं वा हैं उनके सरस काव्यगत भावों का ज्ञान लाभ करें। यदि उनमें कुछ त्रुटि वा अभाव दीखे या कुछ विशेष नयापन आप प्रकाश कर सकें तभी रचना करने का साहस करें । तब आप का परिश्रम विफल न होगा ।

अनन्तराम पांडे रायगढ़.

——

बधाई ।

हमारे पढ़ने वाले एकबारगी चौंक उठैंगे कि आज इस ने बधाई का चरखा कैसा ओटना शुरू कर दिया प्रदीप ठीक समय से प्रतिमास निकलने लगा क्या उसी की बधाई एडिटर को दी जाती है । अथवा यह बधाई पढ़ने वालों को है इस लिये कि इसमें जो बुढ़ापे की झांई थी सो सब दूर हो गई नये तर्ज़ के चटकीले रसीले लेख उन्हे पढ़ने को मिलने लगे । या इसकी बधाई होगी कि इस समय प्रयाग विश्व विद्यालय की परीक्षा का परिणाम गज़ट में प्रगट हुआ है प्रदीप के बहुत से लेखक वाचक और सहायक इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुये हैं उन्हीं को यह बधाई दी जाती है। अथवा किसी के जन्मोत्सव की बधाई दी जाती है। एडिटर तो बुढ़ाय गये अवश्यमेव प्रदीप के किसी हितेच्छुक के पुत्र हुआ होगा । ताड़ बाज़ी के फिरके जमाने से तो आप कहीं से न चूके किन्तु इन सब बातों में एक भी इस बधाई का कारण नहीं है । सच तो यों है कि यह हमारी बधाई कान को कडुई होने से कदाचित् न भावै आप नहीं मानते तो सुनिये । किन्तु कडुई समझ थूक न दीजियेगा दवा जो कडुई होती है उसका फाइदा एक निराले ढंग का होता है और हमारे तो इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई देने का क्रम ही कुछ और है जिसे यह बधाई दी जाती है, वे ही शायद इसे न समझैं। पढ़ने वाले कहेंगे कौन ऐसा मूर्खों की श्रेणी में नाम लिखाये हुये बुद्धि का भण्डार है जो उसे बधाई दी जाय और वह न समझे कि हमे क्यों बधाई दी जाती है। सिवा इसके आज इसे क्या सूझा है जो बिना सिर पैर की बात के लेख को शैतान की आंत सा बढ़ाता चला जा रहा है या इसके लेखक को गोस्वामी किशोरी लाल का अनुयायी बनने का हौसिला तो नहीं चर्राया कि जो इसके लेख के प्रयोजन को न समझ सके वह झख मारने को पत्र पढ़ने का रसिया बनता है। अस्तु तो अब हम उनका नाम बतलाई देते हैं ये महाशय लार्ड कार्ज़न महोदय हैं जिन्हों ने बंग विभाग का प्रस्ताव कर हमारे नेत्र खोल दिये और हमे सूझने लगा कि हम कहां तक बहके हुये थे। ऐसे पुरुष को जितनी बधाई दी जाय सब उचित है घुणाक्षर न्याय के क्रम पर जिन से एक ऐसा काम बन पड़ा है कि जिस्से देश का देश उत्तेजित हो उठा है जैसा कोई गहरी नींद से सोता हुआ एकबारगी चौक पड़े। प्रत्येक बड़े २ नगरों में मीटिंग और सभायें स्थापित हो रही हैं तरह २ की बातें लोग सोच रहे हैं कि किस तरह देश से विलायत की चीज़ें उठ जांय और उनकी जगह स्वदेशीय वस्तु का प्रचार हो। बम्बई और पूना के मरहठे प्रसिद्ध २ मिल के मेनेजर और स्वामी बंगालियों के साथ सहानुभूति प्रगट करते उन्हे भरोसा दे रहे हैं कि तुम किसी तरह का अंदेशा मत करो हम तुम्हे हर तरह के कपड़े प्रस्तुत कर दे सक्ते हैं। ईश्वर इनका सहायक हो विलाइती चीज़ों के त्यागने का इनका दृढ़ संकल्प बढ़ता जाय और पोढ़ा पढ़ता जाय देश का धन जो बाहर जाने से रुक गया तो सब ओर सोने के फूल फूलने लगेंगे कंगलों का नंबर घट जायगा काम न रहने से जो लोग दर २ घूमते फिरते हैं सब अपने हाथ की मेहनत से दो का पेट भर अपना पेट पोखेंगे। इतना २ उपकार जिसके द्वारा होने की संभावना है उसे क्यों बधाई न दीजाय R. A.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक की कपोल कल्पना।

शुभागमन।

हमारे यहां शिष्ट मण्डली की बोल चाल में किसी भव्य महा महिम के आगमन में उनके आगमन को शुभ का विशेषण दिया जाता है। "सर्वं हि महतां महत्" बड़ों की सबी बात बड़ी होनी चाहिये इस कहावत के अनुसार ऐसा करना उचित भी प्रतीत होता हैं किन्तु ऐसे कराल समय में जब आरत दशा में पड़ा भारत इस तरह क्षतिग्रस्त हो रहा है कि प्लेग ने तो बीसों वर्ष तक के लिये डेरा जमाये रखने का पूरा इन्तिज़ाम करी रक्खा था बीच में भूचाल भी अपनी निराली चाल देखलाने से न चूका। अब इस समय किसी प्रान्त में अतिवृष्टि कहीं सर्वथा अनावृष्टि से अकाल गाल बजाता हुआ सब ओर देश में व्याप रहा है ऐसे समय हमारे सामयिक संम्राट् के हृदयानन्द बर्द्धन युव राज के यहां पधारने को शुभागमन कहें?

"प्रभुत्वं लोकाभ्युदयाय तादृशाम्"।

भले लोगों की भलाई का प्रादुर्भाव प्रथम ही से होने लगता है। लार्ड मिंटो के आगमन का शुभ सूचक चिन्ह पहले ही से प्रगट होने लगा। दो महीने उपरांत पंजाब प्रान्त और दिल्ली आगरा की ओर थोड़ी वृष्टि हो जाने से अब महा अकाल का भय कुछ मिटा सा मालूम होता है। प्रजा में देशानुराग बढ़ता जाता है। इससे प्रगट है कि कदाचित् शान्तिप्रिय मिंटो हम लोगों की Goodwill प्रीति भाजनता सहज में प्राप्त कर लें तो क्या अचरज और लार्डकर्ज़न के शासन का अनेक दैवी तथा मानुषी क्लेश भूल इस सिद्धान्त को लोग पुष्ट मानेंगे कि राजा की भली या बुरी नीयत का फल अवश्य प्रजा पर आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त ग्रन्थ।

इतिहास।

यह मासिक पुस्तक काशी की इतिहास समिति द्वारा प्रकाशित है गत जुलाई की एक संख्या हमारे पास आई है जिस्में रमेशचन्द्र दत्त कृत भारत के इतिहास का अनुबाद बड़ी योग्यता के साथ किया गया है। जुलाई की इस संख्या में प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास है। हिन्दी साहित्य में इतिहास के संबंध में जो अन्धकार सा छाया हुआ था सो इस पुस्तक के द्वार दूर हो जायगा। इतिहास के ऐसे २ ग्रन्थ प्रकाशित होने से निस्सन्देह बड़ा लाभ है। दत्त के इतिहास के निन्दकों को हम क्या कहैं जो व्यर्थ को इस ग्रन्थ को प्रकाशित होने से रोकते थे हमने भी जब तक इस के गुण को नहीं जाना था भ्रम में पड़े थे। जब इस्के द्वारा हमारी पुरानी बातें याथातथ्य निर्णीत मालूम हो रही हैं तब इस्की निन्दा करना व्यर्थ है। यह पुस्तक सब लोगों के संग्रह योग्य है वार्षिक मूल्य २) है। मिलने का पता—माधव प्रसाद बुक एजेंट बनारस सिटी।

चीन में १३ मास।

सन् १९०१ के चीन के महा संग्राम में ठाकुर गदाधर सिंह वर्मा यहां से सर्कारी सेना में भरती हो वहां जाय जो कुछ उन्हों ने देखा उसे सविस्तर वहां की चाल, ढाल; राह, रसम, मन्दिर, इमारत, आदि का हाल ३२५ पृष्ठ में लिखा है। पं—महेन्दु लाल गर्ग ने भी वहां का सब हाल अपने चीन दर्पण में विस्तार पूर्वक कहा है। अन्तर केवल यही है कि गर्ग जी ने सर्सरी तौर से लिखा है ठाकुर साहब उसमें नोन मिर्च लगा उसे चर्परा करते चले हैं। भाष्यकार की भांति सूत्र सा थोड़ा हाल लिख बात २ में भारत की वर्तमान दशा का चीन से मिलान करते हुए अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Remark टिप्पण देते गये हैं। जो पढ़ने में विशेष रोचक हैं बात २ में भारतवासियों पर मेंं २ कर चटकाया है। लेख में आर्य्य समाजीपन बहुत ही अधिक झलक रहा है किन्तु लेखक महाशय औरों की भांत वैसे कट्टर आर्य्य नहीं हैं कि केवल गाली ही देना जानते हों बरन इनके लेख में देश का प्रेम प्रगट हो रहा है। पुस्तक अवश्य पढ़ने लायक है और लेख प्रणाली भी मन रमाने वाली है मूल्य १॥) है। पता—ठाकुर गदाधर सिंह दिलकुशा प्रेस लखनऊ।

शिक्षामणि।

छोटी कन्याओं के पढ़ने योग्य जिसमें उपदेशात्मक आख्यायिकाएं दी गई हैं। जालन्धर के वकील लाला नरायणदास रचित मूल्य =)॥ है—

नारद

इस नाम का मासिक पत्र छपरा से निकलता है इसके संपादक और लेखकों की लेख चातुरी अवश्यमेव चटकीली है। इसमें से समाचारावली का कालम् निकाल दिया जाय और कुछ पृष्ठ और बढ़ा दिये जांय तो यह पत्र अवश्य अच्छा रसिक विनोद कहा जा सक्ता है। दूसरे यह कि इसका नाम नारद भला नहीं मालूम होता है कदाचित् इसके कर्ता धर्ता नितान्त अल्प वयस्क हैं नहीं तो ऐसा नाम न तजवीज़ते वार्षिक मूल्य १) है।

दीवान गौरी शंकर उदया शंकर

ये भागलपुर राज्य के दीवान हो गये हैं इनके पवित्र चरित्र तथा कार्य कौशल की आलोचना प्रयाग के अभिनव जाति राघवेन्द्र में विस्तार के साथ की गई है। ऐसों का चरित्र पढ़ जो अपने को उन्हीं के चरित्र का नमूना बनाया चाहें वे संपादक को।=) भेज इसे मंगाय पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी जी के उपन्यास ।

गोस्वामी श्री किशोरी लाल जी ने हमें ३ उपन्यास और भेजे हैं। लवङ्गलता वा आदर्श वाला, हृदय हारिणी वा आदर्श रमणी, रज़िया बेगम वा रङ्ग महल में हालाहल।२ का दाम अलग अलग ॥) तीसरा उपन्यास दो भाग में है दोनों का दाम १।) है गोस्वामी जी की लेख प्रणाली के सम्बन्ध में कुछ लिखना केवल पिष्ट पेषण है। ऐतिहासिक उपन्यास विशेष लाभदायक हैं "एक पन्थ दो काज"–"एकाक्रिया द्विअर्थकरी प्रसिद्धा"-उपन्यास के पढ़ने से मनो विनोद साथही साथ ऐतिहासिक घटनाओं का परिज्ञान इसलिये गोस्वामी जी को ऐसे उपन्यास लिखने का विशेष धन्यबाद है।

पुराने में नया पैबन्द ।

बहुधा देखा जाता है पुराना कपड़ा फट जाने पर लोग नये का पैबन्द उसमें लगाते हैं परिणाम यह होता है कि उस पेवन्द से पुराने को कोई मज़बूती नहीं पहुंचती नया भी उसके साथ पुराने में शामिल कर लिया जाता है। यही हाल इन दिनों के हमारे बहुत से संशोधकों का है वे चाहते हैं कि हम उन पुरानो को अपने नये ढंग पर झुका लावें किन्तु नतीजा यही होता है कि नयों का नयापन फीका पड़ जाता है पुराने लोग अपने बाबा आदम के बखत के खुर्राट पने से बाल बराबर भी इधर उधर नहीं टसकते। सच तो यों है कि पुराना या नया इन दोनों में रात और दिन अंधेरे और उजाले का सा अन्तर है। नया पुराना हो जाता है पर पुराने को नया होते किसी ने न देखा और न सुना होगा इसलिये दोनों मे मेल होने की सुगम उपाय हमारे मन्न में यही आती है कि हम काम से पुराने रहें पर ख्याल हमारे नये होने चाहिये। ऐसा होने से पुराने और नयों का अटल बिरोध भी मिट सक्ता है और हम आगे बढ़ने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हो जा सक्के हैं । समाज को सुधारने का यह बहुत उमदा लटका है हमारे संशोधकों के कहने का असर समाज पर तभी पड़ सक्ता है जब इस पालिसी को काम में लावें । जो संशोधक आचरण की कसौटी में कसे जाने पर खरा निकलता है उसके कहने का जैसा असर सर्व साधारण पर पड़ता है वैसा उसका नहीं जिसने आचरण की पवित्रता को मन से ढीला कर सर्वभक्षीहुताशः अपने को बना लिया है पवित्र आचरण से कदाचित् पुराने में नये का पेवन्द भी कारगर हो शोभा पावेगा ।

भट्ट नारायण ।

बेणी संहार नामक प्रसिद्ध नाटक के रचयिता भट्ट नारायण उन पांच ब्राह्मणों में से हैं जिन्हें बंगाल के राजा आदि शूर ने मध्य देश से बुला के बंगाल में बसाया । डाकृर राजेन्द्र लाल मित्र के कथनानुसार आदिशूर ही का नामन्तर बीरसेन है और उक्त महाशय तथा आर-सी-दत्त के भी निर्देशानुसार बंगाल में राजा बीरसेन का समय सन् ९८६ ई० से १०६ ई० तक अनुमित होता है । भट्ट नारायण जी ने आदिशूर को अपना परिचय नीचे लिखे श्लोक द्वारा दिया था ।

बेणीसंहारनामा परमरसयुतो ग्रन्थएकः प्रसिद्धो
भोराजन्मत्कृतोऽसौ रसिकगुणवता यत्नतो गृह्यते सः ।
नाम्नाहं भट्टनारायण इति विदितश्चारुशाण्डिल्यगोत्रो
वेदे शास्त्रे पुराणे धनुषि च निपुणः स्वस्ति ते स्यात्किमन्यत् ।

जिस से स्पष्ट प्रतीत होता है कि बंगाल में आने के पहिले भट्ट नारायण बेणी संहार बना चुके थे और वह ग्रन्थ प्रसिद्ध भी हो चुका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य। निदान बंगाल के राजा आदिशूर के समसामयिक होने से नारायण का समय ख्रीष्टीय दशवीं शताब्दी में निश्चित होता है। इनके रचित बेणी संहार के श्लोक बहुधा काव्य प्रकाश में उठाये गये हैं। भट्ट नारायण रचित एक ग्रन्थ का नाम प्रयोग रत्न है। काव्य प्रकाश में जो श्लोक उदाहरण में दिये हैं उनमें बेणी संहार और रत्नावली के श्लोक बहुत अधिक हैं।

बंगाल निवासी श्री युक्त बाबू प्रसन्न कुमार ठाकुर अपने को भट्ट नारायण का वंशज बतलाते हैं और उन ने जो बेणी संहार नाटक छपवाया है उसके प्रारम्भ में बंशावली भी लिख दी है जिस से ज्ञात होता है कि उक्त बाबू साहेब भट्ट नारायण के बंश में ३२ वीं पीढ़ी में पड़ते हैं। भट्ट नारायण के पिता का नाम भट्ट महेश्वर था क्योंकि 'भट्टमहेश्वर सुतः भट्ट नारायणः सुधीः' ऐसा श्लोकार्द्ध सुनने में आता है पर ये भट्ट महेश्वर साहसाङ्कचरित के रचयिता हैं वा और कोई हैं इसका पता लगाना चाहिये।

बूलहर साहिब ने कश्मीर के शैव दार्शनिक लक्ष्मण गुप्त को उत्पल और भट्ट नारायण का शिष्य बतलाया है यह लक्ष्मण गुप्त सन् ९५० ई० में विद्यमान् थे। क्या अचरज है कि ये भट्ट नारायण बेणी संहार ही के रचयिता रहे हों जिल्द १९ के ५ अङ्क में भट्ट नारायण का सविस्तर हाल लिख चुके हैं॥

भट्ट लोल्लट।

काव्य प्रकाश के रस निरूपण प्रकरण में इनका मीमांसा की रीति का सूत्र व्याख्यान लिखा गया है। राजानक सय्यक ने अलङ्कार सर्वस्व में इनके मत को उठाया है अतएव ये मम्मट से प्राचीन व्यक्ति सिद्ध होते हैं इनका रचित कोई ग्रन्थ वा उसका कुछ उल्लेख कहीं देखने में नहीं आया। ये महाशय नाम से कश्मीर निवासी जान पड़ते हैं। ख्रीष्टीय ११वीं शताब्दी से पिछले व्यक्ति ये नहीं हो सकते पर उसके पूर्व कब तक उनके होने की संभावना पाई जाती है इसका कुछ निर्णय नहीं होता जान पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTER No. A—308.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { नवम्बर
सं० ११ } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ संं० ११ | प्रयाग | नवम्बर सन् १९०५ ई०

विशाल वाटिका।

पहले इसके कि इस विशाल वाटिका का हाल हम अपने पढ़ने वालों को कह सुनावें उचित जान पड़ता है कि जिस बाग का सैलानी हम उन्हें बनाते हैं उस बाग के बागवान के साथ उन का परिचय करा दें-यह बागवान यद्यपि बूढ़ा हो गया है और अब इसकी नस २ ढीली पड़ गई है पर बागबानी के हुनर में सब भांति. कुशल अपने नये २ साथियों से कहीं पर किसी अंश में कम नहीं है-इस बाग के माली में यह एक अनोखा गुण पाया गया कि जो इस बाग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वाङ्ग सुन्दरता पर मोहित हो यहां आया उसे इसने इतना लुभाया कि वह अपनी निज की जन्म भूमि को भूल यहीं का हो गया—इस तरह के पाहुने एक दो नहीं बरन न जानिये कितने आये और आते जाते हैं—कितने भूत के आकार से लम्बी २ डाढ़ी वाले यहां के फूल फल पर प्रलोभित हो आये जो कुछ हाथ लगा नोच खसोट चंपत हुये एक इन लुटेरों में से पांव का लंगड़ा भी था—कोई २ आये तो इसी मनसूबे से कि जो कुछ पावैं लै लेवाय चल खड़े हों पर इस बाग के माली के साथ उनकी ऐसी खिल्त मिल्त हो गई कि वे भी अपनी जन्म भूमि को भूल यहीं के हो गये—कोई अदला बदला करने की इच्छा से आये उन की उजाड़ ऊसर धरती में जो कुछ उन्हें मिला उसे यहीं छोड़ यहां के सुस्वादु रसीले और सुगन्धित फल फूल ले गये—कुछ दिन के उपरान्त उनको भी जंगल उजाड़ और ऊसर धरती में रहना पसन्द न आया इस चतुर माली के कोमल बर्ताव से इस मनोहर बाटिका पर मोहित हो उन्हें भी यहीं अपना घर बनाना पसन्द आया-इन आगन्तुकों में अमित असीम महोर्मिमाली वरुणालय को नांघते डांकते एक ऐसे आये जो अपनी काल व्याल सी भीषण विकराल दृष्टि के पात से उस बूढ़े बागवान को संत्रासित करते नस २ उसकी ढीली कर डाला—भोला भाला बागवान इसी ख्याल में था कि यह भी हमारी इस मनोहर बाटिका पर रीझ यहां बस हमारा एक अंग बन जायगा किन्तु यह नया पाहुना ऐसा चालाक निकला कि इसने उस समस्त बाटिका को तिल २ नाप जोख बात की बात में अपना अधिकार उस पर जमा लिया और सरल चित्त बाग के माली को सब ओर से ऐसा जकड़ लिया कि अब यह इस नये पाहुन के पेंच में पड़ा हुआ सब भांति बेबश हो गया और जो कुछ समझ रक्खा था कि थोड़े दिन के ज़ोर ज़ुल्म के बाद या तो यह चला जायगा या बस जायगा तो औरों की तरह यह भी हमारा ही होकर रहेगा सो सब बात उलटी पड़ी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पाहुना चालाकी में एकता निकला पहले वालों का सब दास्तान जान चुका था और बागवान की प्रलोभन शक्ति को भी खूब टटोल लिया था इसने अपनी जन्म भूमि का सम्वन्ध न छोड़ा बरन जहां जो कुछ हीर पदार्थ इसने पाया अपनी मातृ भूमि में भेजना आरंभ कर दिया और सर्वथा बागवान और बाग को निःसत्व कर डाला ॥

अस्तु यद्यपि इस बाटिका की सर्वाङ्ग सुन्दरता हर ली गई और पहले की सी पवित्रता उज्वलता अब कलुषित और दगीली कर दी गई फिर भी ऐसी २ क्यारियां इस्में मौजूद हैं कि जो जिस तरह के फल फूल का रसिक है वह यहां पहुंच अपनी रुचि के अनुकूल उस तरह का पाय मनमाना उसे छक कर तृप्त और अघाया हुआ अपने को मालूम कर सक्ता है-पहले हम अपने पढ़ने वालों को उस क्यारी के पास ले जाते हैं जो इस बाटिका के जीर्णारण्य में सब ओर लंबी २ घास और नुकीले सुये की भांति चुभने वाले कांटों से आवृत है-जहां पहुंच बाग के सैलानी को इस श्लोक के भावार्थ का भरपूर अनुभव होता है-

"पत्र पुष्प फल लक्ष्मीः कदाप्यदृष्टं वृतं च
खलु शूकैः। उपसर्पेम भवन्तं वद बबुर कस्य लोभेन" ॥

इस क्यारी का सब गाटे का गाटा कंटकावृत होने से निकम्मा हो रहा है जहां कहीं कोई पेड़ भी हैं तो बिषफल उस्में फलते हैं। जिसके खाने वालों के रग २ में उन फलों का असर बैर फूट परस्पर की स्पर्द्धा ईर्षा द्रोह मद मात्सर्य के सिवाय और कुछ वहां हई नहीं। इन फूलों की तीखी महक और इसके फल का कडुआ रस दूर २ तक इस संपूर्ण बाटिका में ऐसा व्याप गया है कि समस्त गुण रंजित होने पर भी यहां के पेड़ केवल फूट के कारण नहीं फबकते। इस गाटे की धरती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक अनोखी बात देखने में आई-इसाईयों की धर्मपुस्तक में लिखा है "खुदा ने आदम को Tree of knowledge. ज्ञान के पेड़ का फल खाने को मना किया था" पर इसके विरुद्ध यहां अज्ञान का वृक्ष न जानिये कहां से उग आया है कि जिसने अज्ञता के फल को चक्खा उसमें विज्ञता संपादन की यावत्चेष्टा और प्रयत्न सब व्यर्थ होता है-प्रिय पाठक इस बाग के सैलानी बनते हो तो सावधान रहो दत्त चित्त हो हमारी बात पर ध्यान दो ऐसी न जानिये कितनी क्यारियां इसमें हैं उनकी ओर न झुक पड़ना। ऐसा न हो कि उन बिषैले फलों की हवा तुम्हें लग जाय और तुम इन फलों के खाने वालों के साथी बन जाओ। लो आगे चलो देखो ये कैसी मनोहर क्यारियां हैं। इसके अनगिनत पेड़ फूल और फलों से लदे लहलहाते हुये कैसी शोभा दे रहे हैं। इसके फूल फल उन्हीं को सुलभ हैं जो परिश्रमी दृढ़ संकल्प और उद्यमी हैं जिनमें इतना साहस है कि काम पड़ने पर असीम महासागर और दुर्गम खाड़ियों को "गोष्पद" गऊ के खुर के समान पार कर डालते हैं "किं दूरं व्यवसायिनाम्" इनका कला कौशल हाथ की कारीगरी विज्ञान चातुरी शिल्प और वाणिज्य दूर २ के देश तक विख्यात रहा इसी से बाग के माली का अनेक बार की लूट पाट पर भी ज़रा मान न मटका सदा सुख चैन की दशा में रहा आया। किन्तु थोड़े दिनों से अकाल जलदोदय की भांति एक ऐसी घटा उमड़ आई कि जो शिल्प और वाणिज्य दूर देश तक फैला था और जिसकी कदर की थाह न थी खुरखुरा भद्दा और मोटा वरन घिन के लायक हो गया। हम लार्ड कर्ज़न को धन्यबाद देते हैं जो इस क्यारी की भूमि में एक ऐसी खाद छोड़ चले कि विदेश से आई हुई वह घटा छिन्न भिन्न हो गई। परदा जो आंख के सामने था हट गया एक बारगी सब के सब चौंक पड़े जैसा कोई सोते से जाग उठे। सोचने लगे हाय हम सब लोग किस मोह जाल में पड़े थे। अब नये सिरे से इन क्यारियों के पेड़ों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सींचने और साजने में बड़ी सावधानी से दत्तचित्त हो रहे हैं । आशा होती है अब यहां के फूल फल पहले से भी अधिक सर्वग्राह्य होंगे बाग़-वान जो दीन दशा में आ गया है और इसके लड़के वाले जो काम न रहने से भिखारी हो गये बड़े २ धनियों के समकक्ष हो जांय तो क्या अचरज–चलिये अब आप को दूसरी क्यारी की शैर करावें जहां की पुण्य भूमि और पवित्र स्थलियों में कल्पवृक्ष से पादप उपज कर अपने जगद्विदित घ्राण तर्पण सुरभित कुसुम की कुसुमावलियों से संसार की कौन ऐसी दार्शनिक मण्डली, विविध कला कोविद विद्वानों का समूह, कवि समाज, तथा वैज्ञानिक बच रहे जहां इन फूलों की सुगन्धि नहीं पहुंची । पेशगोई और नबूअत का झंडा गाड़े हुये धर्म के प्रचारक जो ईश्वर का एकलौता पुत्र तथा जगत् का त्राण कर्ता कह अपने को प्रसिद्ध किये थे वे भी इन क्यारी के वृक्षों का फल चख कृत कृत्य हो गये और यहां के अमोघ ज्ञान का दो चार विन्दु पाय अघाय उठे । किन्तु हा कुचाली काल चाण्डाल का सत्यानाश हो अकस्मात् एक ऐसा हिमपात हुआ कि इस बाग के सब पेड़ ठिठर से गये और वे फल फूल जो ऐहिक तथा आमुष्मिक ज्ञान यह लोक और परलोक के उपकार साधन का स्रोत या केन्द्र है हिम के करका पात से दबकर सब छिप गया। विदेशी सभ्यता और विदेशी शिक्षा की तो यही चेष्टा थी कि इस पवित्र ज्ञान के खज़ाने को सर्वथा निर्मूल और नष्ट भ्रष्ट कर डालें किन्तु जो सत्य है उसका त्रिकाल में नाश नहीं होता Truth is always truth दूसरे पूर्वज महर्षियों के तपोबल का प्रभाव और सत्य पर उनकी पूरी दृढ़ता कैसे व्यर्थ हो सकती है वेही प्रद्योतित हृदय वाले जो पश्चिमी सभ्यता और शिक्षा से बहक महात्मा ऋषियों के अनुभव और ज्ञान को "नान सेन्स" कहने लगे थे अब उसी को सत्य के पाने का द्वार मान रहे हैं–इस क्यारी की शोभा के निरीक्षण में हम कहां तक आप को बिलमाये रहैं इसके एक २ पेड़ ऐसे हैं जिससे पूरा परिचय प्राप्त करने के लिये आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को महीनों और बर्षों चाहिये। चलिये आगे बढ़िये देखो सामने यह कवि बाटिका की क्यारी लहलहाती हुई अनिर्वचनीय आनन्द सन्दोह मन में उपजा रही है। इसका यह एक अद्भुत प्रभाव है कि यहां पहुंच तुम्हारे मन मधुप को कहीं और ठौर विचरने की इच्छाही न होगी न उसे इतना अवकाश मिलैगा-"नहि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं कांक्षति षट्पदाली" चलते २ आप थक गये होंगे इससे थोड़ा ठहर इन्हीं द्रुम कुञ्जों में विश्राम लै तब आगे चलिये। तथास्तु (मैं जानी बैठ गया थोड़ा सुस्ता कर) व्यर्थ ही लोग अमृत को सराहते हैं स्वर्ग में देवगण निरन्तर अमृत का एक रस पान करते २ ऊब गये होंगे इस बाटिका के शृंगार वीर करुणा आदि नौ रस का पान करते हुये धरती पर मनुष्यों को देख अपने को धिक्कारते होंगे। कालिदास भवभूति सरीखे कवियों की सूक्ति का रस पान जिन्हें स्वप्न में भी काहे को मिलता होगा॥

"सत्कविरसनासूर्पी निस्तुषतरशब्दशालिपाकेन।
तृप्तो दयिताधरमपि नाद्रियते का सुधादासी"॥

कवि ने अमृत से दयिताधर को उत्तम कहा है सच है-अमृत निगोड़े को कहां इतना साहस जो कविता के दिव्य रस की तुलना कर सके-कवि ने पहले सुधा दासी से दयिताधर को आदर दिया फिर कविता के रस का स्मरण कर उसे भी भुला दिया। केवल कविता ही पर क्या यह बाटिका तो रस की खान हो रही है जिस विषय का जो रसिक है उसे अपने मन के माफिक विनोद यहां मिलना अति सुलभ है। बाटिका की किस २ बात की सराहना की जाय यहां की धरती की उर्वरा शक्ति; जल वायु की मृदुता; समय २ ऋतु का परिवर्तन; पृथ्वी के जिस भूभाग के जो हों वे सब अपने २ घर का सुख यहां पा सक्ते हैं—इसी से जो यहां आये उन्होंने फिर अपनी जन्मभूमि में लौट जाने का मन न किया और जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राये सब अपना स्वत्व ही इस पर स्थापित करते गये। अपनी पहिले की ज़र्रोरी वर्रोरी को तिलांजुली दे उन्हीं के सम कक्ष बन गये जिनका मांस और रुधिर अनादि काल से इस बाटिका की भूमि से संलग्न है कदाचित् मेदिनी पृथ्वी का नाम इसी से पड़ गया कि पृथ्वी उन्हीं के मेदा चर्वी की बनी है अस्तु इस बाटिका की वर्तमान दृश्य देख वह निश्चय हो गया कि "प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः"— विधाता समग्र गुण एकही में रखने का बड़ा बिरोधी है जैसी यह सुललित बाटिका मन को रमाने वाली थी भूमि समस्त गुण संपन्न और फूल फल भी सुगन्धि और मिठास में अद्वितीय थे वैसा ही इन फूलों में आत्मगौरव क्यों न आया—इन को अपने रूप का परिचय बिल्कुल न रहा न जानिये कब से ये अपने को भूले हुये हैं—हमें खेद है कि अपने पास ही जपान की बाटिका का नवाभ्युत्थान देख इन्हें अपने पूर्व रूप संपादन का हौसिला क्यों नहीं होता है अनाथनाथ तू जो इन्हें सनाथ किया चाहे तो निमेष मात्र में सब कुछ कर सकता है सब तेरे आधीन हैं ॥

"विषस्यविषमौषधम्"।

"विष को विषही मारता है"।

यह कहावत न जाने कब से प्रचलित है परन्तु इसका गूढ़ अर्थ समझने का अवसर लोगों को कम मिलता होगा और जो मिलता भी होगा तो डाकूरों या वैद्यों को जिनके लिये यह एक साधारण बात है क्योंकि बहुत से रोगियों को ऐसे रोग होते हैं जिनमें विष देने की आवश्यकता होती होगी—अस्तु ॥

साधारण लोग विष उसी वस्तु को कह सकते हैं जिसके प्रयोग से अर्थात् खाने पीने सूंघने स्पर्श करने इत्यादि २ से प्राणी मात्र को अत्यन्त कष्ट पंहुचे और जान जाने की शंका हो परन्तु ऐसी वस्तुओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अतिरिक्त भी भारत में आज कल ऐसे ऐसे महाविष फैले हैं जिनके सामने कोई विष नहीं ठहर सकते। मेरे इस महाविष के शब्द को सुनकर पाठकों को कदाचित् उस विष का ध्यान आया हो जो समुद्र-मथन के समय १४ रत्नों के साथ निकला था। हमारे भोले भाले भोला-नाथ जी ने सब सुर असुरों को असमर्थ पाय बेखटके अपने कंठ में रख लिया जिस कारण उनका कंठ बिलकुल नीला हो गया और आज तक **नील कंठ** उनका नाम इस भारत में पूजनीय समझा जाता है। परन्तु मेरा अभिप्राय उस महाविष पर ध्यान दिलाकर प्राचीन समय के ऋषियों को भला बुरा कहने का नहीं है क्योंकि एक तो पुराने ज़माने की बातों को न तो कोई सुननाही चाहता है और न उन पर बिश्वास करना चाहता है। यह सब या तो पोपलीला समझी जाती है या ब्राह्मणों के "Inperfect" और "Uncultured imagination' की गढंत–जिसको हमारे "Enlightened" और "So called perfectly civilized" महाशय ठट्ठे मारकर उड़ा देते हैं कारण यह कि इन पर किसी प्रधान लन्डनीय महाशय की Opinion. नहीं मिलती है। परन्तु मैं आज आप को उन विषों का ध्यान दिलाना चाहता हूं जिनको इकट्ठा घोल कर पीजाने और हज़म कर जाने के कारण सम्पूर्ण भारतवासी आज दिन इस भूमि पर "काला आदमी" कहे जाते हैं और नीच से नीच अन्य देश के लोग उनसे घृणा करते हैं। भारत सन्तान में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र यह चार ही वर्ण गिने जाते हैं। इनमें से किस वर्ण में **आज कल** कौन कौन से महा विषों ने प्रवेश किया है यह मैं आप को संक्षेप में कहे देता हूं॥

ब्राह्मण में अविद्या, लोभ, अहंकार, आलस्य, दीर्घसूत्रता, अधर्म काम, क्रोध, बाल्यबिवाह कराने में सम्मति इत्यादि इन सब को अपनी मूर्खता की सिलौटी पर पीस कर वेद न पढ़ने के कारण छेदही बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छन्नी में छानकर बिलकुल गड़गाप पड़े हैं ॥

क्षत्री डरपोकपन, परस्त्रीगमन, जीवहिंसा, मद्यपान, निर्लज्जता, खुद-ग़र्ज़ी, निर्बलता इत्यादि बिषों के प्याले पिये एक तर्फ़ मतवाले मोरी में मुंह डाले पड़े हैं। वैश्य दुराचार, दुर्बचन, व्यभिचार, बहुमत, हां में हां मिलाने में नैपुण्य इत्यादि का बिषैला रस पीकर दूसरी ओर अचेत पड़े हैं ॥

शूद्र–वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण बनने की युक्ति, चोरी, दग़ाबाज़ी फरेब इत्यादि को घोल पीये सन्नाटे में पड़े दिखाई देते हैं ॥

महाशय अब तो आप को उन भारतीय महाविषों के नाम मालूम हो गये होंगे जिन के नशे में भारतवासी सब सुध बुध भुलाये आज दिन अचेत दिखाई देते हैं। बड़े खेद की बात है कि ऐसे २ यंत्र मंत्र तंत्र जानने वाले ओझाओं के यहां होते भी कोई ऐसा समर्थी नहीं कि इन विषों को उतार अपनी मातृभूमि का उद्धार करे ? परन्तु याद रहै इस पृथ्वी पर किसी वस्तु की कमी नहीं है भारतवासियों में यदि ऐसा ओझा कोई नहीं है तो क्या? सत्य है "गुण न हिराने गुण ग्राहक हिराने हैं" इसी भारतभूमि पर आज ६॥ वर्ष से एक ऐसा ओझा मौजूद है जिसकी बड़ाई करना मानो सूर्य्य को दीपक दिखाना है। झाड़ फूंक कर विष उतारना और चढ़ाना इन महाशय के बांयें हांथ का कर्तब है। इनका ऐसा पक्का जादू है कि एक एक मंत्र से ३० करोड़ आदमियों तक का ज़हर एक फूंक में उतार सकते हैं। उनकी करामातों के नमूने इसी भारत में कई मौजूद हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए कि उसने एक पहाड़ पर चढ़कर थोड़ा ही भारतवासियों को झाड़ा था कि सैकड़ों वर्ष के चढ़े विष का आधा नशा उतर गया और हज़ारों आदमी मुंह उठा-कर झूमने और झुलझुलाने लगे। बंगाले के जादू की बड़ी प्रशंसा सुनी थी उसी की परीक्षा करने के लिये उसने एक ही बार "छू काली कलकत्ते वाली मेरा बचन न जाये खाली–तेरा घर कर दूं दो टूक सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में फैले फूट-ला हैजा, ला प्लेग, ला अकाल छोड़ सब जोगिनी को लै खप्पर छू सटाक...छू फटाक...स्वाहा" इस मंत्र को ५०० कोस से पढ़कर हाथ से कुछ उर्द ऐसे फेंके कि एक दम बंगाले के दो टूक हो गये। और बंगाले का सब जादू एक ओर धरा रहा। बड़े २ जादूगर नंगे पांव व नंगे सिर होकर कितनी ही कोशिश करें पर उसके जादू को उलटना असंभव मालूम पड़ता है आगे ईश्वरी लीला अनूठी है॥ कूल॥

वन्दे मातरम्।

हमारे वङ्गदेशी भाइयों में इन दिनों वंकिम् बाबू की इस विशिष्ट कविता की बड़ी धूम है—उसे उद्धृत करना सामयिक समझ पड़ता है—यह कविता निरी संस्कृत है जहां वङ्ग भाषा की झलक आई है उसे हमने हिन्दी में लाने का यत्न किया है॥

सुजलाम्-सुफलाम्-मलयजशीतलाम्-शश्यश्यामलाम्-मातरम्-
शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकितयामिनीम् फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम् सुखदाम्-वरदाम्-मातरम्॥
त्रिंशतकोटिकण्टसुनिकलकलनिनादरवम्-
धृत्वाकरवालकरेकरोषिपरित्राणजवम्।
वाहुबलशालिनीम्-रिपुदलनाशिनीम्।
नमामि खड्गधारिणीम्।
कथयन्ति जनास्त्वां कथं देवि अवलाम्-वन्देमातरम्॥
त्वमेवविद्या-त्वमेवधर्म-त्वमेवद्रविणम्-त्वमेवशर्म।
त्वंहिप्राणाः शरीरे-वाह्वोर्मेत्वमेवशक्ति-हृदये अम्ब त्वमेव भक्ति॥
तवैवप्रतिमासातदृश्यतेप्रतिमन्दिरम्।
त्वंहि दुर्गा दुर्गतिहारिणी दशायुधधारिणी।
त्वंहि कमलाकमलदलविहारिणी।
वाणीविद्यादायिनी नमामित्वाम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमामिकमलाम्-अमलाम्-अतुलाम्-सुजलाम्-सुफलाम्-मातरम् ।
श्यामलाम्—सरलाम्-सुस्मिताम्-भूषिताम्-धरणीम्-भरणीम्-तारणीम्-मातरम् ॥ बंकिमचन्द्र ।

अयिभुवनमनोमोहिनि—निर्मलसूर्यकरोज्वलधरणि--जनकजननीजननि ।
नीलसिन्धुजलधौतचरणतल—अनिलविकम्पितश्यामलअञ्चल ।
अम्बरचुम्बितभालहिमाचल—शुभ्रतुषारकिरीटिनि ।
प्रथमप्रभातउदयतबगगने—प्रथमसामरवतबतपोबने ।
प्रथमप्रचारिततबबनभवने—ज्ञानधर्मबहुपुण्यपाबनि ।
चिरकल्याणमयीत्वंधन्ये - देशविदेशेवितरितअन्ने ।
जान्हवियमुनाबिगलितकलुषे—पुण्यपीयूषस्तन्यवाहिनि ॥ वन्देमातरम्
रवीन्द्रनाथ ।

LAST COMMISSION—अन्धों की जांच ।

पाठक यह कोई विलायती कमिशन नहीं है वरन देशी कमिशन है जो अन्धों की जांच के लिये कई मित्रों की सहायता से किया गया है ॥

एक दिन हम सब लोग कई एक मित्रों के साथ सुभाषित गोष्ठी के सुख का अनुभव करते हुये अनेक इधर उधर की गपशप के उपरान्त यह बात छिड़ी कि सब से बड़ा अन्धा कौन है ! देर तक तकरीर और वहश के पीछे यह तै पाया कि हमी लोगों में चार मित्र जाकर इसकी जांच करें और तब आ यह रिपोर्ट मित्र मण्डली के आगे पेश करें । दूसरे दिन भोर को उठते ही चारो मित्र इसकी जांच को चल खड़े हुये और उनकी जांच में जो तै पाया वह यह है ॥

ये चारो कुछ थोड़ी दूर चले थे कि एक साफ सुथरा मकान देख पड़ा । मालिक मकान को सुचित्त बैठे देख हम लोगों ने आगत स्वागत के उपरान्त पूछा कहिये साहब यह मकान, आपही का है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुसूर माफ हो तो आप से कुछ पूंछा चाहते हैं। यही कि आप क्या काम करते हैं?

मालिक मकान। मैं एक मामूली गृहस्थ हूं नौकरी से अपना पेट पालता हूं और किसी तरह दिन काटता हूं। माफ कीजिये यह तो हम समझते ही थे। कितने दिनों से आप इसी हालत में हैं? सिवा पेट पालने के और भी कुछ करते हैं? कभी अपनी तरक्की Improve. करने की भी कुछ कोशिश आपने की है?

मा-म-जी नहीं इस दशा में रहते आज मुझे पूरे १८ वर्ष गुज़रे। क्या करना है ईश्वर खाने को दिये जाता है तब क्या प्रयोजन कि झंझट सिर पर लादें (बुधुआ पान ला) अजी गृहस्थ के लिये इतना काफी है। सबेरे ९ बजे नौकरी पर गये शाम को दफ़्तर से लौटने के उपरान्त हाथ मुंह धो कुछ जल पान कर घर का जो कुछ काम काज रहा किया शाम हुई ब्यालू से फारिग हो सो रहे बस हो गया। अच्छा तो आप लोग पधारें हमारे आफिस जाने का समय अब आया है॥

चारो मित्र। क्यों भाई अब इन्हीं से अन्धों की जांच शुरू कर दें। १० वर्ष तक ऐसी दशा झेलते आये और कभी तरक्की करने की चेष्टा न की। नोट बुक में यह रिमार्क हुआ पहली श्रेणी के अन्धे ऐसे लोग हैं॥

आगे बढ़े बाज़ार में पहुंच देखा तो एक महाशय दो एक सण्ड मुसण्ड गेरुआ वस्त्र धारियों को हाथ जोड़ कुछ दे रहे हैं और बाबा जी कुछ पढ़ असीस दे चंपत हुये। हम लोगों ने यह रिमार्क लिखा ऐसे को दे मुफ़्तखोरों का दल बढ़ाने वाले दूसरी श्रेणी के अन्धे हैं॥

१० बज गया धूप कड़ी हो गई थी दूसरी जून फिर चलने की ठहरी। चारो मित्र टहलते हुये चौक में पहुंचे तो देखा दो एक बाबा जी सोफियाने इक्के पर आ रहे हैं पहिया जिसकी रबरटयर से कसी है उनके ढंग से मालूम हुआ कि ये अखाड़े वाले फकीरों में से हैं। चारो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं के पीछे हो लिये थोड़ी दूर चल इक्का एक कोठी के दरवाज़े रुक गया। पूछने से मालूम हुआ बाबा जी इन दिनों एक मुकदमा लड़ रहे हैं उसी के लिये रुपया लेने आये हैं। रुपया क़र्ज़ नहीं किन्तु निज का कुछ जमा है उसी को लेने आये हैं नोट बुक में लिखा गया इन बाबा जी फकीरों को देने वाले तीसरी श्रेणी के अन्धे हैं। जिन्हें इतना भी नहीं सूझता कि ये विरक्त काहे के हैं बरन गृहस्थों के कान काटते हैं। कोठी का हाल पूछने से मालूम हुआ कि लाला जी गद्दी के खटमल बने व्याज खाते पड़े रहते हैं। रुपये का प्रमिसरी नोट लेते चले जाते हैं। चारो में से एक बोला भाई अब चलना चाहिये इनसे बढ़कर अन्धा कौन होगा रुपये के बदले कागज़ लिये रक्खे हैं जिस्से ४ या ५ रुपया सैकड़ा सालाना से अधिक आमदनी नहीं हो सकती। वही रुपया अगर किसी रोज़गार में लगाते तो दूसरों की कितनी जीविका होती और अपने को फायदा रहता॥

दूसरा—नहीं भाई अभी देखते चलो इनसे भी अधिक अन्धे होंगे ईश्वर की सृष्टि में एक से एक अद्भुत जानवर पड़े हैं॥

सब – हां ठीक कहते हो किन्तु पहले इसे लिख लो— नोट बुक में रिमार्क हुआ। बेरोज़गार प्रमिसरी नोट खरीदने वाले चौथी श्रेणी के अन्धे हैं। सन्ध्या समय होते देख सब लोग दूसरे दिन ८ बजे फिर मिलने का वादा कर अपने २ घर गये॥

2ND AUGUST.

दूसरे दिन घर से निकलते ही ८ या १२ आदमी सफेद मिर्ज़ई पहिने लम्बी २ लाठी लिये झपटे चले जाते नज़र आये। पूछने से मालूम हुआ आज मुकदमे की तारीख है वकील साहब के यहां जाते हैं॥

चारो में से एक—क्यों भाई कलही घर बैठ रहने की राय थी। देखिये ये लोग उनसे ज्यादे अन्धे हैं या नहीं। दौड़ें धूपें रुपया खर्चें अन्त को क्या तै होगा सो कुछ मालूम नहीं। आपस ही में तै कर लेते तो कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा होता अस्तु। सबों की राय से नोट बुक में लिखा गया वकील और मुखतारों की उदरदरी को पाटने वाले पंचई श्रेणी के अन्धे हैं॥

थोड़ी दूर चले थे कि एक साहब दिखाई दिये जो मज़े में मग्न नाली के पवित्र पानी का स्वाद ले रहे थे। सबों की राय से स्थिर किया गया कि यह सब से बड़ा अन्धा है रुपया खर्च करता है बेइज़्ज़त हो नाली में लोटता है। रिमार्क हुआ नशा पीने वाले छठई श्रेणी के अन्धे हैं॥

आगे बढ़े तो एक लम्बा चौड़ा मकान देख पड़ा जहां बहुत से मनुष्य इकट्ठे थे हम लोग भी बेरोक टोक वहीं चले गये पहुंचने पर जाना कि यह कोई "लइब्रेरी" पुस्तकालय है। एक बूढ़ा जिसके सिर के बाल चांदी से चमक रहे थे कुछ पढ़ता है और सब लोग ध्यान जमाये सुन रहे हैं। सन्नाटा खूब छाया था अन्दाज़ से मालूम होता था कि इस पुस्तकालय के मौरास का पट्टा इस बूढ़े ने अपने ही नाम का लिखा रक्खा है। लोगों के चेहरों से प्रगट हो रहा था कि ये सब कोई खुशखबरी सुन रहे हैं। थोड़ी देर बैठने के बाद मालूम हुआ कि समाचार पत्र में लार्ड कर्ज़न का इस्तयाफा छपा है जिसे सुन सब प्रसन्न हैं और कर्ज़न की निन्दा कर रहे हैं। यह देख चारो मित्र लौट पड़े और उन्होंने निश्चय किया कि अन्धों की लिस्ट में कर्ज़न का नाम होना ज़रूर है क्योंकि ये न विलाइत के लोगों को खुश कर सके न यहीं वालों को "दोनों दीन से गये पांड़े न रहे भात न रहे मांड़े"॥

लइब्रेरी के बाहर होते ही एक रत्थी देख पड़ी सब लोग उसी के पीछे हो लिये। हाल पूछने से मालूम हुआ कि यह चिथरूमल साहु की रत्थी है। इनकी हिस्टरी History. यह है कि यह बड़े धनी थे किन्तु बज्र सूम थे सिवाय स्वार्थ के और कुछ जानते ही न थे। स्वार्थ साधन निमित्त स्त्री को मा कहने में ज़रा नहीं सकुचाते थे। मरते समय तक न बता गये कि इनका रुपया सब कहां गड़ा है और चल बसे। जब से बाप की गद्दी पर बैठे आज तक दूध नहीं पिया। किसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ देना कैसा द अक्षर कान में पड़ जाने से इन्हें जूड़ी आने लगती थी। इत्यादि इनके अनेक अपावन इतिहास हैं जिन्हें सुन रौरव यात्रा की यातना अति सुलभ है। सबों के मन में यह कट्टर सूम सब से बढ़कर अन्धा जंचा और चारो ने अपने २ घर की राह ली। रिमार्क हुआ स्वार्थी जितने अन्धे अब तक जांचे गये उन सबों की एक बड़ी चौड़ी फोटो है॥ R. A.

काशीवाले क्या सोशलकानफरेन्स न रोकैंगे ?

कानग्रेस पंडाल में कानफेरेन्स का होना हिन्दुस्थानी का केन्द्र काशी की नाक काट लेना है। धिक् काशी के पण्डित और वहां के धर्म धुरीणों को कि कानफरेन्स संशोधन के बहाने उन के सिरहाने बैठ उन के पवित्र धर्म पर वंका गोला चलावै और वे न चेतैं न इन कपट-कापटिकों की इस मण्डली के उच्छेद का कुछ प्रयत्न करैं। वास्तव में यह कानफेरेन्स क्या है और क्या किया चाहता इसे हम कई बार लिख चुके हैं पुनः २ उसका उद्घाटन पिष्ट पेषण है। धर्म महा मण्डल भी इसके अनुमोदन में तत्पर है तब यह धर्म मण्डल काहे का हुआ अस्तु।

स्वदेशी वस्तु के प्रचार पर पिता और पुत्र का संबाद।

पुत्र--पिता जी आज कल स्वदेशी बस्तु के प्रचार पर बहुत आंदोलन हो रहा है, न जानिये इसका क्या परिणाम होगा ?

पिता--आंदोलन तो हो रहा है पर इसके प्रचार पाने का कुछ रंग नहीं दिखाई देता है॥

पुत्र--क्यों पिता जी इसके चल जाने में क्या संदेह है ? इसके प्रचारक तो बड़े २ विद्वान् और धनाढ्य पुरुष हैं और समस्त भारतबर्ष के लोग इस में तन, मन, धन से तत्पर जान पड़ते हैं। एक दिन हमारे पाठशाला में इसी विषय पर बाबू रामानन्द चटर्जी ने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदयग्राही व्याख्यान दिया था जिस के सुनने को लगभग सहस्र मनुष्यों के एकत्र थे और व्याख्यान के अंत में मैंने सुना था कि लगभग ३०० मनुष्यों ने छोटे २ पत्रों पर हस्ताक्षर करके यह प्रण कर लिया है कि भविष्य में वे विदेशी वस्तुओं को निज व्यवहार में कदापि न लावेंगे, जिस से सभा को और भी हर्ष प्राप्त हुआ था ॥

पिता--हां सच है पर यह एक ऐसा कार्य है कि जिसके लिये दृढ़ता की विशेष आवश्यकता है। यह खेल नहीं है कि केवल हस्ताक्षर ही करने से हो जायगा इस रास्ता में बहुत से बटमार ठग लगेंगे। यह रास्ता इंगलैण्ड, जरमनी आस्ट्रेलिया और अमरिका आदि वालों के हृदय को विदीर्ण करके सुरलोक को गई है। इस में बड़ाही क्लेश भोगना पड़ेगा। यह राह एक तो विदेश में होकर गई है दूसरे विदेशियों का पहरा इसमें है। पर अब तो जो हो गई सो हो गई। धैर्य्य धर कर आगे ही बढ़ना निश्चित जान पड़ता है नहीं तो हमारे दीन भारत की जो दशा इन निर्दई विदेशी व्यापारियों के हाथ से बदी है उसे प्रायः प्रत्येक मनुष्य जानता है ॥

पुत्र--पिता जी लोगों की दृढ़ता में तो कुछ संशय नहीं जान पड़ता है क्योंकि इस समय हमारे दो उत्सव अर्थात् "रामलीला और दुर्गापूजा" रहे हैं इन में आपने अवश्य ध्यान दिया होगा कि अनेक मनुष्य स्वदेशी वस्त्र धारण किये हुये थे। जिस से प्रत्येक मनुष्य को जिसे अपने देश की थोड़ी भी प्रीति होगी वह निश्चय हर्षित होता होगा ॥

पिता--बेटा इस समय तो लोगों का उत्साह अधिक है यदि इसी प्रकार लोग मन को अचल रक्खेंगे तो आशा है कि हमारे देश की दशा पुनः परिवर्तित हो जावेगी। इसके सिवाय यदि विद्वान् लोग प्रतिमास इस विषय पर अपने २ नगर में व्याख्यान देना अपना मुख्य धर्म जान लें तो इस से अधिक और क्या भलाई हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्ती है ॥

पुत्र पिता जी ! हमारे देश में कितने रुपयों के विदेशी वस्त्र आते होंगे ?

पिता इन बातों के उद्घाटन में दुःख होता है-हम समझते हैं १०८८०००८००) रुपये से अधिक के प्रतिबर्ष कपड़े आते हैं

पुत्र आपने कहा है कि इस विषयपर व्याख्यान देना अत्यन्त गुणकारी होगा तो संभव है कि लोग बनारस कांग्रेस में भी इस विषय पर कुछ कहें ?

पिता-हां कहना तो कुछ चाहिये ॥

पुत्र पिता जी यह कांग्रेस अपने ढंग का अद्वितीय होगा क्योंकि इसमें जितने लोग पधारेंगे वे देश का बना कपड़ा पहने रहेंगे ॥

पिता बेटा! इस बात को तुम ध्यान में रखना कि यह कांग्रेस भारत भाइयों की दृढ़ता की कसौटी है। लोगों की प्रीति अपने देश की ओर जितनी होगी वह इसमें कसी जायगी जन्मभूमि वात्सल्य की यह प्रथम परीक्षा है ॥ जोखन मिश्र ॥

कवि गिरिधर की कुछ बातें।

भाषा का रसिक कौन होगा जो गिरिधर के नाम से परिचित न हो। परन्तु गिरिधर कौन थे? कहां के रहने वाले थे? उनका जीवन कैसा था? वे किस ख्याल के मनुष्य थे? इन बातों का पता कदाचित् प्रदीप के पढ़ने वालों को न होगा। अतः उनका हाल जैसा लाला चुन्नीलाल रईस गोविन्दपुर से सुना है पाठकों की भेंट करते हैं कदाचित् उससे उनका कुछ मनोरंजन हो ॥

कवि राय गिरिधर के बारे में पहिले रावल मल दिल्ली वाले ने हमें कुछ सुनाया था कि वह एक पिट्ठी पीसने वाला पुरुष था किन्तु विलक्षण प्रतिभा का था--पिट्ठी पीसते २ कुण्डलिया बना लिया करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। हमें भी उनके कहने का निश्चय हो गया था इसलिये कि बुद्धि किसी के पास गिरों नहीं है। साधारण मनुष्यों में बहुधा विचित्र प्रतिभा पाई जाती है या प्राक्तन संस्कारों के कारण ऐसा होना कोई नई बात नहीं है। प्रतिभा प्रायः संस्कार जन्य होती है कालिदास शेक्सपियर मिलटन आदि जो ऐसे विशिष्ट कवि हुये यह प्रतिभा ही का कारण है। बनारस में सहिबना एक पंखा बेचने वाला है पढ़ा लिखा एक अक्षर नहीं है पर काशी में जितनी कजली गाई जाती है सब उसी की बनाई है और खड़े २ कजली बना देता है। गिरिधर जाति के खत्री ग्राम भिंगड़ तहसील दसूहा ज़िला होशयारपुर पंजाब के रहने वाले थे। घर गृहस्थी त्याग सन्यास आश्रम में आ गये थे। इनका पहिला नाम हरिदास या उपाधि गिरिधर थी अर्थात् लोग इन्हें गिरिधर के नाम से प्रसिद्ध किये थे। कोई कहते हैं यह उदासी हो गये थे जो हो पर वस्तुतः यह स्वतंत्र प्रकृति के साधू थे इनको किसी मत मतान्तर में आग्रह न था और वेदान्त के सिद्धान्तों पर इन्हें पक्की निष्ठा थी जैसा उनकी कुण्डलियों से प्रतीत होता है। तिब्बत में भी यह इस इच्छा से गये थे कि उमर बढ़ाने के साधनों को वहां के लोग जानते हैं इससे उनसे उन साधनों को जान आयु वृद्धि करना चाहिये पर वहां जाके उनको मालूम हुआ कि बड़े २ साधन संपन्न भी २५० वर्ष से अधिक नहीं जीते हैं और इनके अधिक जीने का कारण, ब्रह्मचर्य, प्राणायाम, इन्द्रिय दमन आदि है। परन्तु अधिक जीवन से हो ही गा क्या? आख़िर मरना ही पड़ैगा ऐसा समझ कर वे लौट आये॥

आप सन्यासावस्था में साधु मण्डली में प्रविष्ट होकर अनेक देशों में भ्रमण किया करते थे और उनके हृदय में वैराग्य का पूर्ण प्रादुर्भाव था। एक बार आप घूमते २ मारवाड़ में गए, कई एक और २ साधु भी संग थे। १९वीं शताब्दी में भी, अन्तिम भाग को छोड़ यह देश रंजा पुंजा था, देश में धन धान्य किसी क़दर अच्छा था आज कल की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रूर जनों की भरमार न थी। राज्य करने वाले लोग अच्छे ही होंगे। अस्तु। मारवाड़ के चूरू नगर में जब आप पहुंचे तो सब साधुओं का एक किसी सेठ ने निमन्त्रण किया, सेठ साहब अच्छे धनाढ्य थे, सेठजी ने भोजनार्थ सब के सामने सोने की थालियां और गिलास रक्खा, भोजन के अन्त में सेठ ने गिरिधर जी की विरक्तता की परीक्षार्थ कहा महाराज यह भोजन थाली आदि के सहित ही है अतः आप लोग थाली आदि अपने २ घर लेते जाइये। उन दिनों उनके साथ एक साधु गुलाब सिंह थे उनसे उन का प्रेम था, सेठ से ऐसा सुन बहुत से साधु लोभाक्रान्त हुए बहुतों की इच्छा हुई कि बर्तन ले चलना चाहिए। ठीक है-वित्तैषणादि से निवृत्त होजाना साधारण काम नहीं। उस समय गुलाब सिंह ने गिरिधर जी की तरफ़ देखा और गिरिधर ने गुलाब सिंह की तरफ़ देख झट उठ खड़े हुए, उठकर साधुओं की तरफ़ इशारा करके यह कुण्डलिया कहा:—

लोभी होवे सन्त जो पौला तिसके शीस।
पैरों लाय अठारियां मारो दस वा बीस॥
मारो दस वा बीस पचासक और लगाओ।
झाड़ झपट के राह फकर का फेर बताओ॥
कहैं गिरिधर कविराय सुनो जन मन के बोधी।
स्वान बांग ललकार सन्त जो होवै लोभी॥

सेठ जी ने कहा कि जैसा आप को सुनते थे वैसाही पाया॥

वह मण्डली में प्रायः रहा करते थे, पर जब चलने की अर्थात् पृथक् होने की इच्छा होती तो बिना किसी से पूछे चल दिया करते थे, यह भी उनके एक अच्छे वैराग्य का चिन्ह है। आज कल के साधुओं की तरह वे संग्रही न थे, अन्यथा उनके मठाधिपति बनने में क्या सन्देह था? एक बार उनके पास उनके पुरोहित कोई ब्राह्मण देवता धन पाने की इच्छा से आए और उन्हें बहुत तंग किया कि हमें कन्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बिवाहार्थ ५००) रुपया दिलवा दीजिए। आग्रह करने पर उन्हों ने कनखल में भगवद् गीता की कथा की गीता के उनके किये अर्थ को सुनकर लोग बहुत प्रसन्न हुये और चढ़ावे में १५००) रुपया आया। तब पुरोहित ने कहा मेरे लिये आपने कथा करी इसलिये सब रुपया मुझे मिलना चाहिये। परन्तु गिरिधर जी ने फ़र्माया कि जितना तुम्हें अपेक्षित है अर्थात् ५००) रुपया उतना ही दिया जायगा अधिक नहीं। उन्होंने वैसाही किया और शेष रुपया ब्राह्मणों के कार्य्य में अर्थात् भोजन आदि में लगाया। इतनी उदारता दिखलाने पर भी उन्हें किसी प्रकार का अभिमान नहीं हुआ। वे भण्डारे के दिन भी स्वयम् भिक्षा करने गये और जो गृहस्थों के यहां से मिला उसी से निर्वाह किया नियम पालन इसका नाम है। एक बार एक ब्राह्मण आया और कहने लगा कि आप को कोई रसायन बनाना आता है उन्होंने कहा हमें रसायनादि बनाना कुछ नहीं आता किन्तु जो लोग हमें दे जाते हैं वह वस्तु हम औरों को दे छोड़ते हैं हमारे पास तो केवल एक लोटा एक सोटा एक गुदड़ी है इसके सिवाय हम और कुछ नहीं रखते–तथापि उसने नहीं माना और हठ किया तब अन्त में गिरिधर जी ने कहा निर्वाह मात्र रसायन तौ हमें प्राप्त है–तब ब्राह्मण ने कहा कि हमें निर्वाह मात्र ही रसायन बता दो कहने लगे कि अच्छा चलो हमारे साथ। भिक्षा के समय उसे सङ्ग लेकर चल दिये और एक गली में भिक्षा के लिये घुस गये और कहा हम भिक्षा रसायन के वास्ते जाते हैं तुम इस गली में चले जाओ वह समझ गया कि यह रसायनी साधु नहीं है और चल दिया।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि आप मण्डली में रहा करते थे परन्तु कभी २ एकाकी बिचरा करते थे अमृतसर में जब इकल्ले विचरते हुये गये तब वह एक साधारण वेश में हरि मन्दिर में घुसने लगे; लोगों ने उनको टोका तो आप को कुछ क्रोध आया बस क्रोध आने की देर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कुण्डलिया बनाना उनके घर की खेती थी झट आपने खड़े २ कुण्डलिया कहा:—

मन्दिर में कञ्जर बसें, अथवा बसें चमार।
साधु सन्त का सार न जाने, चाम दाम के यार॥
चाम दाम के यार, पुजारी मति के मैले।
देह अभिमानी मूढ़, हाड़ बिष्ठा के थैले॥
कहैं गिरिधर कविराय, जुड़े बहु स्वार्थी बन्दर।
अथवा बसें चमार, पुनः कञ्जर हरि मन्दिर॥

सिक्खों को पता लगा कि गिरिधर जी हैं तब उन्होंने बड़ा आदर किया परन्तु वहां ठहरे नहीं और चल दिये उनकी आदत थी कि सायंकाल को भिक्षा करने नहीं जाते थे किन्तु किसी एक पुरुष से कह दिया करते थे कि हमें दो रोटी पहुंचा देना और बाहर जंगल में ठहरते थे। एक बार एक धर्मशाला में सायंकाल को पहुंचे धर्मशाला सिक्खों की थी सिक्खों ने मामूली आदमी समझ कर नहीं ठहरने दिया तब क्रोध में आकर कूंचे के पास जा ठहरे जिस आदमी से भोजन के लिये कह गये थे वह जब भोजन लेकर धर्मशाला में पहुंचा तब धर्मशाला में नहीं मिले। फिर उन्होंने इधर उधर खोजा तो वे कूंचे के पास मिले। भोजनदाता का नाम पण्डित प्रभुदयाल मिश्र था ये श्री गोविन्दपुर के रहने वाले थे और उनके बड़े प्रेमी थे इन्होंने पूछा कि आप धर्मशाला से क्यों चले आये तब उत्तर में जो उन्होंने कुण्डलिया कहा वह यह है:—

भाई बहड़े (बुरे) पूतने (प्रेत) रहत गुरां ते दूर।
पढ़ २ बेचें ग्रन्थ को चुर चुर मरत मजूर॥
चुर चुर मरत मजूर व्यर्थ ही दन्त खिजावें।
बाघड़ (वन) बिल्ले वाङ्ग् (तुल्य) देखकर झपट चलावें॥
कहैं गिरधर कविराय सन्त से दुर्जन तांईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे गुरां से दूर भूत से बहड़े भाई ॥

इनकी जीबिनी से हमें स्पष्ट भासता है कि यह स्वतंत्र प्रकृति के मनुष्य थे और वैराग्य आदि की अच्छी शिक्षा मिलती है। ये लकीर के फकीर वाले साधु नहीं थे जो केवल पञ्च दशी रटकेही रह जांय किन्तु अंगरेज़ी भी जानते थे पञ्जाब के राजा दलीपसिंह से मिलने विलायत गये थे और वहीं इनका देहान्त हुआ —अब ऐसे कुण्डलिया बनाने वाले बिरले ही कहीं होंगे अस्तु उनके वेदान्त विषय की कुण्डलिया यहां दी जाती है ॥

नारायण वह आप है स्वप्रकाश विज्ञान।
निज स्वरूप ते भूलकर कल्पित है अज्ञान ॥
कल्पित है अज्ञान नाना बिधि नाच नचावै।
घटी यन्त्र ज्यों इर्द गिर्द इत उत भरमावै ॥
कहैं गिरधर कविराय खाय जब ज्ञान रसायन।
स्वप्रकाश विज्ञान आप को कहैं नारायन ॥

शान्ति विषय में:—

हे मन ऐसो काज कर जामें पावै शान्ति।
राग द्वेष मिट जांय सब आशा तृष्णा भ्रान्ति ॥
आशा तृष्णा भ्रान्ति नीच गति है ये पापिन।
जिसके अन्तर बसै तिसी को डसै है सांपिन ॥
कहैं गिरधर कविराय ज्ञान कर तू उत्पन रे।
निखिल अन्धेरा नशै द्वैत फिर रहै न मन रे ॥
जाके अंतःकरण में रागद्वेष की आग।
ताको सुख स्वप्ने नहीं शान्ति न लहे अभाग ॥
शान्ति न लहै अभाग फिर किसी प्रकारा।
बिना ज्ञान नहिं मुक्ति वेद का बजै नगारा ॥
कहैं गिरधर कविराय धूलि शिर डारो वाके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रागद्वेष की अग्नि जलत है अन्तर जाके ॥
वैयाकरणी कहत हैं जाको नाम स्फोट ।
चतुर* षष्ठ दश अष्ट की उसी लक्ष्य पर चोट ॥
उसी लक्ष्य पर चोट चलावैं खैंच कमाना ।
तीरन्दाज अनेक सबन का एक निशाना ॥
कहैं गिरधर कविराय पड़ो मत तिस्की शरनी ।
जाको नाम स्फोट कहत जग वैयाकरणी ॥

भी० से० शर्मा, गुरु कुल ।

बीर ब्रत पालन ।

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास बङ्ग भाषा के विख्यात लेखक बाबू हारानचन्द्र के "मन्त्रसाधन" का अनुबाद है इसमें बीर केशरी महाराणा प्रतापसिंह तथा नीति कुटिल अकबर का वृत्तान्त उपन्यास रूप में दिया गया है- यह उपन्यास "जीवन सन्ध्या" तथा राधाकृष्णदास-कृत "प्रताप नाटक" से बिलकुल मिलता जुलता है । हम नहीं कह सकते लेखक महाशय ऐसे उपन्यास के अनुबाद करने पर क्यों रीझे जिनके विषय की और भी किताबें भाषा में मौजूद हैं और साथही इसके यह कि इस किताब का तर्ज़ कुछ निराला नहीं Plot व और बातैं सब वही जो उन किताबों में हैं । कदाचित् लेखक महाशय की यह मन्शा हो कि ऐसे बीर पुरुष का चरित्र लोगों में और भी अधिक प्रसिद्ध हो तो यह लेखक का निरा नयापन है जबकि आपने हिन्दी भाषा को Sanskritized करना अपना मुख्य कर्तव्य समझा है-मेरी समझ में ऐसे बीर का चरित्र तभी प्रसिद्ध हो सकता था जबकि पुस्तक की भाषा सहज से सहज होती पर यहां तो "हर्रा लगै न फिटकरी रंग चोखाआवै"-

* ४ वेद षट् दर्शन, १८ पुराण स्मृत्यादि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक महाशयने मेरी समझ में "मन्त्रसाधन" का अनुबाद करने में उसकी क्रियाही को बदल जैसी की तैसी उसी की भाषा को रख अपनी पूरी पण्डिताई झलकाया है-मालूम होता है आज कल की लूट-खसोटनी हिन्दी में जहां कई Style निकली है तहां लेखक महाशय ऐसी भाषा निकाल कर एक नई तिवारी Style हिन्दी निकालना चाहते हैं--इस की टटोल जिनको लेना हो वे नीचे के उद्धित किये वाक्यों से ले सक्ते हैं-"सद्योनिःसृत उत्तप्त शोणितधारा" "पूर्णशक्ति सपन्न अधीश्वर" "आदर अभ्यर्थना', आदि बीच में इने गिने 'मंजूर' 'ख़ास कर" ऐसे दो एक शब्द कैसे टपक पड़े हम नहीं कह सक्ते। इन के सिवाय इस ग्रन्थ में प्राकृतिक बहुत से दोष हैं पर इन दोषों के भागी तिवारी जी नही हो सक्ते क्योंकि सम्भव हो कि ये दोष बङ्ग लेखक महाशय के हों अन्त में यदि ऐसे बीर का ऐतिहासिक वृत्तान्त इसमें है तो पुस्तक को अच्छीही समझना चाहिये मूल्य १)८० अधिक है मिलने का पता-पं-बनवारीलाल तिवारी सराफा बाज़ार लश्कर ग्वालियर ॥

विज्ञापन।

आज कल लोगों को "फोटोग्राफरों" तथा "घड़ी साज़ों" से सदा काम पड़ा करता है पर उनसे लोग सन्तुष्ट रहते हैं या नहीं हम नहीं कह सकते--जहां तक मालूम है और काम पड़ा है हम कह सकते हैं कि बा-मोतीलाल नं० ६४ जान्स्टनगंज इलाहाबाद इस काम को अति सुघराई, पायदारी, इमानदारी तथा सच्चाई से करते हैं—मेरे अनुरोध से एक बार अवश्य आप लोग इनसे काम लेने का मौक़ा ढूंढ़ें और भी आप के यहां अयोध्याजी तथा और २ स्थान के महात्माओं की फोटो भी रहती हैं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २७ } प्रयाग { दिसम्बर
सं० १२ } { सन् १९०५ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥ु)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २७ सं० १२ | प्रयाग | दिसम्बर सन् १९०५ ई०

पहले इसे पढ़ते चलिये ।

यह बारहवीं संख्या है वर्ष पूरा हो गया। ठीक समय से न निकलने की त्रुटि भी अब न रही तब यह विकत्थन हमारा क्या अनुचित होगा कि लेख चातुरी में हम अपने सहयोगियों में किसी से कम नहीं हैं और अब ठीक समय से भी उपस्थित होने लगे । ठीक समय से निकलने पर खर्च तो बढ़ गया आमदनी न बढ़ी । इच्छा थी इसी वेतन में अपना आकार और बढ़ा कर मास के आरम्भ ही में सेवा के लिये उपस्थित होते किन्तु क्या करें कहावत है "बीता भर की खूंटी क्या गाड़ें क्या उखाड़ें"–चेष्टा तो हमारी यही रहती है कि हम किसी तरह बोझ न हों बरन आपको रिझाय और प्रसन्न कर मूल्य उगाहैं । मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कदाचित् बोझ ही हैं तो देने का पाप दिये से कटता है। पानी का टिक्कस या दवा का कडुआ प्याला घूंटने की भांत आंख मूंद कड़ा कलेजा कर वेतन का हमारा अल्प मूल्य फेंक दीजिये। अब तो यहि बोझ सिर पर से किसी तरह दूर हटै साल भर बाद फिर कहा सुना जायगा मरी अकाल आदि उपद्रवों से जीते बचैंगे तो देख लेंगे। इसमें बड़ी भलाई तो यह है कि प्रति मास तकाज़े के कार्ड का हमारा एक पैसा बच रहेगा और मूल्य वसूल करने में जो किच किच करना पड़ता है उस झंझट से गला छुटा रहेगा। आगे से नियम करना पड़ेगा कि जो अग्रिम मूल्य न भेज दें वे पक्के ग्राहक नहीं उनकी कर्चोलोई न उनकी सेवा के लिये हम वाध्य रहेंगे किमितिशम्॥

निज वृत्तान्त।

पुराना चर्खा ओटने की भांत निज वृत्तान्त कह सुनाना आपका बहुमूल्य समय नष्ट करने की भांत है। किन्तु कई मित्रों के अनुरोध से कि प्रदीप का संक्षिप्त इतिहास जानने की बहुतों को लालसा है हमें ऐसा करना पड़ता है। ईश्वर के अनुग्रह से अब इस समय हिन्दी साहित्यसेवी बहुत हो गये हैं और दिनों दिन उनकी संख्या बढ़ती जाती है। हमारे प्रान्त के प्रत्येक नगर के सिवाय कलकत्ता बाम्बे और पंजाब जो प्रत्यक्ष में हिन्दी बोलने वाले प्रान्त नहीं हैं वहां भी भाषा के सुलेखकों की संख्या बढ़ती जा रही है और हिन्दी भी अपनी और २ बहिन बंगला गुजराती मराठी के समान साहित्य भण्डार का आगार होती जाती है। प्रति वर्ष दो चार मासिक और साप्ताहिक पत्र नये निकलते हैं किन्तु एक समय वह भी था जब कुटिल आकृति धारण करने वाली वामावर्तिनी कराला उर्दू के सिवाय देश में हिन्दी का नाम भी न था। दाहिनी ओर से हिन्दी को लिखते देख लोगों को अचरज होता था कि क्या कोई ऐसी भी लिखावट है जो बांयें हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर से नहीं लिखी जाती । वर्तमान् हिन्दी साहित्य के जन्मदाता प्रातः स्मरणीय सुग्रहीत नामधेय बाबू हरिश्चन्द्र तथा दो एक उन्हीं के समकक्षों को छोड़ सुलेखकों का सर्वथा अभाव था । भाषा साहित्य भास्कर पं० प्रताप का उदय भी तब तक नहीं हुआ था । श्री राधाचरण चंचरीक साहित्य मंजरी का मधुपान करते किसी कुसुमावली में छिपे पड़े थे मधुप की प्रौढ दशा तक नहीं पहुंचे थे । तात्पर्य यह कि हिन्दी साहित्य का आकाश उस समय तक सब ओर से धुंधला था उर्दू चाण्डालिन इतना आक्रमण किये थी कि हिन्दी को प्रकाश के लिये कहीं अवकाशही न था । इन दिनों तो खड़ी और पड़ी के न जानिये कितने भेद चल पड़े हैं पर उस समय लेख प्रणाली के दो ही परमाचार्य समझे जाते थे राजा शिवप्रसाद और बाबू हरिश्चन्द्र । पहले भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र भी राजा को अपना गुरूवर मानते थे किन्तु हरिश्चन्द्र सा उदारचेता और राजा साहब का सा स्वार्थ परायण का साथ कब निभ सक्ता था । दोनों की दो तरह की प्रकृति देख हमें अचरज था कि यह आम इमली का मेल कैसा? अन्त को यही हुआ भी कि हरिश्चन्द्र को गवर्नमेन्ट की ओर से फीका कर देने के पहिले कारण राजा हुये । पीछे तो यह भी खुल खेले और ऐसे २ उत्तेजक लेख उनकी लेखनी से प्रगट हुये कि कर्मचारियों को उन की ओर से खटक हो गई । अस्तु बाबू साहब के इतने परिश्रम पर भी हिन्दी बालिका की मुग्ध दशा बनी रही उर्दू को प्रौढ होते देख इसे अपने में प्रौढ़ता आने की लालसा रही आई और जिस्के लिये सदा यह लालायित रही कि कब वह दिन आवेगा कि हम भी अपनी और २ बहिनों की भांत पुस्तकालयों की बड़ी २ आलमारियों का एक कोना छेंक लेने लायक हों ॥

भाषा के ऐसे बाल्यकाल में हिन्दी के हितू और प्रेमी कतिपय छात्रों की एक मण्डली हमारी दमदाता हुई । एक २ छात्र ने पांच २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये चन्दा दे कुछ रुपये मूल धन की भांत इकट्ठे कर प्रति मास १६ पृष्ठ का एक मासिक पत्र निकालना आरम्भ किया और पुस्तकाकार इसे इसलिये रक्खा कि जिसमें पंसारियों की पुड़िया बांधने के काम का न रहे वरन जिल्द बांध लोग रख सकें। पर फिर भी सन्देह बना रहा कि लेख किसी काम का न हुआ तो यह पंसारियोंही के काम का रहेगा हमें प्रकाश करते हर्ष होता है कि यह अब तक उस तरह का न हुआ बरन इसके एक २ अंक चटकीले लेख से भरे रहते हैं। जिसने एक अंक पढ़ा होगा उसे दूसरा अंक पढ़ने की रुचि अवश्य रहती होगी। जी ऊबता और उचटता हो मन उदास हो इसकी पुरानी जिल्द खोल बैठ के पढ़ने लगिये सब रंज रफा हो मन आनन्द सन्दोह में मग्न हो उठैगा कुसुम की कली सी दन्तावली विकसित हो जायगी। हिन्दी रसिकों को तो प्रदीप प्राण तुल्य होगा-किन्तु मूड़ मुड़ाते ही ओले पड़े हमें प्रगट हुये देर न हुई थी कि प्रेस ऐक्ट का जन्म हुआ। प्रेस ऐक्ट का नाम सुनते ही छात्र मण्डली छिन्न भिन्न हो गई। निज उन्नति के आगे हिन्दी की उन्नति का उत्साह भंग हो गया कोई २ तो यहां तक दुम दबाय दबक बैठे कि मानो उनसे बड़ा अपराध बना जो इसके लिये ५) चन्दा दे इसके मेम्बर बने और सोचने लगे कि इस पाप का प्रायश्चित किस भांत हो जिसमें आगे को यह किसी के मुख से न निकल जाय कि छात्र दशा में ये भी हिन्दी के हितैषी थे और ऐसे एक पत्र के सहायक रहे जो अराजक विषय के लेख के लिये बदनाम था। अस्तु धीरे २ जितने पहले इसके मेम्बर बने थे सब छोड़ बैठे पर हम अंगीकृत का परिपालन अपने जीवन का उद्देश्य मान प्रति दिन इसे अधिक अधिक अपनातेही गये। प्रेस ऐक्ट की कृपा से बहुत दिनों तक साल में कई बार मेजिस्ट्रेट साहब के यहां तलब किये जाते थे पर भावी कुछ ऐसी अनुकूल रही कि बेदाग बचते ही चले आये। आर्थिक कष्ट जो इसके पीछे उठाते रहे सो एक ओर रहे कर्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारियों की निगाह में चढ़ जाना आर्थिक कष्ट से कुछ कम नहीं। खास कर उस समय जब हमारे इस प्रान्त में शिक्षा का बड़ा अभाव था और लोगों में ज़रा भी साहस और दृढ़ता न थी। समाज में आदर पाना एक ओर रहै जहां जाते थे वहीं हंसे जाते थे और हमारी ज़ीट उड़ाई जाती थी। हमारा आर्थिक कष्ट निवारण निमित्त उदयपुरधीश महाराणा सज्जन सिंह बहादुर ने एक बार हमें १००) दिये थे और एक बार रींवा के श्री महाराजा साहब बहादुर ने ५०) एक बार बहुत ही संकीर्ण दशा में आ गये थे और पक्का इरादा हो गया था कि अब इसे बन्द कर दें उस समय नागरी प्रचारिणी के मुख्य अधिष्ठाता बाबू श्यामसुन्दर दास ने ५०) चन्दा कर हमारी संकीर्णता दूर हटाया और पत्र फिर ढुलक चला। इतनी लालसा हमें बनी ही रही कि अपने निज का एक छोटा सा प्रेस खरीद इसे पाक्षिक कर दिखाते या मासिक ही रहता तो आकार इसका बहुत बड़ा बरन दूने के लग भग का कर समय से सेवा में पहुंचते पर यह हमारी लालसा इस जीवन में काहे को कभी पूरी होने वाली है। अस्तु यह देख हमें बड़ा सन्तोष होता है कि हिन्दी की अवश्यमेव उन्नति होती जाती है और इसके सर्वाङ्ग सुन्दर होने में जो २ कसर है क्रमशः दूर हो रही है। आशा है कदाचित् इसका सर्वाङ्ग सौन्दर्य पूर्ण हो जाने पर हमारी भी चाह लोगों में कभी को हो पर ऐसा समय कब आवै कौन जानता है। इस समय तो हमारा वही हाल है जैसा कवि मण्डली मण्डन श्रीहर्ष ने कहा है॥

"यथा यूनस्तद्वत्परमरमणीयापि रमणी।
कुमाराणामन्तःकरणहरणं नैव कुरुते"।

अथवा

"उत्पत्स्यते ऽस्ति मम कोपि समानधर्मा।
कालोह्ययं निरवधिर्विपुलाच पृथ्वी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस रूखे चर्खे को ओटा चाहें तो कहो पेज का पेज उड़ाते चले जांय पर यह तो हमारा क्रम ही नहीं है कि भरती कर कराय पत्र पूरा कर दें। इतनी सावधानी पर भी हमारे दो एक प्रेमी सहयोगी दोष देते हैं कि पत्र में भट्टपन कम होता जाता है कहीं इस लेख को और अधिक बढ़ावेंगे तो इतने दिनों की कमाई हुई लेख की सुख्याति सर्वथा खो बैठेंगे और यह मसल कि दिल्ली की कमाई चपरघटे में गंवाई इस पर पूरी आ उतरेगी ॥

अभ्युदय।

हम अब तक अनेक दुर्घटनाओं की चक्की में बराबर पिसते ही रहे न जानिये कितने क्रूर ग्रहों की दशा का भुगतमान भुगलते न केवल हमारा ही बरन हमारे पूर्व पुरुषों का भी जन्म का जन्म नष्ट गया। क्षिति तल में क्या कोई जाति निकलेगी जो सहिष्णुता में हम से आगे बढ़ी हो? मैं समझता हूं भूमण्डल के प्रत्येक देशों के इतिहास या पुरावृत्त को टटोलो और उसके साथ हिन्दू जाति के पुरावृत्त का मिलान करो तो किसी जाति को इतने दिनों तक निरन्तर नीचे ही गिरते हुये न पाओगे। इण्डियन् आर्किपेलेगो और अफरिका के जंगली फिरके तथा अमरिका के असभ्य Red Indians. भी विदेशियों की सभ्यता का संपर्क पाय शीघ्रमेव उन्नति के सोपान पर चढ़े और तरक्की कैसे होती है क्या उसके रास्ते हैं इसके नमूने या आदर्श हो गये। अघटित घटना पटीयान् परमात्मा की परमोदार कृपाकण के प्रकाश से हम निश्चय अब तक वंचित रहे और क्यों रहे इसका जो कुछ कारण मान लिया जाय किन्तु "कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ" की प्रेरणा से हम अब समय खिलाड़ी के गोद का एक ऐसा खिलौना बना चाहते हैं जिसके खेल में सब ओर एक छोर से दूसरे तक अभ्युदय का राग गूंज रहा है। जिधर सुनो उधर ऋषि प्रणीत पवित्र पावन धर्म का गान कर्ण कुहर को सुख दे रहा है। एक ओर सुशिक्षित नवयुवकों के नवा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्युत्थान का उत्साह मन को सन्तोष और आंख को ठंढक पहुंचा रहा है। चिरकाल की नींद से जगे हुये वन्देमातरम् का गान गाते मधुर ध्वनि से मानो भारत की जैजैकार की पुकार का अनुहार सा सब लोग कर रहे हैं। नगर २ में क्लब कमेटी और सभायें स्थापित हैं जिनमें बहुधा यही बिचार छिड़ता है कि हमें आगे बढ़ने के लिये क्या करना उचित है जिससे हमारा चिरस्थायी अभ्युदय हो और जो उसमें विघ्न या रुकावट हो सो दूर किया जाय। हमारी तरक्की में बिघ्न डालने वाली अनेक कुरीतों में कोई इसी लिये कटिवद्ध हैं कि बाल्य बिवाह को हटाय अखण्ड ब्रह्मचर्य स्थापित हो। कोई निज भाषा की उन्नति देश की उन्नति का साधन समझ उसी की चेष्टा में लगे हैं। कोई स्त्रियों की दशा का सुधार और उन्हें सुशिक्षित बना देने को भलाई का द्वार मानते हैं। कोई सबों के सहभोजन के लिये ज़ोर मार रहे हैं। कोई नये विज्ञान और शिल्प को देश में फैलाने के यत्न में प्रवृत्त हैं इसीलिये प्रति वर्ष जपान तथा अमरिका आदि देशों में जाय कृत कार्य होने का उद्योग कर रहे हैं। ऐसे समय स्वदेशीय की चाह और विदेशीय से घृणा मन में पैदा हो जाना निश्चय उस दयालु दीनोद्धारक दीन वत्सल की प्रेरणा है। हमारे आर्तनाद और दीनाक्रन्दन अन्त को उसके बड़े दरबार में पहुंचे ही तो अब तक जो हमारी सुनाई वहां नहीं हुई यही अचरज था इसका कोई बड़ा कारण रहा होगा अस्तु ॥

वधूस्तवराज।

हे ललना ललाम--हे कुलकामनियों की आदर्शस्वरूप – हे अनेक गुणगरिमाविशिष्ट—तुम अपने स्वाभाविक सहज गुण से चिराभ्यासी योगियों की सहिष्णुता को सहज ही में जीत लेती हो। हे वंशप्ररोह जननी यह लोक परलोक दोनों में सुख देने वाले शुद्ध सन्तान के पैदा होने की बीज भूमि तुम्ही हो "सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेहच शर्मणे" देवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे संख्यातीत अनगिनत दिव्यगुणों को गिन चुकता कर देने की किसकी सामर्थि है। हे बड़े कुनबे वाले गृहस्थों के घर की दीपशिखा सी समुज्वल वेशधारिणी विविध वेशभूषाविहारिणी। बेटी के भाव में जब तक तुम अपने बाप के घर को सुशोभित करती रहती हो तब तक पिता के घर का तुम्हारा अखण्ड स्वर्गीय राज्य को भला किसकी सामर्थि कि खण्डित कर सके? भौजाइयों पर तुम्हारी सतत हुकूमत उद्धत स्वच्छन्द बिहार और तुम्हारी अठखलियों का निरूपण लेखनी की शक्ति के बाहर है। पर ससुराल के लिये देहली से बाहर पांव रखते ही एकबारगी पतोहूपन संक्रामित हो न जानिये पहले की सब बातें किस कन्दरा में जा छिपती हैं-औद्धत्य सहसा बिनीतभाव में परिणत हो जाता है स्वच्छन्दता भूत के आवेश सी उतर कौन जाने कहां गायब हो जाती है। देवी यदि तुम्हें लोकोत्तर सहिष्णुता "बरदाश्त" का बल या भरोसा न होता तो थोड़ी २ बात में खांव २ कर दौड़ने वाली सास तथा ननदों का हठ और ज़ोर जुल्म कैसे सहज में सहने के लायक होता-दुर्गा पाठ में लिखा है॥

"विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु"

जितनी विद्यायें सब तुम्हारे रूप हैं संसार में जितनी स्त्रियां वे भी सब तुम्हारी ही प्रतिकृति हैं-ग्रन्थकर्ता मार्कण्डेय ऋषि इतना हीं गोल मगोल कह चुप हो गये आगे साफ २ कहने की हिम्मत न कर सके। हम कहते हैं देवियों में भी कई तरह की हैं जिनमें एक महाकाली होती हैं। तो जितनी सौम्य और सद्गुण वाली हैं वे सब महालक्ष्मी और सरस्वती हो बहू के रूप में घर की लक्ष्मी बन आती हैं और घर को देव मन्दिर बना देती हैं। पर जो चण्डी कर्कशा नित्य कलहकारिणी फूहर मैली कुचैली हैं वह महाकाली के रूप से घर में प्रवेश कर घर को श्मशान तुल्य कर देती हैं-एक २ आदमी की ज़िन्दगी उभारू कर दी जाती है "जन्मनष्टंकुभार्या" तस्मात् हे चण्डी तुम अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चण्डरूप का संकोच कर सौम्य दृष्टि से हमें आप्यासित करती रहो तो इसी में हमारा कल्याण है। बहुधा जो गृहस्थ हैं जिनको अपने कुल की लाज निभाने का बड़ा ख्याल है वरन सदा इसी चिन्ता में व्यग्र रहते हैं कि चादरे के चार खूंट हैं न हो कि किसी खूंट में दाग लग जाय इसलिये उद्धत हो जाने से मुंह मोड़ सदा सब से नम्र रहते हैं। मानो शील और संकोच के बोझ से दबे जाते हों ऐसोंहीं के घर को देवी तुम बहू बन सुशोभित करती हो। जिनमें ये पूर्वोक्त भाव नहीं आये अपनी हर एक बातों के घमण्ड से तीनों लोक को तिनका तुल्य समझते हैं वहां उनके संहार के लिये तुम काली सी कराल काल रात्रि हो प्रवेश करती हो। तुम्हारे चण्ड रूप का प्रकाश वहां पहुंचते ही सब छिन्न भिन्न होने लगता है और जल्द उस घराने की इतिश्री हो जाती है। इससे हे देवी यह शक्ति आप ही को प्राप्त है चाहे सोने के पांव से घर में प्रवेश करो चाहे लोहे के। आपका स्वर्णपद गृहस्थी में समस्त अभ्युदय दायक है भाग्यवानों के घर की लक्ष्मी बनने को आप सुवर्ण के पांव से प्रवेश करती हो दरिद्रों के यहां आप लक्ष्मी की बड़ी बहन बन कर आती हो। जहां आलसी निरुद्यमियों का दल मैले कुचैले भेख से पेट की अग्नि के मारे कांव २ मचाये हुये लड़ रहे हैं; जहां पुंवत प्रगल्भा कर्कशाओं का दल अष्ट प्रहर कलह और दांत किर्रने का पुरश्चरण कर रही हैं; वहां तुम पहुंच उन कराल चण्डियों की चण्डीश्वरी बन बड़ी शोभा पाती हो और तुम्हारे समुचित समागम से उस घर की बुराई के लिये सुख्याति में भी कुछ कसर बाकी नहीं रहती। देवी आज इस स्तव राज के द्वारा तुम्हारा गुण कीर्तन कर फल स्तुति में यही प्रार्थना करते हैं कि हमारे पढ़ने वालों को अपने प्रचण्ड कराल भेष के दर्शन से बचाये रहो और जिनके यहां कोई ऐसी कराला हों उनको तो इस स्तोत्र का पाठ बहुत ही सामयिक है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा सच्चा मित्र ।

यदि हमसे कोई पूछे तुम्हारा सच्चा मित्र कौन है? तो हम यही उत्तर देंगे पुस्तक । लोग दिल्लगी उड़ावैंगे कि यह पागल हो गया है कभी निर्जीव पदार्थ भी किसी का मित्र हुआ है ? मित्र वही हो सक्ता है जिस्के साथ हम चल फिर सकैं बोलैं चालैं उठैं बैठैं खांय पियैं इत्यादि ऐसाही है तो लकड़ी पत्थर भी आप का मित्र हो सक्ता है ॥

नहीं नहीं मित्र कौन है सो मैं अच्छी तरह जानता हूं—मित्र वही है जो सगा भाई के समान हर वक्त हमारी सहायता करता रहे—जिस का साथ हम हर घंटे चाहते हैं-जो विपद संकट में हमारी रक्षा करे बुरा काम करने से बचावे और भलाई की ओर हमें झुकावे हमारे सुख दुख का साथी हो । इस तरह का हमारा एक मात्र मित्र पुस्तक ही है क्योंकि ऊपर कहे हुये मित्र के सब लक्षण इसमें हैं । अंगरेज़ी के कवि सौदे Southey ने कहा है My never failing friends are they; with whom I converse day by day. साथ देने में कभी चूकनेवाला न हो ऐसा मित्र वही है जिस्से हमारे प्रति दिन के आलाप संलाप में कभी त्रुटि न हो--रसिक का प्रति दिन क्या प्रति क्षण पुस्तक के साथ संलाप रहता है--दिन और रात के बहुत से ऐसे घंटे हैं जिनमें Intimate. गाढ़े से गाढ़े मित्र का भी साथ छूट जाता है पर पुस्तक का कभी नहीं। बल्कि सोते समय हम सो जाते हैं तौभी यह खटिया पर पड़ी २ लोटती हुई दबी रह जाती है--हमारी करवटों में अस्त व्यस्त और जीर्ण शीर्ण हो जाती है यहां तक कि कभी २ पांव के तले तक पहुंच रौंदी जाती है तौभी कुछ बुरा न मान साथ नहीं छोड़ती—हमारा मित्र पुस्तक हमें पतित पावन अपना पवित्र चरित्र सुनाती है—उसी मित्र के द्वारा कभी २ हम जहाज़ में बैठ समुद्र यात्रा के चित्र देख उस्के सुख दुख का अनुभव करते हैं--कभी २ पहाड़ की चोटी पर बैठ प्रकृति की मनोहारिणी शोभा का कौतुक देखते हैं—कभी साहित्य या विज्ञान वाटिका में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार करते हैं कभी सुप्रसिद्ध वक्ताओं की सुमधुर वक्तृता सुन प्रसन्न होते हैं--और मित्रों की अपेक्षा इसकी मैत्री में एक विशेष गुण है कि राजा या रंक सब के साथ इसका मैत्री का एक सा बर्ताव है-कुछ दिन पूर्व लोगों को ऐसे मित्र बहुत ही कम मिलते थे और मिले भी तो बहुत परिश्रम तथा बड़ा खर्च करने पर। यह वर्तमान् समय की सभ्यता का प्रसाद है कि ऐसे २ उत्तम मित्र हम सदैव सब ठौर और बहुत थोड़े खर्च में पा सक्ते हैं--ऐसे सच्चे मित्र पाकर यदि हम अपना कुछ उपकार साधन न कर सके तो हमारे सदृश अभागा कौन होगा--हिन्दुस्तान का क्षतिग्रस्त होना तथा इसके अधः पात के अनेक कारणों में ऐसे सच्चे मित्र का त्याग या उसका अनादर परंप्रधान कारण है-यूरोप अमरिका तथा जपान आदि उन्नति शील देशों की तरक्की के अनेक कारणों में ऐसे सच्चे मित्र की कदर एक कारण है—जहां पढ़ने पढ़ाने का शौक लोगों में इतना बढ़ा है कि कुली भी जब अपने कुलीगीरी के काम से फ़ुरसत पाता है ज़रूर कुछ न कुछ पढ़ता है यहां शिष्ट शिरोमणि भी पढ़ने की ओर रुचि नहीं रखते दरिद्र और पराधीनता उसी सच्चे मित्र के अनादर का फल हम भोग रहे हैं॥

लोचन प्रसाद पाण्डेय।

सूदखोरी।

हिन्दुस्तान के डूबने के बहुत से कारणों में सूदखोरी भी एक है-व्याज खाने वाले निष्पुरुषार्थ और आलस्य के पुंज कदर्यता कड़ाई और निठुराई के चश्मे होते हैं। इन्ही बातों का खयाल कर कदाचित् मनु महाराज ने "विष्ठावार्द्धुषिकस्यान्नम्" लिख दिया है। वार्द्धुषिक व्याज खाने वाले का अन्न विष्ठा है। "योयस्यान्नमश्नाति सश्नाति तस्य पातकम्" जो जिसका अन्न खाता है वह उसका मानो पातक खाता है। अर्थात् उसका सा शील स्वभाव आचार विचार आदि सब उसमें आजाता है वैसाही जैसा संक्रामक रोग एक का दूसरे में फैलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और यह तो कहावत की भांत प्रचलित सा है कि ब्याज खाना राड़ों का रोज़गार है जो किसी व्यवसाय में दाखिल नहीं है इसलिये कि सूदखोर को बुद्धि या श्रम को काम में लाना नहीं पड़ता। महम्मद ने जो अपने मुसलमानी धर्म में सूदखोरी को हराम लिख दिया है उसका शायद यही मतलब है कि सूदखोरी राइज और जां रक्खेंगे तो कुरान के मानने वाले कौमीयत से डिग जांयगे। मुसलमान जिन्हे हम कौम बनाना चाहते हैं ब्याज खाते २ आलसी और निष्पुरुषार्थी हुये तो किस काम के। यही कारण है कि मुसलमानों में बीरोत्साह हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। खरोच भी मुसमान अधिक होते हैं सो भी इसी से कि ब्याजखोरी की आदत उनमें नहीं है। उदार भाव तो बाद्धुषिक में आवेही गा नहीं बरन कदर्यता अलबत्ता उसमें कबज़ा किये रहैगी। ब्याज खाने की आदत उद्यम और व्यवसाय पर कुल्हाड़ा चला रही है कोई बड़ा काम आरंभ करने के पहले हमारे महाजन भाई ब्याज का परता पहिले फैला लेते हैं। जिस रोज़गार में आठ आना सैकड़े की सिती तरी वह बड़े फाइदे का व्यवसाय समझा जाता है उसे PAYING BUSINESS कहेंगे। यूरोप और अमरिका के लोग बिना किसी तरह की हिचक बेकलेजे लाखों और करोड़ों रुपये किसी बहुत बड़े धन्धे में लगा देते हैं ईश्वर उनके इस साहस पर रीझ एक का चार कभी को आठ और दस गुना लाभ उन्हें करा देता है। थोड़ेही दिनों के व्यवसाय में करोड़ों का धन पास हो जाना कुछ दुष्कर नहीं रहता। सूदखोर कौड़ी २ ब्याज की दांत से थांबता है येन केन पेट पाल लेने के सिवाय बहुत बड़ा धनी नहीं हो सकता न ऊंची २ उमङ्ग उसके जी में उठ सकती हैं। खिस्सत या कृपणता और कदर्यता का आगार बना रहता है और सांप सा बैठा हुआ धन ताका करता है। न खाता हैं न खरचता है ब्याज के घाटे के पेच में पड़ा हुआ किसी ऊंचे काम या धन्धे में रुपया लगाने का साहस या हिम्मतही उसकी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती। व्याज की लालच ने न जानिये कितने करोड़ रुपये हम लोगों के प्रोमैसरी नोट में लगे हुये हैं जिस से कितने अधिक लाभदायक बड़े २ काम हो सकते थे सो सब थोड़े व्याज के मुनाफे पर गवर्नमेंट के सिपुर्द है। गवर्नमेंट भी अपनी पालिसी से नहीं चूकती अब तक लोन पर लोन खोलती ही जाती है। पहले तो धन देश में रही न गया जो है भी वह नये २ लोन में खिंचा जाता है। ईश्वर जो भारत का अभ्युदय चाहता हो तो चाहिये कि वह हमे सुमति दे कि हम व्याज खाने की निकृष्ट वृत्ति से घिन करें। स्वदेशी बस्तु के बर्ताव का आन्दोलन देश के एक छोर से दूसरे तक फैलता जाता है जापान और अमरिका की तरह देश की बनी चीज़ों के लिये ज़रूरत है कि बड़े २ कारखाने खोले जांय किन्तु देश में जितना चाहिये उतना धन न रहने से संभव नहीं कि हम कृतकार्य हों। प्रिय पाठक परमात्मा की सानुकूलता से वह दिन अब न रहा जब हिन्दुस्तान में उद्यम के अभाव से आप को ब्याज के अल्प लाभ से सन्तोष कर लेना पड़ा था अब भारत के नवाभ्युत्थान सूर्य का उदय हुआ चाहता है। नवाभ्युत्थान वालार्क की किरणें जहां तहां छिटक रही हैं अब आप भी अग्रसर होने को आगे कदम बढ़ाइये और सूदखोरी की कदर्य वृत्ति से मुह मोड़ उद्यमशीलों के अगुआ बने ॥

और प्रान्तों की अपेक्षा स्वदेशी का आन्दोलन बंगाल में बहुत अधिक है वहां के क्यपिटलिस्ट बड़ी पूंजी वाले धनियों को चाहिये कि १ करोड़ या ५० लाख की पूंजी इकट्ठी कर छोटी पूंजी वाले रोज़गारियों को जिनका रुपया प्रोमिसरी नोट के कम व्याज मे फसा हुआ है उस में से अपना रुपया निकलवाय इस रुपये से सहायता दे उन्हे देशी कारखाने खोलने के लिये प्रोत्साहित करें और जो कदाचित् घाटा हो तो उसी बड़ी पूंजी से उनकी मदद की जाय तब वे इस आन्दोलन में अलबत्ता पूरी कामयाबी हासिल कर सकेंगे पर यह सब तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकेगा जब राडों की सी आदत सूदखोरी से मुह मोड़ उद्यम और उत्साह काम में लाया जाय ॥

भट्टि ।

सुनने में आता है कि किसी राजा ने एक पंडित से पूछा कि क्या तुम मेरे पुत्र को एक बर्ष के भीतर संस्कृत व्याकरण भली भांति सिखा सकते हो तो पंढित ने उत्तर में कहा हां । राजा इस उत्तर से अत्यन्त चकित हुये। पंडित से तो कहा कि पढ़ाओ पर स्वयं इस बात के लिये सयत्न हुआ कि पंडित की बात न रहने पावे। अतएव मंत्री की सम्मति से राजा ने किसी प्रकार पाठ के समय में गुरु और शिष्य के बीच से हो के किसी हाथी को चला दिया। पाठावस्था में गुरु शिष्य के बीच हाथी के चलने से व्याकरण शास्त्र का बर्ष भर के लिये अनध्याय होता है । जब पंडित ने देखा कि अब बर्ष भर में व्याकरण पढ़ाना असंभव है तब उनने व्याकरण शास्त्र बिना पढ़ाये भट्टि काव्य के ही द्वारा बर्ष भर में राज पुत्र को व्याकरण में निपुण कर दिया। राजा को हार माननी पड़ी। ये पंडित भट्टि ही थे। भट्टि काव्य की रचना कहीं २ पर बहुत सुन्दर है मुख्य करके द्वितीय सर्ग के प्रारम्भ में शरद् ऋतु का बर्णन ऐसा मनोरम है कि उसके द्वारा ग्रन्थकार की अद्भुत कविता शक्ति भली भांति जानी जाती है ॥

अनुमान होता है कि कवि का नाम 'भट्टि, ही था। भरत मल्लिक जिनने भट्टि काव्य की एक टीका रची है ग्रन्थकार का नाम भर्तृहरि बतलाते हैं। पर यदि उनका ऐसा कहना ठीक हो तो ये भट्टि काव्य के रचयिता भर्तृहरि बिक्रम के भाई से भिन्न होंगे। जयमङ्गल भी भट्टि काव्य के एक प्रसिद्ध टीकाकार हैं उनने कवि का नाम भट्टि ही बतलाया है। ग्रन्थ की समाप्ति में ग्रन्थकार अपना परिचय यों देते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्यमिदं विहितं मया वलभ्यां
श्रीधर सूनु नरेन्द्र पालितायां।
कीर्तिरतो भवतान्नृपस्य तस्य
क्षेमकरः क्षितिपो यतः प्रजानाम् ॥

अर्थात्

राजधानि वलभीपुर माहीं। राज करत श्रीधर सुत आहीं॥
प्रजा हितोद्यत भूपति पायो। तिहि यश लगि यह काव्य बनायो॥

जिससे अनुमान होता है कि ये कवि वलभीपुर के निवासी हैं। कहीं २ पर 'श्रीधर सूनु' के स्थान में श्रीधर सेन ऐसा पाठ मिलता है। वलभी के राजपूतों की वंशावली में धरसेन नाम के कई राजा हुए हैं जिनमें से यह निर्णय करना कठिन है कि ये कवि उनमें से किस के आश्रित थे। संभव है कि जैसे भीमसेन को लोग संक्षेप में भीम कह के पुकारते हैं वैसे ही धरसेन को इस श्लोक में केवल 'धर' नाम के पूर्व श्री लगा दिया हो और उसके बेटे को 'श्रीधरसूनु' कह दिया हो। जयमङ्गल ने जो राजा का नाम नरेन्द्र बतलाया है सो ठीक नहीं जंचता। यहां नरेन्द्र शब्द राजा का वाचक है नाम नहीं॥

बाबू रमेशचन्द्र दत्त के अनुमान से वलभी के राजाओं का समय सन् ४७० ई० से ले के ६७० ई० पर्यन्त निश्चित होता है। यह वलभी गुजरात में है। यहां के राजा लोग अपने को सूर्यवंशी अर्थात् रामचन्द्र के पुत्र लव के बंश में उत्पन्न बतलाते थे। असंभव नहीं है कि अपने आश्रमदाता राजा के प्रसिद्ध पुरखे रामचन्द्र की कीर्त्ति फैलाने के लक्ष्य से कवि ने ग्रन्थ बनाया हो। यदि धर सेन वा उसके पुत्र के समय में कवि वलभी में थे तो उनका समय खीष्टीय सातवीं सदी के अनन्तर नहीं हो सकता और पूर्व में पांचवीं सदी के पिछले भाग तक पहुंच सकता है। निदान सन् ४६० ई० से ले के ६७० ई० तक के बीच किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में ये कवि रहे होंगे। श्रीधर सूनु शब्द के होने से कुछ लोगों ने इन्हे श्रीधर स्वामी श्रीमद्भागवत के टीकाकार का पुत्र अनुमान किया है और बंगला भक्तमाल में लिखा भी है कि जब गुरु के उपदेश से स्वामी जी को वैराग्य हुआ उसी समय उनकी पत्नी पुत्र प्रसव कर परलोक सिधारी थी। नव प्रसूत बालक को ईश्वर के भरोसे छोड़ स्वामी जी बन को चल दिये। पड़ोसियें ने अनाथ बच्चे का पालन पोषण किया जब वह बड़ा हुआ तो उसने भट्टि काव्य में रामचन्द्र जी का गुण गान किया पर इस कथानक की सत्यता में घोर सन्देह उपस्थित होता है॥

भट्टो जी दीक्षित।

प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ सिद्धान्त कौमुदी इन्ही महाशय ने बनाया है। इनके गुरू मरते समय बोले कि राम राम कहो तो इनने कहा कि बहुबचन में 'रामाः' ऐसा क्यों न कह दें जिस से बार बार शब्दोच्चारण से छुटकारा मिले। इस शुष्कबाद से गुरु ने अप्रसन्न हो उन्हें शाप दिया जा तू मरने पर पिशाच होगा और उस दशा से तेरी मुक्ति तभी होगी जब सिद्धान्त कौमुदी का प्रचार समुद्र तट तक जा पहुंचेगा। अब तो समुद्र तट की कौन कहे समुद्र पार भी नये २ देशों में सिद्धान्त कौमुदी का प्रचार हो गया। जिसने संस्कृत में सिद्धान्त कौमुदी न पढ़ी हो वह वैयाकरण होने का अभिमान बहुधा नहीं कर सकता। उसी एक ग्रन्थ के द्वारा भट्टोजी दीक्षित अत्यन्त प्रसिद्ध हैं॥

ये महाशय दाक्षिणात्य थे पर निवास स्थान इनका काशी था। इनके पौत्र हरि दीक्षित नागोजी भट्ट के गुरू थे नागोजी भट्ट का समय सत्रहवीं सदी ख्रीष्टीय में माना जाता है निदान वही समय श्री हरि दीक्षित का मान लिया जा सकता है। उनसे लगभग ५० वर्ष पूर्व यदि भट्टो जी दीक्षित को मान लें तो उनका समय ख्रीष्टीय सत्रहवीं सदी का पहिला भाग अनुमान किया जा सकता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर्तृहरि ।

महाराज विक्रम के जेठे भाई प्रसिद्ध वैयाकरण और तीनों शतक के रचयिता भर्तृहरि को कौन न जानता होगा । यदि विक्रम का समय सन् ईस्वी के प्रारम्भ से ५७ वर्ष पूर्व माना जावे तो भर्तृहरि का भी वही समय निश्चित हो सकता है । परन्तु के० टी० टेलङ्ग का अनुमान है कि भर्तृहरि अवश्य कालिदास से पिछले हैं और जब तक पतञ्जलि का महाभाष्य चन्द्राचार्य आदि वैयाकरणों के द्वारा हिन्दुस्तान में भली भांति प्रचलित न हो चुका होगा तब तक भर्तृहरि नहीं हो सकते । अतएव उनका सिद्धान्त भर्तृहरि को लगभग सन् ७८ ई० का व्यक्ति बुनाता है तथा विक्रम संवत् को शालिवाहन के शाका से मिला देता है । यद्यपि टेलङ्ग के मत में यह निर्विवाद सिद्धान्त निर्णीत किया गया पर इसमें अभी और भी कई एक सन्देह उपस्थित हो सकते हैं । भर्तृहरि का बनाया व्याकरण ग्रन्थ वाक्यप्रदीय है । भट्टिकाव्य इन्हीं भर्तृहरि का बनाया है ऐसा कहने में कुछ भी प्रमाण नहीं मिलता प्रत्युत इसके विरुद्ध बहुत सी बातें कही जा सकती है । नीति शृङ्गार और वैराग्य शतक तो भर्तृहरि ही का बनाया प्रसिद्ध है पर फिर भी सन्देह हो सकता है कि यह उनकी रचना है वा संग्रह है अथवा दोनों मिश्रित हैं । शतकों में के बहुत से श्लोक कालिदास और और २ कवियों के ग्रन्थों के पाये जाते हैं जिससे भर्तृहरि ने शतकों में भिन्न २ स्थानों से श्लोक संग्रह किये ऐसा अनुमान हो सकता है । भर्तृहरि स्वयं राजा थे और अपनी स्त्री के चरित्र पर सन्देह उत्पन्न होने से उन्हें वैराग्य हुआ ऐसा नीतिशतक के दूसरे श्लोक से द्योतित होता है यथा–

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं सजनोऽन्यसक्तः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असमत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक् तांच तं च मदनं च इमां च मां च ॥

अर्थात्

सोचूं जिसे नित मुझे वह नाहिं चाहै
सो चाह दूसरहिं दूसर चाह औरै।
सो काज पै लहत तोवहु कोउ दूजो
धिक् ताहि वाहि मदनै इसको मुझे भी ॥

राज्य से विरक्त हो भर्तृहरि ने तपस्या की और लोग चुनार में उनकी गुफा बतलाते हैं। उनके छोटे भाई विक्रम को प्रजा पालन का भार सौंपा गया ॥

यदि ये विक्रम प्रसिद्ध प्रमरवंशी शकारि उज्जयिनी राजा हैं तो संभव है कि सन् ५४४ ई० के पूर्व छठवीं सदी के प्रारम्भ भाग में भर्तृहरि का समय माना जावे। सो जो कुछ हो इतना तो अवश्य ही होगा कि भर्तृहरि सन् ईस्वी से ५७ वर्ष के लगभग पूर्व वा छठवीं सदी से अधिक पिछले नहीं हो सकते। बीच में किसी समय भी रहे हों तो असम्भव नहीं है पर उसके पक्के प्रमाण मिलने चाहिये ॥

धीरेव धन्यं धनमुन्नतानाम्
विद्यैव चक्षुर्विजितेन्द्रियाणाम् ।
दयैव पुण्यं पुरुषोत्तमानाम्
आत्मैव तीर्थं शुचिमानसानाम् —क्षेमेन्द्र ॥

"ऊंची तबियत वालों को अकिल ही मुबारिका दौलत है"

जान पड़ता है कवि ने बड़े अनुभव के उपरान्त ऐसा लिखा है बहुधा देखने में आता है कि जो रुपयों के बटोरने में ऊंचे हैं वे अकिल के काम में नीचे होते हैं। यूरोप और अमरीका के उन्नतिशील देशों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकिल और रुपया दोनों एक साथ बढ़ता जाता है—पर हमारे देश में ऐसा नहीं है रुपयेवालों के ऐसे ऊट पटांग बेअकिली के काम देख गये हैं जिस्से यही निश्चय होता है कि लक्ष्मी और सरस्वती का परस्पर विरोध है-यही कारण है कि बुद्धि के बढ़ानेवाले बड़े २ काम इतने बहुतात के साथ हिन्दुस्तान में नहीं किये जाते जैसा और २ सभ्य देशों में किये गये हैं। मुल्की तरक़्क़ी के लिये हम लोग जो पछताते और अफसोस करते हैं उस्का कारण यही है कि यहां रुपयेवालों का धन ऊट पटांग कामों में इतना अधिक अपव्यय हो जाता है कि उनके उन कामों से अधिक रुपया उभड़ताही नहीं कि तरक़्क़ीवाले कामों में खर्च करने को उनसे कहा जाय-इसी से कवि दुखी हो कहता है "धीरेवधन्यं स्वमुन्नतानाम्"-दूसरे औरों को तरक़्क़ी करते देख मन में ऐसा ख्याल पैदा होना और फिर हिम्मत बांध उस ओर झुक पड़ना यह भी उसी से हो सक्ता है जिस्के पास बुद्धि की पूंजी है-धन की पूंजीवाले को नुकसान उठाने का अनेक आगा पीछा दामनगीर रहता है तब तक खुल के किसी काम में नहीं लगता जब तक सर्वथा लाभ की संभावना उसे नहीं हो जाती ॥

श्लोक में दूसरी बात है "विद्यैव चक्षुर्विजितेन्द्रियाणाम्" जो इन्द्रियों को अपने काबू में किये हैं उनको विद्याही नेत्र है-सच है हम इस चर्म चक्षु से ऊपरी बात भले ही देख लेते हैं किन्तु किसी वस्तु को भीतर से वेही टटोल सक्ते हैं जो पढ़े लिखे हैं—केवल पढ़ लेनेही मात्र से नहीं जब तक लिखने पढ़ने का परिणाम चरित्र पालन न हो जो सहज नहीं है जब तक मन इतना दृढ़ न हो कि वाह्य प्रपंच में दौड़ने से रुका रहे—बड़े २ कुशाग्रबुद्धि सकल विद्या पारंगत विषया स्वाद लंपट हो कातिक के कुत्तों की तरह कुतियों के पीछे दौड़ते देखे गये हैं—इसी से कवि कहता है जो इन्द्रियों को बश में किये हैं उन्हीं को विद्या नेत्र का काम देती है विद्या और ज्ञान के द्वारा इन्द्रियों की चंचलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जो बुराइयां पैदा होती हैं उसे वे देख सक्ते हैं ॥

तीसरा चरण इसका "दयैवपुण्य पुरुषोत्तमानाम्" दया करना ही श्रेष्ठ जनों के लिये पुण्य है-सच है पुरुषों में श्रेष्ठ वही कहा जा सक्ता है जिस्में दया है कट्टर कलेजे वाला बड़ा गुणी भी निठुर हुआ तो किस काम का उस्के गुण से किसी का कुछ उपकार न बनेगा इसलिये कि जितनी भलाई सब का अंकुर मन में तभी जमता है जब किसी हीन दीन दुखी को देख जी पिघल उठे-चित्त की उसी दशा या वृत्ति को दया कहैंगे। उदारता के ऊंचे शिखर पर चढ़ने को दया पहली सीढ़ी है। सूम संकीर्ण हृदय वाले को दया कहां ? कुटिलाई एंच पेंच जिसे अनार्जव कहैंगे अलबत्ता वहां घर किये रहते हैं तस्मात् यही सिद्ध होता है कि जो पुरुषोत्तम हैं उन्ही में दया रहती है और दया से मनुष्य पुरुषोत्तम कहा जा सक्ता है ॥

अन्त में कवि का कथन है "आत्मैव तीर्थं शुचिमानसानाम्"-जिन का मन पवित्र है उन्हें अपने को जानना यही बड़ा तीर्थ है कहा भी है "शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्"—जिनका मन पवित्र है उन्हें तीर्थ यात्रा से क्या "मन चंगा तो कठौती में गंगा" किन्तु हमारा मन पवित्र हो यह कितनी टेढ़ी खीर है संसार में सबी ऐसे मन वाले कहां हैं? जो हैं उनके लिये महत्व शब्द का प्रयोग अर्थात उन्हें महात्मा कहना मानो उनके लिये Reserved. उपयुक्त है-मन के सम्बन्ध में हम बहुत बार बहुत सा लिख चुके हैं गाई गीत का फिर २ गाना क्या— इस्से इस लेख को यहीं पूरा करते हैं और अपने पढ़नेवालों को चिताते हैं कि आप लोग इसका थोड़ा भी अभ्यास डालते रहैं तो यहां तथा वहां दोनों में सर्वथा कल्याण है "परत्रेहवेचशर्मणे" शिव संकल्प सूक्त का पाठ और उस्का मनन मन की पवित्रता का बड़ा सहकारी है और इस्के अनेक साधनों में एक वह भी है ॥

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रम्हापि तं नर नरञ्जयति ॥ ७३ ॥

जो बिलकुल मूर्ख है उसे समझाना सहज है विशेषज्ञ को समझाना उससे भी अधिक सहज है किन्तु जो अधकचड हैं उन्हे ब्रह्मापि राह पर नहीं ला सक्के ॥

अज्ञस्तावदहं नमन्दधिषणः कर्तुं मनोहारिणीश्चाटूक्तीः
प्रभवामि यामि भवतो याभिः कृपापात्रताम् ।
आर्तेनाशरणेन किन्तु कृपणेनाक्रन्दितं कर्णयोः
कृत्वा सत्वरमेहि देहि चरणं मूर्धन्यधन्यस्य मेजग ॥७४॥

पहले तो हम अज्ञ हैं बुद्धि की कमी से जैसी चाहिये वैसी स्तुति या खुशामद आप की नहीं कर सक्के जिस्के द्वारा मैं आप का कृपापात्र बनूं=आर्त हूं कहीं मुझे ठिकाना नहीं है-कृपण हूं मेरा दुख रोना अपने कानों में कर जल्द मुझे अपना चरण दीजिये कि मैं उसे अपने सिर की शोभा कर अपने को धन्य मानू-सेव्य के प्रति सेवक की दीनता इससे बढ़कर और क्या हो सक्ती है ॥

अज्ञातपाण्डित्यरहस्यमुद्रा
ये काव्यमार्गे दधतेभिमानम् ।
ते गारुडीयाननधीत्य मन्त्रा
न्हालाहलास्वादनमारभन्ते ॥ ७५ ॥

पण्डिताई के रहस्य की क्या मुद्रा है सो जो नहीं जानता और काव्यज्ञ बनने का अभिमान करता है वह मानो सांप के विष उतारने का गारुडी मंत्र न जान विष पान करता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञाताः पुरुषा यस्य प्रविशन्ति महीपतेः ।
दुर्गं तस्य न सन्देहः प्रविशन्ति द्रुतं द्विषः ॥७६॥

जिस राजा के किला या दुर्गभूमि में अजनबी प्रवेश पाता है तो निःसन्देह शत्रु जल्द वहां घुस जा सक्ता है ॥

अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात्कृत्वा कर्म विगर्हितम् ।
तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन् द्वितीयं न समाचरेत् ॥ ७७ ॥

जान के या बिना जाने निन्दित काम बन पड़े तो उससे छुटकारा पाने को फिर वैसा काम न करे ॥

अज्ञानान्धमबान्धवं कवलितं रक्षोभिरक्षाभिधैः ।
क्षिप्तं मोहमहान्धकूपकुहरे दुर्बुद्धिरभ्यन्तरैः ॥
क्रन्दन्तं शरणागतं गतधृतं सर्वापदामास्पदं ।
मा मां मुञ्च महेशपेशलदृशा सत्रा समाश्वासय ॥७८॥

अज्ञान से अन्धा जिस्का हाथ पकड़ने वाला कोई बान्धव नहीं सब इन्द्रियां अपनी २ ओर से राक्षस सी हो जिसे अलग हो निगले लेती हैं दुर्बुद्धि ने मोह की महाअन्धी कुआ में जुदा ही फेंक रक्खा है-चिल्लाता हूं शरण में आया हूं अधैर्य हूं डरा हुआ हूं ऐसे मुझ को हे महेश अपनी कृपा दृष्टि से अपनाय आश्वसन दीजिये-सेव्य के प्रति सेवक को कहां तक निरभिमान हो विनीत होना चाहिये उस्का ओर छोर इसमें दिखाया है ॥

अज्ञानोपहतो बाल्ये यौवने मदनाहतः ।
शेषे कलत्रचिन्तार्तः किं करोतु कदा जनः ॥ ७९ ॥

बालक रहे तब अज्ञान रहे जवान होतेही भोग विलास में लगे उपरान्त जो समय बचा सो स्त्री पुत्र कुटुम्ब की चिन्ता में गया तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिये लोग कब क्या करैं देश की इस गिरी दशा को गृहस्थ का अच्छा चित्र इसमें उतारा गया है ॥

अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः ।
धारिभ्यो ज्ञानिनः श्रेष्ठा ज्ञानिभ्यो व्यवसायिनः ॥८०॥

निरा मूर्ख से वह अच्छा जिसके पास बहुत से ग्रन्थों का सग्रह है उससे भी वह अच्छा जो उन ग्रन्थों को पढ़े है- पढ़े हुये से ज्ञानी भला-- ज्ञानी से भी वह जिसका ज्ञान केवल कहने ही को नहीं है बरन उसके अनुसार चलता है ॥

अज्ञो न वितरत्यर्थान् पुनर्दारिद्र्यशंकया ।
प्राज्ञो पि वितरत्यर्थान्पुनर्दारिद्य शंकया ॥ ८१ ॥

अज्ञ यह समझ अपना धन दान नहीं करता कि मैं दे डलूंगा तो दरिद्र हो जाऊँगा--प्राज्ञ यही समझ दान करता है कि न दूंगा तो दूसरे जन्म में फिर निर्द्धनी जन्मूंगा ॥

अज्ञो पि तज्ज्ञतामेति शनैः शैलो पि चूर्ण्यते ।
घुणोप्यत्ति महावृक्षं पश्याभ्यासविजृम्भितम् ॥ ८२ ॥

अभ्यास से मूर्ख विद्वान् हो जाता है--धीरे २ पहाड़ भी चूर हो सक्ता है--घुन बड़े वृक्ष को घुन डालता है ॥

अज्ञो यो व्ययशीलश्च अनाथः कलहप्रियः ।
आतुरः सर्वभक्षी च नरः शीघ्रं विनश्यति ॥ ८३ ॥

जो मूर्ख होकर खरोच हो; बेवारिस का हो सब से लड़ा करे; रोगी हो सब कुछ खाया करे; ऐसा मनुष्य जल्द नाश को प्राप्त होता है ॥

अञ्जनस्य क्षयं दृष्ट्वा वल्मीकस्य च संचयम् ।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद्दानाध्ययनकर्मभिः ॥ ८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंजन रोज़ लगाते रहो तो एक दिन बिल्कुल नहीं रह जाता वल्मीक थोड़ा २ एकट्ठा हो छोटा टीला सा हो जाता है--इसे देख दिन को व्यर्थ न खोना चाहिये प्रति दिन कुछ देता रहे या कुछ पढ़ना आदि भला काम करता रहे॥

अञ्जलिरकारि लोकैर्ग्लानिमनाप्तैव रञ्जिता जगती।
संध्याया इव वसतिः स्वल्पापि सखे सुखायैव-गोव॥८५॥

सब का पूज्य होता हुआ किसी को कोई ग्लानि बिना पहुंचाये प्रत्युत जगत् भर के लोगों को प्रसन्न करता हुआ सन्ध्या के समान कहीं पर थोड़ा भी बास परिणाम में सुख के लिये है--सन्ध्या बहुत थोड़े समय तक रहती है सब लोग उस समय अपने २ धर्म के अनुसार ईश्वर की पूजा बन्दना करते हैं सूर्यास्त होने से जगत् भर में ललाई छा जाता है--रञ्जित में श्लेष है जिसके अर्थ हैं रंगना और प्रसन्न करना॥

अञ्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम्।
अहो सुमनसां प्रीतिर्वामदक्षिणयोः समा॥८६॥

अंजुली में फूल रक्खो तो दहिना बांया दोनों हाथों को सुगन्धित कर देता है--सुमनस फूल और अच्छे मन वाले सज्जनों का प्रेम वाम अपने प्रतिकूल और दक्षिण अपने अनुकूल दोनों पर एक सा रहता है॥

अणुनापिप्रविश्यारिं छिद्रेण बलवत्तरम्।
निःशेषं मज्जयेद्राष्ट्रं पानपात्रमिवोदकम्॥८७॥

अपने से अधिक बलवान् शत्रु में थोड़ा भी कोई छिद्र पाय भीतर घुस उसके राज्य को डुबोने में कुछ बाकी न छोड़ रक्खे; वैसाही जैसा नौका में एक छोटा सा भी छिद्र पाय जल भीतर उसके प्रवेश कर नौका को डुबा देता है॥

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri